नासिरा शर्मा का रचना संसार

NASIRA SHARMA KA RACHANA SANSAR

Thesis

Submitted to

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

For the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

In

HINDI

Under the Faculty of Humanities

By

रञ्जिनी कृष्णन. आर.

RENJINI KRISHNAN. R.

DEPARTMENT OF HINDI

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

KOCHI - 682 022

DECEMBER 2007

Certificate

This is to certify that the research work presented in the thesi entitled **"NASIRA SHARMA KA RACHANA SANSAR"** is an authenti record of research work carried out by **RENJINI KRISHNAN. R.** unde my supervision at the Department of Hindi, Cochin University of Scienc and Technology, in partial fullfillment of the requirements for the degree c DOCTOR OF PHILOSOPHY in HINDI and that no part thereof ha been included for the award of any other degree.

Dr. (Prof.) R. Sasidharan
Dept. of Hindi
Cochin University of Science
and Technology
Kochi-22

Place : Cochin-22
Date : 10-12-2007

Declaration

I hereby declare that the thesis entitled **"NASIRA SHARMA K RACHANA SANSAR"** is the bonafide report of the original work carrie out by me under the supervision of **Dr. (Prof) R. Sasidharan** at tl Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology and r part there of has been included in any other thesis submitted previously fi the award of any degree.

Place : Cochin - 22
Date : 10 - 12 - 2007

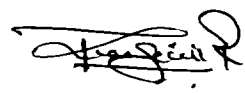

RENJINI KRISHNAN. I

प्राक्कथन

समकालीन महिला साहित्यकारों में नासिरा शर्मा का नाम अ
किसी परिचय का मोहताज नहीं रह गया है। साहित्य के क्षेत्र में उनकी पहचा
उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, विचारक, अनुवादक, नाटककार, यात्रावृत्तका
संपादक, टेलिफिल्मकार आदि के रूप में है। इन तमाम क्षेत्रों में अपने शोहरा
का झंडा फहराने में तो उन्हें बड़ी कामयाबी मिली है। लेकिन कथाकार के रू
में खासकर विश्व मानवता के कथाकार के रूप में वे बहुचर्चित हैं। एक ओर
भारतीय जीवन का चित्रण करती हैं तो दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय विषयों प
अपनी कलम चलाती हैं। स्वातन्त्र्योत्तर महिला लेखिकाओं ने नारी के दुःख-द
का तो वर्णन किया है और उसे अन्याय भी माना है मगर इसका विरोध बहु
कम लेखिकाओं ने ही वांछित अहमियत के साथ किया है। इनमें नासिराजी भ
हैं। नासिराजी की विलक्षण प्रतिभा अपनी कृतियों में इन सारी कुरीतियों क
विरुद्ध आवाज़ उठाती है। उनके पात्र अपने प्रति किये जानेवाले अत्याचारों क
लिए केवल पुरुष द्वारा माफी माँगने से तृप्त नहीं हैं, वे इसके लिए उन्हें दण
देना, उनसे प्रायश्चित करवाना भी चाहती हैं।

नासिराजी की रचनाओं का कैनवास बहुत विस्तृत है। उनव
रचनाएँ देशकाल एवं परिस्थिति को अपने अन्दर समेटे हुए हैं और पाठक क
मन को कहीं बहुत गहरे तक छूती हैं। उनकी रचनाओं में यथार्थ के बहुआयाम

चित्रण दिखाई देते हैं। जीवन का कोई भी मुद्दा कोई भी क्षेत्र उनकी लेखनी अछूता नहीं रहा है। सभी समस्याओं पर उनकी कलम चली है।

नासिरा जी की प्रत्येक रचना पर बहुत सारा स्वतन्त्र अध्ययन हुआ है। किन्तु उनकी रचना धर्मिता पर अध्ययन करने का प्रयास कम हुआ है प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा का विनम्र प्रयास है। शोध-प्रबन्ध का शीर्षक है 'नासिरा शर्मा का रचना संसार'। इसका शीर्षक तो 'रचना संसार' दिया गया तो भी मुख्य ध्येय कथा साहित्य के अध्ययन की ओर है। इसमें पाँच अध्याय हैं

अध्याय 1 - हिन्दी कथा साहित्य का समकालीन परिदृश्य

अध्याय 2 - नासिरा शर्मा : रचना-व्यक्तित्व

अध्याय 3 - नासिरा शर्मा की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ

अध्याय 4 - नासिरा शर्मा की रचनाओं में नारी अस्मिता

अध्याय 5 - नासिरा शर्मा की रचनाओं का शिल्प पक्ष

पहला अध्याय 'हिन्दी कथा साहित्य का समकालीन परिदृश्य' हिन्दी कथा साहित्य के समकालीन परिदृश्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किय गया है। समकालीनता पर विचार करने के साथ साथ समकालीन कथा साहित के विभिन्न परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए उसका वर्गीकरण जनवादी कथ साहित्य, नारी जीवन पर केन्द्रित कथा साहित्य, दलित कथा साहित्य, दे विभाजन की समस्या और सांप्रदायिकता पर आधारित कथा साहित्य, ग्रामी परिवेश का कथा साहित्य, महानगरीय परिवेश का कथा साहित्य, ऐतिहासि कथा साहित्य व्यंग्य कथ साहित्य आदि रूपों में किया गया है।

दूसरे अध्याय "नासिरा शर्मा - रचना व्यक्तित्व" में नासिराजी व रचनाओं के बारे में बताते हुए उनके व्यक्तित्व का परिचय देने का प्रयास है नासिरा शर्मा समकालीन हिन्दी साहित्य में मुख्य रूप से उपन्यासकार औ कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। 'पत्थरगली', 'शामी कागज़', 'संगसार', 'इ मरियम','सबीना के चालीस चोर', 'खुदा की वापसी', 'इन्सानी नस्ल', 'दूस ताजमहल', 'बुतखाना' आदि उनके कहानी संग्रह हैं। 'सात नदियाँ एक समन्दर 'शाल्मली', 'ठीकरे की मंगनी', 'जिन्दा मुहावरे', 'अक्षयवट' और 'कुइयाँजा उनकी उपन्यासों का नाम हैं। कहानी और उपन्यास के अलावा उन्होंने लेख संग्र और नाटक भी लिखे हैं। उन्होंने कई पुस्तकों का अनुवाद किया है और टी.व सीरियल और फिल्म भी बनायी है।

तीसरे अध्याय 'नासिराशर्मा की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ' यह देखने का प्रयास किया गया है कि सामाजिक यथार्थ को समकाली साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में किस प्रकार अभिव्यक्त किया है। इस अलावा नासिरा शर्मा की रचनाओं में चित्रित सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत कर का प्रयास भी किया गया है।

चौथे अध्याय "नासिरा शर्मा की रचनाओं में नारी अस्मिता" मं ना अस्मिता पर विचार किया गया है। नारी अस्मिता को पुरुष रचनाकारों ने अप रचनाओं में किस दृष्टिकोण से अपनाया है और महिला रचनाकारों व दृष्टिकोण कैसा रहा इसका अवलोकन करने का प्रयास किया गया है। समा में नारी की स्थिति को उनकी अस्मिता को चित्रित करनेवाली प्रमुख लेखिका नासिरा जी। उनकी रचनाओं में नारी को किस प्रकार चित्रित किया गया है उ रेखांकित करने की कोशिश की गयी है।

पाँचवें अध्याय का शीर्षक 'नासिरा शर्मा की रचनाओं का शिल्प पक्ष' है। नासिरा जी की रचनाओं का अध्ययन करते वक्त उनके शिल्प पक्ष व ओर भी ध्यान दिया गया है। उनकी रचनाओं के शिल्प का अध्ययन कथानव पात्रपरिकल्पना, परिवेश विधान, भाषा शैली आदि अपशीर्षकों में किया गया है

अन्त में 'उपसंहार' भी दिया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रवन्ध कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के प्रोफसर डॉ. आर. शशिधरन के निर्देशन में संपन्न हुआ है उनके बहुमूल्य सुझावों तथा प्रेरणावर्धक निर्देशन से ही यह अध्ययन पूर्ण हो पा है उनके प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगी।

कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग व अध्यक्षा प्रो. (डॉ) पी.ए. षेमिम अलियार के प्रति भी मैं अपना आभार प्रक करती हूँ। डॉक्टरल कमिटी के विषय विशेषज्ञ प्रो. (डॉ) एम. षण्मुखन के प्रा भी यहाँ कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। मानविकी संकाय अध्यक्ष एवं हिन्दी विभा के आचार्य प्रो. (डॉ) ए. अरविंदाक्षन के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ हिन्दी विभाग के अन्य गुरुजनों की सलाह एवं सहयोग के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ

विभाग के मेरे प्रिय मित्रों को भी मैं इधर याद करती हूँ। उनके स्ने प्रोत्साहन एवं सुझाव के लिए मैं उन लोगों से विशेष आभारी हूँ।

हिन्दी विभाग के पुस्तकालय के श्रीमती दीपिका एवं श्री. बालकृष्ण तथा शोध प्रबन्ध का शब्द संयोजक श्री. उदयन के प्रति भी मैं अपना आभा प्रकट करती हूँ।

मेरे हर कदम पर प्रार्थना और प्रोत्साहन के द्वारा मेरे साथ देने वा पिताजी डॉ. के.एन. राधाकृष्णन नायर, माताजी श्रीमती. जी. वत्सा और सार ससुर से मैं सर्वथा कृतज्ञ हूँ।

मेरा प्रिय पति सायीकुमार ने मेरे हर कदम पर आत्मविश्वा भरकर आगे बढ़ने का प्रोत्साहन न दिया होता तो, शायद यह कार्य पूर्ण न पाता। उनसे मैं विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूँ। मेरी बेटी नव्या और बे निवेद को मैं क्या धन्यवाद दूँ, यह तो उन दोनों के त्याग का फल है।

पुनः एक बार उन सभी महानुभावों, मित्रों, सहृदयों को मैं आभ प्रकट करती हूँ, जिनके प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग ने मेरे कर्मपथ को सुगम बना है। अन्त में सर्वोपरि मैं उस सर्वेश्वर के प्रति आभारी हूँ, जिनकी कृपा से य काम सही सलामत पूरा हुआ।

सविनय

रञ्जिनी कृष्णन. आर.

विषय सूची

अध्याय - 1

हिन्दी कथा साहित्य का समकालीन परिदृश्य 1 - 4

प्रस्तावना - समकालीनता - समकालीन कथा साहित्य के विभिन्न परिदृश्य - जनवादी कथा साहित्य - नारी जीवन पर केन्द्रित कथा साहित्य - दलित कथा साहित्य - भारत-विभाजन और संप्रदायिकता पर आधारित कथा साहित्य- ग्रामीण परिवेश पर आधारित कथा साहित्य - महानगरीय परिवेश पर आधारित कथा साहित्य - ऐतिहासिक कथा साहित्य - व्यंग्य कथा साहित्य - निष्कर्ष।

अध्याय - 2

नासिरा शर्मा : रचना - व्यक्तित्व 43 - 8

प्रस्तावना - जीवन परिचय - कृति परिचय - कहानी- पत्थरगली - शामी कागज़ - संगसार - इब्ने मरियम - सबीना के चालीस चोर - खुदा की वापसी - इनसानी नस्ल - दूसरा ताजमहल - बुतखाना - उपन्यास - सात नदियाँ एक समन्दर - शाल्मली - ठीकरे की मंगनी - ज़िन्दा मुहावरे - अक्षयवट- कुइयाँजान - निबन्ध और आलोचना - औरत के लिए औरत- किताब के बहाने - राष्ट्र और मुसलमान - मरजीना का देश इराक - नाटक और अन्य रचनाएँ - निष्कर्ष।

अध्याय - 3

नासिरा शर्मा की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ 90 - 14

प्रस्तावना - यथार्थ - समकालीन कथा साहित्य में यथार्थ का चित्रण - सामाजिक यथार्थ - सामाजिक यथार्थ और समकालीन कथा साहित्य - नासिरा शर्मा की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ - निष्कर्ष।

अध्याय - 4
नासिरा शर्मा की रचनाओं में नारी अस्मिता 144 - 19

प्रस्तावना - अस्मिता - नारी अस्मिता - नारी अस्मिता : पुरुष रचनाकारों के दृष्टिकोण - नारी अस्मिता : महिला रचनाकारों के दृष्टिकोण - नारी अस्मिता : नासिरा शर्मा की रचनाओं में - निष्कर्ष।

अध्याय - 5
नासिरा शर्मा की रचनाओं का शिल्प पक्ष 196 - 24

प्रस्तावना - नासिरा शर्मा के उपन्यासों में कथानक विधान - पात्र परिकल्पना - परिवेश विधान - भाषा शैली - अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग - नासिरा जी की रचनाओं में बिम्ब और प्रतीक - दृश्यबिंब - अनुभूति परक बिम्ब - प्रतीक - मुहावरे तथा कहावतों का प्रयोग - सूक्ति - शैली - निष्कर्ष।

उपसंहार 247 - 25

संदर्भ ग्रंथ 254 - 26

❖❖❖

अध्याय - 1

हिन्दी कथा साहित्य का समकालीन परिदृश्य

प्रस्तावना

हिन्दी के कथासाहित्य का उद्देश्य केवल एक कथा कहना नहीं हैं। उपन्यास और कहानी तो मानव के संघर्षमय जीवन का प्रतिफलन हैं। जीवन और जगत के समान यह कथासाहित्य भी उत्तरोत्तर बहुमुखी एवं जटिल होता गया है। भारतेन्दु युग में शुरू हुए कथासाहित्य को सुव्यवस्थित एवं सुदृढ़ रूप प्रेमचन्द युग में मिला। नवीन प्रवृत्तियों का आरंभ तो 1960 से माना जाता है। पर इनका पूर्णरूप से विकास सातवें और आठवें दशकों में ही हुआ और बीसवीं सदी के अंतिम दशक में एक नया रूप मिला। अपने इस शोध कार्य में आज से 30-35 वर्ष पूर्व से लेकर आज तक के कथासाहित्य को लिया है। मोटे तौर से सन् 1970 से लेकर अब तक की हिन्दी कथा-साहित्य को समकालीनता के दायरे में लिया है। समकालीन कथासाहित्य में कई विषय पर रचनाएँ हुए हैं। समकालीन कथासाहित्य की प्रवृत्ति के ओर जाने से पहले हमें समकालीनता के बारे में सोचना चाहिए।

समकालीनता

समकालीनता एक विचारणीय शब्द है। काल की दृष्टि से और भाव की दृष्टि से भी इसका निर्णय करना पड़ता है। किस कालखण्ड को समकालीनता के दायरे में रखा जा सकता है इसको लेकर सभी विद्वान

एकमत नहीं हैं। हिन्दी में 'समकालीनता' शब्द अंग्रेज़ी भाषा के विशेषण-परक कण्टेम्परेनियस (Contemporaneous) अथवा कण्टेम्पेरिनिटि (Contemporanity) शब्दों के रूप में प्रचलित है, जिसका अर्थ है एक ही समय में घटने वाला या समान काल में विद्यमान (Existing or accuring at the same time)।[1] कभी कभी समकालीनता शब्द के लिए समसामायिकता शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। ये दोनों शब्द पर्यायवाची हैं। समय और काल दो समानार्थी शब्द हैं; इसलिए समकालीनता और समसामयिकता से समान अर्थ का ही वोध होता है।

डॉ. रवीन्द्र भ्रमर ने 'समकालीन' शब्द के तीन अर्थ दिये हैं - (1) "काल-विशेष से संबद्ध (2) व्यक्ति-विशेष के कालयापन से संबद्ध (3) साहित्य, समाज अथवा प्रवृत्ति विशेष से संश्लिष्ट काल खण्ड।"[2] साहित्य की दृष्टि से किसी भी साहित्यकार अथवा आलोचक के लेखन काल में प्राप्त प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में इसका निर्थारण किया जा सकता है। "समकालीन शब्द विशेषण है और समकालीनता भाववाचक संज्ञा है। किसी व्यक्ति के समय या किसी कालखण्ड में प्रचलित या व्याप्त प्रवृत्तियों या स्थितियों को उस व्यक्ति के समकालीन माना जा सकता है और इन प्रवृत्तियों एवं स्थितियों के होने का भाव समकालीनता है।"[3]

डॉ. मंजुल उपाध्याय के अनुसार "समकालीन की परिभाषा में तीन तत्वों का समावेश हैं - पहला, यह कि समकालीन को आधुनिक होना

---

1. Jace M Haskins (Compiled) - The Oxford Mini Dictionary - P.103
2. डॉ. रवीन्द्र भ्रमर - समकालीन हिन्दी कविता - पृ. 9
3. डॉ. मंजुल जोशी - समकालीन हिन्दी कविता में आम आदमी - पृ. 1

चाहिए। दूसरे, उसे अपने समय के गहन और केन्द्रीय स्पन्दन को अपनी कृतियों में प्रतिबिंबित करना चाहिए और तीसरे, यह कि उसका कृतियों से गुजरती हुई ऐतिहासिक शक्तियों को उसके द्वारा मान्यता मिलनी चाहिए।"[1] समकालीन स्थितियों, परिवर्तनों और ऐतिहासिक, संक्रमणों के प्रति रचनाकार और पाठक का अपना एक विशेष दृष्टिकोण होता है। वह अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक और अन्य परिस्थितियों के प्रति विशेष रुख अपना सकता है। डॉ. नरेन्द्र मोहन ने लिखा है - "समकालीनता का अर्थ किसी कालखंड या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रण, निरूपण या बयान भर नहीं है बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना, उनके मूल स्रोत तक पहुँचना और निर्णय ले सकने का विवेक आर्जित करना है।"[2] डॉ. अरविन्दाक्षन ने समकालीन कहानी को बनाने के लिए दो तत्वों की आवश्यकता बताया है - "समकालीन कहानी सत्तर या अस्सी के दशक में रची जाने के कारण समकालीन नहीं है उसे प्रमुखतः दो तत्व समकालीन बना देते हैं। पहला है, दृश्यवत् काल की अदृश्य गहराइयों की पहचान। दूसरा है, रचना की शर्त पर अदृश्यताओं की प्रतिक्रिया के रूप में विकल्पों की अभिव्यक्ति।"[3]

असल में समकालीनता एक कालावधि-क्रम है। किसी निश्चित समय के कुछ पूर्व तक की कालावधि को संकेतित करता है। समकालीनता

---

1. डॉ. मंजुल उपाध्याय - समकालीन आलोाना की भूमिका - पृ. 145
2. नरेन्द्र मोहन - समकालीन हिंदी कहानी - प्रस्तावना
3. डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर - समकालीन हिंदी कथा साहित्य - पृ. 93

से मतलब एक काल में साथ-साथ जीना नहीं है। समकालीनता, अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रीय महत्व रखने वाली समस्याओं को समझने से समकालीनता उत्पन्न होती है। मानवीय मूल्यों की पुनः स्थापना और दानवता से मुक्ति के लिए संघर्षकामी रचना और रचनाकार आज के युग की प्रबलतम माँग है और इस माँग को पूरा करनेवाला रचनाकार ही समकालीन है।

समकालीन अपने युगबोध, इतिहास बोध और समसामयिक चेतना से जुड़ने का भावबोध है। समकालीनता समय-सापेक्ष होते हुए भी परिवेश से जुड़ी है। आज से वर्षों पहले लिखा गया साहित्य उस समय समकालीन था और आज लिखा जाने वाला भी समकालीन है। हिन्दी की हो या कोई और भाषा के साहित्य और साहित्यिक प्रवृत्तियों का वर्गीकरण एक निश्चित समय के अन्तर्गत रख नहीं सकता। कुछ समीक्षकों ने आज़ादी के बाद लिखी गयी रचनाओं को समकालीनता के अन्तर्गत रखा है तो कुछों ने 60 से लेकर 75 तक की रचनाओं को समकालीन का विशेषण दिया है। समकालीन शब्द से जुड़कर दो बातें आती हैं कि उसे 'कालबोध' के आधार पर समकालीन कहा जाय या भावबोध के आधार पर समकालीन कहा जाय।' भावबोध के आधार पर माना जा सकता है कि कहानीकार अपने कालानुसार, परिस्थिति अनुसार बदलते मनुष्य के रूप को उसके परिप्रेक्ष्य को उसकी विचारधार को और उसकी बदलती वृत्तियों को चित्रित करते हैं, जो परवर्ती समय का लगता है। भावबोध का यह पहलू रचना की समकालीनता को रेखांकित करता है। कालबोध के आधार पर समकालीन साहित्य अक्सर

सत्तर के बाद का है।[1] इसप्रकार सत्तर के बाद की रचनाओं को समकालीन साहित्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है। उल्लेखनीय बात यह है कि प्रत्येक कालखण्ड में एक विशिष्ट प्रवृत्ति के अन्तर्गत विशेष प्रकार की रचनाएँ होती है, साथ ही साथ अन्य प्रवृत्तियों पर आधारित रचनाएँ भी आती है। समकालीन कथासाहित्य की इस अंतिम वर्षों में लिखी गयी रचनाओं में जीवन की यथार्थ स्थिति से हमारा साक्षात्कार होता है।

समकालीन कथा साहित्य की चेतना, ग्रहीत या आयातीत न होकर अपने ही परिवेश से उद्‌भुत है। समकालीन दौर में जातिगत और धर्मगत अहंकार, राजनीतिक भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि पर करारी चोट करने वाले अनेक उल्लेखनीय उपन्यासों और कहानियों की रचना हुई है। नये कथाकारों ने भौगोलिक, आर्थिक, पारिवारिक जीवन संबन्धी नवीन प्रवृत्तियों और गतिविधियों का भी चित्रण किया है। मतलब यह है कि समकालीन कथा साहित्य समकालीन जीवन के तमाम क्षेत्रों पर आधारित विभिन्न विषयों को लेकर लिखा गया है। समकालीन साहित्य कुछ छिपाते नहीं इसलिए यह अपने समय के यथार्थ का प्रतिरूप बना है। समकालीन कथाकारों ने अपनी रचनाओं के कथ्य में अनेक नये प्रयोग प्रस्तुत करते हुए समाज के विभिन्न वर्गों की अनेकविध समस्याओं के साथ ही समाज एवं देश को घेरे विभिन्न प्रश्नों को अपने विषयवस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। समकालीन कथा साहित्य ने अपने युग के रस्मो-रिवाज़ और साहित्यिक

---

1. डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर प्रेमी (प्र.सं.) समकालीन कथा साहित्य - पृ. 103

अभिरुचियों को भी प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही प्रकृति के बाह्य रम्य रूप, अति प्राकृतिक तत्वों के प्रति रुझान, करुणा और संवेदना भी उसमें हैं, जिन्हें बिम्ब, प्रतीक संकेत तथा व्यंजना द्वारा चित्रित किया गया है।"[1] समकालीन कथा साहित्य जीवन के यथार्थ को अत्यंत गहरे धरातल पर व्यक्त करते हुए मनुष्य की अस्मिता के संकट के साथ व्यापक स्तर पर मूल्यसंकट के घेरों से जूझता हैं।

समकालीन कथा साहित्य का मुख्य पात्र मध्यवर्गीय मनुष्य है। जो अपने परिवेश से संपृक्त और सामाजिक जडों द्वारा अपने अस्तित्व की खुराक् पा रहा है। समकालीन जीवन के मूल्यों को स्वीकार करने की क्षमता साहित्यकारों की सबसे बडी विशेषता है। अपनी धरती से दूर अपने परिवेश से कटकर समकालीन साहित्य अपनी अनुभूति का विकास नहीं कर सकती।

मैं ने अपने इस शोध कार्य में 1970 के बाद के रचनाओं को ही समकालीनता के दायरे में लाया है। मेरा शोध विषय 'नासिरा शर्मा का रचना संसार' की ओर आने से पहले समकालीन साहित्य की प्रवृत्तियों, साहित्यकारों और उनके रचनाओं पर एक नज़र डालना आवश्यक है। समकालीन कथा साहित्य में संवेदना और सोच के धरातल पर परिवर्तन हुए हैं। टेक्नोलजी के दबाव और अर्थ-तंत्र की परिवर्तनों के फलस्वरूप परिवेश बदला और सामाजिक ढाँचे में भी परिवर्तन हुए है। इससे समाज प्रभावित हो रहे हैं। इन्हीं में से नई मानसिकतावाले पात्रों से युक्त रचनाएँ जन्म लेती हैं।

---

1. डॉ. ज्ञानवती अरोरा - समकालीन कहानी यथार्थ के विविध आयाम - पृ. 73

समकालीन कथा साहित्य के विभिन्न परिदृश्य

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में अनेक प्रवृत्तियाँ समानान्तर चल रही हैं। हिन्दी कथासाहित्य के अध्येताओं ने समकालीन कथा साहित्य को प्रवृत्ति के आधार पर कई वर्गों में विभक्त किया है। डॉ. गोपाल राय ने अपनी किताब 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' के समकालीन हिंदी उपन्यास का प्रवृत्तिगत वर्गीकरण ग्रामीण सन्दर्भ, ग्रामेतर प्रवर्ग', मध्यवर्ग, ग्रामेतर प्रवर्ग : कस्बे से महानगर तक, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, सांप्रदायिकता का सन्दर्भ, राजनीतिक सन्दर्भ, परिवार का नया सच, विदेशी परिवेश, युद्ध का सन्दर्भ, अतीत और उपन्यास, ऐतिहासिक जीवनी और उपन्यास, अमूर्तन की ओर आदि शीर्षकों में प्रस्तुत किया है।"[1] डॉ. रणवीर संग्रा ने समकालीन उपन्यास को सामाजिक उपन्यास, समाजवादी उपन्यास, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, प्रगति के पथ पर आदि वर्गों में रखा है।"[2]

समकालीन कथा साहित्य के विभिन्न परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए उसका वर्गीकरण विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है :-

1. जनवादी कथा साहित्य
2. नारी जीवन पर केन्द्रित कथा साहित्य
3. दलित कथा साहित्य

---

1. गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ. 399-460
2. रणवीर शंग्रा - समकालीन हिन्दी उपन्यास की भूमिका - पृ. 9-15

4. देश विभाजन की समस्या और सांप्रदायिकता पर आधारित कथा साहित्य
5. ग्रामीण परिवेश का कथा साहित्य
6. महानगरीय परिवेश का कथा साहित्य
7. ऐतिहासिक कथा साहित्य
8. व्यंग्य कथा साहित्य

जनवादी कथा साहित्य

जनवादी साहित्य का उदय सातवें दशक के अन्त में माना जाता है और इसकी स्पष्ट पहचान आठवें दशक में ही बन पायी है। "जनवादी कहानी ने वर्ग संघर्ष की चेतना को साफ रुपायित किया। टूटे थके हारे पात्रों की जगह इसमें संघर्षशील जीवंत और जुझारु पात्रों की सर्जना की और वर्ग संघर्ष के चित्रण पर जोर दिया।"[1] हिन्दी प्रतिक्रियावादी लेखकों की, आम आदमी से प्रतिबद्ध होकर साहित्य रचने की उभार लेती प्रवृत्ति के पीछे छिपी चाल का पर्दाफाश करना, जनवादी लेखकों का महत्वपूर्ण कर्तव्य है। जनवादी लेखक आम जनता की सेवा करना चाहता है। जनवादी कथाकार मालिक-मज़दूरों की रहन-सहन, बोलचाल, सूझ-समझ आदि को उनकी वर्गीय चारित्रिक विशिष्टताओं के संदर्भ में रचता है। इनकी रचनात्मक दृष्टि के भीतर देश की समूची जनता और आर्थिक राजनीतिक स्थितियाँ होती है।

---

1. डॉ. जितेन्द्र वत्स - साठोत्तर हिन्दी कहानी और राजनीतिक चेतना - पृ. 79

जनवादी कथा साहित्य आम आदमी के अधिकारों को हासि करने की लडाई लड रही है और धर्म न्याय, दया और समानाधिकार व नाम लेकर आम जनता को शोषण करने वालों के खिलाफ एक जुट होक संघर्ष की चेतना भी जागृत कर रही है। शोषण के विरुद्ध संघर्ष जनवा रचनाओं का मुख्य विषय है। "परोक्ष रूप में शोषण वर्ग की सत्ता को मजबू करने वाले तत्वों और सामाजिक - आर्थिक परिवर्तन के खिलाफ सक्रि चेहरों को भी बेनकाब करती है।"[1] नमिता सिंह, असगर वजाहत, रमाकां श्रीहर्ष आदि समकालीन लेखक जनवादी रचनाकारों में उल्लेखनीय है नमिता सिंह की 'समाधान' कहानी धर्म के नाम पर चली गयी चालों खिलाफ लड़ाई है। श्रीहर्ष की 'भीतर का भय' शोषक तन्त्र की क्रूरता औ मानवीयता को उजागर करती है।

जनवादी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में गाँव के माहौल व भी उजागर किया है। गाँवों में चलने वाले वर्ग संघर्ष को अपनी कहानियों व विषय बनाया है। जनवादी कहानी को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने उपेक्षित शोषित, पीडित, संघर्षरत आम आदमी को अपनी कहानियों में प्रतिष्ठि किया और हिन्दी कहानी को एक विशाल समुदाय से जोड दिया।"

नमिता सिंह की ही 'काले अंधेरे की मौत' नीरज सिंह व 'चक्रव्यूह टुटेगा' आदि जनवादी कथा साहित्य में उल्लेखनीय है।

गिरीश अस्थाना की 'धूप छाहीं रंग' दो खण्डों में विभक्त महाकाय उपन्यास है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की अनुभूत गाथा पेश करत

---

1. डॉ. जितेन्द्र वत्स - साठोत्तर हिन्दी कहानी और राजनीतिक चेतना - पृ. 79

है। उसी प्रकार जगदम्बा प्रसाद दीक्षित की "मुरदाधर' बम्बई की झोंपडपट्
में रहनेवाली अनेक पेशेवाली अभिशप्त औरतों की यातना की कहा
कहता है। गोपाल उपाध्याय की 'एक टुकडा इतिहास' मुख्यतः हरिजनों व
सामाजिक समस्या से जूझता है। हिमांशु जोशी की 'सूरज' उपन्यास आज़ा
के बाद हमारे समाज में आई नैतिक मूल्यों के गिरावट और चारित्रिक पत
को चित्रित किया है। शैलेश मिटियानी की 'मुठभेड़' उपन्यास में समाज
दिनोंदिन चली आ रही गुंडागर्दी और हिंसक क्रूरताओं का यथार्थ चित्र
हुआ है।

गिरिराज किशोर ने अपने 'ढाई घर', 'पहला गिरिमिटिया' आ
उपन्यासों में समस्त सामाजिक - राजनैतिक चेतना और विसंगतियों
अंतर्विरोधों को गहरी संवेदनीलता और तर्कपूर्ण चिंतन के साथ प्रस्तुत कि
है। 'पहला गिरमिटिया' में गाँधी तमाम-तमाम भारतीयों के समान एक आ
आदमी है जिसमें भय, संकोच घबराहट और ढेरों मानवीय कमज़ोरियाँ हैं
वह धीरे-धीरे कमज़ोरियों से लड़ता-लड़ता ऊपर उठा। बार-बार गिरक
ऊपर उठा। उपन्यास में गाँधी के संघर्ष को आम आदमी के संघर्ष के समा
चित्रित है। डॉ. प्रकाश मनु की राय है बीसवीं सदी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों व
जब-जब चर्चा होगी पहला गिरमिटिया को भूलना असंभव होगा।[1] भीष
साहनी की 'नीलू नीलिमा नीलोफर' हिन्दू-मुस्लीम विवाह और उससे उत्प
सामाजिक समस्याओं का सच्चा चित्र प्रस्तुत करता है। मनोहर श्याम जोश
की 'हमजाद' वैश्विक स्तर पर बढते बाज़ार वाद की मनोवृत्ति का उपज है

---

1. दस्तावेज़ 88 (लेख - शताब्दी के अन्त में उपन्यास : एक पाठक के नोट्स) पृ. 2

गोविन्द मिश्र ने 'अपने फूल, इमारतें और बंदर' में आज की एक ज्वलं सामाजिक राजनीतिक वास्तविकता, सब जगह व्याप्त भ्रष्टाचार आदि व विश्वसनीय अंकन किया है। विवेकीराय का 'सोनामाटी' भी इस कोटी प्रमुख उपन्यास है।

समकालीन महिला रचनाकारों ने भी अपने उपन्यासों औ कहानियों में समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है लेखिकाओं द्वारा जो रचनाएँ लिखी गयी हैं अपने अनुभव के आधार प आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को वडी गहराई उभारा है। मन्नु भण्डारी ने 'आप का बंटी' में तलाकशुदा पति पत्नी के प्रश को बच्चे की समस्या की ओर ध्यान देकर प्रकाश डाला है। केवल नारी व समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करना ही इनका उद्देश्य नहीं है बल्कि समकाली समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सभी स्तर प इनका ध्यान गया है। वहाँ की विसंगतियों और उनसे मुक्ति पाने की मार्ग बारे में भी ये अपने रचनाओं द्वारा विचार किया है। मन्नु भण्डारी 'महाभोज' में राजनीति के अमानवीय दुष्चक्र में पिसते हुए आम आदमी व विडम्बना पर ध्यान दिया गया है। मैत्रेयी पुष्पा की 'इदन्नमम्', 'चाक' अलव सरावगी की कलिकथा वाया बाइपास', राजी सेठ की तत्सम', नासिरा शर्म की 'शाल्मली' आदि रचनाओं में सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने का प्रया हुआ है। नासिरा जी की 'उसका बेटा', 'गूँगी गवाही', सतघरवा आदि क कहानियाँ भी इसी तरह का है। चित्रा मुद्गल की 'भूख' और 'चेह कहानियों में आर्थिक अभाव के कारण समाज में होनेवाली समस्याओं व चित्रण है।

कमलेश्वर की 'मांस का दरिया' कहानी वेश्या समस्या को लेव समाज के भयंकर कोढ़ को प्रस्तुत करती है। विष्णु प्रभाकर की 'एक अं कुंती' नारी जीवन के उस कठोर यथार्थ की अभिव्यक्ति है जो पुरुष अं समाज के कारण अभिशप्त बन जाता है। संजीव का 'घर चलो दुलारीबा गोविन्द मिश्र की 'धांसू' आदि समकालीन कहानियों में समाज के पतन व आलोचना है। नासिरा शर्मा के 'चिमगदडे' आज शिक्षा के क्षेत्र में होनेवा समस्याओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। उनकी ही 'उसका बेटा' कहा भी इसी तरह समाज के यथार्थ को चित्रित करने में सफल हुआ है। रमाक का 'जुलुस वाला आदमी' यथार्थवादी धारा का बहुत मत्वपूर्ण उपन्यास है स्वयं प्रकाश का 'बीच में विनय' भी इसी श्रृंखला की एक कडी है कामतानाथ का 'काल-कथा', जगदीशचन्द्र का 'नरक कुंड में वास', रवी कालिया का 'खुदा सही सलामत है', द्रोणावीर कोहली का 'वाह कैम्प विद्यासागर नौटियाल का 'सूरज सबका है' और 'भीम अकेला', पंकज वि का 'लेकिन दरवाजा' आदि खरे यथार्थवादी उपन्यास है जो सीधे-सीधे इ समाज के दुःख-दर्द और समस्याओं से जूझते हैं। ये उपन्यास अपनी ज़मी के दर्द से पैदा होकर आर्थिक-सामाजिक तथा ऐतिहासिक पंहलुओं से समा की पुनर्व्याख्या का काम भी करते हैं। समकालीन जीवन यथार्थ को अप रचनाओं का विषय बनाने वाला विवेकीराय का 'सेनामाटी' प्रसिद्ध उपन्यास है

नारी जीवन पर केन्द्रित कथा साहित्य

समकालीन कथा साहित्य में नारी एक मुख्य विषय बनी है प्राचीन काल से वर्तमान तक उसकी स्थिति में अनेक परिवर्तन हुए

आदिकालीन साहित्य में नारी को बहुत अधिक सम्मान प्राप्त होता था लेकि उसके बाद नारी की स्थिति बहुत दयनीय होने लगी। स्वतन्त्रता प्राप्ति बाद देश विभाजन की आँधी में नारी को बहुत अधिक समस्याओं का सामन करना पडा। इन समस्याओं ने नारी को अपनी इस स्थिति से जाग उठने व प्रेरणा दी। उसने समझ किया कि व्यक्ति और समाज की विकृतियों का सब बडा शिकार उसे ही बनना पड़ा है। वर्तमान युग में आते-आते वह अप परिपार्श्व के प्रति सजग हो गयी और प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ बराब का हक मांगने लगी। सभ्यता ने नारी स्वातन्त्र्य को स्वीकारा, कानून ने उ पुरुष के बराबर चलने का हक दिया। आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से उस स्वाभिमान का भाव भरा। इन सब से नारी अपनी समस्याओं से लडने व ताकत आर्जित तो किया फिर भी उनके साथ समाज का व्यवहार अब भ बुरी नज़र का है। डॉ. रणवीर रांग्रा ने आधुनिक नारी के बारे में लिखा कि "संस्कारों में वह प्राचीन ही रही पर आधुनिकता को उसने फैशन के रू में ओढ़ लिया।"[1] नारी के इस रूप की ओर भी साहित्यकार आकृष्ट हुए

समकालीन साहित्य में नारी के उस स्वतन्त्र अस्तित्व की ओ साहित्यकारों का ध्यान आकृष्ट हुआ। पुरुषाधीनता से मुक्ति पाने के प्रया में नारी ने अकेला रहना स्वीकार किया, परिवार में होने वाले अत्याचारों प्रति उसने विद्रोह की राह अपनायी, आर्थिक रूप से स्वावलम्बन पा लिय शिक्षा द्वारा बौद्धिक रूप से जाग उठी, राजनीति जैसे क्षेत्रों में प्रवेश क

---

1. डॉ. रणवीर रांग्रा - समकालीन हिन्दी उपन्यास की भूमिका - पृ. 14

बाहर के उत्तरदायित्वों को अच्छी तरह निभाने की क्षमता भी उसने प्राप्
की। उसकी यह स्वतन्त्रता समाज के कुछ वर्ग को अच्छा नहीं लगा। ये सभ
प्रवृत्तियाँ कथा साहित्य का भी विषय बनकर जनता के सामने आयीं
विधवा-विवाह, नारी-शिक्षा, दहेज-प्रथा, अनमेल विवाह, पतिव्रता धर्म, मर्यादापाल
समानाधिकारों की माँग आदि समस्याओं को प्रस्तुत करने तथा उनव
समाधान ढूँढने का प्रयास साहित्य में किया गया।

गृहस्थी पर बढ़ता हुआ आर्थिक बोझ, स्वतन्त्रता की कामन
और नागरिक जीवन की सुख का आकर्षण आदि मिलकर नारी को नौक
के क्षेत्र में लाकर खडा कर दिया। नौकरी के साथ-साथ गृहस्थी का बोझ भ
उसके साथ ज्यों के त्यों बना रहा और यह एक अतिरिक्त दायित्व बनक
उस पर आ पडा। पहले नारी का शोषण तो घर में होता था अब बाहर भ
जहाँ वे काम कर रही है, होने लगा। इन सब के बावजूद भी वे पू
ईमानदारी से अपने दोनों ही दायित्व निभाने का परिश्रम करने लगी। कु
नारी तो इन दो पाटों के बीच पिसने लगी और कुछ इन को सफलतापूर्व
कर दिखाया। समकालीन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में इन समस्याओ
का बखूबी वर्णन किया है।

विष्णु प्रभाकर का 'कोई तो' और 'अर्थ नारीश्वर' की केन्द्री
कथा नारी-नियती की बहुआयामी त्रासदी है। भीष्म साहनी का 'कुंतो' भ
इसी तरह का है। सुरेन्द्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिए' में स्त्री के संघर्ष की कथ
को संजीदगी और गहरे पीडा बोध के साथ प्रस्तुत किया गया है। रामदरः
मिश्र के 'थकी हुई सुबह' और 'बिना दरवाजे का मकान' स्त्री समस्या प

प्रकाश डालने वाला उपन्यास है। शशिभूषण सिंहल के 'साधना' तथा 'औ कुछ और' में स्त्री जीवन की करुण विडंबनाएँ हैं।

समकालीन महिला रचनाकारों की लगभग सभी कहानियों अं उपन्यासों स्त्री समस्याओं पर केन्द्रित है। आधुनिक स्त्री की पुनर्विवाह व समस्या को राजी सेठ का 'तत्सम' वहुत गहरे संवेदनात्मक स्तर पर उठा गया है। उषा प्रियंवदा के 'शेष यात्रा' नामक उपन्यास में अमेरीकी परिवे में गिरफत भारतीय नारी की नियती और उसके साहस और विवेकपू विकल्प के चुनाव का चित्रण किया है। आधुनिक समाज में विज्ञापन व दुनिया में पिसती हुई स्त्री, जो भूख या घर की आर्थिक ज़रूरतों के कार ऐसी दुनिया में आति है उसका सच्चा चितर तो चित्रा मुद्गल का 'एक ज़मी अपनी' देती है। सिम्मी हर्षिता का 'यातना शिवर', प्रभाखेतान का छिन्नमस्त नमिता सिंह का 'अपनी सलीबें' आदि इसी तरह नारी समस्या पर आधारि है। मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' में आधुनिक नारी चेतना को विभिन्न अवलोक बिंदुओं से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नम और 'चाक' भी नारी समस्या पर प्रकाश डालने वाले उपन्यास है। नासि शर्मा भी नारी समस्या पर अपना कलम चलानेवाली रचनाकार हैं। उन्हों अपने उपन्यास 'शाल्मली' में कामकाजी नारी की समस्या को तथा 'ठीकरे व मंगनी' में मुस्लिम समाज की रूढियों से बचकर अपने अस्तित्व को बना रखने की प्रयत्न करने वाली नारी की दशा को चित्रित किया है। उनकी 'तावूत', 'पत्थर गली', 'बावलीं', 'सिक्का' और कहानी संग्रह 'खुदा व वापसी' की कई कहानियाँ नारी की विविध समस्याओं को हमारे साम

प्रस्तुत करती हैं। शिवानी कृत 'तर्पण', 'मणिक', 'चन्नी' आदि कहानियों नारी की विभिन्न समस्याओं की चर्चा की गयी है। मालती जोशी की 'टूट से जुडने तक' कहानी में एक नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व को उभारा गया है। उ तरह कहानी संग्रह 'एक घर सपनों का' के लगभग सभी कहानियाँ ना समस्या पर प्रकाश डालने वाले हैं। कृष्णा अग्निहोत्री की 'चातकी' कहा में पुरुष की दहेज लोलुपता के कारण कष्ट झेलने वाली एक स्त्री की करु दशा का वर्णन है। सूर्यवाला की 'व्यभिचार' में ऐसी नारी का चित्रण है अपनी ही द्वन्द्वात्मक मानसिकता की शिकार हो गई है और मांसलता तिलिस्म को तोडने की असफल कोशिश कर रही है। महिलाओं का रच संसार अत्यन्त विस्तृत हुआ है। मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन के अन्तर्विरो और पुरुष-प्रधान समाज में अपनी पहचान के लिए संघर्षरत नारी-जीवन व विविध आयामी तस्वीरें इनकी रचनाओं में प्रस्तुत हुई हैं। इनके नारी पा अपनी खुशी, मुक्ति और अधिकारों की प्राप्ति या अस्मिता की रक्षा के लि साहसपूर्ण कदम उठाने ही पहल करते हैं। ये नारी पात्र सजग आत्मचेत और आत्मनिर्णय से लैस होकर वे न केवल सामन्ती परिवेश और रू मर्यादाओं के गढ़ को तोड़ते है बल्की नकारात्मक ढंग से अपने व्यक्तित्व व रचना भी करत हैं।[1]

दलित कथा साहित्य

भारतीय समाज की वर्ण व्यवस्था में निचली श्रेणी का वर्ण औ उनसे संबन्धित विभिन्न जातियों और वर्ण व्यवस्था में बाहर जीने वाली जन

1. गोपालराय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ. 427

जातियाँ जो हिन्दू व्यवस्था में परम्परा से अछूत सांस्कृतिक दृष्टि से त्याज घोषित, आर्थिक दृष्टि से शोषित और सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित, बहिष्कृ समाज दलित कहलाता है। दूसरी तरफ समाज के उच्च वर्ग द्वारा आर्थि शोषण से पीडित, दबा-कुचल वर्ग जो किसी भी वर्ग, समूह, जाति से सम्बन रखता हो उसे भी दलित शब्द के अन्तर्गत रखा जा सकता है। साहित्य को में दलित वर्ग का विवरण इस प्रकार दिया गया है - "यह समाज का निम्नत वर्ग होता है, जिसको विशिष्ट संज्ञा आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुरूप ही प्राप होती है। उदाहरणार्थ दास-प्रथा में दास, सामन्तवादी समस्या में किसान पूंजीवादी व्यवस्था में मज़दूर समाज को दलित कहलाता है।"[1]

दलित याने केवल हरिजन और नवबौद्ध नहीं, गाँव की सीमा के बाहर रहनेवाली सभी अछूत जातियाँ, आदिवासी, भूमिहीन मज़दूर, श्रमिक कष्टकारी जनता और यायावर जातियाँ सभी दलित के अन्तर्गत आते हैं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों को भी इसके अन्तर्गत रखा जा सकता है समाज में अपेक्षित सुविधाओं और सामाजिक अधिकारों से वंचित वर्ग व विपन्नता, उनके आर्थिक शोषण और उत्पीडन का परिणाम माना जाता है उनकी दयनीय अवस्था को देखकर उनकी सामाजिक स्थितियों में सुधार ला का प्रयास हो रहा है। दलितों को सामाजिक समता दिलाने के लिए क सामाजिक आंदोलन चलाए गए। इन आंदोलनों के परिणामस्वरूप दलि साहित्य का जन्म हुआ। समकालीन साहित्यकारों ने दलितों की वेदना उन निरन्तर संघर्ष करते रहने की अनिवार्यता, सुविधा भोगी लोगों के प्रा

1. नासिरा शर्मा - साहित्य कोश - पृ. 356

उनका विरोध तथा प्रतिकूल स्थितियों मे भी जीने की विवशता का चित्र किया है। "दलितों का दुःख, परेशानी, गुलामी, अधपतन और उपहास साथ ही दरिद्रता का कलात्मक शैली से चित्रण करने वाला साहित्य दलित साहित्य है।"[1]

अंबेडकर के अनुसार वही साहित्य दलित साहित्य हो सकता जो जातिवादी असमानता को निर्वस्त्र करने के साथ-साथ सकारात्म मानववादी सामाजिक परिवर्तन का भी तीव्र अभिलाषी हो। जाति आधारि भेद-भाववाला साहित्य दलित साहित्य है इसमें कोई शक नहीं, परन्तु केव वही साहित्य दलित साहित्य नहीं होगा। इसके क्षितिज बहुत विशाल औ गतिशील हैं जो जातिवादि शोषण के साथ-साथ ही शोषण की समग्रता व अपने दायरों में समेटते हैं। दलित साहित्य लेखन का प्राथमिक कार्य पीड़ि दलित समाज को प्राप्य मानवीय अधिकारों का समर्थन करना है। दलि साहित्य में उपेक्षित समाज की विवशता, दीनता, अभाव, यातना का संदर्भ उजागर हुआ। सामाजिक न्याय और उनकी समता के लिए संघर्ष औ मानवीय अधिकारों के प्रति सजगता का चित्रण कथाकारों का लक्ष्य था दलित कहानियों की कथाभूमि प्रायः सामान्य जीवन-प्रसंगों से नहीं बनती दलित समाज की पीड़ा, उनके साथ होनेवाले अपमानजनक व्यवहारों पर कहानीकार की दृष्टि जाती है। दलित समाज के लोगों की आशाओं आकांक्षाओं और दुःख-दर्द की यथार्थ अभिव्यक्ति के साथ-साथ सामाजि

---

1. डॉ. शरणकुमार लिंबले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - पृ. 38, 39

आर्थिक विषमताओं से मुक्ति, शोषण उत्पीड़न के विरुद्ध विद्रोह की चेतन आत्म-सम्मान से जीने की प्रबल इच्छाशक्ति तथा एकजुट होकर अप अस्मिता की पहचान के लिए संघर्ष की चेतना जागृत करना, इन सबव दलित-समाज में प्रसारित करना दलित साहित्यकारों का उद्देश्य है।

डॉ. रामदरश मिश्र, आशिष सिन्हा, शशिप्रभा शास्त्री, नमित सिंह; मधुकर सिंह जगदीशचन्द्र मोहनदास नैमिश राय, जयप्रकाश कर्दम, प्रे कपाडिया, ओमप्रकाश वात्मीकि आदि ऐसे हस्ताक्षर है। जिनकी रचनाओं दलितों का जीवन जाति वर्ण व्यवस्था के शिंकजे से दफना हुआ, पेट की भू से भरने की विवशता, सामंती और पुंजीवादी अत्याचारों को पीठ पर झेलन सामाजिक, आर्थिक विषमता के अन्याय से पिसता, सफेद पोश वर्ग व अमानवीयता का बली चढ़ता और सरकारी व्यवस्था के तन्त्र का जहरील डंस जो नगर से लेकर गाँव तक अपनी खूनी पंजे फैलाकर दलितों के खू से खेलता हुआ प्रस्तुत है। समकालीन कहानी में दलितों के श्रम शोषण व यथार्थ उभारा है, जहाँ गरीब आदमी की वास्तविक वेदना को व्यक्त कर का प्रयास किया है। समकालीन कहानीकारों ने दलित एवं शोषित वर्ग अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष की चेतना जगाया है। श्रम और संघ तो दलित चेतना का आधार है। दलित साहित्य के संसार में कहीं पुंजीवाद और सरकारी तन्त्र के शोषण से पिसते आदिवासी हैं तो कहीं ग्रामी व्यवस्था के सामंती सर्पों के दंश से मरते श्रमिक है, कहीं हरिजनों औ बंधुआ मज़दूरों की दारुण व्यथा का चित्रण है। समाज को शोषक-शोषित दो बडे वर्गों में बाँटकर शोषित वर्ग के जीवन की आशा आकांक्षाओं व अपनी रचनाओं में प्रतिफलित करना समकालीन लेखकों का उद्देश्य है।

हबीब कैफी का उपन्यास 'गमना' आदिवासी समाज की कहा
है, जिसे जमींदारों और धनपतियों के क्रूर शोषण का शिकार होना पड़ता है
गिरिराज किशोर के 'यथाप्रस्तावित' और 'परिशिष्ट' उपन्यासों में सामाजि
अन्याय और क्रूरता के शिकार तथा प्रशासनिक और शैक्षणिक व्यवस्था
अमानवीय ढाँचे में पिसते-छटपटाते दलित वर्ग का चित्रण किया गया है
सदियों से सवर्णों के शोषण, दमन और घृणा का शिकार यह वर्ग यद्यपि आ
भारतीय संविधान और अपनी जागरूकता के बल पर मानव अधिकारों
लिए संघर्ष कर रहा है पर आज भी सामाजिक और आर्थिक शोषण, सवर्
की सामूहिक उपेक्षा और उत्पीड़न तथा एक अघोषित युद्ध का शिकार है
रमेशचन्द्र शाह के 'किस्सा गुलाम' उपन्यास में डोम जाति में जन्मे कुन्दन क
कुंठा और विद्रोह भावना का अंकन किया गया है। कुन्दन दलितों में जाग्र
राजनीतिक चेतना और सामाजिक विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है। व
उस सामाजिक व्यवस्था का विरोध करता है जिसमें एक शूद्र किसी ब्राह्म
लड़की से विवाह नहीं कर सकता। वह उस धर्म को नकारते है जो दलि
को अपमानित करता है। दलित उपन्यास की परंपरा में शिवप्रसाद सिंह
'शैलूष' को भी रखा जा सकतां है; जिसमें नट-कबीलों की जीवन शैली औ
अपने हक के लिए संघर्ष का चित्रण किया गया है। जगदीश चन्द्र के 'धर
धन न अपना' में दलितों की नारकीय जीवन-स्थितियों और उच्च वर्गी
समाज द्वारा उनके शोषण और दमन का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'कभी
छोडो खेत' और 'मुट्ठी भर कांकर' उपन्यासों में दिल्ली-हरियाणा क्षेत्र

---

1. गोपाल राय - हिंदी उपन्यास का इतिहास - पृ. 299

जाट किसानों की जिन्दगी का कटु यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। मैत्रेयी पुष्
का 'चाक' और 'झूलानट' में भी खेती से जुडे जाटों की शोषण का चित्रण है
उनकी 'आल्मा कबूतरी' भी ऐसे ही एक उपन्यास है। अब्दुल बिस्मिल्ला
की कहानी 'खाल खींचने वाले' और पुष्पा सक्सेना की कहानी 'एक चिंगा
छोटी सी' भी दलितों के शोषण पर केन्द्रित है। विवेकीराय का 'सोनामाटी
मिथिलेश्वर का 'यह अंत नहीं', वीरेन्द्र जैन का 'डुब' और 'पार' में '
दलित-शोषित वर्ग की दयनीय स्थिति का वर्णन है। अब्दुल बिस्मिल्लाह
अपनी 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' नामक उपन्यास में काशी के मुसलम
बुनकरों को, सामाजिक दृष्टि से चाहे दलित वर्ग में न रखा जाए पर आर्थि
दृष्टि से वे इसी परिधि में हैं, इन बुनकरों की दयनीय जीवन-दशा तथा उन
उभरती हुई वर्ग चेतना का प्रामाणिक और प्रभावपूर्ण अंकन किया है
नासिरा शर्मा का 'आया बसन्त सखी' नामक कहानी में सुल्ताना और बे
सायरा की कहानी के ज़रिए गरीब लोगों पर होने वाले शोषण पर प्रका
डाला है। 'कातिब', 'कच्ची दीवारें', 'चाँद तारों की शतरंज' आदि भी इ
तरह की कहानियाँ है। इधर दलित जीवन पर दलित लेखकों ने भी व
उपन्यास और कहानियाँ लिखी हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकी के कहानी संकल
'सलाम' और 'घुसपैठिये' में संकलित कहानियाँ है।

भारत-विभाजन और सांप्रदायिकता पर आधारित कथा साहित्य

भारत विभाजन इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना ही नहीं भार
के लिए एक क्रूरतम त्रासदी भी है। यह राजनीतिक होने के साथ सांप्रदायि
भी है। विभाजन के समय, उसके पूर्व ओर पश्चात् व्यक्ति की ही नहीं समा

और राषट्र के स्तर पर भी अनेक घटनाएँ घटित हुई हैं जो मानवीय संवेद
को झकझोरने लायक है, साथ ही उनके सामाजिक दायित्व-बोध को जागृ
करने की शक्ति उसमें समाहित है। भारत विभाजन ने जिन समस्याओं व
जन्म दिया वे अनेक रूपों में अब भी हमारे सामने हैं। आजादी की प्राप्ति
साथ ही हिन्दु-मुस्लीम साम्प्रदायिक फसाद उठ खडे थे, वे आज भी बरकर
है, कोई न कोई बहाना बनाकर भड़क उठते हैं। सदियों से साथ-साथ भार
पर रहते आये हिन्दु-मुसलमानों के वीच धीरे-धीरे पनपता घोर अविश्वा
सांप्रदायिक दंगे, चिरपरिचित भूमि छोड़कर बिल्कुल अनजान जगह आश्र
की तलाश में जानेवालों पर हुए अमानुषिक अत्याचार, अपने भूमि से उजड़
और उखड़ने की वेदना, नये देश में बसने की समस्या आदि विभाजन का
की घटनाएँ मानवीय संदर्भ प्रस्तुत करनेवाली स्थितियाँ है। विभाजन
फलस्वरूप भारत में बचे अल्पसंख्यक मुसलमानों को बहुत अधिक कष्टता
सहनी पडी। उसी तरह पाकिस्तान के हिन्दुओं को भी। दोनों देशों व
राजनीति इसे और कठिन बनाया।

विभाजन की त्रासदी ने जन जीवन तथा साहित्य पर गह
प्रभाव डाला। इसी कारण विभाजन के बाद का साहित्य सीधे विभाजन व
घटनाओं या समस्याओं पर आधारित न होकर विभाजन के कारण हु
परिवर्तनों से प्रभावित हुआ। विभाजन और सांप्रदायिकता पर आधारि
कथा साहित्य लोगों की मानसिकता को मुख्य विषय वनाया। इन परिप्रेक्षों
लेखकीय चेतना को उद्देलित कर अनेक सार्थक रचनाओं की पृष्ठभूमि
तैयार की।

विभाजन संबन्धी समकालीन कथा साहित्य में राजनीतिक प
को दिखाने के साथ उस ऐतिहासिक और सांस्कृतिक हादसे के विभिन्न स
तथा उससे उत्पन्न होने वाली आन्तरिक और बाह्य समस्याओं और इस
अन्तर्निहित मानवीय करुण स्थिति का मार्मिक वर्णन है। कमलेश्वर, कृष्
सोबती, बदी उज्जमा, भीष्म साहनी, राही मासूम रज़ा, नासिरा शर्मा, मर्ह
सिंह आदि साहित्यकारों की अनेकानेक रचनाओं में विभाजन के विवि
पक्षों का विभिन्न आयामों में चित्रण और विश्लेषण हुआ है। विभाज
सम्बन्धी कथा साहित्यों में कुछ रचनाओं का मूल आधार विभाजन की घट
है तो कुछ में उस घटना के परिणामों को झेलने वाले मनुष्य की मानसिक
का चित्रण है। भीष्म साहनी का 'तमस' में विभाजन के घटनाक्रम तथा उस
परिणामों को चित्रित है। इसे पढ़कर यह महसूस होता है बडे लोगों के स्व
की पूर्ति करनेवाली नीतियाँ जनसाधारण के जीवन से खिलवाड करके ब
बड़े राष्ट्रों का इतिहास और भूगोल बदल देती है।[1]

विभाजन की पृष्ठभूमि पर रचित शही मासूम रज़ा के 'ओस क
बुँद', 'टोपी शुक्ला' आदि उपन्यास विभाजन के बाद की त्रासद परिस्थिति
वदलते जीवन मूल्यों तथा अपनी ही भूमि पर अजनबी होते जा रहे भारती
मुसलमान के पीड़ा और अकेलेपन की कथा है। वतन का प्रेम, धर्म अं
संप्रदाय के कृत्रिम भेदभाव का विरोध, सहज मानवीय संवेदना में विश्वा
जिजीविषा में आस्था और आशावाद, गरीब जनता के दुःख दर्द के प्र
गहरी सहानुभूति तथा स्वतंत्र भारत में होनेवाले सांस्कृतिक मूल्यों के क्रमि

1. डॉ. रामचन्द्र तिवारी - हिंदी का गद्य साहित्य - पृ. 190

ह्रास के प्रति चिन्ता; ये खास मुद्दे हैं जो राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में बा
बार उठाये गये हैं।"[1] बदी उज्जमा ने अपने छाको की वापसी शीर्षक उपन्या
में दिखाया है कि देश का विभाजन गलत था। छोटी हैसियत के मुसलमा
के लिए पाकिस्तान का बनना न बनना कोई अर्थ नहीं रखता। अपना वत
अपनी जमीन, अपने लोग अपनी संस्कृति एक दिन में नहीं बदली
सकती। इससे टूटने का दर्द हमें बहुत गहरे में कहीं तोड़ देता है।[2] इ
प्रकार उषावाला के कुन्ती के बेटे, भगवतीचरण वर्मा कृत 'प्रश्न अ
मरीचिका', 'भटके हुए लोग', कृष्णा सोबती की 'सिक्का बदल गया', 'मेरी
कहाँ', बदी उज्ज़मा की ही 'परदेशी', देवेन्द्र ईस्सर की 'मुक्ति' आदि विभाज
पर आधारित प्रसिद्ध उपन्यास और कहानियाँ हैं। विभाजन की त्रासदी
आधार बनाकर विष्णु प्रभाकर ने 'मुरब्बी', 'शम्भु मिस्त्री', 'सफर का सार्थ
'वह रास्ता', 'अगम अथाह' आदि कहानियों का संग्रह 'मेरा वतन'
प्रकाशित किया है। द्रोणवीर कोहली के 'वाह कैम्प' विभाजन के दर्द
हमारी आखों के आगे ताजा कर दिया है। 'धरती धन न अपना' में जगदी
चन्द्र ने विभाजन के बाद गाँव के मूल जीवन में व्याप्त अमानवीय आर्थि
और सामाजिक विपमताओं की करुण कथा प्रस्तुत किया है।

भारत विभाजन से उत्पन्न समस्याओं में सांप्रदायिक समस्या सब
बडी रही है। यह भारतीय समाज की ऐतिहासिक सच्चाई रही है और हिन
के लेखक अपने-अपने ढंग से इस सच्चाई से संवेदनात्मक स्तर पर जुझते

---

1. डॉ. रामचन्द्र तिवारी - हिंदी का गद्य साहित्य - पृ. 194
2. वही - पृ. 195

हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'झीनी बीनी चदरिया', मंजुर एहतेशाम के 'सुख बरगद', भीष्म साहनी के 'नीलू, नीलिमा, नीलोफर' आदि इस सांप्रदायिक समस्या को प्रस्तुत करनेवाले उपन्यास है। चन्द्र किशोर जायसवाल व 'शीर्षक' भी सांप्रदायिक दंगों के क्रूर यथार्थ पर लिखा गया उपन्यास है समकालीन लेखिकाओं की रचनाओं में गीतांजलि श्री का 'हमारा शहर उ बरस', सांप्रदायिकता के मसले को लेकर लिखा गया एक महत्वाकांक्ष उपन्यास है, जो हिंसा और सांप्रदायिकता की जडों तक जाता है। हमा समाज की जडों में पैठी यह सांप्रदायिक हिंसा संजना कौल के 'पाषाण युग में एक नये रूप में नज़र आती है। प्रियंवद का 'वे वहाँ कैद हैं' सांप्रदायिक सोच और फासिवाद पर सर्जनात्मक विमर्श की दृष्टि से सशक्त है।

विभाजन के कारण देश में आज भी जो सांप्रदायिक दंगे हो र हैं, विभाजन के फलस्वरूप अपना वतन छोडने को विवश असहाय शरणार्थि की व्यथा, अपहत स्त्रियों की वेदना तथा उनकी समस्याओं एवं विभाजन जुडी मनुष्य की क्रूर मानसिकता के उद्‌घाटन के साथ-साथ इन सबक जिम्मेदार अवसरवादी राजनीति के प्रति आक्रोश का स्वर उन सबका चित्र इन रचनाओं में मिलता है। विजाजन की त्रासदी उत्पन्न करुण परिस्थितिय का मार्मिक चित्रांकन इन रचनाकारों ने अपने-अपने ढंग से किया है। नासि शर्मा ने भी अपने उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में विभाजन के फलस्वरूप भार और पाकिस्तान में विभाजन एक परिवार के लोगों की दयनीय मानसिक स्थिति के वर्णन के माध्यम से विभाजन की समस्या को झेलने वाले समस्त लोगों की मानसिक स्थिति को हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है

उनकी 'सबीना के चालीस चोर', 'नौ-तपा', 'सरहद के इस पार' जैसी व कहानियों में देश विभाजन से उत्पन्न समस्याओं का मार्मिक चित्रण है।

बदली हुई परिस्थितियों के कारण मनुष्य की परिवर्तित मानसिक तथा विभाजन के कारण विघटित मानव मूल्यों, उसके कारण उत्पन्न निराश द्वन्द्व और सुविधा के संवेदनात्मक चित्र इन रचनाओं में अंकित हुए विभाजन ने भारतीय जनजीवन को सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक यहाँ त आर्थिक जीवन को भी प्रभावित किया है। कई प्रसिद्ध साहित्यकार विभाज की घटना से संबद्ध रहे तो यह उनकी निजी त्रासदी थी।

ग्रामीण परिवेश पर आधारित कथा साहित्य

गाँव तो भारतीय संस्कृति का मुख्य स्थान है। गाँवों की दशा दिन-ब-दिन बदल रही है। जो गाँव पहले था उसकी वह शान्ति अं निष्कलंक भाव तो अब नहीं है। वहाँ शहरी परिवेश अपना पूरा प्रभ जमाता जा रहा है। गाँववालों का मत था कि शहर जाकर नई पीढी बिग जाती है। यहाँ की सीधी-सादी ग्रामीण महिलाएँ शहरी महिलाओं के प्रभ से फैशनेबुल होने लगती हैं। समकालीन परिवेश में गाँव भी काफी क्रूर हो हुए दिखाई देते हैं। गाँव की मानवीयता उत्तरोत्तर कम पड़ने लगी है। आ की खोखली राजनीति के दबाव में विसंगतियाँ भी तीव्रतर हो गई है। कप और छल के साथ चलने वाले राजनीतिज्ञों ने भारतीय गाँवों को और अधि बिगाड़कर नरक बना दिया है।

ग्रामीण परिवेश पर आधारित कथा साहित्य में जीवन व प्रधानता होनी चाहिए। ग्राम कथा साहित्य की विशेषता तो उपेक्षित जनसम

व कबीले के लोगों का संगोपांग चित्रण है। डॉ. देवीशंकर अवस्थी जी अपने 'सपेरा', 'पाप जीवी', आर-पार की माला' आदि कहानियों में गाँव व आदिम और आधुनिक संस्कारों तथा परिवर्तनों को समझाने का प्रयास कि है। ग्राम-कथा-साहित्य ने साहित्य के इतिहास को ऐसी प्रकृति दी है जिस सहज जीवन की पूर्ण झलक है। ग्रामीण संवेदना को केन्द्र में रखकर कतिप नये कहानीकार प्रकाश में आये है। शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, विवेकी रा रामदरश मिश्र, मैत्रेयी पुष्पा आदि कई समकालीन साहित्यकारों ने गाँव व केन्द्र बनाकर महत्वपूर्ण रचनाओं का सृजन किया है। ग्रामीण जीवन में ज उत्पीड़न, दरिद्रता और क्लेश हैं वहाँ ऐसे प्यार के चित्र और श्रम से पवि गहरी हंसी के स्वर भी हम पाते हैं। शिवप्रसाद सिंह की 'कर्मनाश की हा ऐसी एक प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। मार्कण्डेय के 'महुए का पेड़', हंसा ज अकेला, भूदानमाही, पानफूल आदि में संकलित कहानियों में ग्रामीण संवेद मुखरित हुई है।

गाँवों की ज़िन्दगी को अपने उपन्यासों का केन्द्रीय विषय बना वाले उपन्यासकार जगदीशचन्द्र और विवेकी राय है। जगदीश चन्द्र ने अप 'कभी न छोड़े खेत' और 'मुट्ठी भर कांकर' नामक उपन्यासों में दिल्ली हरियाणा क्षेत्र के जाट किसानों की जिन्दगी का कटु यथार्थ प्रस्तुत किया है 'कभी न छोडे खेत में' जाट किसानों के सामन्ती और मध्यकालीन मूल्य छोटी-छोटी बातों के लिए भावावेश में आकर या झूठी शान निभाने के लि आपस में काट मरने और मुकदमेबाजी में सारी सम्पत्ति फूंक देन व अक्खड़ता, पुश्तैनी झगडों को जिलाये रखने की विवेकहीनता आदि व

अत्यन्त यथार्थ और व्यंग्यपूर्ण चित्रण उपन्यास में है। उन्होंने अपने 'घा
गोदाम' नामक उपन्यास में आजादी के बाद भारतीय किसान के शोषण अं
बरबादी की कहानी कही है। दिल्ली के आसपास के गाँवों के किसानों
अपनी जडों से कटने और बरबाद होने की कथा है यह। विवेकी राय
'सोनामाटी' और 'समर शेष है' आदि उपन्यासों का विषय और कथा क्षे
लगभग एक है। इनकी कथा वलिया और गजीपुर जिलों के विभिन्न गाँवों
फैली हुई है जिसके माध्यम से कथाकार ने आजादी के बाद विशेषतः स
1965-85 के दशकों में, पूर्वांचल क्षेत्र के ग्रामीण जीवन को उसकी समग्रता
प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ग्रामीण जीवन में उत्पन्न समकालीन मूल्
संकट का चित्रण विवेकीराय ने तन्मयतापूर्वक किया है। विवेकीराय
'लोकऋण' में विहार और उत्तर प्रदेश के पिछड़े गाँवों की आज की जिन्द
और मानसिकता का चित्रण है। विवेकी राय ने आज के गाँवों की सांस्कृति
गिरावट का बहुत ही विश्वसनीय और मार्मिक चित्रण किया है।[1] वीरेन्द्र जै
के 'डूब' का केन्द्रीय विषय भी गाँव है। बेतवा के किनारे स्थित लडैई गाँ
और उस पर बाँधे जा रहे राजघाट बाँध है। गाँव के विकास के लिए जो बाँ
बनाने वाली है वह ग्रामीण जीवन की शांति को भंग करनेवाला विकास है
'डूव' उपन्यास विकास की बाढ में डुवते ग्रामीण यथार्थ को प्रस्तुत करता है
'डूब' मध्यप्रदेश के लडैई अंचल की पीडा को सशक्त रूप में प्रस्तुत करनेवाल
उपन्यास है। अंचल चाहे पूर्णिला का हो, पूर्वी उत्तर प्रदेश का, सबकी ए
ही कहानी है - पिछड़ेपन की शोषण की और दमन चक्र की।[2] मिथिलेश्व

---

1. रामचन्द्र तिवारी - हिन्दी का गद्य साहित्य - पृ. 214
2. गोपालराय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ. 391

के उपन्यास 'यह अन्त नहीं' में समकालीन ग्रामीण यथार्थ का यथार्थ अं ईमानदार चित्रण है। इस उपन्यास के द्वारा संपूर्ण बिहार के गाँवों की त्रास स्थिति को अंकित किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'झूलानट' खेती-किसानी से जुडे जाटों का चित्रण किया है। इस उपन्यासों का केन्द्री विषय ग्रामीण परिवेश में उभरती नयी नारी चेतना है। 'चाक' में जाट समा की नैतिक रूढियों में जकड़ी पुरानी पीढ़ी के क्रूरता-भरे हठ और उसव उल्लंघन करनेवाली स्त्री के जीवन का चित्रण है। हिमांशु जोशी ने 'कंग की आग' में अलमोडा के पर्वतीय अंचल में लघौता गाँव के जीवन की करु कथा चित्रित की है। लोहारों शिल्पकारों का यह गाँव हिन्दुस्तान के कोई ९ गाँव हो सकता है जहाँ स्वतन्त्रता के इतने साल बाद भी सामन्ती व्यवस्था व दमनचक्र बरकरार है।

मानगरीय परिवेश पर आधारित कथा साहित्य

औद्योगीकरण, प्रौद्योगिकी आदि का प्रभाव समाज व्यवस्था परिवर्तन लाने का मुख्य कारण है। शहर तो हमारी सभ्यता के सब संवेदनशील केन्द्र है। कोई भी परिवर्तन सबसे पहले यहीं आता है। इ आधुनिक सुविधाओं के फलस्वरूप शहर मे नये नये काम मिलना आसान गया तो जनता नौकरी की तलाश में शहरों की ओर भागने लगी। जिस महानगरों का विकास हुआ। महानगरों के लोगों का जीवन अत्यधिक व्यस्त और त्रस्त है। घर, परिवार, मित्रजन सबके होते हुए भी एक प्रकार व अकेलापन उसे सताते हैं। वह महानगर की उस भीषण भीड़ भरी जिन्दः में अपने आप को खोकर पहचान की तलाश में भटक रहे हैं। वह इतने स

लोगों के बीच रहते हुए भी एक दूसरे से परिचित नहीं है। तनाव और संघ
ने उसे आदमी से जानवर, जानवर से भी बुरा बना दिया है। शान्ति अं
तनाव से मुक्ति तो उसे कोई दवा-दारु से भी प्राप्त नहीं हो रही है।

लोगों के मन में एक ही चिन्ता बनी रहती है कि पैसा कमाक
दूसरों से बढ़िया ज़िन्दगी जिएँ। सब कहीं दिखावा ही है। उस दिखावे
लिए वह अपने नैतिक मूल्यों को नष्ट कर देते हैं। आधुनिक सुविधाओं व
प्राप्त करने के चक्कर में वे एक मशीन मात्र बन गये हैं। सब क
यान्त्रिकता और कृत्रिमता ही देखने को मिलती है। महानगरों की संस्कृति ध
अलग तरह की है। गाँव से काम की तलाश में आये युवा लोग न तो इ
अपना सके और न छोड़ सके। नगर जीवन तो नयेपन और आधुनिकता
कारण टूट रहा है। परिवार से अलग होकर पारिवारिक संबन्ध भी टू
गए। नगर जीवन से आकर्षित लोग वहाँ से गाँव आना भी पसन्द नहीं कर
हैं। लोगों का जीवन अधिक व्यस्त और मशीनी होता जा रहा है। बाह
और भीतर सैकडों, तरह के प्रभाव एक दूसरे से टकरा रहे हैं।

हिन्दी में महानगरीय परिवेश पर आधारित कई उपन्यासों अं
कहानियों का प्रकाशन हुआ है। अजनबीपन, अकेलापन, पारिवारिक बन्ध
का टूटन आदि बातों को खोलकर सामने प्रस्तुत करने में कथा साहित्य बहु
अधिक सफल हुए हैं। ज़िन्दगी की गन्दगियों का चित्रण इसमें है। नाइटक्ल
मदिरापान आदि तो आधुनिकता के दिखावे के अनुपेक्षणीय कार्य बन गये है
सैक्स और विलास लालसा के उस भीषण मुख प्रस्तुत करने में भी समकाली
कथा साहित्य सफल हुआ है। निरुपमा सेवती की 'टुच्चा' कहानी व

नायिका महानगर में ब्राइट फ्यूचर की तलाश में नैतिकता, अनैतिकता
अन्तर को भूल जाती है। उसी प्रकार जितेन्द्र भाटिया की कहानी 'ए
आदमी का शहर' एक ऐसी कहानी है जिसमें महानगरीय एकाकीपन व
अतिरंजित ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनकी ही 'रक्तजीवी' कहानी
नायक को पिता का नगर में उसके पास आंना भी पसन्द नहीं है। नासि
शर्मा की 'विरासत' कहानी महानगर में बसे नये पीढी की कथा कहती है
उन्हें तो छुट्टी के दिनों में भी गाँव आना पसन्द नहीं है। गाँव के युवा लो
तो अपनी खानदानी पेशे छोडकर नगर में बसना, पसन्द करते हैं। रामदर
मिश्र के 'बिना दरवाजे का मकान' में काम करने वाली एक स्त्री के माध्य
से आज की महानगरीय जिन्दगी के यथार्थ को देखने की कोशिश है।[1] कृष
सोबती का 'समद सरगम' महानगरवासी उच्च-मध्यवर्गीय वृद्ध जनों व
जीवन-स्थितियों, समस्याओं और संवेदनाओं से संबद्ध उपन्यास है। चित्र
मुद्गल के 'एक ज़मीन अपनी' का केन्द्रीय कथ्य बंबई के महानगरी
परिवेश में विज्ञापन-जगत के ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, तिकड़म, देह
व्यापार आदि के बीच प्रस्तुत नारी विमर्श है। इस परिवेश में स्त्री चा
कितनी भी योग्य हो, उसे भोग्य वस्तु के रूप में ही देखा जाता है। पत्नी औ
प्रेमिका के रूप में आधुनिक स्त्री की स्थिति कितना त्रासद है, इसका अंक
चित्रामुदगल ने गहरी संवेदनशीलता के साथ किया है।[2] आज़ादी प्राप्त हो
के बाद मुख्यतः सातवें और आठवें दशकों में आर्थिक भ्रष्टाचार, नैति

---

1. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ - रामदरश मिश्र के उपन्यास - पृ. 63
2. गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ. 390

मूल्यों का विघटन, शिक्षा संस्थाओं के अनुचित वातावरण तथा असंगति और विडम्बनाओं से युक्त जीवन शहरी जीवन की पहचान बन गयी है महीप सिंह का 'यह भी नहीं' महानगरीय बोध और संवेदना के प्रामाणि अंकन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण रचना है। महानगरीय जीवन व आधुनिकता से प्रभावित जटिल संबन्धों के भीतर टूटती पनाह खोज बेपनाह जिन्दगी का यथार्थ अंकन है यह उपन्यास। मानव संबन्धों में समस्याएँ हैं वही महानगरीय जीवन की मुख्य समस्या है। दाम्पत्य जीवन मूल्यों के विघटन, अपनी अपनी अस्मिता और अहं को महत्व देने व प्रवृत्ति, भौतिक सुखों के पीछे भागने की ललक आदि महानगरीय जीवन व विशेषकर दाम्पत्य जीवन को दिशाहीन और भटकीय बना दिया। शैले मटियानी के उपन्यास 'छोटे-छोटे पक्षी' में भी दिल्ली जैसे महानगर में गृहस्थ बसाने की कठिनाई और संघर्ष का चित्रण है। जगदीश चतुर्वेदी का 'कनॉ प्लेस' महानगर की यान्त्रिक और विसंगत जिन्दगी को पाठकों के साम्म प्रस्तुत करते हैं। इसका मुख्य पात्र तो ऐसी जिन्दगी को भोगने वाला है जीवन में भीड़ और शोर तो महानगरीय सभ्यता का लक्षण है। आत्मीय का तो कहीं भी दिखाने के लिए भी नहीं मिलता। राजनीति तो शह ज़िन्दगी को और बिगाड़ दिया है। इन नगरों में खुल-मिल जाने पर व्यक्ति के आचरण में भी कृत्रिमता और संवेदनहीनता अनजाने ही आ जाती है

ऐतिहासिक कथा साहित्य

स्वातन्त्र्योत्तर ऐतिहासिक कथा साहित्य की रचना देश विकास, उसकी उन्नति, उसकी स्वतन्त्रता बनाये रखने की भावना को जग

की उद्देश्य से हुई। विगत या अतीत हो जाने मात्र से कोई साहि ऐतिहासिक नहीं हो जाता। ऐतिहासिक कथा साहित्य में लेखकीय गुण से प अतीत के घटना, पात्र तथा परिस्थितियों को ज्ञात करके उन तथ्यों प आधारित कल्पना से समकालीन वातावरण का पुनर्सृजन करने का कोशि किया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बताया है : "साधारणतः ऐसे उपन्या जिसमें अतीत कालीन वातावरण और घटनाओं के ज्ञात तथ्यों को कल्प से मांसल बनाकर रखने का प्रयास होता है, उसे ऐतिहासिक उपन्यास कहत हैं

ऐतिहासिक कथा साहित्य का सबसे आवश्यक तत्व उत्तम क है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तो रचयिता की अतिरिक्त देन है। हिन्दी ऐतिहासिक कथा साहित्य मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन क अध्ययन और चित्रण करते हैं। उस अध्ययन - चित्रण प्रक्रिया में लेखक ग और वर्तमान के बीच रहकर उस को आपस में मिलाकर इन दोनों युगों क सहज उपयोग करते हैं। इन उपन्यासों में राष्ट्रीय, सामाजिक समस्याओं त मानवता के चिर प्रश्नों पर, मुख्य रूप से प्रकाश डाला गया है। ऐतिहासि साहित्य में विगत युगीन मानव समाज की भौतिक उपलब्धियों तथा सांस्कृति विकासों पर प्रकाश डाला जाता है। साथ ही मानव प्रगति के विरु रहनेवाले तत्वों का पर्दाफाश करके उन पर पाठक का ध्यान आकर्षित कर का प्रयत्न भी होता है। हिन्दी के ऐतिहासिक कथा साहित्य में अधिकांश क वर्ण्यविषय भारतीय इतिहास का प्राचीन काल है। ऐसे साहित्य की मु कथावस्तु साधारणतः राज्य सत्ताओं का परिवर्तन, युद्ध, नारी की प्रेरक श और प्रणय होते हैं।

---

1. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी - ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य - प्रस्तावना

शिवसागर मिश्र के 'मगध की जय', 'कुहरे में युद्ध', 'दिल्ली दू
है' और 'वैश्वानर' आदि प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास हैं। भगवान सिंह
'अपने-अपने राम', गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया', कमलाकां
त्रिपाठी का 'पाही घर' शिवप्रसाद सिंह का 'नीला चांद' आदि भी प्रसि
ऐतिहासिक उपन्यास है। अमृतलाल नागर के लगभग सभी उपन्यास ऐतिहासि
रचना की कोडी में आते हैं। जैसे 'खंजन नयन', 'करवट', 'पीढियाँ' आदि
भीष्म साहनी द्वारा लिखित 'मय्यादास की माड़ी' में उस समय का चित्र
किया गया है जब ब्रिटीश साम्राज्यवादी सिख अमलदारी को उखाडती ह
अपने पाँव फैला रही थी। उपन्यास में तीन चौथाई सदी (1840-1920)
पंजाब के राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ और उसमें आए परिवर्तनों को प्रख
इतिहासबोध के साथ प्रस्तुत है।[1]

नरेन्द्र कोहली का 'दीक्षा' उपन्यास ब्याह के समय तक व
रामकथा को लेकर उसे आज के अनेक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, मानवीय प्रश्
से जोडता है। उनकी ही 'अभिज्ञान बंधन' और 'अधिकार' भी प्रसि
ऐतिहासिक उपन्यास है। भारतीय इतिहास और संस्कृति के मूल स्वरूप व
पहचानने की कोशिश मायानंद मिश्र के 'प्रथम शैल पुत्री च' और 'मंत्र पु
में हुई है।

इसके अतिरिक्त प्रागैतिहासिक काल से लेकर उन्नीसवीं शताब
तक के विभिन्न ऐतिहासिक प्रसंगों को आधार बनाकर अनेक उपन्यास लि
गये है जैसे रामकुमार भ्रमर कृत 'दूसरा सूरज', भगवतीचरण वर्मा कृ

---

1. गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ. 449

'चाणक्य', ओमप्रकाश भाटिया कृत 'राज्यदान', लक्ष्मीनारायण शर्मा के 'कालबं आदि। समकालीन युग में लिखे गये इन ऐतिहासिक रचनाओं का मु उद्देश्य युद्ध की भीषणता, चरित्रहीनता, देशभक्ति, एकता, स्वाभिमान आ बातों पर प्रकाश डालना है।

कुलमिलाकर कह सकते हैं कि ऐतिहासिक कथा साहित्य मा अतीत का पुनरावलोकन नहीं हैं, वरन् अतीत एवं वर्तमान का संतुलन है भविष्य की पीढि को निर्मित करता है।

व्यंग्य कथा साहित्य

व्यंग्य का उद्भव विसंगत वातावरण में होता है। विषम परिस्थिति से प्रेरित होकर ही साहित्यकार व्यंग्यशील बनता है। अंग्रेज़ी शासन उत्पन्न विषमताओं एवं विकृतियों के पर्दाफाश के लिए हिन्दी में सर्वप्रथ भारतेन्दु काल में व्यंग्य रचनाएँ लिखना शुरु हो गया था, लेकिन उस विकास स्वातन्त्र्योत्तर काल में ही हुआ। कथा साहित्य में व्यक्ति या समा की विकृतियों को साधारण शब्दों में व्यक्त करने के बजाय व्यंग्य से कि जाता है। व्यंग्य जो राजनीतिक, सामाज़िक, धार्मिक आर्थिक और नैति विसंगतियों, अन्तर्विरोधों, आडम्बरों अन्यायों को ग्रहण करके अनेक हा तथा घृणोत्पादक रूप पर आलोचनात्मक रूप से प्रहार करता है।

व्यंग्य का उद्देश्य ही यही है - "इस युग के व्यंग्य का ल नौकरशाही, अफसरशाही, राजनीतिक अव्यवस्था, संसद तथा विधान सभा की हास्यास्पद विडम्बनाओं, लीडरों की चरित्रहीनता, सौदेबाजी सिद्धान्तह

दल-बदल, जन-भावना के साथ खिलवाड, सांप्रदायिक दंगे, विभिन्न राजनीति दलों द्वारा किराये के प्रदर्शनकारियों को जुटाकर निकाले जानेवाले जुलू आर्थिक शोषण, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, साहित्यिक भ्रष्टाचार, दिशाहि शिक्षा, विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता, नकल करने की प्रवृत्ति आदि र हैं।"[1] व्यंग्य कथा साहित्य में इन सभी समसामायिक परिवेश के प्रा प्रतिक्रिया स्वरूप प्रस्फुटित हुआ है। व्यंग्य कथा साहित्य समकालीन जीव का चित्र प्रस्तुत करते हैं। समकालीन साहित्यकारों ने इन परिवेशों को अप रचनाओं में एक नवीन भंगिमा से प्रस्तुत किया है। समाज के सभी स्तरों सभी पेशे के लोगों की अन्तर्विरोधों से परिपूर्ण अवस्थिति व्यंग्य का साहित्य में हैं। "हिन्दी के समसामयिक उपन्यास इस बात को स्पष्ट करते कि व्यंग्यकारों ने देश के विघटनशील प्रतिमानों तथा समस्त अन्तर्विरोध विसंगतियों के प्रति तटस्थता, परकता तर्कता तथा बौद्धिकता का आश्र लेकर तीव्र प्रहार किए हैं।"[2]

समकालीन लेखन में श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरबारी' व्यंग्यात्म उपन्यास का प्रतिमान बन गया है। लेखक ने इनमें यह दिखाया है कि राजनीति की गंदगी गाँवों में भी पहुंच गयी। उपन्यास में उत्तर प्रदेश व करवानुमा गाँव शिवपाल गंज की कहानी है। पंचायत ग्राम सभाओं, सहयो समितियों और स्कूलों कॉलेजों की प्रबंध समितियों के चुनावों में वे हथकं और घृणित उपाय काम में लाये जाने लगे जो विधानसभा या संसद के चुना

---

1. डॉ. ए.एन. चन्द्रशेखर रेड्डी - हिन्दी व्यंग्य साहित्य - पृ. 36
2. डॉ. राधेश्याम वर्मा - हिन्दी व्यंग्य उपन्यास - पृ. 22

में लाये जाते थे। चोरी डकैती सोहदागीरी, गबन, भ्रष्टाचार आदि के मामल में गाँव शहरों से होड़ लेने लगे। उनके ही उपन्यास 'मकान' और 'विश्रमामए का संत' में समकालीन समाज की विसंगतियों पर करारा और सरीक व्यंक किया गया है।[1] भारत की समकालीन भ्रष्ट राजनीति और समस्याओं घिरे असुविधापूर्ण जीवन को दिल्ली के जीवन क्रम के बहाने डॉ. नरे कोहली ने 'आश्रितों का विद्रोह' में उद्‌घाटित किया है। आबिद सुरती व व्यंग्य उपन्यास 'काली किताब' भारत की काली हो रही तस्वीर का दर्पण है वर्तमान व्यवस्था तंत्र पर चोट करने वाला बदी उज्ज़मा का 'एक चूहे व मौत' एक सशक्त तथा परिपक्व उपन्यास है। डॉ. श्यामसुन्दर घोप ने 'ए उलूक कथा' में एक उल्लू के माध्यम से वर्तमान समाज का जीवंत चित्र प्रस्तु किया है। डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी का 'जंगलतन्त्रम' जनतन्त्र व विडम्बनात्मकता को दर्शाता है। 'जंगलतंत्रम' में उन्होंने राजनेता प्रशासव पूंजीपति एवं आम आदमी के लिए क्रमशः सिंह, मोर, नाग एवं चूहे प्रतीकों के माध्यम से आजादी के बाद के पूरे लोकतंत्र की अंदरूनी, पर प्रक प्रक्रिया का सच्चा रूप खोलकर प्रस्तुत किया है। इसमें चूहे की नियति य है कि पहले केवल सिंह के गुलाम थे, अव सिंह, मोर, नाग तीनों के है उनकी 'राहुकेतु' में भी आज की भ्रष्ट राजनीति में ईमान्दार और मूल्यों प्रतिष्ठावान व्यक्ति के दुर्गति का व्यंग्यात्मक चित्रण है। 'आदमखोर' एवं 'ए टुकड़ा सच भी' ऐसे ही उपन्यास हैं।

---

1. गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ. 26

रवीन्द्र वर्मा के 'निन्यानबे' उपन्यास का कथानक लगभग सत्त
अस्सी वर्षों तक फैला हुआ है। इस बीच के राजनीतिक उतार-चढाव, उथ
पुथल को उपन्यासकार ने चटकीले और व्यंग्यात्मक लहजे में प्रस्तुत कि
है।[1] सुशील कालरा के 'निक्का निर्माण' में राजनीति के भीतर की राजनी
है। तीखी व्यंग्यात्मक शैली में गहरी चोट करनेवाला राजनीतिक उपन्यास
यह। नरेन्द्र कोहली ने 'शम्बूक की हत्या' में नेताओं की गैर जिम्मेदारी
व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है। इसी तरह अमृतराय ने अपनी 'चतुराई' में ने
की तुलना शकुनी से की है। अशोक शुक्ल के 'हड़ताल हरिकथा'
शैक्षणिक जगत की विसंगतियों का व्यंग्यात्मक वर्णन है। मनोहर श्या
जोशी का 'कुरु कुरु स्वाहा' आदि भी प्रसिद्ध व्यंग्य उपन्यास है। ज्ञा
चतुर्वेदी का 'नरकयात्रा', 'बारामासी' भी व्यंग्य उपन्यास है। 'नरकयात्रा'
उपन्यासकार ने अस्पताल में होनेवाले भ्रष्टाचार, अत्याचार, अमानवी
व्यवहार, घूंसखोरी आदि का दर्दनाक चित्र पेश किया है। 'बारामासी' में
व्यंग्य है वह संवेदनहीन समाज में करुणा जगाने में काबिल है। इसका व्यं
पाठक को संवेदना के स्तर उठा ले जाता है। 'बारामसी' में बुंदेलखड के ए
कस्वे के मध्यवर्गीय परिवार की आकांक्षाओं, सपनों विडम्बनाओं, विसंगति
पारिवारिक संबंधों की विद्रूपताओं का अंकन किया गया है।[2]

व्यंग्य उपन्यास की तरह व्यंग्य कहानी की रचना का उद्देश
समाज में व्याप्त विसंगतियों का परदाफाश करना रहा है। राजनीतिक अं

---

1. गोपाल राय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ. 359
2. वही - पृ. 409

सामाजिक विसंगतियों को आधार बनाकर हिन्दी में कई सशक्त व्यंग्य कहानियाँ लिखी गयी हैं। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की 'चोरी' मार्कण्डेय क 'दोपहर का भोजन' जैसी कहानियाँ कुछ उदाहरण हैं। रमेश गुप्त की 'चोर एक नए मकान की' कहानी में भवन निर्माण व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार क अनावरण किया गया है। डॉ. नरेन्द्र कोहली ने 'भगवान की औकात' कहान में पुलिस व्यवस्था पर व्याप्त भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया है। भारती जीवन में सर्वत्र दिखाई पड़नेवाले तथा भारत की प्रगति में बाधा डालनेवाल भ्रष्टाचार जैसी स्थितियों को इन लेखकों ने अपनी रचनाओं में चित्रित किया है

निष्कर्ष

विषय की विविधता, कथ्य की नवीनता, शैल्पिक प्रयोग आदि समकालीन कथा साहित्य की विशेषताओं को रेखांकित करने वाली बातें हैं समकालीन समाज में कई समस्याएँ चल रही हैं। इन सभी समस्याओं क शिकार अधिकतर समाज के निम्न मध्य वर्ग को ही बनना पड़ा है। आज समाज के सामने कई समस्याएं हैं जिन में प्रमुख रूप से नारी समस्या, दलित समस्या, सांप्रदायिक दंगे आदि हैं। समकालीन मनुष्य तो खुद के लिए जी रह है। वह समाज के लिए कुछ करना भी नहीं चाहता। अपने पद को बरकरा रखने के लिए आधुनिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के ज़लील औ अमानवीय काम करने के लिए भी वह तैयार है। समाज में नारी की स्थिति हर दिन बिगड़ रही है। उनके प्रति लोगों की दृष्टि भी अच्छी नहीं है, उ केवल एक भोग्य वस्तु के रूप में देखना ही समाज को पसन्द है। शिक्षा प्राप्त करके स्त्री ने पुरुष के समान स्वातन्त्र्य और उच्च अधिकार तो प्राप्त किय

फिर भी उसे परोक्ष रूप से और कभी कभी प्रत्यक्ष रूप से कई समस्याओं व झेलना पड़ रहा है। उसी प्रकार समाज में सब कहीं शोषण फैल गया है निम्न-मध्य वर्ग को सब कहीं शोषण का शिकार बनना पड़ता है। उच्च आर्थिक स्थिति ही व्यक्ति को समाज में ऊँचा बनाता है, ऐसी स्थिति है विभाजन से लेकर देश में जो हिन्दु-मुस्लीम अलगाव की तीक्षण ज्वाला ज रही है वह आज भी कोई-न-कोई कारण ढूँढकर भड़क उठती हैं। इन स प्रवृत्तियों की ओर समकालीन कथा लेखकों का ध्यान ज्यादातर गया है। व महान साहित्यकारों ने इन विषयों को अपनी रचनाओं में बखूबी वर्णन कि है और इन समस्याओं से मुक्ति पाने की राह दिखाने की कोशिश भी की है नासिरा शर्मा ने भी अपने कथा साहित्यों में इन विषयों को मुख्य रूप से लि है। समाज का जीता जागता चित्रण ही उनके उपन्यास और कहानियों देखने को मिलता है। उनमें मुख्य रूप से नारी के प्रति होने वाले अत्याचा की ओर उनका ध्यान गया है। शिक्षित नारी अपनी अस्मिता को बना रखने के लिए किस प्रकार कोशिश करती है इसका सुन्दर वर्णन उनक रचनाओं में है। विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान में रहनेवाले हिन्द मुस्लीम लोगों की मानसिक स्थिति का वर्णन भी उन्होंने अपने कथा-साहि में बखूबी से किया है। नासिरा शर्मा ने जीवन की घटनाओं और अनुभूति को जिस रचना कौशल के साथ उद्घाटित किया है, हिन्दी कथा साहित्य वह सचमुच महत्वपूर्ण ही है। सांप्रदायिकता विरोधी विचार और मानवतावा दृष्टि उनकी सृजनधर्मिता को रेखांकित करनेवाली बातें हैं।

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में नासिरा शर्मा ने एक प्रगतिशी मानवधर्मी लेखिका के रूपमें अपनी पहचान बनायी है। 'सात नदियाँ : ए समुन्दर' (1984) शाल्मली (1987), ठीकरे की मँगनी (1989) जिन्दा मुहाव (1993) अक्षयवट (2003) कुइयाँजान (2005) उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'सा नदियाँ एक समुन्दर में आज के ईरान की कथा है तो शाल्मली में पति-पत्न के बीच उभरनेवाले पारिवारिक तनावों और विसंगतियों का चित्रण है 'ठीकरे की मंगनी' में रूढियों में जकड़ें एक मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार व शिक्षित और संवेदनशील महरूख की संघर्ष-कथा है। 'जिन्दा मुहावर विभाजन के दर्द का उपन्यास है, जिसमें देश के साथ परिवार भी बंटता है उनका नया उपन्यास 'कुइयाँजान' पानी की समस्या के सन्दर्भ में पर्यावरण प विचार किया गया है। निश्चय ही उनके उपन्यासों ने उन्हें एक नयी पहचा दी है।

नासिराजी देश, काल, धर्म, जाति, संप्रदाय के भेदों से ऊप उठकर एक दिल और एक दिमाग वाले इनसान के दुःख : दर्द, उत्थान-पत को आकार देनेवाली कहानीकार भी हैं। उनके प्रमुख कहानी संकलन है शामी कागज, पत्थर गली (1986), संगासार (1993), इब्ने मरियम (1994 सबीना के चालीस चोर (1997), खुदा की वापसी (1998), इन्सानी नस्ल (2001) और दूसरा ताजमहल (2002)। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी, फारसी आ कई भाषाओं की मर्मज्ञ नासिरा शर्मा का रचना-संसार व्यापक मानवी संवेदना का संसार है। उनकी कहानियों में ईरान की धरती से जुडे वहाँ आम आदमी का संघर्ष और दुःख दर्द है। रूढियों में जकड़ी किन्तु आधुनि

जीवन की दौड में आगे बढ़ने के लिए बेचैन पिछडे वर्ग की मुसलमान जन
है। तानाशाही के विरुद्ध ईरानी जनता का संघर्ष है। फ़िलिस्तीनी गुरिल्ला
की दर्दनाक फटेहाली है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौर में बेहद तनाव की जिन्द
जीनेवाले यहूदी हैं। आधुनिक सुविधाओं से वंचित हिन्दुस्थान की गरी
जनता है। पुरुष प्रधान समाज में हदीस, शरीयत और कुरान में औरतों व
दिये गये अधिकारों की जानकारी से लैस अपने हक के लिए संघर्ष कर
मुस्लिम औरतें हैं। धर्म, जाति, भाषा और संप्रदाय के ऊपरी भेदभाव व
लेकर आपस में टकरानेवाली इन्सानों की छीजती संवेदना का गहरा अहसा
और दर्द है। इन सबके बावजूद हिन्दुस्थान की बहुलतावादी संस्कृति
प्रभावित नासिरा शर्मा की कहानियों की सबसे बडी शक्ति सारे भेद-प्रभेदों
ऊपरी आवरण के नीचे दबी इंसानियत को उभारकर ऊपर लाने व
प्रतिबद्धता में निहित हैं।

अध्याय - 2

नासिरा शर्मा : रचना - व्यक्तित्व

प्रस्तावना

नासिरा शर्मा समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील मानवध
लेखिका के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। देश-काल, धर्म-जाति, पंथ-संप्रदाय
ऊपर उठकर एक दिल और दिमागवाले इनसान के पीड़ा-दर्द, उदय-पतन
उन्होंने अक्षराकर दिया है। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी, फारसी, पश्तो आ
भाषाओं में उनकी गहरी पकड़ है। वे ईरानी समाज और राजनीति
अतिरिक्त साहित्य, कला ओर संस्कृति आदि विषयों की विशेज्ञा भी है
ईराक, अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान तथा भारत के राजनीतिज्ञों और मशह
बुद्धिजीवियों के साथ उन्होंने जो साक्षात्कार किये, वे बहुचर्चित हुए। यु
बंदियों पर जर्मन व फ्रांसीसी दूरदर्शन के लिए बनी फिल्म में उन
महत्वपूर्ण योगदान रहा। कहानी उपन्यास, विचार-अध्ययन, संस्मरण संपाद
में उनकी वडी देन है। इस मानवधर्मी सृजनकर्मी के कथा-साहित्य
अध्ययन के सन्दर्भ में उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना वाजिब है

साहित्यकार का व्यक्तित्व उसकी साहित्यिक रचनाओं में प्रतिबिंबि
होता है क्योंकि वह जिस पारिवारिक वातावरण में रहता है, जिस सामाजि
परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करता है, जिन राजनीतिक तथ्यों त
आर्थिक समस्याओं का सामना करता है उनको ही साहित्य का आध

बनाता है। साहित्यकार के स्वभाव व प्रवृत्तियों की झलक भी प्रत्यक्ष
परोक्ष रूप से उसके साहित्य में विद्यमान रहती है। साहित्य रचना में व
व्यक्तिगत जीवन तथा अनुभवों को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत करता है
उसका साहित्यिक व्यक्तित्व उसके सामान्य व्यक्तित्व से गहरा संबन्ध रख
है। इसलिए किसी भी साहित्यकार के साहित्य की विशेषताओं की अं
जाने से पहले उसके जन्म से लेकर अब तक का समस्त स्थितियों को जान
आवश्यक है।

जीवन परिचय

नासिरा शर्मा का जन्म सन् 1948 में इलाहाबाद में हुआ। नासि
शर्मा का परिवार शिक्षित और संपन्न था। पिता 'प्रो. जमीर अलि' एवं मा
'नाझनीन बेगम' ने उनकी परवरिश अच्छी तरह से की है। नासिरा ज़ी ज
छोटी थी तब पिता जी की मृत्यु हुई थी। नासिरा जी ने अपनी पारंपरि
मान्यताओं को तोड़कर धार्मिक कर्मकांडों से बचते हुए डॉ. रामचन्द्र शर्मा
साथ अन्तरधर्मीय प्रेम विवाह किया। उनका वैवाहिक जीवन अत्यन्त सफ
रहा है। डॉ. शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भूगोल के अध्यापक के रू
में कार्य करते थे। नासिराजी के दो बच्चे हैं, बेटा अनिल और बेटी अंज

उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्याल
से पूरी हुई। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से फारसी भाषा ए
साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेज़ी, पश
आदि भाषाओं पर उनकी गहरी पकड़ है। ईरानी समाज और राजनीति

अतिरिक्त साहित्य, कला व संस्कृति विषयों की विशेषज्ञा है। उनकी समा राजनीति, साहित्य, कला और संस्कृति पर गहरी पकड़ है। अपनी वस्तुनि विश्लेषण क्षमता ओर व्यापक एवं गहरे अनुभवों के प्रकाश में उन्हो अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इरान आदि देशों के समाज, राजनीति, इतिहा साहित्य और संस्कृति का तथ्यपरक एवं वस्तुपरक विश्लेषण प्रस्तुत कर पश्चिमी एशिया विशेषज्ञों के अग्रिम पंक्ति के लेखकों में अपनी विशि पहचान बनाई है। नासिरा जी कथाकार होने के साथ-साथ एक अच पत्रकार भी हैं। यही नहीं उन्होंने भारत तथा अन्य पश्चमी एशिया के प्रमु राजनीतिज्ञों और बुद्धिजीवियों के साथ साक्षात्कार करके पत्रकारिता व दुनिया में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

उन्होंने सन् 1975 में कहानी लेखन शुरू किया। सन् 1975 'सारिका' के नवलेखन अंक में उनकी 'बुतखाना' और मनोरमा पत्रिका 'तकाजा' कहानी प्रकाशित हुई। विगत तीस वर्षें की रचनात्मक यात्रा नासिरा शर्मा ने कहानी, उपन्यास, अनुवाद, समीक्षा, पत्रकारिता आदि विवि क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई है। उनके इस योगदान को लेकर उन्हें अने पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है उन्हें हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वा हिन्दी सेवा के लिए 'अप्रण सम्मान', 'संगसार' कहानी संग्रह पर मध्य प्रदे साहित्य परिषद का 'गजानन माधव मुक्तिबोध' पुरस्कार, 'शाल्मली' ए मध्यपूर्वी देशों पर लेखन के लिए विहार शासन का 'महादेवी वर्मा पुरस्का आदि सम्मानों से अलंकृत किया है।

कृति परिचय

कहानी

नासिरा शर्मा समकालीन हिन्दी साहित्य में मुख्य रूप से उपन्यासक और कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। 'पत्थरगली' (1986), 'शामी कागज़' (1986), 'संगसार' (1993), 'इब्ने मरियम' (1994), 'सबीना के चालीस चो (1997), 'खुदा की वापसी' (1998), 'इनसानी नस्ल' (2001), 'दूसरा ताजमहल (2002), 'बुतखाना' आदि इनके कहानी संग्रह है।

नासिरा शर्मा के कंथा-लेखन में जहाँ एक ओर मुस्लिम संस्कृति की सौन्दर्यबोध और बारीक् कलात्मकता है वहीं दूसरी ओर उस समाज बन्द हो गए कमरों के भीतर की घुटन और खुली सांस लेने की बेकरा बडी शिद्धत के साथ व्यक्त हई है।

पत्थरगली (1986)

नासिरा जी की 'पत्थरगली' नामक कहानी संग्रह में आ कहानियाँ हैं। इन कहानियों में लेखिका की सामाजिक, धार्मिक गह अंतदृष्टि का परिचय मिलता है। 'पत्थरगली' में मुस्लिम-समाज के रूढ़िग्र स्वरूप के चित्रण के साथ-साथ उस छटपटाहट का भी चित्रण हुआ है जो इ परिस्थित से मुक्ति पाने की उत्कट अभिलाषा से उद्भूत है।

एक रूढ़िग्रस्त समाज में नारी जाति की घुटन, बेबसी औ मुक्तिकामी छटपटाहट का जैसा चित्रण इन कहानियों में हुआ है यह अन्य दुर्लभ है। ये कहानियाँ नारी की जातीय त्रासदी का मर्मान्तक दस्तावेज़ हैं

पत्थरगली की परिधि वह पिछडा समाज या वर्ग है जो आगे बढ़ने के लि आतुर नज़र आता है। ये कहानियाँ धरती पर बसे किसी भी इन्सान की सकती हैं क्योंकि यह दर्द सर्वव्यापी है। फिर भी इन कहानियों व अभिव्यक्ति का स्रोत एक विशेष परिवेश है। इनमें मुसलमानों की भावना आशाएँ और कुंठाएं शब्द बद्ध हुई हैं। ज़्यादातर पात्र मुस्लिम हैं। उस के ब में नासिरा जी कहती हैं - "आज मुसलमान पात्र जब उभरता है तो या हिन्दु-मुसलमान दंगों में या फिर ईद के दिन पढ़ी गयी नमाज़ और मोर्हर पर हुए सुन्नी-शिया फसाद में, मगर कौन यह जानने की कोशिश करता कि उसकी कोमल भावनाएँ, उसकी कुण्डाएँ, उसके अरमान और ख्याल क्या हैं?"[1] नासिराजी स्पष्ट करना चाहती हैं - "मुस्लिम समाज सिर्फ 'गजल नहीं है बल्कि एक ऐसा 'मर्सिया' है जो वह अपनी रुढ़िवादिता की कब्र सिरहाने पढ़ता है। पर उसके साज़ और आवाज़ को कितने लोग सुन पा हैं और उसका सही दर्द समझते हैं?"[2]

पहली कहानी 'बावली' में नायिका सलमा को पानी से भ बावली के रूप में कहा गया है। विवाह के बाद अनेक वर्षों तक सलमा कोई सन्तान न होने से पति को दूसरा विवाह करने को मजबूर किया जा है। दूसरा विवाह सम्पन्न होते-होते पता चलता है कि सलमा गर्भवती है बावली के प्रतीक द्वारा सुशिक्षित रूपवती परन्तु अभागी सलमा की व्य व्यक्त हुई है। लेकिन वह अपना स्वतन्त्र रास्ता चुन लेती है। 'सरहद के इ

---

1. नासिरा शर्मा - पत्थर गली - दो शब्द
2. वहीं

पार' में मानव-मानव के बीच भेद पैदा करनेवाली विभिन्न स्थितियों में पिस
हुए मानव की कथा है। इस कहानी में हिन्दु-मुसलमान घृणा और विद्वे
रूपायित हुए हैं। रेहान अपनी सरहद अर्थात् अपने देश के प्रति जिसके म
में ममत्व नहीं है, ऐसी प्रेयसी से नफरत करता है। हिन्दु-मुसलमान विद्वे
की इस भयंकर आग में भी रेहान अपनी जान पर खेलकर एक हिन्दु लड़
की अपने जातवालों से रक्षा करता है। इस घटना के फलस्वरूप उसे बाद
अपनी जान भी देनी पडती है। उसकी हत्या तो उनके ही जातवालों के हा
होती है। युवकों की बेरोज़गारी, मुसलमानों को भी जात-पांत, उच्च-नीच
झुठ-दम्भ पर लेखिका कडी चोट करती है। 'बंद दरवाजा' कहानी
खानदानी दम्भ, अहंकार की परिपूर्ति के लिए अपने मासुम बच्चों की बलि
चढ़ानेवाले तथाकथित प्रतिष्ठित व्यक्तियों के क्रौर्य का पर्दाफाश होता है।

'कच्ची दीवारें' और 'कातिब' कहानियाँ जातभाइयों से ही शोषि
गरीबों की व्यथा उजागर करती हैं। 'कातिब' कहानी में शिक्षक, प्रकाशक
लेखक और कातिब के स्वार्थ और पक्षपात से परिपूर्ण संबन्ध निरूपित हु
हैं। 'कच्ची दीवारें' एक लम्बी कहानी है। इसमें एक निस्सन्तान वृद्ध-युग
के अंतिम काल की संघर्ष-कथा के साथ ही प्रमुख रूप में पीढियों के वी
पनपने वाली शंकालु भावना की टकराहट भी उभरी हैं। 'ताबूत' एक हृद
विदारक कहानी है। इसमें पुनः मज़बूरी और मायूसी के चित्रण हुए है। ऊँ
खानदान और ऊँची और कठोर पाबंदियों की दीवारों में लड़कियों क
शारीरिक मानसिक इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और सपने दफन दिए जाते हैं
'पत्थरगली' तो मुस्लीम रीतिरिवाज की जकड से मुक्त होने के लिए प्रयत

करने वाली कुछ लड़कियों की कहानी है। अनेक लाख कोशिश के बाद १
वे हालात के आगे दब जाते हैं। इस समाज में तो लडके बिना पढाई, का
से शान से जीते हैं। लेकिन लड़कियों को सारे दुखों का बोझ उठाना पड़
है। फरीदा, सोलहा, फिरोज आदि ऐसे ही कुछ लड़कियाँ है। 'सिक्का' ए
काव्यात्मक कहानी है। यह उर्दू-फारसी शब्दों से भरपूर है।

'पत्थर गली' की कहानियों में मानवीय त्रासदी की तीक्षणत
इनके पात्रों की असहायकता के द्वारा और गहरी हो जाती है। ये गरीब औ
शोषित जन की हिताकांक्षी परिवर्तनकामी कहानियाँ हैं। इन कहानियों
मुस्लीम परिवारों की जिन्दगी का बडा ही अंतरंग चित्र प्रस्तुत हुआ है
अपनी इन कहानियों के संबन्ध में नासिरा जी कहती है - "ये कहानियाँ उ
समाज और परिवेश की हैं जो वास्तव में पत्थरगली है, जिसे तोडना आसा
नहीं. मगर एक छटपटाहट है निकास द्वार ढूँढने की और ये कहानियाँ उस
की तस्वीर पेश करती है।"[1]

शामी कागज़ (1986)

नासिरा जी भारत देश की ही नहीं इरान, इराक, पाकिस्ता
अफगानिस्तान आदि कई देशों की संस्कृतियों से परिचित हैं। उन्होंने क
यात्राएँ इन जगहों में की हैं। 'शामी कागज़' की कहानियाँ ईरान पर लिख
गया हैं। ये लेखिका की उन यात्राओं की उपलब्धियाँ हैं। उनका कहना है
ये कहानियाँ यथार्थ की धरती पर बोई एक खेती है। x x x x जो मेरे दि

---

1. नासिरा शर्मा - पत्थर गली - दो शब्द

और दिमाग ने देखा समझा और महसूस किया, वह कागज़ पर ढलव
कहानी बन गया। इस तलाश में सीमा का ध्यान न रहा। सच्चाई भी यही
कि न मैं सीमा-रेखाओं को पहचानती हूँ और न ही मेरा विश्वास है उन पर
मैं तो केवल दो हाथ, दो पैर, दो कान, दो आख एक दिल और एक दिमा
वाले इनसान को पहचानती हूँ। वह जहाँ भी, जिस सीमा, जिस परिधि
जीवन की संपूर्ण गरिमा के साथ मिल जाए वहीं मेरी कहानी का जन्म हो
है।"[1]

नासिरा जी आगे कहती है - "शामी कागज़' एक ऐसा दर्पण
जो ईरानी रंगों से सराबोर होने के बावजूद, इनसानी भावनाओं का प्रतीक
और उसमें हर देश, भाषा, रंग का अपना प्रतिबिंब इनसान देख सकता है
ये कहानियाँ केवल उस जनसमुदाय की संवेदनाओं और वेदनाओं की धड़क
हैं जो धरती से जुड़ा, आशा और निराशा का संघर्षमय सफ़र तय कर र
है। तीन वर्षों के अन्तराल में लिखी ये कहानियाँ ईरान के उस दौर की साक्ष
हैं जब हज़ारों जिज्ञासाओं से भरी इरान में लेखिका ने कदम रखा। ईरान व
जनता में परस्पर विश्वास न था, खुशी के पीछे एक ढंडा भय व्याप्त था, र
लेखिका को समझने - जानने की आतुरता और व्याकुलता का प्रमाण 'शाम
कागज़' के रूप में हमारे सामने हैं।

इमसें कुल सोलह कहानियाँ संकलित हैं। वे हैं - खुशबू का रं
मिश्र की ममी, दादगाह, पतझड़ का फूल, दीमक, परिन्दे, आईना, शाम

---

1. नासिरा शर्मा - शामी कागज़ - दो शब्द
2. वहीं

कागज़, आशयाना, आबे तौबा, सहरा नवरद, तलाश, उकाब, मिट्टी व सफर, मुट्ठी-भर धूप, और बेगाना ताज़िर। कहानियों का परिवेश ईरान व है इसलिए कहीं-कहीं पर नाम, स्थान, शब्द ऐसे आए है जिनके अर्थ अं व्याख्या भी उन्होंने तालिका में दी है।

संगसार (1993)

'सिरा शर्मा के लेखन का फलक देश और विदेश की असीमि परिधियों तक फैला हुआ है। मानवता उनकी लेखनी का केन्द्रविन्दु है भारतीय ही नहीं अंतराष्ट्रीय स्तर की ज्वलंत मानवीय समस्याओं पर उनव लेखनी चली है। नासिरा जी का 'संगसार' नामक कहानी-संग्रह इसव ज्वलन्त उदाहरण है। इसमें ईरानी क्रान्ति का जीता-जागता दस्तावेज़ है। कहानियाँ तत्कालीन ईरान की ज़लती घटनाएँ, लोमहर्षक संघर्ष, अन्याय जुल्म और विराट आर्तनाद की बडी संजीदगी और सशक्तता से अभिव्य करती हैं। ये कहानियाँ ऐसी रची हैं कि पाठक उस भयानक विलाप शामिल हो जाता है, मृत्यु के आतंक और अनुभव से भयाक्रान्त और व्याकु हो उठता है। अधर्म की राजनीति ने ईरानियों के साथ जो निर्मम औ अमानवीय बर्ताव किया है वह दुश्मन ने भी नहीं किया होगा। इस कहा संग्रह में अठारह कहानियाँ है और एक कविता भी है। नासिरा जी कहत है - "ये कहानियाँ इनसानों की अभिलाषाओं, इच्छाओं और सपनों व दस्तावेज मात्र हैं, किसी धर्म, विचार, मत की अच्छाई और बुराई को बता का रोजनामचा नहीं।"[1]

---

1. नासिरा शर्मा - संगसार - दो शब्द

ईरान में एक संतुलित समाज की इच्छा वहाँ के हर नागरिक
मन में है और वही जव्बा इस संग्रह की कहानियों के माध्यम से व्यक्त हुअ
है। 'संगसार' की कहानियाँ 1980 और 1992 के बीव में लिखी गयी थीं
नासिरा जी आशा करती है "पाठक अपनी तरह के दिल व दिमाग रखनेवा
दूसरे इनसानों की कहानियाँ पढ़कर अपनी साझा मानवीय विरासत के आई
में उनके दुःख-सुख में अपना चेहरा देख पाएंगे। जो दूसरे देश में रहकर भ
हमारी तरह एक दिल, एक दिमाग, दो आँख, दो कान, दो हाथ-पैर रख
वाले इनसान है।"[1]

संगसार की सभी कहानियाँ ईरान की स्थिति का दस्तावेज़ हैं
'तारीखी सनद', पहली रात आदि में देश में चल रही दयनीय स्थिति क
वर्णन है। दरवाज-ए-कज़बिन, गुंजादहन, संगसार आदि कई कहानियों
नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन है साथ ही समाज की कई समस्याओं क
जिक्र भी है। जैसे राजनीतिक समस्याएँ, नारियों पर होने वाले अत्याचा
लड़कियों द्वारा ससुराल में झेलती कष्टताएँ आदि।

ईरान और अफ़गानिस्तान के गृहयुद्धों को नासिरा जी ने बहु
निकट से देखा है। शामी कागज से ही उन्होंने ईरान की पृष्ठभूमि
कहानियों का जो सिलसिला शुरु किया था, संगसार की कहानियाँ उसी क
विस्तार हैं। इन कहानियों में विनाश और परिवर्तन की स्थिति पर खड़
ईरान अपनी संपूर्णता में उपस्थित है। उस स्थिति में भी लेखिका स्त्री के प्रि

---

1. नासिरा शर्मा - संगसार - दो शब्द

प्रचलित व्यवहार और धार्मिक कट्टरता को अपना मुख्य लक्ष्य मानव
चलती है। 'दरवाज़-ए. कज़विन' में रूमाल की रस्म के समय माजिद व
चुप्पी का सारा दोष मरियम को ही चुकाना होता है क्योंकि हर समाज
आदमी के गुनाह की कीमत औरत ही चुकाती रही है। 'संगसार' व
असिया का अपराध यह है कि अपने मन के ओदश मानकर पति के ह
हुए वह किसी ओर से प्यार करती है। लेकिन उस समाज में पुरुष तो ऐ
कुछ भी करें उसमें कोई दोप नहीं है। 'पहली रात' कहानी का ईरा
बेहिश्ते-जेहरा में बदल गया है। सत्रह से बीस वर्ष के युवक - युवतियों व
लाशें देखकर गुस्सालों को भी तरस आता है। हसते-जीते परिवारों में पीढ़ि
युद्ध के खेमों में बदल जाती हैं। एक और युवा पीढी है जो धार्मिक कट्टर
के विरोध में सब कुछ झौंक देने का हौसला रखती है; दूसरी ओर प्रौढ़
बूढे होते माँ-बाप हैं जो इस सामाजिक सुगबुगाहट को समझ पाने में असम
हैं। धार्मिक कट्टरता और यथास्थितिवाद के समर्थक विरोध का आर
लगाकर मासूम लोगों पर कैसे जुल्म करते हैं, 'गुंचादहन' इसका एक अच
उदाहरण है। 'खालिश' में नासिरा जी धार्मिक कट्टरता और उन्माद
विरोध में आवाज़ उठाती है।

इब्ने मरियम (1994)

'इब्ने मरियम' नासिरा शर्मा जी की तेरह कहानियों का संग्रह है
इस संग्रह की सारी कहानियाँ एक विशेष स्थिति की हैं जिसमें फसा इन्सा
जीने के लिए छटपटाता है। कभी उसका यह संघर्ष अपने अधिकार को प
के लिए होता है तो कभी समाज को बेहतर बनाने के लिए। ये कहानियाँ व

प्रश्नों और समस्याओं को प्रस्तुत करती हैं। ये सारी समस्याएं कहीं न क
हॉन्ट क़रती हैं। 'इब्ने मरियम' की कहानियों किसी एक देश की कहानि
न होकर अनेक देशों की पृष्ठभूमि में लिखी गई हैं। युगांडा, फिलीस्ती
इथोपिया आदि कई देशों के आतंकवाद से लेकर भारत के भोपाल गे
दुर्घटना तक इसमें है।

'अमोख्ता' (पंजाब), जडें (युगांडा), जैतुन के साये (फिलीस्तीन
काला सूरज (इथोपिया), कागजी बादाम (अफ़गानिस्तान), तीसरा मो
(कश्मीर), मोमजामा (सीरिया), मिस्टर ब्रउनी (स्काटलेण्ड), कशीदाका
(बंगलादेश), जुलजुना (कन्नडा), पुल-ए-सरात (इराक), जहांनुमा (टर्की), इ
मरियम (भोपाल) आदि इस संग्रह की कहानियाँ हैं। इन कहानियों से हमें य
प्रमाण मिलता है कि लेखिका का रचनात्मक कैनवास कितना व्यापक है
किसी एक विषय एक देश की समस्याओं को प्रस्तुत करना वे नहीं चाह
या एकरसता में डूबी कहानियाँ लिखना वे नहीं चाहतीं। उनके पास आर-प
और दूर-दूर तक देखने वाली दृष्टि सही मायनो में मानवीय है, भाईचारे व
पैगाम देने वाली है। और भी कहें तो विश्व मानवता का इतिहास रचनेवा
है। 'अमोख्ता' भारत विभाजन के बाद पंजाब में आकर बसनेवाले एक आ
आदमी की मानसिक पीडा की कहानी है। उसका अपना वतन लाहौर अ
पाकिस्तान में हैं। कई प्रयत्नों के बाद जब वह अपना वतन देखकर वाप
पंजाब आया तो वहाँ भी हिन्दु-सिख के बीच आतंक शुरु हो गया था उस
उसने अपने सभी रिश्तेदार को खो गये। यह कहानी भारत में हो गये आतं
का वर्णन है। इसी तरह संग्रह की अन्य कहानियों से भी कई समस्याओं व
जिक्र है।

सबीना के चालीस चोर (1997)

नासिरा शर्मा जी का कहानी संग्रह 'सबीना के चालीस चो भारत में स्वतन्त्रता के बाद जो परिवर्तन हुआ है उससे प्रेरित है। तरक्क करने की धुन में हर दिन व्यावहारिक बनने की चाह में हम बहुत तेज़ दौ हैं। इस बादहवास जल्दबाज़ी में हमसे क्या गुम हुआ; उसी की खोज में इ कहानियों का जन्म हुआ है। नासिराजी कहती हैं - वे मेहनतकश लोग ः मेरी कहानियों के पात्र बने हैं, जिसके मन में इकलौती अभिलाषा एक रो इज्जत से कमाकर खाने तक है और उस सपने को लेकर वे कैसी अपमानजन स्थितियों से गुज़रते हैं जो उनके न चाहने पर भी उन्हें बेचारा घोषित कर है। ये वर्ग आधुनिक सुविधाओं से न केवल वंचित बल्कि बेखबर रहते है वे देश का उत्पादन शक्ति में सहयोग देकर भी शोषित वर्ग में खडे नज़र अ हैं। जिन पर रोज की ज़रूरतों के लिए जन-साधारण निर्भर रहता है वे खा आदमी न होकर 'आम' कहलाते हैं। वे किसी समय भी 'दो कौडी के लो की उपाधि से सुशोभित कर दिये जाते हैं। परिवेश की तरह पात्रों व अभिव्यक्ति भी उन्हीं की बोली में हैं।

नासिराजी कहती है - "ये कहानियाँ उन इन्सानों की हैं ः बचपन से मेरे साथ हैं जिन्होंने मुझे कहीं न कहीं प्रभावित किया। अप जिन्दगी से मेरा रिश्ता जोडा और मुझे ताज़ा अनुभूतियों से भरी दुनिया व अलग संसार दिया।"[1] 'सबीना के चालीस चोर' नामक कहानी संग्रह व

---

1. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - दो शब्द

बाकी कहानियों के कथा-सूत्रों का बुनियादी विचार है। सबीना एक छो लड़की है, जो बडों जैसी दृष्टि और समझ रखती है। उसका मानना है ि फ़साद करानेवाले, दूसरों का हक मारने वाले ही चालीस चोर है, जो हमेः कमज़ोर वर्ग को दबाते हैं। इस संग्रह की कहानियों में अलग-अलग किरद निभाती सबीना से लेकर गुल्लो, सायरा, चम्बा, मुन्नी जैसी लड़कियों लेखिका खुद को ही दिखाती है।

दर्द की बस्तियों की ये कहानियों जिस आबादी का प्रतिनिधि करती है वही इस देश की बुनियाद है। ये कहानियाँ हिन्दुस्तान की सच तस्वीर है। इसमें बारह कहानियाँ हैं - विरासत, चाँद तारों की शतरंज, इम साहब, ततइया, गूँगी गवाही, सतघरवा, उसका बेटा, तक्षशिला, चिमगाद नौ-तपा, सबीना के चालीस चोर, आया बसन्त सखी। इन कहानियों महानगरीय जीवन की समस्या, गरीब लोगों की शोषण, नारी समस्या सांप्रदायिकता और देश विभाजन से उत्पन्न समस्याएँ आदि सभी सामाजि समस्याओं का वर्णन है। 'विरासत' कहानी में महानगर में बस गये सन्ता के बारे में चिन्तित गाँव में रहनेवाले माँ-बाप की स्थिति का वर्णन है। 'चं तारों की शतरंज में गरीब लोगों से अकी ज़मीन हटपने के लिए उसे व तरह से तंग करने वाले और उनसे बदला लेने की कहानी है। उसी तर सबीना के चालीस चोर में देश विभाजन से उत्पन्न समस्याओं का वर्णन है उसी प्रकार इस संग्रह की सभी कहानियों में समाज में चल रहे कई समस्याः का भी वर्णन है।

खुदा की वापसी (1998)

नासिरा जी की खुदा की वापसी की सभी कहानियाँ ए
सुचिन्तित योजना के तहत मुस्लिम समाज के आन्तरिक अन्तर्विरोध
विसंगतियों-विडम्बनाओं के इर्द गिर्द रची हुई है। एक ही थीम पर लिख
कहानियों के संग्रह हिन्दी साहित्य में बहुत आम नहीं है। इस तरह के संग्र
की कहानियाँ यथार्थ को समझने के भिन्न और एकाधिक पहलू उपलब
कराती है और सम्पूर्ण परिदृस्य को एक औपन्यासिक फलक प्रदान कर
है। इस संग्रह में नौ कहानियाँ हैं। सभी कहानियों में किरदारों का पेशा ध
बताया गया है। इस संग्रह की सभी कहानियाँ मुस्लिम समाज की महिलाओ
की कुछ ज्वलंत समस्याओं से ताल्लुक रखती हैं। नासिरा जी ने महिल
अधिकार चेतना के साथ ये कहानियाँ ज़रूर लिखी हैं, लेकिन उनका तात्प
प्रचलित अर्थों में नारीवादी नहीं है। वे महिलाओं के लिए कोई अलग दुनि
नहीं बसाना चाहतीं, न पुरुष को खलनायक सिद्ध करने में रस लेती है
उनका रुख बहुत स्पष्ट और व्यावहारिक है। स्त्रियों के अधिकारों और उ
सबके पालन आदि को लेकर नासिरा जी पुस्तक की भूमिका में कहती हैं
'मुझे लगा, बेहतर है कि हम मिले अधिकारों को पहले हासिल करें, फिर
नहीं है उनका सवाल उठाएँ। यदि औरत को अपनी लड़ाई खुद लड़नी है
फिर अपने लिए बनाये शरियत कानून का पूरा ज्ञान और देश के अन्य ध
कानूनों को भी जानना जरूरी है, तभी वह अपनी लड़ाई लड़ सकती है औ
एक-दूसरे की मदद कर सकती है वरना दूसरों के भरोसे रही तो उसको वा

मिलेगा जो दूसरे उसे देना चाहेंगे।[1] नासिरा जी आगे कहती हैं "वह मर्द जो आरत के अधिकार का हनन करता है। मगर औरत क्या कम कसूरव है जो अपने अधिकारों को लेना नहीं जानती है, उसको समझती नहीं उसको पढती और दूसरों को बताती नहीं है?"[2] धर्म का उपयोग सबके हि के लिए होना चाहिए, लेकिन आज हर जगह, ताकतवर शक्तियों ने धर्म व अपने हक में व्याख्यायित कर लिया है और धीरे-धीरे मगर लगातार धर्म व बिगड़ी व्याख्याओं को समाज के संस्कार में गहरे पिरो दिया है। स्त्रियों व इसका दुष्परिणाम सबसे ज्यादा भोगना पड़ा है। जहाँ मुस्लिम समाज में मेह अनेक विवाह, तलाक आदि के सवालों को लेकर परेशानियाँ आती हैं व हिन्दु समाज में स्त्री के पतिव्रता रूप की शुद्धता के संस्कारों के रूप में उसव सोच-समझ पर पर्दा डाल दिया गया है। नासिरा जी ने अपनी कहानियों द्वा अपना यह आग्रह व्यक्त किया है कि जब अस्सी प्रतिशत जनता का विश्वा धर्म और उसके पवित्र ग्रन्थों में है तो धर्म को ठीक-ठीक तौर पर समझ और भी ज़रूरी हो जाता है।

'खुदा की वापसी' नामक कहानी संग्रह में नासिरा जी की कहानियाँ संगृहीत हैं। वे हैं - 'खुदा की वापसी', 'चार बहनें शीशामहल क 'दहलीज', 'दिलआरा', 'पुराना कानून', 'दूसरा कबूतर', 'बचाव', 'मेरा घ कहाँ?' और 'नयी हुकुमत'। मुस्लिम महिलाओं की सबसे बडी समस्या तलाक, मर्दों के लिए स्वीकृत बहुपत्नी प्रथा, गुज़ारा भत्ता, मेहर, उत्तराधिक

---

1. नासिरा शर्मा - खुदा की वापसी - निवेदन से
2. वहीं

आदि। पहली कहानी 'खुदा की वापसी' मेहर के सवाल को लेकर है। इ कहानी के पति-पत्नी के संबन्ध में सिर्फ इसलिए दरार पड़ जाती है अं अच्छी-खासी शादी सिर्फ इसलिए दरक जाति है कि सुहागरत पर पति पत को फुसलाकर मेहर की रकम माफ करवा लेता है। पति पत्नी से कहता "देखिए, अगर आप मेहर के रुपये चाहती हैं तो मुझे कोई एतराज नहीं हम बिजनेस क्लासवाले हैं। चेक अभी काटकर आपके हवाले कर सक हूँ, मगर बात कुछ और है। वह औरत शोहर के लिए बहुत मुबारक हो है जो पहली रात अपने शौहर का मेहर माफ कर दे। वह बडी पाकदाम समझी जाती है।"[1] दुलहा ने सुहागरात को ही प्यार ओर रिश्ते की नाजु की दुहाई देते हुए मेहर माफ करा दिया है। दुल्हन ने 'हाँ' कह बैठती लेकिन भीतर ही भीतर सुलगती है। वह धर्म पुस्तकों को खुद छान-बी करती है और पाती है कि मेहर माफ करा लेना धर्म का कानून नहीं, पुरु का षड्यन्त्र है जिसके ज़रिए वे स्त्री का हक दबाने का सिलसिला शुरु कर हैं। लगभग ऐसी ही विकट स्थिति 'दूसरे कबूतर' कहानी में भी है। मिडि ईस्ट में बहुराष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत एक लड़के के साथ भारतीय लड़ की शादी होती है और वह उसके साथ जाती है। वहाँ जाकर पत्नी को प चलता है कि पति पहले से शादीशुदा है और तीन बच्चों का बाप भी है अन्त में दोनों पत्नियाँ पति की, एक साथ तलाक दे देती हैं।

इसी तरह संग्रह की अन्य कहानियों में भी नासिरा जी मुस्लिम समाज की महिलाओं के दरपेश जिन्दगी के अहम मसलों को उठा

1. नासिरा शर्मा - खुदा की वापसी - पृ. 18

है। नाग्गि नी के इस कहानी संग्रह को पढ़कर हमें मुस्लिम समाज के ब में बहुत सारी बातें मालूम होती हैं। ये कहानियाँ समाज के अलग-अलग व में जी रहे लोगों की जिन्दगी के उलझाव और उनसे निकलने के रास्तों प सोचने को प्रेरित करती हैं। सभी कहानियाँ उन बुनियादी अधिकारों की मं करती नज़र आती हैं जो वास्तव में महिलाओं को मिले हुए हैं, मगर पुरु समाज के धर्म-पण्डित मौलवी मौलिक अधिकारों को भी देने के विरुद्ध है इसकी कहानियाँ एक समुदाय विशेष के होकर भी विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधि करती हैं। नारी के संघर्ष और उत्पीडनों से उपजी विद्रुपताओं तथा अर्थही सामाजिक रूढ़ाचार पर तीखी चोट करती ये कहानियाँ समकालीन परिवे और जीवन की विसंगतियों का प्रखर विश्लेषण भी करती है।

इनसानी नस्ल (2001)

नासिराजी की 'इनसानी नस्ल' काहनी संग्रह में कुल तेर कहानियाँ है। 'असली बात' प्रथम कहानी है। इसमें हिन्दु-मुस्लिम प्रश्न व जिक्र किया गया है। इस कहानी संग्रह के आरंभ में एक कविता है जिस भारत का वर्णन है। मतलब भारतवासी विभिन्न धर्म, भाषा, रीति रिवाज़ होते हुए भी एकता को बनाये रखते हैं। कभी कभी आपसी झगडा, माँ-बह से बलात्कार, दूसरों पर अत्याचार सब होते हैं। लेकिन ये सब कभी-क ही होते हैं। सभी अनेकता के होते हुए भी एकता को बनाये रखने व कोशिश वे करते हैं। 'अपराधी' नामक कहानी में राममनोहर त्यागी नाम एक रिटयेर्ड पुलिस अफसर की कथा का वर्णन है। 'पाँचवाँ बेटा' में ध हिन्दु-मुस्लिम संबन्ध का वर्णन है। इसमें सुलाखी नामक हिन्दु ही भारी व

से इमामवाड़ को बचाने के लिए तिरपाल बाँधता है और उसे चार बेटों व मुस्लिम माँ पाँचवाँ बेटा मानता है। ये दोनों कहानियाँ हृदय-परिवर्तन व कहानियाँ हैं जिसमें हिन्दु-मुसलमान के आपसी रंगरंज के ब्योरे हैं।

'बड़े पर्दे का खेल' कहानी में एक आदमी के प्रति कुछ और का विद्रोह का वर्णन है। 'ज़ोडा' एक संवेदनात्मक कहानी है। यह एक ऐ परिवार की कहानी है जिसका एक-एक बंदा दुर्घटना में मारा गया है। अं स्त्री को जोडे की तलाश है। 'अग्नि परीक्षा' में कम्मो नामक एक नारी द्वा झेलनेवाली समस्याओं का वर्णन है। उसकी खेत पर अधिकार जमाने नकाम मंगलू यह बात उडा देता है कि कम्मो बद्चलन है। कम्मो मंगलु बदला लेती है अंत में कम्मो को निर्दोष होने का प्रमाण पत्र मिल जाता है 'मरुस्थल' कहानी नासिरा जी की एक अच्छी कहानी है। इसमें अ कहानियों की तरह समाज सुधार तत्व नहीं, सांप्रदायिक विरोधी असह ग्लानी-भाव भी नहीं है। 'दुनिया' नामक कहानी में शोभना नामक एक ना का मानसिक स्थिति का वर्णन है। अपने पिता के मृत्यु का खबर सुनने बाद भी वह सोचती है कि जब तक वह वहाँ पहुँचेगी तब तक सब समा होंगा तो क्यों ज़रूरी मीटिंग को छोड़कर वहाँ जाऊँ, जो उसके तरक्की लिए बहुत आवश्यक है। कहानी संग्रह के नाम का एक कहानी भी इसमें है उसके अतिरिक्त 'उजडा फकीर', 'वही पुराना झुठ', 'एक न समाप्त होनेवा प्रेमकथा' तथा 'कनीज बच्चा' भी इस संग्रह की कहानियाँ है।

इस संग्रह की सभी कहानियाँ जीवन के यथार्थ को सामने रख हैं। आज का इनसान अपने अन्दर यात्रा करके अपने आप को समझने व

कोशिश न करके भौतिक दुनिया में भटकता रहता है जो उसको जीवन सु नष्ट करने का कारण बनता है। नासिरा जी दो शब्द में कहती है - "इ संग्रह में दो तरह की कहानियाँ हैं - पहली इनसान की इनसान से टकराह धर्म, भाषा, जीति-पाँत की आड़ लेकर जो सतही कारण हैं ज़रूर, मगर गह बेधते हैं। दूसरी वे कहानियाँ, जो संवेदना के स्तर पर एक इनसान दूसरे व छलकर सुख प्राप्त करती है और दूसरे इनसान को गहरे आहत करता है अंतर्धारा को पकडती इनसानी पेचीदगियों का कहानियाँ हैं, जो इनसान व आंतरिक व्यवस्था को दर्शाती है।"[1]

दूसरा ताज़महल

'दूसरा ताजमहल' कहानी संग्रह के बारे में नासिरा जी खु कहती हैं - "यह मेरा पहला कहानी संग्रह है, जिसकी सारी कहानियाँ अप रंग की है उनमें आपसी कोई अन्तरधारा नहीं बहती है। यह इन्द्रधनुष ऐसे सात रंग हैं जो साथ रहने पर भी अपना अलग वजूद रखते हैं।"[2] बहु कम ऐसे लोग हैं जो अपने कहे शब्दों पर अडिग रहते हैं और चांदी सिक्कों की तरह शब्दों को फ़जूल लुटाते नहीं है। इसी मंथन से निकल 'दूसरा ताजमहल' नामक कहानी में नयना की मौत दरअसल उन शब्दों व मौत है जो सच्चे मोती की तरह आबदार नहीं निकले।

संग्रह की अन्य कहानियाँ जिन्दगी की अनेक पर्तें संवेदना स्तर पर खोलने के साथ सामाजिक ताने-बाने की जकड़न को तोड़ने व

1. नासिरा शर्मा - इनसानी नस्ल - दो शब्द
2. नासिरा शर्मा - दूसरा ताज़महल - दो शब्द

कोशिश में लगे इन्सानों की बात कहती हैं। इस संग्रह के सभी किरद लेखिका की मौलिक अनुभूतियों से निर्मित ताजा सुगन्ध का एक झोंका है नज़र तो नहीं आता है मगर जिसकी याद ज्ञानेन्दियों में सदा बनी रहती है नासिरा शर्मा की सात लम्बी कहानियों का यह संग्रह मछियारे का एक ऐ जाल है जिसमें संवेदना के समन्दर से पकड़ी ऐसी अनुभूतियों का बयान जो मौलिक भी है और यथार्थ की ज़मीन पर लहलहाती सृजनात्मक कल्प का संसार भी हैं। यहाँ किरदार अपने असली चेहरे के साथ जिन्दगी थपेडों से खेलते किनारे की खोज में संघर्षरत नज़र आते हैं और पाठकों मन में जिजीविषा की ऐसी लौ जलाते हैं जो थके हुए मुसाफिरों को मंजि तक पहुँचने की प्रेरणा देते हैं।

बुतखाना (2001)

नासिरा शर्मा का 'बुतखाना' नामक कहानी संग्रह की कहानि समाज की वह सच्चाईयाँ हैं जो उनकी अनुभूति से नहीं बल्कि यथार्थ क ज़मीन से उपजी हैं, जिसमें ज़रूरत के अनुसार थोडा झूठ कुछ कल्पना क और उनके अहसास का मिश्रण है। इन कहानियों में सारे विषय ऐसे जिसमें आज की नस्ल अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष क रही है उसमें सपनों की सरसराहट, भावुकता की गुदगुदाहट, प्रेम की चाह नहीं है बल्कि ठोस स्थितियाँ, सम्वेदना का निरन्तर शुष्क होते जाना, प्रे भाव का स्थाई रूप से किसी भी रिश्ते में न ठहर पाने की खोज अं घबराहट भरी जिजीविषा है कि कल क्या होगा?

ये कहानियाँ तीन भागों में विभाजित की जा सकती है। इ संग्रह की कई कहानियाँ अलग-अलग वर्षों में छपी हैं। 1976 में 'बुतखा छपी'। वहाँ से लेखन की शुरुआत हुई। फिर 1984 में 'मरियम' अं 'खिड़की' छपी, 1987 में 'नमकदान' भी। अन्य कहानियाँ 2000 और 20(में लिखी गई हैं। नासिराजी कहती हैं मेरा यह संग्रह मेरे 25 वर्ष के लेख का एक समावेश है जिसमें समय के अन्तराल में लिखी गई मेरी कहानि पाठकों के सामने हैं।"[1] इसमें उन्तीस कहानियाँ है और अन्त में 'मेरी रच प्रक्रिया' नामक लेख है। नासिरा शर्मा जी की कहानियों का यह नया संग्र सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और इन्सानी जटिल प्रवृत्तियों की अभिव्यि का दस्तावेज़ है।

नासिरा जी कई राज्यों की यात्रा करके वहाँ की संस्कृति अं अन्य रीतियों से, वहाँ के समस्याओं से परिचित हैं। इसीलिए नासिरा श जी की कहानियों में समकालीन भारत समाज में होने वालि विविध समस्या के चित्रण के साथ-साथ अन्य राज्यों में चलनेवाले सामाजिक समस्याओं व चित्रण भी है। उनकी कहानियों में नारी समस्या, पीडित जनों की समस्य तनाव भरी हिन्दु-मुस्लीम संवन्ध, मुस्लिम समाज में चलनेवाले समस्या आदि मुख्य रूप से आया है। उनकी कई कहानियाँ ईरान, इराक, अफगानिस्ता जैसी कई देशों की सामाजिक स्थिति का सच्चा चित्र प्रस्तुत करने वाले है

---

1. नासिरा शर्मा - वुतखाना - दो शब्द

उपन्यास

नासिरा शर्मा प्रगतिशील मानवधर्मी उपन्यासकार हैं। उन
अभी तक छः उपन्यास प्रकाशित हैं - "सात नदियाँ : एक समन्दर' (198
'शाल्मली' (1987), 'ठीकरे की मंगनी' (1989), 'ज़िन्दा मुहावरे' (199
'अक्षयवट' (2003) और 'कुइयाँजान' (2005)। उनके ये छहों उपन्या
अलग-अलग विषय पर लिखित है।

सात नदियाँ : एक समन्दर

यह नासिरा का पहला उपन्यास है। यह उपन्यास ईरान
पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है। आलोचकों की शिकायत है कि महिला उपन्यासक
अपनी रचनाओं में घर परिवार की समस्याओं और स्त्री की मानसिकता
बाहर नहीं निकलतीं। नासिरा शर्मा ने इस शिकायत को अपने इस उपन्या
द्वारा निराधार सिद्ध कर दिया है। नासिरा जी कहती हैं - "ईरान की क्रा
पर लिखा मेरा यह उपन्यास उन अनुभवों का लेखा-जोखा है, जो पिछले
वर्षों में मुई ईरान की धरती पर हुए। इन नौ वर्षों के पीछे लगभग नब्बे व
का अतीत साँसें ले रहा था, जिसेमें पाँच हजार वर्ष पुराने ईरान की सभ्यत
संस्कृति का वैभव अपनी ऐतिहासिक गाथा गुनगुना रहा था।"[1]

यह उपन्यास लिखने के पहले ईरान की ओर चार यात्राएँ उन्हें
कीं। इन चार यात्राओं में विभिन्न वर्गों के खास और आम से मिलने का मौ

---

1. नासिरा शर्मा - सात नदियाँ एक समन्दर - दो शब्द

मिला। एक ही हाकिम के बारे में अच्छा और बुरा सुनने को मिला। विभि विचार धाराओं की देश के प्रति निष्ठा और दूसरों के प्रति उनकी कुं देखी। एक ही परिवार के सदस्यों को विभिन्न सियासी मतों में बाँटा हुः गया। सत्ता में आने की अंधी दौड़ देखी। नासिरा जी के इस उपन्यास मुख्य पात्र न सत्ताधारी बन सके, न सियासी गुटों के नेता, उन्होंने अ इनसानों की नज़र से क्रान्ति को देखना उचित समझा, क्योंकि वह सत्ता व कहानी लिखना चाहती थी, वह भी औरत के ज़रिए जिन्दगी की कहा लिखना चाहती थी, ताकि इनसानों की पीड़ा का खुला बयान लिख सकूँ

उपन्यास में आज के ईरान की कथा कही गयी है। ईरान व जनता ने रजाशाह पहलवी के खिलाफ बगावत करके उनकी तानाशाही मुक्ति प्राप्त करनी चाही थी, किन्तु इस बगावत से उसे लक्ष्य की प्राप्ति न हुई। शाह के जाने के बाद इस्लामी गणतंत्र के नाम पर आयातुल्ला खुमै ने जनता पर एक दूसरे प्रकार की तानाशाही लाद दी। 'सात नदियाँ ए समन्दर' में नासिरा जी ने धार्मिक तानाशाही के दबाव में पिसती हुई जन का बडा ही सजीव चित्र खींचा है। लेखिका ने जनता के दुख-दर्द को मानवी दृष्टि से देखा है और उसे पूरी सहानुभूति दी है।

शाल्मली

आधुनिक भारतीय कामकाजी नारी अपने व्यक्तित्व के स्वतः विकास करके अपने कैरियर में सफलता प्राप्त कर रही है। समाज उसे का करने और कमाने का अधिकार तो दिया, पर पारिवारिक जिम्मेदारियों

उसे कोई छूट नहीं मिली। गृहस्थी के कार्यों के अतिरिक्त उस पर नौकरी बोझ भी बढ़ गया है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उससे भिन्न-भिन्न व्यक्ति की माँग के कारण आधुनिक नारी का व्यक्तित्व खण्डित हो जाता है। दोहरे स्तर पर जीती आधुनिक भारतीय कामकाजी नारी जीवन भर वि व्यथाओं को झेलती रही है, इसका साकार चित्रण नासिरा जी के उपन्य 'शाल्मली' की नायिका शाल्मली के माध्यम से हुआ है।

स्त्री-पुरुष के या कहें तो पति पत्नी के सम्बन्धों की सच्च आधुनिक साहित्य का मुख्य विषय है। पति शताब्दियों से पत्नी को अप सम्पत्ति समझता आ रहा है और अपनी मर्जी के मुताबिक उसका उपय करता रहा है। भारतीय जीवन में धर्मों और आर्थिक वर्गों के वैविध्य में यह एक सामान्य तथ्य है। पर आधुनिक काल में धीरे-धीरे हालत बदल ग है। भारतीय संविधान ने नारी को वे सारे अधिकार और सुविधाएँ प्रदान क दी हैं जो पुरुष को प्राप्त हैं। तब स्त्री अपने पति की तुलना में अधिक समान योग्य और ऊँची नौकरीवाली हो जाती हैं। इस स्थिति में पुरुष परम्परागत मानसिकता दाम्पत्य सन्तुलन में बाधक बन जाती है और पति पत्नी दोनों का जीवन दुःखद बन जाता है। शाल्मली एक ऐसे परिवेश उपज है; जहाँ लडकी को लड़के के समान तरक्की करने की सारी सुविध उपलब्ध हैं। उसका विवाह नरेश से होता है। प्रतियोगिता परीक्षा में उत्त होकर वे नरेश से भी ऊँचे पद के कर्मचारी बन जाती है। घर और दफ दोनों ही स्थानों पर शाल्मली पूरी तन्मयता और कुशलता से काम करती पत्नी की सफलता से पति नरेश में हीन-भावना जागने लगती है। इसे

करने के लिए वह शाल्मली पर अपना शिकंजा कसना शुरू कर देता है अपने हर कृत्य से वह दुनिया को दिखा देना चाहता है कि शाल्मली उसकी पत्नी है और उसके कहे अनुसार चलती है। शाल्मली बहुत प्रयास करके भी नरेश की मानसिकता को बदल नहीं पाती है। हीनता की ग्रंथि से पीड़ित नरेश स्वयं को शराब के नशे में डुबोने लगता है, पराई औरतों से संबंध बनाता है। उसके इस रवैये से तंग आकर शाल्मली उससे तलाक लेने की बात सोचती है। परन्तु तलाक लेने में समर्थ होते हुए भी वह तलाक ले नहीं, क्योंकि उसकी दृष्टि में तलाक समस्या का समाधान न होकर पलायन है। वह अपने इसी जीवन में से विकास का रास्ता खोजना चाहती है। नरेश अभी तक परंपरागत संस्कारों से जकड़ा हुआ है। पढने-लिखने के बाद भी उसका मस्तिष्क पुराने ढरें पर ही सोचता है, जबकि शाल्मली नए ढंग से सोचती है। उसे पति स्वामी नहीं, जीवन साथी लगता है जिसके साथ उसे बराबरी के, मित्रता के स्तर पर जीना है।

इस उपन्यास के ज़रिये नासिरा शर्मा जी ने समकालीन भारतीय नारी की दशा का वर्णन किया है। नारी को जो सामाजिक ओर कानूनी सुरक्षा समता मिली और उसके कार्य क्षेत्र का विभिन्न दिशाओं में आशातीत विकास - विस्तार हुआ, उससे उसका व्यक्तित्व तो समृद्ध और समुन्नत हुआ पर उसकी मानसिकता जटिल से जटिलतर होती गई। भीतर और बाहरी दबाओं ने उसे झकझोर दिया।

ठीकरे की मंगनी

नासिरा शर्मा का 'ठीकरे की मंगनी' नामक उपन्यास मुस्लि समाज में स्त्री की स्थिति और रुढियों भरे माहौल की घुटन से वाह निकलने के संघर्ष को उदाहृत करता है। उसके केन्द्र में महरुख है। वह ए पढी लिखी मुस्लिम युवती है। अपने चारों ओर के माहौल से लड़कर व जिन्दगी को जिस ढंग से गढ़ती है, उसमें अनेक मुद्दे उपन्यास के हाशिए उठकर बीच में आ जाते हैं। महरुख के परिवार में लड़कियाँ नहीं जीती थ उसके पैदा होते ही उसके मौसेरे भाई रफत से उसकी मंगनी कर दी गई थ - एक टोटके के रूप में ठीकरी की मंगनी। बडे होने पर बी.ए. करने के ब रफत के इच्छानुसार वह जे.एन.यु. पढ़ने जाती है। रफत उसे एक आधुनि सलीकेदार युवती के रूप में विकसित देखना चाहता है। रफत विदेश पढ़ चला जाता है। बाद में खबर मिलती है कि रफत ने तो किसी अमेरिव लड़की से विवाह कर लिया है। जे.एन.यु. में अपने शोध कार्य को अधू छोडकर महरुख एक गाँव के स्कूल में अध्यापिका बन जाती है। उसने अप उस दायित्व को पूर्ण रूप से निभाने का पूरा कोशिश भी करती है। विरो उसे यहाँ भी कम नहीं सहना पड़ता है लेकिन धीरे-धीरे उनसे संघर्ष कर का साहस उसमें पैदा हो जाता है।

रफत भाई जब अपनी विदेशी पत्नी को छोडकर वापस आता और महरुख के साथ शादी का प्रस्ताव रखता है तो वह उसका सख्त विरो करती है। बिना शादि करके वे अपने जीवन विताना चाहता है और घर बुढे लोगों का देखपाल भी करता है। माँ-वाप की मृत्यु के बाद वह अप

गाँव जहाँ वह काम करती थी वापस चला जाता है और बाकी जीवन ग
वासियों के साथ बिताता है।

गाँव के स्कूल में टीचर की नौकरी स्वीकार करने के साथ उस
जीवन का नया कार्य क्षेत्र खुलता है। नए जिन्दगी को नया अर्थ देने
कोशिश और उसे अमल करने की कोशिश में पूरे तीस साल अपने ख
जिगर से उस गाँव को उसने सींचा। मौत और जिन्दगी के झूले में झूल र
गरीब लोगों को बचाने के लिए वह हर तरह की कोशिश भी करती है। इ
सारी घटनाओं से महरुख गाँववालों का दिल जीत लेती है।

जिन्दा मुहावरे

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' भारतीय मुस्लिम
विभाजित मानसिकता और विवश पीड़ा की मार्मिक कथा कहता है। इ
उपन्यास में विभाजन के बाद एक मुस्लिम परिवार के भारत और पाकिस्त
के बीच बाँटने और उस अलगाव की वेदना को सहते हुए गुज़रने की क
है। नासिरा जी को अपने उपन्यास का नाम 'जिन्दा मुहावरे' रखने की प्रेर
'सिब्ते हसन' की किताव 'माजी का मज़ार' पढने से मिली थी। नासिरा
कहती हैं - "यूं तो पूरी किताब ने मुझे प्रभावित किया मगर जो शब्द
ज़हन में गहरे उतर गए वे भाषा के बारे में थे कि जब किसी भी ज़बान
कोई बोलने वाला नहीं बचता तो वह ज़बान 'मुर्दा' कहलाती है मगर उ
ज़बान के चन्द मुहावरे दूसरी किसी भाषा में जाकर जिन्दा हो उठते हैं अ
समय के गुज़रने के साथ उनका प्रयोग उस ज़बान में इस तरह खप जाता

कि वे उस ज़बान का हिस्सा लगने लगते हैं मगर इस तरह घुलने-मिलने बावजूद यह 'जिन्दा मुहावरे' अपनी मुर्दा ज़बान का पुरातन इतिहास अप में समाए होते है।"[1]

उपन्यास का आरंभ तो भारतीय मुसलमानों की घरेलु जिन्दगी चित्रण से हैं। साथ ही उन कारणों को भी दिखाया गया हैं जिनसे युवा पी पाकिस्तान जाने को अपना लक्ष्य मानते हैं। हिन्दुस्तान के बँटवारे तकलीफ को करोडों ने भोगा है। हिन्दु-प्रधान भारत में अपने भविष्य के ब में सोचकर ही मुस्लिम जमीन्दार रहीमुद्दीन का छोटा बेटा निज़ाम पाकिस्त चला जाता है। वह पाकिस्तान जाकर कई कठिनाईयों को सहने के ब आर्थिक दृष्टि से उन्नति प्राप्त कर लेता है मगर घर का मोह उसे हमे सताता रहता है। बेटे के वापस आने की प्रतीक्षा में रहकर माँ-बाप गु जाते हैं। पाकिस्तान में निजाम को घर कारोबार सब कुछ प्राप्त होने पर भीतर ही भीतर अकेलापन और उदासी का एहसास सताता है। बरसों ब बडी कठिनाईयों को झेलने हुए जब निजाम अपने परिवार के साथ भा आता है तो उसे सब कुछ बदला-बदला सा लगता है। उसे लगता है कि अप के बीच की दूरी भी बढ गयी है। भारत की स्थिति देखकर निज़ाम सम पाता है कि पाकिस्तान में यहाँ के सांप्रदायिक झगडों की खबरें मिलती हैं बढ़ा - चढ़ाकर ही पहुँचती हैं। उसे लगता है कि इस मुल्क में मुसलमान खु के साथ रहते हैं। जब वह भारत से वापस चला जाता है, उसके मन अलगाव और उदासी का भाव छाया रहता है।

---

1. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - दो शब्द

इस प्रकार यह उपन्यास देश विभाजन के फलस्वरूप ए मुसलमान परिवार के दो भागों में बाँट जाने और दोनों भागों के अलग-अल अनुभवों की कथा कहता है। साथ ही युवा पीढी की भावनाओं अं मानसिकता को प्रस्तुत करते वक्त लेखिका ने समकालीन जटिल परिस्थिति को भी ध्यान में रखा है। नासिरा जी ने भारत में रहनेवाले मुस्लिम परिवा की जिन्दगी का बडा ही अंतरंग चित्र प्रस्तुत किया है। इसके साथ पाकिस्तान में रह रहे भारतीय मुसलमानों के घरेलू जीवन-चित्रण में उन्होंने अपनी अंतर्दृष्टि का परिचय दिया है। इसी प्रकार युवा मुस्लिम पी की भावनाओं के अंकन में उन्होंने समकालीन जटिल सामाजिक राजनीति परिस्थितियों और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं के अंतर्सम्बन्ध को ध्यान रखा है। भारत विभाजन से धर्मान्धता की तो जीत हुई पर मनुष्यता ह गयी। जिन्दा मुहावरे इसी मानव नियति का साक्षात्कार करता है। कुलमिलाव 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन के बाद के भारतीय मुस्लिम समाज की जिन्द का, मुसलमानों की मानसिकता का प्रमाण है और मानवीय संबन्धों को ध से ऊपर रखने का प्रयास भी करता है। नासिराजी कहती है - "मेरी कोशि इस उपन्यास के ज़रिए सिर्फ इतनी है कि मैं 'जिन्दा मुहावरे' के पाठकों व उस सेतु पर लाकर खडा कर सकूं जो एक इन्सान से दूसरे इन्सान तक जा है और जिसके नीचे मोहब्बत का समन्दर ठाठें मारता है।"[1]

---

1. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - दो शब्द

अक्षयवट

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'अक्षयवट' के केन्द्र में इलाहाबाद इलाहाबाद उनका अपना शहर है। लेकिन वह इस शहर के पतन को ले दुखी है। इलाहाबाद का इतिहास बहुत महत्वपूर्ण है। कभी यह शहर शि की दृष्टि से बहुत ऊँचे थे। देश की स्वाधीनता संग्राम के मुख्य केन्द्र करता था, स्वाधीनता के बाद देश के तीन प्रधानमन्त्री उसी ने दिये। साहि के क्षेत्र में भी इलाहाबाद का प्रमुख स्थान है। साहित्यकारों की कई पीढ़ि बनाने-संवारने का श्रेय भी उसे जाता है। राष्ट्रीय और प्रादेशिक प्रशासनि सेवा में अनुपाततः सबसे अधिक लोग यहीं से आते थे और कभी विश्वविद्या के प्राय सभी विभागों में अंतर्राष्ट्रीय महत्व के अध्यापक, लेखक ब बुद्धिजीवी हुआ करते थे। एक लेखक के रूप में नासिरा शर्मा की सबसे व पीडा यही हैं कि वह इलाहाबाद अब एक मुर्दा शहर है जो अपराधियों आदर्श शरण्य है।

नासिरा शर्मा का यह उपन्यास 'अक्षयवट' दरअसल प्रतीव उस अविराम भावधारा का उस अक्षर विरासत का, जिसका शहर इलाहा की धमनियों में निरन्तर विस्तार है। इस उपन्यास में इलाहाबाद शहर अ सारे नये-पुराने चटक-मद्धिम रंगों और आयामों के साथ जीवन्त रूप उपस्थित है। इसमें शहर की धडकन में रची-बसी ऐसी युवा जिन्दगियों मर्मस्पर्शी कहानी है जो विरासत में मिली तमाम उपलब्धियों के बाव वर्तमान व्यवस्था की सडाँध और आपाधापी में अवसाद भरी जिन्दगी ज

के लिए अभिशप्त हैं। इस उपन्यास के माध्यम से जीवन की गहन जकड़ और समय की विसंगतियों को पहचानने और उनसे मुठभेड़ करने ं कोशिश की है।

इसमें लेखिका शहर के इतिहास के साथ भूगोल में भी झांक हैं, जिससे शहर में घटित परिवर्तन को हम पहचान सकें। अक्षयवट अथ बरगद का पेड़, यहाँ की यूनिवर्सिटी का लोग हैं। सांस्कृतिक वैविध्य अ बहुलता जो कभी इस शहर की पहचान हुआ करती थी, वह शहर आ अपराधों और क्षुद्रताओं के लिए जाना जाता है। लगता है जैसे पूरा का पू शहर उपन्यास के पन्नों पर खडा करने की कोशिश की जा रही हैं - अप अतीत और वर्तमान के साथ।

इस उपन्यास का केन्द्र पात्र जहीर है, जो एक होशियार लड़क है। जहीर का विकास एक ऐसे युवक के रूप में हुआ है जो जहीन अ महत्वाकांक्षी होने पर भी बदकिस्मती औ़र हादसों का शिकार है। लेकि कोलेज में पढते वक्त उनके सिर पर एक अध्यापक द्वारा इन्तहान में का करने का गलत आरोप करने से उसे परीक्षा में बैठने से मना किया था। इ हादसे से निराश जहीर पढ़ाई छोड़कर छोटे-मोटे काम में लग जाता हैं। ब में एक दुकान खोलकर वह अपने दादी और माँ का देखबाल करता है। अ अलग-अलग सामाजिक स्तरों और धर्मों के युवक धीरे-धीरे एक सूत्र बंधते है। किसी न किसी रूप में वे प्रायः सब अत्याचार और अन्याय बिरोध में समाज के सामने आते हैं। इन लोगों को कई समस्याओं का साम

करना पडता है और एक-दो मित्र तो इन अत्याचारों और अन्यायों क शिकार भी बन जाते हैं। इन सब के बीच ज़हीर साथियों की सहायता मुस्कान नामक संस्था खोलता है। इस संस्था के माध्यम से हर साल पं अनाथ बच्चों की परवरिश का जिम्मा लेते गुए स्वयं को जनकल्याण से जं लेता है।

इस उपन्यास के ज़रिए लेखिका समकालीन इलाहाबाद क दयनीय स्थिति का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करती है। जिसमें पुलिस क अनीति, राजनीतिक भृष्टाचार आदि समस्याओं का चित्र भी प्रस्तुत कर है। 'अक्षयवट' में बहुत से ऐसे पात्र हैं जो इलाहाबाद को भूल नहीं पाते। रह-रहकर वहाँ लौटते हैं। शहर के खोने और टूटने को वे बर्दाश्त नहीं क पाते। लेखिका इस खोये और छूटे हुए शहर की पुनर्रचना को ही अप लक्ष्य बनाकर चली है। वास्तव में अक्षयवट को पढ़ना एक बनती बिगड़ और बदरंग होती सभ्यता से साक्षात्कार करना भी है।

कुइयाँजान (2005)

नासिरा शर्मा का नवीनतम उपन्यास है कुइयाँजान। उपन्यास केन्द्र में पानी की समस्या है। इसमें एक मुस्लिम परिवार की ज़िन्दगी अं उसके परिवेश का जीवंत चित्रण हुआ है। पानी को लेकर दो व्यक्तियों लेकर दो राज्यों और दो देशों के बीच तनाव की स्थिति है। पानी के संक को दूर करने के लिए हमारी सरकार ने जो नदी जोड़ने का उपाय सुझाया वह इन बातों की पुष्टि करता है। पर्यावरण और मनुष्य के बीच

परस्परता कायम थी वह भौतिकवादी विकास के चलते कमजोर हुई है। प
के द्वारा 'इंसानी रिश्ते की प्यास और इंसानी रिश्ते के जरिए पानी की प्य
को लेखिका ने अपने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

उपन्यास का परिवेश इलाहाबाद के उन घने बसे मेहल्लों का
जहाँ जीवन खुलकर सांस लेता है। उपन्यास की शुरुआत एक मौलवी
मृत्यु से होती है। मौलवी के पास बदलू नाम का एक लड़का रहता है। इ
दुनिया में मौलवी ही उसके लिए सब कुछ था। वह उसकी मौत से घब
उठता है। मौलवी के अंतिम नहाने के लिए पानी नहीं मिल रहा है। बद
उसकी अंतरात्मा की खुशी के लिए मारा-मारा एक घर से दूसरे घर, दूर
से तीसरे घर भागा। अंत में एक महिला उसका दर्द समझती है और उ
इच्छानुसार पानी ले जाने की इजाजत दे देती है। बाद में बदलू उस घर
रहने लगता है। उस घर के लोग पानी के महत्व को जानने वाले थे। व
एक बहुत बडा हौज बना हुआ है और बरसात के दिनों में वे इस हौज
पानी का संग्रह करती है और साल भर ज़रूरत के अनुसार उसे खर्च कर
है। आज पानी की बर्बादी ही जल-संकट के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार
नदी जोड़ने के सवांल पर नासिरा जी पूरे भारत में बहस अयोजित करवा
चाहती हैं। उपन्यास में कई सेमिनार के आयोजन की चर्चा है। नदी के जो
जाने के सवाल को उपन्यास नकारता है।

कमाल उपन्यास का नायक है। वह एक अच्छा डाक्टर, समाजसे
पति-पिता और बेटा है। वह अति संवेदनशील है। कमाल पानी की समस
को लेकर बहुत अधिक चिन्तित है। लोगों की सेवा करने के लिए वह

वक्त, हर कहीं जाने को तैयार है। राजस्थान में पानी की कमि के का पीड़ित लोगों से मिलकर, उनकी समस्याएँ सुनकर उनका दिल बहुत दुःख है। कमाल की पत्नी समीना परिवार और समाज की भावना की कद्र कर है। परिवार ठीक से चले इसके लिए वह बहुत मेहनत करती है। घर आर्थिक मदद हो और कमाल समाज के प्रति अपने दायित्वों का निव निर्बाध गति से करता रहे इसलिए वह एक स्कूल में नौकरी ढूंढ लेती अंत में उसकी मृत्यु हो जाती है। समीना की मृत्यु के कारण कमाल गम डूब जाता है। परन्तु नदी के घाट पर बैठे जल को निहारते हुए उसे जी की गतिशीलता और उसके प्रति अपने कर्तव्यों का ध्यान हो उठता है। उ वह फिर से संभल जाता है।

'कुइयाँ' अर्थात् वह जलस्रोत जो मनुष्य की प्यास आदिम युग ही बुझाता आया है। कुइयाँ मानव की पहली खोज थी, पहली उपलब्धि जो मानव ने अतीत में अपनी प्राण रक्षा के लिए प्यास बुझाकर हासिल थी। पर आधुनिक युग में टेक्नोलॉजी और मशीनी ताकत के बल पर प्रकृ के इस अक्षय स्रोत जल खिलावड़ कर रहा है। जिसका परिणाम यह है अपार जलसंपदा होते हुए भी मानव आज पानी के लिए तडपते रहते पानी के बिना हम जी नहीं सकते, इसलिए ये छोटे जलस्रोत कुइयाँ हम लिए जान से प्यारा है।

निबंध और आलोचना

कहानी और उपन्यास के अलावा नासिरा शर्मा जी के चार ले संग्रह भी हैं। ये भी समकालीन समस्याओं को आधार बनाकर लिखा ग

लेखों के संग्रह हैं। एक पुस्तक तो ईराक की स्थिति पर भी आधारित है
औरत के लिए औरत, किताब के बहाने, राष्ट्र और मुसलमान, मरजीना व
देश इराक आदि उनके निबंध संकलन व आलोचनात्मक ग्रंथ हैं।

औरत के लिए औरत

नासिरा शर्मा स्वयं को स्त्रीवादी लेखिका होने के ठप्पे से भले
दूर रखने का आग्रह करती हों मगर यह सच है कि उनके सम्यक् लेखन व
धुरी पर सामान्यतः स्त्री ही विराजती है। औरत को लेकर लिखे गये कु
टिप्पणिनुमा आलेखों तथा स्वयं से लिए गये कुछ साक्षात्कारों को प्रस्तु
करती उनकी यह किताव पाठक को स्त्री चिन्ताओं की परस्परता में बाँधती है

भूमिका में नासिरा जी का यह कथन महत्वपूर्ण है - "मर्द-और
एक चने की दो दाल हैं, और दोनों के सहयोग से ही बेहतर समाज व
संरचना संभव है, जो परिवार को शिक्षा, शान्ति, प्रेम और बेहतर भविष्य व
वचन दे सकता है।"[1] स्त्री विमर्श के नाम पर वैचारिक छीना-छीनी के इ
माहौल के विपरीत लेखिका औरत के समक्ष प्रस्तुत समस्याओं तथा संघर्षों
विभिन्न कर्म-क्षेत्रों का सहज सुदृढ़ आकलन करती है तथा स्त्री की बादशाह
की नहीं बल्कि आज़ादी की बात करती है और प्रायः उसकी राह भी सुझा
है। नासिरा जी इन आलेखों में भारत की उस औरत की बात करती है
पुरुष समाज के बारे में होनेवाले विचार-विमर्श को भी प्रमुखता देना चाह
है, क्योंकि इस समस्या की ग्रन्थि का विकास पुरुष मानसिकता में भी हो रहा है

---

1. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत - दो शब्द

आज़ादी के बाद की आधी सदी का स्त्री विषयक विश्लेषण विवेचन इन आलेखों का विशेष केन्द्र है तथा स्त्री के तनाओं को उ पृष्ठभूमि में देखा जाना भी मौलिक लगता है। एक आम भारतीय लड़की व लेखिका एक जीता जागता नाटक सिद्ध किया हैं। वह लडकी वास्तव डॉयलाग, कोस्टुयूम, प्रोपर्टी, भाव-मुद्राएँ तथा अंग-संचालन आदि पूरे 'जीव को एक नाटक की तरह ही अभिनीत करती है। लेखिका अपने आलेखों अलग-अलग कोनों से यह प्रश्न उठाती है कि सारी मर्यादाओं का बोझ मा स्त्री ही क्यों उठाए?

'औरत के लिए औरत' नारी विमर्श के अन्तर्गत औरत के लि एक औरत की दृष्टि से तमाम विचार बिन्दुओं पर सोच प्रस्तुत करने वा वैचारिकता है जिसे विचार यात्रा से प्राप्त निकष लेखों के रूप में प्रस्तुत कि गया है। इस पुस्तक के भाग एक में पन्द्रह मुख्य विषयों और अड़तालीस उपविषयों पर लेख हैं तथा भाग दो में दस साक्षात्कार और इससे भी पह लेखिका नासिरा शर्मा द्वारा लिखे गये दो शब्द जिनमें उनके भीतर की और का सोच हैं - "औरत अधिक ईमानदार निष्ठावान, कर्मठ, धैर्यवान औ बलिदान करने वाला एक ऐसा जीवन है जिसका मुकाबला दुनिया का दूस प्राणी नहीं कर सकता है।"[1]

नासिराजी ने अपने सरोकारों को लेखों में उतारा है, उनव फलक निश्चित ही व्यापक है। बचपन से बच्चियों का यह सुनते चले आ

---

1. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत - दो शब्द

कि ज़रा कम बोलो, जबान बहुत चलने लगी हैं। बचपन का यह दबाव, य शाब्दिक हिंसा जिसकी शिकार अधिकांश औरतें हैं, उनकी सहजता मनोवैज्ञानिक स्तर पर दंशित करके इतना असहज कर जाते हैं कि अपनी मूल सहजता अभिव्यक्ति खो बैठती हैं। वस्तुतः इस सत्य को कै झुठला दिया जाये कि लड़कियाँ करना कुछ चाहती हैं, उससे करवाया कु जाता है।

इन लेखों के माध्यम से नासिरा जी ने समाज से जड़ रूढ़ियों मुक्त होने की अपेक्षा की है। कामकाजी महिलाओं की स्थिति, मज़बू समस्याओं और वेदना को पूरी संवेदना के साथ प्रस्तुत करने में लेखि सफल रही हैं। विभिन्न परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए नारी के संघ को इन लेखों में पूरी 'जीवन्तता' से जीते हुए, मानवीय धरातल पर उस विश्लेषण और यथार्थवादी धरातल पर चित्रण, इन लेखों का वैशिष्ठ्य है प्रगतिशीलता के नाम पर रिश्तों की तिजारत करनेवालों की भी आलोच करने का साहस लेखिका ने दिखाया है।

किताब के बहाने

इस पुस्तक के सारे लेख जो हिन्दी, उर्दू, फारसी, अरबी अंग्रेज़ी पुस्तकों पर लिखे गए हैं। जिनके द्वारा ज़िन्दगी के कुछ अहम मु और संवेदना का संसार हमारे सामने उजागर होता है। यह पुस्तक किसी ए बिन्दु से अपनी बात उठा तर्क व तथ्य के सहारे एक लेखक को कई लेखव इलाकों, विचारधाराओं और यथार्थ की अनगिनत पगडंडियों से जोड

अपनी परिक्रमा पूरी कर पाठकं को सोच के उस धरातल पर ले जाकर ख
करती है। किसी एक किताब का फलक कितना विस्तृत हो सकता है, इस
उदाहरण ये लेख हैं, जो देशी और विदेशी लेखकों द्वारा सभ्यता समा
साहित्य, नारी-आत्मकथा जैसे विषयों पर लिखे गए हैं। ये लेख सात सौ व
पहले लिखी पुस्तक से लेकर बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों तक लिखी कृति
से हमारा परिचय कराते हैं।

राष्ट्र और मुसलमान

नासिरा शर्मा की 'राष्ट्र और मुसलमान' पूरी तरह से नई किता
नहीं है। इसके अनेक अंश पहले के लिखित और प्रकाशित है। लेकि
इसका बहुलांश इस तात्कालिकता स्थिति से बहुत गहरे रूप में जुड़ा है अं
यह तात्कालिक ही इसे एक सामाजिक अर्थवत्ता भी देती है। नासिरा
जितनी मुसलमान हैं, कम से कम उतनी ही हिन्दु भी है। यही कारण है
वे एक बृहत्तर भारतीय और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इन समस्याओं को गह
संवेदना के साथ देख परख सकी है। अपनी प्रकृति में इस पुस्तक का दाय
बहुत व्यापक है - यह धर्म, राजनीति, साहित्य, समाज, स्त्री आदि अनेक मु
पर विचार करती है। यह उस राजनीति के चेहरे को भी सामने लाने व
कोशिश करती है जो इस्लामी धर्मग्रन्थ कुरान के नाम पर धर्म का वे
इस्तेमाल करती रही है और जब-तब उसे मुसलमानों को ही एक बहुत ब
वर्ग के विरुद्ध शोषण आतंक और असुरक्षा का हथियार बनाती रही है

नासिरा शर्मा गहरी पीड़ा के साथ अनुभव करती हैं कि सियास
ने दो धर्मों-हिन्दु और इस्लाम के बीच काफ़ी ज़हर घोला है। वे पारस्परि

मेल और समझदारी पर बल देती हैं, बुनियादी समस्याओं-पिछड़ापन, भ
कुंठा, गरीबी, बेरोज़गारी आदि पर अपने को केन्द्रित करके कुछ बेह
नतीजे निकाल सकते हैं और एक बेहतर समाज के निर्माण में यह शा
हमारा ज़रूरी योगदान भी होगा। वे लिखती हैं, "मुसलमान भारत
आबादी का एक ऐसा सच है, जिसको नकारा नहीं जा सकता। उसके व
को झुठलाना या उसको प्रताड़ित करना भी सच्चाई से भागने का एक गै
ज़रूरी प्रयास है जो हमको केवल थकान दे सकता है, मगर हमको हम
मुहमांगी मुराद नहीं दे सकता कि सारे मुसलमान पलक झपकते ही हम
आखों से दूर चले जाएं। मुसलमानों को नकारने का अर्थ है, उन बहुत स
मान्यताओं, मर्यादाओं, परंपरा, विचार मूल्यों से इनकार करना जो हमा
सोच संवेदना में नहीं बल्कि हमारे सृजन-संसार में दाखिल होकर हमा
अभिव्यक्ति द्वारा साहित्य, नृत्य, चित्रकला, संगीत, वास्तुशास्त्र में इस त
दाखिल हो गयी हैं कि उनको निकालने का अर्थ है अपने को कुरूप कर
अपने को नीम-बेहोश अवस्था में छोड़ देना।"[1] हमारी संस्कृति को तिरस्कृ
करने वाले बच्चों को दोष नहीं देते। बच्चे घर-परिवार से संस्कार ग्रह
करते हैं अतः नासिरा शर्म यह जिम्मेदारी देश के जवान माँ-बाप पर डाल
हैं कि वे अपने बच्चों में ऐसे संस्कार विकसित करें जो उन्हें, अलग-अल
ढंग से हिन्दु या मुसलमान न बनाकर हिन्दुस्तानी बनाएं। नासिरा
इतिहास के आईने में भारत अरब सम्बन्धों को भी देखने की कोशिश कर
हैं। भारत के प्रति अरबों का गहरा सम्मोहन या और उसी के कारण भा

---

1. नासिरा शर्मा - राष्ट्र और मुसलमान - पृ. 16

उन्हें आकर्षित करता था। व्यापार, साहित्य, कला और संस्कृति हर क्षेत्र इस आकर्षण का प्रभाव देखा जा सकता है। अनेक अरब विद्वानों उ यात्रियों के उद्धरणों के आधार पर नासिरा शर्मा इस सांस्कृतिक संबन्ध पुष्टि करती हैं। नासिरा शर्मा कुरान के संदर्भ में मुल्ला-मौलवियों की धार्मि कट्टरता, सामान्य बेपढ़ी मुस्लिम जनता को आतंकित करने की प्रवृत्ति उ कुल मिलाकर उसके अनेक असंबद्ध प्रसंगों का हवाला देकर उनके राजनीति दुरुपयोग पर भी अपनी चिंता प्रकट करती हैं। नासिरा शर्मा उनकी पढ़ और बेरोज़गारी पर बल देती हैं और धार्मिक स्थलों में उनके जीवन नियन्त्रण की प्रवृत्ति की आलोचना करती हैं। वे धर्म को एक पोषक तत्व रूप में देखे जाने की पैरवी करती हैं जबकि वर्तमान में वह शोषण का एक बड़ा ज़रिए बना हुआ है। वे मानती हैं कि आम मुसलमान औरत न तो शरीयत के कानूनों का ज्ञान होता है और न ही देश की कानून-व्यवस्था की उसे कोई जानकारी होती है। फलतः तलाक, मेहर, विवाह आदि मुद्दों उसे अंधेरे में रखकर उसका उत्पीड़न किया जाता है। चाहे ईरान हो या फि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत, धार्मिक कट्टरता का पहला ब शिकार मुसलमान औरत होती है जिससे शिक्षा और विचार के आधार प ही मुक्ति संभव है। मुस्लिम स्त्रियों की शिक्षा, साहित्य और वैचारिक जागृ के संदर्भ में किए जानेवाले कार्य का संक्षिप्त सिंहावलोकन भी यहाँ नासि शर्मा ने किया है।

मरजीना का देश इराक

यह नासिरा शर्मा की एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक उन्होंने महान जीवन अफसाने - 'आलिबाबा के चालीस चोर' के मु किरदार मरजीना के देश 'इराक' के समाज, राजनीति, इतिहास, साहि कला और संस्कृति पर व्यापक प्रकाश डालते हुए वस्तुनिष्ठ विश्लेषण कि है। वे इराक की महान गौरवशाली सभ्यता, संस्कृति और परम्परा उल्लेख विस्तार से करती है - "मेसोपोटामिया सभ्यता संसार की प्रार्च सभ्यताओं में से एक है। दजला, फरात, नदियों के किनारे बसा इलाका कि भी तरह से भारत और मिस्र की उपजाऊ मिट्टी ललित कलाओं अ साहित्य - संगीत से पीछे नहीं और आज भी यह प्राचीन परम्परा वर्तमान उसी चमक-दमक के साथ नजर आती है। इराक का ऐतिहासिक बगद जहाँ मस्जिदों, मीनारों और पुरानी इमारतों से सजा नजर आता है वहीं प गगन-चुम्बी नई बनी इमारत भी ध्यान खींचती है। शहर के बीचों-बीच बहती दजला नदी शहर को एक नई खुबसूरती देती है"[1] विश्व सम्यता अ संस्कृति के इतिहास में मेसोपोटामिया सभ्यता संसार की प्राचीन सभ्यताओं से एक है। वास्तव में मेसोपोटामिया की सभ्यता मानव सभ्यता के विकास प्रारम्भिक युग की वह महान सभ्यता है। इराक की इस महान सभ्यता अनेक आक्रमणकारियों ने तहस-नहस किया। लेकिन वहाँ की लोगों जिजीविषा और संघर्ष के परिणामस्वरूप बगदाद जो कई बार उजडा अ

---

1. नासिरा शर्मा - मरजीना का देश इराक - पृ. 45

बसा अपनी महान सभ्यता और संस्कृति के बुनियाद पर हर तबाही के ब
खडा हो गया। इराकियों की इस जिजीविषा के बारे में नासिरा जी ने लिर
है - "बगदाद जो कई बार उजडा और कई बार बसा, मगर हर तबाही
बाद वह उस संस्कृति एवं सभ्यता की बुनियाद पर खड़ा दोबारा शादाब
गया।"[1]

अमरीका न केवल शान्ति का दुश्मन है बल्कि साम्राज्यवादी यु
का मुखिया है। अमरीकी साम्राज्यवाद ने दुनिया के प्रमुख साम्राज्यवादी देः
को साथ लेकर तीसरी दुनिया के देशों में आतंक, तानाशाही और अशान्ि
फैला रखी है। इराक और इरान, अमरीका एक दशक तक लडते रहे अै
अब भी लड रहे हैं। और हज़ारों इराकी और ईरानी बेगुनाह लोगों व
अपनी जान देकर भारी कीमत चुकानी पडी। नासिरा शर्मा ने इस युद्ध व
भी मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। जब इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन
अमरीकी साम्राज्यवाद का अंग न बने और अमरीका की धमकी से भयभी
न होकर चुनौती का सामना किया तो अमरीक ने नर संहार, हथिया
अलकायदा तथा सद्दाम के आपसी सम्बन्धों का षड्यन्त्र रचके, अप
साम्राज्यवादी सहयोगियों के साथ जबरदस्ती इराक पर युद्ध धोप दिया
अमरीका वहां कठपुतली सरकार बनाकर अपने हितों की सुरक्षा कर रा
है। इन तथ्यों पर नासिरा शर्मा ने प्रस्तुत पुस्तक में अमरीकी नीतिय
साम्राज्यवादी हितों, पूंजीवादी साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था को उजागर कर

---

1. नासिरा शर्मा - मरजीना का देश इराक - पृ. 79

हुए बेहतर समाज के लिए इराकी मज़दूरों, किसानों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवि की व्यापक एकता, प्रतिरोध और संघर्ष को भी स्वर प्रदान किया है।

नासिरा जी ने प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे महत्वपूर्ण तथ्यों पर विस्त से प्रकाश डाला है जिन पर आज विश्व समुदाय को गहराई से विचार कर चाहिए। लेखिका ने विषय की गहराई में जाकर अमरीकी साम्राज्यव नीतियों के विरुद्ध आक्रामक स्वर का प्रयोग किया है, वहीं सद्दाम हुसैन भी भूरि-भूमि प्रशंसा न करके वस्तुनिष्ठ टिप्पणियाँ की है। 'मरजीना का इराक' में इराकी परंपरा को जी कर महसूस करने का सजीव चित्रण है

'मरजीना का देश-इराक' तीन खण्डों में बंटी किताब है। पह खण्ड इराक के सद्दाम हुसैन काल का वह स्वर्णिम दौर है जब इराक अ देशों में सबसे ज्यादा चमक रहा है। दूसरा खण्ड 1990 से 2003 तक क जब इराक का कुवैत पर हमला और पहला खाड़ी युद्ध हुआ। यह ख वेस्ट या मध्यपूर्वी एशिया के तमाम ऐतिहासिक, राजनैतिक व आर्थिक तथ पूरी समग्रता के साथ क्षेत्र की जटिलता को पाठकों तक पहुंचाता है। इस 19वीं व 20वीं सदी के यूरोप व पश्चिम एशिया के राजनैतिक व सामाजि संदर्भ पाठक को एक 'सेंस ऑफ हिस्ट्री' देते हैं। खासकर प्रथम व द्वित विश्वयुद्धों के दौरान अरब राज्यों का पुनर्गठन व उनसे उपजे जटिल प्रश्न कुर्द, तुर्क व सीरियाई संबन्धों का ऐतिहासिक पक्ष और सऊदी व कुवै राजवंश की स्थापना आदि। तीसरा खंड सन 2003 की इराक पर अमेरि कार्रवाई व उससे उपजे राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों, संयुक्त राष्ट्र संघ प्रभावहीनता, ब्रिटिश व इज़राइली मक्कारी, घृष्टता और एक ध्रुवीय वि

व वैश्वीकरण के भयानक व मानव जाति को लीलनेवाले खतरों की विवेच करता है।

'मरजीना का देश-इराक' पाठकों को इराक में हुई सामाजिव मनोवैज्ञानिक क्षति की समग्रता का न सिर्फ अहसास कराती है बल्कि अमेरिकी धृष्टता, लालच और संपूर्ण मानवता के प्रति किए गए निर्म व्यभिचार का भी पर्दाफाश करती है।

नाटक और अन्य रचनाएँ

उपनयास और कहानी के अलावा दो नाटक 'दहलीज' औ 'सबीना के चालीस चोर भी प्रकाशित हैं। 'राष्ट्र और मुसलमान' की तर 'अफगानिस्तान : बुदकशी का मैदान (दो खण्डों में)' नामक अध्ययन औ 'जहाँ फौव्वार लहु रोते हैं' नामक रिपोर्ताज भी है। कई पुस्तकों का अनुवा भी उन्होंने किया है। शाहनामा-ए-फिरदौसी, गुलिस्तान-ए-सादी, बर्निंग फाय इकोज आफ ईरनियन रेवोलूशन : प्रोटेस्ट पोएट्री, किस्सा जाम का, कात छोटी मछली, फारसी की रोचक कहानियाँ आदि अनूदित ग्रन्थ हैं। इन अलावा माँ, तडप, आया वसंत सखी, काली मोहिनी, सेमल का दरख बावली आदि टी.वी. फिल्म भी बनाया। बापसी, सरजमीन, शालमली आ उनसे बनी हुई सीरियल है। साक्षरता के क्षेत्र में भी उन्होंने अपने योगदा दिये हैं। पढ़ने का हक, सच्ची सहेली, गिल्लों बी, धन्यवाद! धन्यवाद! आ उस पर आधारित है। सारिका, पुनश्च का ईरानी क्रान्ति विशेषांक, वर्तमा साहित्य का महिला-लेखन अंक एवं क्षितिजपर, राजसथानी लेखकों व

कहानियाँ आदि का संपादन - संयोजन भी उन्होंने किया है। नासिरा जी व
प्रकाशित साहित्य उनकी बहुमुखी सक्रियता का साक्षी है।

निष्कर्ष

नासिरा शर्मा समकालीन हिन्दी साहित्य की सशक्त लेखिका हैं
हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेज़ी और पश्तो भाषाओं पर गहरी पकड़ हैं। ई
ईरानी समाज और राजनीति के अलावा साहित्य कला व संस्कृति विषयों व
विशेषज्ञा हैं। इराक् अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा भारतीय राजनीतिज्ञ
और बुद्धिजीवियों से उन्होंने जो इन्टर्व्यू लिये थे, वे बहुचर्चित हुए। यु
बंदियों पर जर्मन-फ्रांसीसी दूरदर्शन के लिए बनी फिल्म में उनकी बडी वे
रही। सृजनात्मक लेखन में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के साथ-साथ स्वतः
पत्रकारिता में भी उन्होंने बहुत काम किया। हिन्दी में कई कहानिय
उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आलोचना लिखकर और अनुवाद करके उन्हें
अपनी पहचान बनायी।

हिन्दी के वे प्रगतिशील मानवधर्मी उपन्यासकार हैं। उनके छ
उपन्यास प्रकाशित हुए हैं - 'सात नदियाँ : एक समन्दर', 'शाल्मली', 'ठीव
की मँगनी', 'जिन्दा मुहावरे', 'अक्षयवट' और 'कुइयाँजान'। धार्मिक तानाशा
की विभीषिकाएं, नौकरी पेशा नारी की पीड़ा और संघर्ष, बँटवारे की त्रासव
इलाहाबाद शहर की दुःस्थिति, पर्यावरण प्रदूषण एवं पानी की समस्या आ
विभिन्न विषयों को उन्होंने अपने उपन्यासों का विषय बनाया। विषय व
व्यापकता, विभिन्न देशों से प्राप्त अनुभव की अभिव्यक्ति, शिल्पगत खासिय
आदि नासिराजी के उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

नासिरा शर्मा एक ऐसी कहानीकार भी हैं जो देश-काल-ध
जाति-संप्रदाय के भेदों से ऊपर उठकर एक दिल और एक दिमागव
इनसान के दुःख-दर्द, उत्थान-पतन को आकार देती हैं। उनके प्रमुख कहान
संकलन हैं - पत्थर गली, शामी कागस, संगसार, इब्ने मरियम, सबीना
चालीस चोर, खुदा की वापसी, इनसानी नस्ल, दूसरा ताजमहल और बुतखान
नासिरा शर्मा का कहानी संसार व्यापक मानवीय संवेदना का संसार है
उनकी कहानियों में ईरान की धरती से जुडे वहाँ के आवाम का संघर्ष
दुःख-दर्द है। रूढियों में जकड़ी किन्तु आधुनिक जीवन की दौड में अ
बढ़ने के लिए बेचैन पिछडे वर्ग की मुसलमान जनता है। तानाशाही
खिलाफ ईरानी जनता की जंग है। फिलस्तीनी गुरिल्लाओं की फटेहाली है
दूसरे विश्व-युद्ध के दौर में बेहद तनाव की जिन्दगी जीनेवाले यहूदी है
आधुनिक सुविधाओं से वंचित हिन्दुस्थान की गरीब जनता है। पुरुष-प्रध
समाज में हदीस, शरीयत और कुरान में औरतों को दिये गये अधिकारों क
जानकारी से लैस अपने हक के लिए संघर्ष करती मुस्लीम औरतें हैं। ध
जाति, भाषा और संप्रदाय के ऊपरी भेद-भाव को लेकर आपस में टकरानेव
इन्सानों की छीजती संवेदना का गहरा अहसास और दर्द है।

उपन्यास और कहानी के अलावा नाटक, निबन्ध, आलोचन
स्त्री विमर्श, टेलिफिल्म लेखन - निर्देशन, अनुवाद, साक्षात्कार, साहित
पत्रकारिता संपादन आदि क्षेत्रों में भी उन्होंने अपनी सर्जनात्मकता दर्ज क
है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा का रचना-व्यक्तित्व क
सबसे बडी शक्ति सारे भेद-प्रभेदों के ऊपरी आवरण के नीचे दबी इंसानिय
को उभारकर ऊपर लाने की प्रतिवद्धता है।

❖❖❖

अध्याय - 3

नासिरा शर्मा की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ

प्रस्तावना

वास्तव में देखा जाय तो साहित्य समाज की सबसे आधि वैयक्तिक और व्यक्ति की सबसे अधिक सामाजिक क्रिया है। लेखक जग को जितनी तीव्रता और संपूर्णता से आत्मसात् करेगा उतनी अधिक विद्‌गधता उसकी रचना में होगी।[1] डॉ. नेमीचन्द्र जैन की यह उक्ति अत्य सार्थक है। साहित्यकार अपने इस विशिष्ट गुण के कारण ही न केव अपनी मूल्यगत विशेषताएँ समाज को देते हैं, वह तो समाज को अपेक्षि परिवर्तनों की ओर अग्रसर कराते हैं। साहित्य का ताना-बाना तो समाज हर सुख-दुखों, समस्याओं - सुझावों से बुना जाता है। उसमें समाज का स्पंद बोलता है। एक ओर लेखक जहाँ समाज की गतिविधियों से प्रभावित हो हैं, वहीं दूसरी ओर समाज में आयी नये परिवर्तनों को भी प्रस्तुत करते हैं आदिकाल से ही समाज और साहित्य का अटूट सम्बन्ध रहा है। किसी भ देश के साहित्य में वहाँ के समाज की समस्याओं, मान्यताओं एवं रीतियों चित्र मिलते हैं। साहित्य तो समाज का दर्पण है। साहित्य की विषयवस समाज से प्रभावित होता है। साहित्य का उद्देश्य ही मानव और समाज व कल्याण करना हैं। समाज का यथार्थ चित्रण कथा साहित्य का मुख्य उद्देश

---

1. नेमीचन्द्र जैन - वदलते परिप्रेक्ष्य - पृ. 51

है। हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थ चित्रण से मतलब प्राकृतिक दृश्यों औ बाह्यवस्तु के वर्णन तक ही समझा जाता था। लेकिन समकालीन कथासाहित में जीवन के अनेक पहलुओं को प्रस्तुत करने का प्रयसा है।

यथार्थ

कथा और उपन्यास यद्यपि कल्पना की सृष्टि हैं तो भी इस प्रतिपादित सत्य कभी-कभी हमारे अनुभूत सत्यों का भी अतिक्रमण कर हैं। इस कारण से जीवन को समझने में कहानी और उपन्यास अत्यन उपयोगी हैं। कथासाहित्य तो सामाजिक - राजनीतिक यथार्थ, सांप्रदायिकत की विभीषिका, आदि के चित्रण का सशक्त माध्यम है। यथार्थ की तलाश और चित्रण ही साहित्यकार की अंतिम लक्ष्य है, ऐसा नहीं है। समकाली कथा साहित्य में इस बदलेती दुनिया का यथार्थ ही अधिक उभरा है। यथा चित्रण के ज़रिये रचनाकार इस संसार को, वहाँ के जीवन को हमारे साम प्रस्तुत करते हैं। यथार्थ से तात्पर्य केवल बाह्य रूप से दिखाई देनेवाले यथा से नहीं है। उसके भीतरी स्तर भी होते हैं। घटनाओं के अतिरिक्त मनःस्थितिय भी रहती हैं जिसका सम्मिलित रूप ही सही यथार्थ बनता है। यथार्थ सच्ची और गहरी अनुभूति का होना चाहिए। गोर्की ने यथार्थ के बारे में क है - "वस्तुस्थिति मात्र को यथार्थ नहीं कहा जा सकता है। ग्राहक-क्षमता बड़ चीज़ है। किसी वस्तु-स्थिति को ग्रहण करना और भौतिक दृष्टि से लेन जीवन की विसंगतियों पर ध्यान देना यथार्थ है।" गोर्की का मत है - मैं चाहत हूँ कि साहित्य यथार्थ से ऊपर उठे, क्योंकि साहित्य का उद्देश्य महान है। व

केवल मात्र यथार्थ का प्रतिबिम्ब नहीं है। विद्यमान वस्तुओं का चित्रण कर भी पर्याप्त नहीं है। हमें उन पदार्थों का भी ध्यान रखना चाहिए, जिनकी ह आकांक्षा करते हैं और जिनकी उपलब्धि की संभावना है।"[1]

संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में यथार्थ का अर्थ इस प्रकार दि गया है -

यथार्थ - अव्य (सं) ठीक। वाजिब। उचित, जैसा होना चाहि वैसा।"[2] अंग्रेजी में reality इसका प्रतिशब्द है। अंग्रेज़ी - हिन्दी कोश अनुसार वास्तविकता, असलियत, यथार्थता, सच्चाई, यथार्थवादिता, यथार्थसत्त यथार्थतत्व reality के अर्थ हैं।"[3]

इनसाइक्लोरीडिया आफ फिलोसफी एण्ड साइकौलोजी :

'यथार्थ' का अभिप्राय फोटो के अनुसार वस्तुनिष्ठ अनुभव हो और यथार्थ में प्रभेद नहीं है। अरस्तु के अनुसार वह रूप और पदार्थ व संयोजन है।"[4]

---

1. "I want literature to rise above reality and to look down or reality fro above, because literature has great purpose than merely to refle reality. It is not enough merely to depict already existing things. W must also bear in mind the things we desire and things which a possible of achievement - Gorky Maxin Internation Ltd, Moscow 194 P. 145.
2. संपा रामचन्द्र वर्मा - संक्षिप्त हिन्दी शव्दसागर - पृ. 840
3. फादर कामिल बुल्के - अंग्रेज़ी हिन्दी कोश - पृ. 543
4. Encyclopaedia of Philosophy and Psychology : Vol. IV. 420-421

दि रीडर्स डाइजेस्ट ग्रेट इनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी :

यथार्थ, संज्ञा, वास्तविकता, मूल से सादृश्य वास्तविक अस्ति
जो सत्य है, बाह्य प्रतीतियों में अंतर्निहित तत्व, विद्यमान वस्तु, यथार्थ व
वास्तविक प्रकृति ।"[1]

यथार्थ के संबन्ध में विद्वान आचार्यों के कई मत हैं -

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार - "असंगति और विघटन यथार्थ
सकता है... परन्तु यह समग्र यथार्थ नहीं, खण्ड यथार्थ मात्र है । विज्ञान व
नियम संघटन है, विघटन नहीं । यथार्थ-बोध की ऐसी परिभाषा जो जीवन
निषेध करे अयथार्थ मानी जायेगी । ....यथार्थ-बोध को सचेतन प्रक्रिया
मानकर एक सहज अप्रत्यक्ष प्रक्रिया मानना ही संगत है । सचेतनता का अ
है बोध, सर्जना की प्रक्रिया में बोध की प्रमुखता बाधक हो सकती है ।"[2]

यथार्थ सत्य, वास्तविक, वस्तुस्थिति आदि कई अर्थों में लिय
जाता है परंतु 'यथार्थ' शब्द की संधि करने पर यथा+अर्थ मिलता है । दो
शब्दों का अर्थ ग्रहण करने पर यथा अर्थ है जिसका अथवा जिसका जो अ
है, जिसकी जो स्थिति है, जो रूप है दशा है या वास्तविकता है या जो सत
है वही यथार्थ है । उपर्युक्त सभी तथ्यों का ज्ञान एवं अनुभव इन्द्रियों द्वारा व

---

1. The Readers Digest Great Encyclopaedic Dictionary : Vol. 2 P. 73
Reality, L. Property of being real, resemblence to one genal real e
istence, what is real, what underlies appearanes existent thing; re
nature of.
2. डॉ. नगेन्द्र : नई समीक्षा - नये संदर्भ - पृ. 66

जाता है अथवा स्वयं अपने आप देख-सुनकर भी हो जाता है। इसलि इन्द्रियजन्य अनुभव या इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न हुआ ज्ञान अथवा अनुभूति यथार्थ है।

यथार्थ की कोई सम्पूर्ण परिभाषा नहीं दी जा सकती। व्यक्ति व यथार्थ भी यथार्थ है समाज तथा परिवेशों का भी। यथार्थ को सही रूप पहचानने के लिए जो यथार्थ-नहीं है उसकी भी सही जानकारी आवश्यक है मानव जीवन की बाह्य परिस्थितियों का ज्ञान मात्र यथार्थ नहीं। व्यक्ति व आंतरिक भावाओं का ज्ञान भी होना चाहिए। यथार्थ वास्तव में जीवन व सच्चाइयाँ है।

समकालीन कथा साहित्य में यथार्थ का चित्रण

समकालीन कथा साहित्य में ही यथार्थ का चित्रण है ऐसा न है, उससे पहले भी यथार्थ चित्रण हुआ है। लेकिन जिस प्रकार समकाली कथा साहित्य में खुलकर यथार्थ का चित्रण हो रहा है उतना पहले नहीं था पहले यथार्थ का प्रत्यक्ष रूप में वर्णन नहीं था, लेकिन समकालीन साहित्य यथार्थ का उसके सभी रूपों का वर्णन प्रत्यक्ष रूप में किया जाता है। यथा लेखन में रचनाकार की एक वैचारिक दृष्टि होती है। अनुभव से रहि चित्रण यथार्थ नहीं है, अनुभव के आधार पर जो वस्तु-चित्रण होता है वा यथार्थ है। 'यथार्थ' जीवन के वस्तुगत चित्रण के साथ ही उसकी छिपी सत को उद्‌घाटित कर सके, उन्हें समझने में सहायक हो सके। सत्य किसी संद से संपृक्त होकर पाठकीय अनुभूति का विषय बन जाये, यही यथार्थ की स पहचान है।

साहित्य में कितने भी यथार्थ का वर्णन क्यों न हो लेकिन उस मनुष्य जवीन ओर समाज की चेतना तथा मूल्यों का बोध नहीं है साहित्यिक दृष्टि से उस साहित्य का कोई महत्व नहीं है। यथार्थ चित्रण व्यक्ति, समाज और जीवन तीनों ही को उनके भूत, भविष्य और वर्तमा तीनों कालों की परिस्थितियों में विश्लेषित किया जाता है। साहित्य में व सभी यथार्थ माना जाता है जिसमें कि साहित्यकार की स्वयं की अनुभूत होती है और जिसे वह दूसरों को भी अनुभव करा सकता है। यथार्थ चित्रण में वास्तविक जीवन में उपयोग की जाने वाली कल्पना भी सत्य ब जाती है, इसलिए "प्रतीकात्मक कल्पनाएँ साकार हो जाने पर यथार्थ का रू धारण कर लेती हैं।"[1] डॉ. रामदरश मिश्र ने भी यथार्थ की पहचान दो स्त पर की है - "एक तो समकालीन जीवन में लक्षित होने वाले संबन्धों प्रसंग समस्याओं, घटनाओं, हलचलों आदि की स्वीकृति के स्तर पर, दूसरे इ समस्त संबन्धों, प्रसंगों, समस्याओं, घटनाओं, हलचलों आदि के मूल में का करनेवाली केन्द्रवर्ती चेतना की समझ के स्तर पर। वास्तव में यथार्थ-दृष्टि इस दूसरे रूप में ही दिखाई पडती है।"[2] एक अन्य सन्दर्भ में भी मिश्र यथार्थ के वारे में कहा है कि "यह निर्विवाद सत्य है कि साहित्य मान समाज की यथार्थ समस्याओं, आकांक्षाओं, विचारों, भावों और कार्यों का चि है। वह यथार्थ चित्रण द्वारा ही मानव मन में यह विश्वास पैदा करता है कि वह जो कुछ कह रहा है वह उसी की दुनिया की बात है। मनुष्य उसमें अप

---

1. डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - पृ. 70
2. डॉ. रामदरश मिश्र - हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान - पृ. 7

सच्चा रूप देखकर हँसता है, रोता है, अपनी संवेदनाओं का विस्तार करत है, अपनी समस्याओं का हल ढूँढता है।"[1]

सही यथार्थ जीवन-मूल्यों व जीवन-दृष्टि से सम्पन्न रहता है यथार्थ में केवल निराशा और कुंठा मात्र नहीं है, यथार्थ एक दृष्टि मार्गदर्शक भी है। यथार्थ को वास्तविकता के साथ अपनत्व और आत्मीयत से जुडा रहना चाहिए। यथार्थ को देशकाल सन्दर्भ से जुडा होने के सा लेखक के मन व मस्तिष्क की छाप होनी चाहिए। यथार्थ इतना दुरूह औ क्लिष्ट भी नहीं हो कि पाठक को रुचिहीन लगे। यथार्थ के नाम पर कथ साहित्य से कथा का लोप नहीं होना चाहिए। समकालीन कथा साहित्य उ यथार्थ की साहित्य है, उसका यथार्थ जीवन की अनेक तहों में लिपटा है ये सामाजिक, पारिवारिक संबन्धों, दाम्पत्य धर्म, राजनीति, सांप्रदायिकत और जातीयता आदि की बहुआयामी है। यथार्थ का चयन समकाली कथासाहित्य की प्रतिबद्धता हैं।

सामाजिक यथार्थ

किसी भी दौर के कथा साहित्य केलिए अपने समय और समा की स्थितियों के यथार्थ का साक्षात्कार विशेष महत्व रखता है। यह साक्षात्क हमें स्थिति के मूल स्रोत तक पहुँचा सकता है, उनकी समझ प्रदान कर सकत है और निर्णय ले सकने का विवेक पैदा कर सकता है। समाज तथा मान की जीवन सच्चाइयों को उसी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। सामाजिक यथा

---

1. डॉ. रामदरश मिश्र - साहित्य संदर्भ और मूल्य - पृ. 24

की सही परख तो रचनाकार की सत्य के प्रति जिज्ञासा और उसका ईमान्द तथा गहरी संपृक्ति में ही होता है।

सामाजिक यथार्थ वास्तविकता को कलात्मक रूप देता है लेखक अपने मूल विचार को विविध प्रकार से अभिव्यक्ति देता है। समाज भीतर रहनेवाली विषमताएँ भ्रष्टाचार, व्यक्तिगत स्वार्थ आदि बुराइयां उनका क्या कुपरिणाम होता है, समाज उससे किस दयनीय स्थिति तक पहुँ जाता है, इसी का यथार्थ चित्रण सामाजिक यथार्थवाद का उद्देश्य है सामाजिक यथार्थवादी रचनाकार इस बात की अपेक्षा रखता है कि व सामाजिक विकास नियमों को उनकी मूल द्वन्द्वात्मकता में परखे और पहचा सामाजिक विकास की मूलवर्ती दिशा को उसकी सम्पूर्ण ऐतिहासिक प्रक्रि के साथ समझे ताकि अन्तर्विरोधों तथा असंगतियों के बीच से होने वा समाज के गुणात्मक विकास के प्रति उनकी दृष्टि धुंधली न होने पावे। यु सत्य से परिपूर्ण रचना ही यथार्थवादी साहित्य की कोट में सम्मिलित सकती है।

समाज से सम्बन्धित किसी भी घटनाक्रम का ज्यों का त्यों चित्र ही सामाजिक यथार्थ कहलाता है। मनुष्य द्वारा की गई सामान्य क्रियाओं सच्चे चित्रण को भी कहा जा सकते हैं। ज्ञान शब्द-कोश में सामाजिक श का अर्थ - "समाज संबन्धी, समाज में पाये जानेवाला आदि से लिया गया है। इसी शब्द कोश में यथार्थ का अर्थ - "सत्य प्रकट, उचित आदि दिया ग

1. मुकुन्दी काल श्रीवास्तव (सं) - ज्ञान शब्द कोश - पृ. 857

है।"[1] इन दोनों के अर्थों को मिलाकर सामाजिक यथार्थ से तात्पर्य समाज घटित होने वाली सच्ची घटनाओं का यथार्थ चित्रण ही सामाजिक यथा कहलाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं सामाजिक यथार्थ एक अमूर्त श है। दिन-प्रतिदिन मनुष्यों द्वारा कार्यकलाप होते रहते हैं उनका मूल प्रदर्श ही सामाजिक यथार्थ कहलाता है। सामाजिक शब्द की व्याख्या करते हुए ड सुरेश धीगडा ने लिखा है कि "व्यक्ति या मनुष्य इन्हीं प्राथमिक या द्वितीय समूहों का सदस्य होता है।"[2] सामाजिक यथार्थ को चित्रित करते हुए प्रेमच ने 'शतरंज के खिलाडी' नामक कहानी में लिखा है - "मुन्हें निगोडी शतरं इतनी प्यारी है। चाहे कोई मर ही जाए, पर उठने का नाम नहीं लेते। नौ कोई तुम जैसा आदमी हो।' इससे सामाजिक यथार्थ की स्थिति का स्पष्टीकर हो जाता है।

सामाजिक यथार्थ से ही साहित्य में अभिरुचि उत्पन्न होती क्योंकि साहित्य का प्रयोजन किसी भी सचाई को वास्तविक तौर पर चित्र करना होता है। मनुष्य जो भी प्रगति करता है वह भी सामाजिक यथार्थ व ही प्रतिरूप है। व्यक्ति प्रगति समाज की प्रगति कहलाती है। प्रगति के लि मनुष्य का दृढ विश्वास अति आवश्यक है। विना दृढ-विश्वास और दू दृष्टि के प्रगति करना मनुष्य के लिए रेत के महल बनाने के बराबर है इसके लिए तत्कालीन परिस्थितियों की भी अहम भूमिका होती है, परन्तु दृ संकल्प ही इसका मुख्य आधार है।

---

1. मुकुन्दी काल श्रीवास्तव (सं) - ज्ञान शब्द कोश - पृ. 664
2. डॉ. सुरेश धींगडा - हिन्दी कहानी : दो दशक - पृ. 16

सामाजिक यथार्थ का क्षेत्र व्यापक है, इसलिए सामाजिक यथा की नपी-तुली परिभाषा देना सम्भव नहीं है। संकुचित रूप में जो जैसा है, उ वैसा ही चित्रित करना सामाजिक यथार्थ कहलाता है। निष्कर्ष रूप में य कहा जाता है कि सत्य घटना किसी भी क्षेत्र की हो, वह सामाजिक क्षेत्र व घटना ही कहलाएगी। सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन एवं विश्लेष की प्रक्रिया भी सामाजिक यथार्थ की सीमा में मानी जाती है। सामाजि यथार्थ समाज में मनुष्यों द्वारा किए गए कार्य-कलापों का वास्तविक चित्र करता है।

सामाजिक यथार्थ और समकालीन कथा साहित्य

आज के समाज में जो जो अन्याय और अत्याचार चल रहे उसका सजीव चित्रण समकालीन लेखकों के कथा-साहित्य में मिलती है समाज में देवी या लक्ष्मी कही जाने वाली नारी को कई प्रकार का अपमा सहना पड़ता है। यदि वह निर्धन और असहाय है तो उसका कोई भी सहाय नहीं है। गोविन्द मिश्र की 'सिलसिला' कहानी जीवन के वैषम्य की कहा है। यह सिलसिला मानव नियति का अटूट सिलसिला है। इस में एक ओ गरीब जीवन की कहानी है तो दूसरा ओर पैसे चमक को दिखा रही है शिवमूर्ति जी का "कसाईबाड़ा' कहानी में असहाय नारी जीवन का चित्र है 'सिलसिला' कहानी में शिक्षा की प्रगति के बारे में कहने के साथ बेकारी बेरोजगारी पर भी प्रकाश डाला है - "अरे, यह शिक्षा-पद्धति बेकार है औ सालों को जोतना तो हल ही है, आखिर में जाकर तो क्या बन बिगड जायेग

अगर उन्होंने सही-बटा सीख लिया।"[1] कभी-कभी सामान्य व्यक्ति का जीव
मज़ाक बनकर रह गया है। वह पैसों के अभाव से ढंग से इलाज भी न
करा सकता है। कृषक समाज का अन्नदाता है, परन्तु आज भी किसी
किसी रूप में उसका शोषण हो रहा है। चिकित्सा व्यवस्था अत्यन्त अव्यवस्थि
है। एक आदमी के लिए बीमार पड़ना और इलाज कराना सारे परिवार व
झकझोर कर रख देता है। सामान्य व्यक्ति का जीवन मज़ाक बनकर रह ग
है। वह पैसों के अभाव में ढंग से इलाज भी नहीं कर सकता है। प्राइवे
डॉक्टर से इलाज कराना महंगा है, और अस्पतालों की अव्यवस्था अच्छे-भ
को भी बीमार कर देती है, फिर बीमार का तो कहना ही क्या? "तो देख
तमाशा... भाई... न भाई.... टट्टी, खून, पेशाब, जांच कराइये - एक्स
कराइये। इर्विन अस्पताल के चक्कर लगने लगे। एक तो ससुर हाथ
घिनापन टांगे जाओ, दूसरे जहां जाओं लाइन... आदमी जहां न मरता हो, व
खड़ा-खड़ा मर जाये।"[2] जनता की स्वास्थ्य रक्षा के लिये बनाये गये सरका
अस्पताल के डॉक्टर स्वास्थ्य की देख-भाल करने के स्थान पर निजी फी
लेते हैं, मरीजों को स्वास्थ्य केन्द्र से टालकर घर आने को कहते हैं। उ
प्रकार कई पी.एच. सी ऐसे थै जहाँ नियुक्त होनेवाले डॉक्टर महीनों वहाँ न
जाता। ऊपर के अफसरों को पटाकर वेतन सहित आरम से अपनी सुवि
से प्राइवेट प्राक्टिस करता है या शहर में कोई प्रायवेट क्लिनिक में अच्
तनख्वाह पर लग जाते थे।

---

1. गोविन्द मिश्र - सिलसिला (घांसू) - पृ. 92
2. गोविन्द मिश्र - कचकौंध (प्रति.हि. कहा) - पृ. 12

चिकित्सा के क्षेत्र में ही नहीं हर जगह भ्रष्टाचार पूरी तरह रच बस चुका है। अब तो भ्रष्ट आचरण ही सही प्रतीत होता है। सरकार अं कर्मचारी अनुचित कार्यवाहियों के इतने अधिक आदी हो चुके हैं कि उ अनुचित, अनुचित नहीं उचित लगता है। सुनील सिंह की कहानी 'अपरिचि के समय निम्न मध्यवर्गीय परिवार का युवक है। वह डिप्टी कलक्टर ब जाता है और उसकी मान्यताओं कैसे अफ्सराना हो उठती हैं, "लेकिन उस मैनेजर और उस साले जैन के बच्चे को मैं सबक सिखाकर रहूँगा। राष्ट्री सुरक्षा अधिनियम में किसी दिन भीतर करवा दूँगा। साले को कहा, एक क मेरे डिस्पोज़ल पर छोड़ दो, टंकी फुल। ताकि वक्त - ज़रूरत मैं कही अ जा सकूँ। यू सी, जीप पर उतनी दूर से अपने में कितनी परेशानी होती है। चित्रा मुद्गल की बंद कहानी में बन्द के दुष्परिणामों का चित्रण है - "बन के वास्ते हो रहे नाश नष्ट को बनाकर बन्दियों ने नारा लगाकर बाहर से ज रहा था। नवल के मन में विद्रोह ऐसा फूटा कि कमाने - खाने कू सकता पर कैसे?.... वह सोच रहा है। यह बन्द न मराठियों का मद्रासियों क खिलाफ है.... अपने स्वार्थों संकीर्णताओं के चलते दूसरों का शोषण करत है।"[2] सरकार ने निम्न जातियों के विकास के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं लेकिन इन योजनाओं से लाभ केवल उच्च अधिकारी वर्ग को ही मिलता "सरकार ने सड़कें, जंगल काटकर, लकड़ी की दुलाई करने, पहाडों से खनि संपदा निकालने और आदिवासियों की आज़ादी छीनकर उन्हें परावलंब

---

1. अपरिचित (स्माइली) - सुनील सिंह
2. चित्रा मुद्गल - भूख (बंद)

और गुलाम बनाने के लिए बनाई है।"[1] भृष्टाचार तो समाज की हर है। कुछ लोग ईमान्दारी से काम करना चाहते है, परन्तु उन्हें अनुचि करने के लिए विवश किया जाता है। कुछ इसी प्रकार दबाव में गलती करते हैं तो कुछ ऐसे भी है जो इसके लिए तैयार कभी नहीं हो उसकी कितनी भी बडी सजा भुगतनी पड़े। नमिता सिंह की 'गलत नग जूता' ऐसा ही एक चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करती है। देश की रक्ष वाले पुलिस विभाग में आजकल भ्रष्टाचार और अन्याय ही देख सक पुलिस किसी पर भी झूठा आरोप लगा सकती है। असत्य दोष लगाकर निरपराधी को अपराधी घोषित कर सकती है। 'कसाईब पुलिस के अनाचारों का वर्णन है। पुलिस का अनाचार गोविन्द मि 'जनतन्त्र' कहानी में एक नये यथार्थ को खोलता है। पुलिस में रिपो कुछ जानते हुए भी नहीं लिखवाई जाती है, क्योंकि तब वह व्यक्ति सं जाल में फँसता है। "वे कहते हैं कि तुम पुलिस में क्यों नहीं लिखव तुम्हें जान का खतरा है। मैं बेवकूफ हूँ जो लिखवाऊँ। सारी पुलिस है। कल के दिन कुछ हो गया तो कहेंगे, जब तुम्हें यह सब मात तो....।"[2] अपराध जगत को वढ़ावा अपराध रोकने वाले ही देते हैं।

हमारे देश को, समाज को ग्रसने वाला एक ओर सम आतंकवाद। यह समस्या समकालीन कथाकारों को भी हिलाया है। प्रभाकर का कल्याणी इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित कर

---

1. उदय प्रकाश - ओर अंत में प्रार्थना हंस (मासिक) अगस्त 1992 - पृ. 57
2. गोविन्द मिश्र - जनतन्त्र (घांसु) - पृ 18

सांप्रदायिकता से संबन्धित समस्याओं देश को ग्रसनेवाले समस्याओं में मुख्य है। सांप्रदायिकता आम जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। एक के सुख-दुःख में श्यामिल होने वाले आज एक-दूसरे के सुख-दुःख में श्य होने वाले आज एक-दूसरे के दुश्मन बन चुके हैं। 'खस्सी' कहानी साम्प्रद झगडों की भीषणता की दिल दहला देने वाली कहानी है। इस भेदभा शिकार वनती है मासूम जनता 'शहर में दंगा भड़का हुआ था, भयंकर त चल रही थी। हिन्दुओं के मुहल्लों में मुसलमान लाशों का अम्बार मुसलमानों के टोलों में हिन्दु लाशों का जमघट। बीच के मुहल्लों में मि किस्म की लाशें। लाशें ही लाशें, लाशें ही लाशें।"[1] साम्प्रदायिकत भड़कती आग मानव को हिंसक पशु से भी बदतर बना दिया है।

सांप्रदायिक दंगा भारतीय जनजीवन का बहुत ही मर्मघ पहलू है। यह रह-रहकर देश के कभी इस कोने में तो कभी उस कं धधक कर पूरे देश की चेतना को विषाक्त करने लगता है। दंगा, दं रहकर राजनीति हो गया है और झेलते-झेलते देश की झेलने वाली उ बढती जा रही है। देश विभाजन के वाद हुए इस विस्फोट पर समक कथाकारों ने जमकर लिखा है।

समाज के पिछड़े वर्गों की सस्याओं को भी समकालीन कहानी ने विषय बनाया है। दलित सदा से उत्पीड़न का शिकार रहा है। जहाँ कि समाज के सवर्णों ने भी इनका शोषण किया है। दलित वर्ग की

---

1. आनन्द वहादूर - हंस जनवरी, 1993 - पृ. 26

सर्वाधिक उत्पीड़ित प्राणी है। दलित वर्ग भी आज सचेतन हो उठा है समाज में दूसरों की तरह रहना पसन्द करते हैं। अपने बहू बेटियं इज्जत को बनाया रखना चाहते हैं, "पता चला कि सफाई संघ के लो अपने-अपने मुहल्लों में तय किया कि बहू बेटियाँ अब घरों में काम पर जाया करेंगी। यह इज्जत का सवाल है। जब तक घरों में बहू-बेटियाँ डं रहेंगी तब तक हमें खाक कोई इज्जत देगा। जनम - जिन्दगी बड़े लो पैर की जूती रहे हैं सो वही रह जायेंगे।"[1] ये लोग भी अपनों पर होने अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाने लगे हैं। श्रवण कुमार की 'लच्छमं नायिका लच्छमी एक साहसी औरत है। झुग्गियों में रहती है। अपने ब पर अपना धन्धा चलाती है और झुग्गी हटाने के लिए कहने पर चिल्ल कहती है, "अरे जालिमों, गरीबों का क्या इस धरती पर कोई हक नहं मत यह समझो कि यह झुग्गी की जगह ऐसे ही मिल गयी थीं हमें। पूरे सौ दिये थे, पाँच सौ। बना के तो दिखाओ झुग्गी ऐसे ही इस ज़मीन प

युवावर्ग की बेरोज़गारी भी समकालीन समाज की प्रमुख स है। बोरोज़गारी के कारण युवक दिशाहीन हो जाते हैं। तनाव, कुण्ठा निराशा से त्रस्त और घिरा रहता है। वीरेन्द्र जैन की 'तलाश' इस स को चित्रित करनेवाली कहानी है। पढ़े लिखे युवावर्ग के लिए आज नौकरी पाना भी कठिन काम है। यदि वह किसी धनिक का बेटा है किसी मन्त्री, अफसर आदि का रिश्तेदार है तो कोई चिन्ता ही नहीं। स

---

1. नमिता सिंह - दर्द (नील गाय की आंखें) - पृ. 133
2. श्रवण कुमार - लच्छमी (स्पन्दन) - पृ. 88

तब उठता है, जब उसका कोई नहीं है, "विश्वविद्यालय से निकलन
घर की परिस्थितियों ने उसे नौकरी करने के लिए मजबूर किया -
बहुत से नौजवानों की तरह। वह दो साल तक यहाँ वहाँ भटकता र
वापस आया तो सीधे पडोस के 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' के (ि
पढ़ चुका था) प्राचार्य के पास पहूँचा - साहब! हमें काम चाहिए। ?
उसे प्रबन्धक के पास भेजा, प्रबन्धक ने मन्त्री के पास भेजा.... ।"[1] बे
के कारण युवावर्ग शिक्षा की ओर से उदासीन होने लगा है। शिक्षा
राजनीति का अखाड़ा बन गयी हैं। नौकरी रिश्वत से जुड़ गयी है
भी मुँह खोलकर माँगी जाती है। 'साइन बोर्ड बदलकर' कहानी शिक्ष
में व्याप्त भ्राष्टाचार को समक्ष लाती है। 'प्राचार्य ईमानदार है, छात्र उ
करते हैं परन्तु वह नियमों और मूल्यों की रक्ष नहीं कर पाती है।
समय में ईमानदार आदमी सफल नहीं है। सफल वह है जो वाचाल,
घूसखोर है, सिफारिश का सहारा लिये हैं। हमारी सोच बन्द हो गयी
और किसलिये जैसे प्रश्न मस्तिष्क में उभरते हैं। साइन बोर्ड बदलते
व्यवस्था नहीं बदलती है।"[2] शिवमूर्ति का 'भरत नाट्यम', गोविन्द
'कचकौंध' अरुण प्रकाश का 'योगदान' आदि कहानियों में भी शि
की विगत स्थितियों का वर्णन है। आज की समाज में वृद्धजनों क
बहुत दयनीय है। उनका जीवन उपेक्षित सा है। बेटा-बेटी के पास उ
तनिक भी समय नहीं है। श्रवण कुमार की 'डायन' कहानी की 'डा

---

1. काशीनाथ सिंह - मुसई-चा (प्रमि कहा) - पृ. 25
2. शशिप्रभा शास्त्री - साइनबोर्ड (पतझड़)

माँ है, जो पति के मरने के बाद बेटे सुरेन के साथ रहती है। सुरेन शादी हुई है। वह पत्नी में व्यस्त रहता है। पुत्रवधु सास को ड़ायन क बूढ़ी माँ विवश है "बाबा, ये बुढ़ापा बहुत बुरा। कहने को माँ हूँ, लेकि किसी चीज़ पर नहीं। हक बेटे पर भी नहीं। सब कुछ होते हुए प्यासे।"[1] रामदरश मिश्र की 'शेषयात्र' वृद्ध जीवन की मर्मात्मक क

समाज की सब समस्याओं में से भी बड़ी समस्या है नार की समस्या। नारी की समस्याओं पर समकालीन लेखकों ने अनेक क लिखी है। इसके बारे में आगे के अध्याय में विस्तार से सोचेंगे।

समकालीन कहानी में राजनीति के विभिन्न चित्र प्रस्तुत हैं। राजनीति अब एक ऐसी संस्था बन चुकी है, जिसके कारण जीवन, समाज और देश में नित्य नई अव्यवस्था किसी न किसी का ले रही है। राजनीति में चाटुकारिता व्यक्ति को ऊँचा उठाती है। ग राजनीति दबाकर समाप्त कर देती है, समाज हित की आड़ में अध रहता है। समकालीन राजनीति देश-व्यवस्था को नियन्त्रित करने व है। यह तोड़-फोड़ की राजनीति है, कुर्सी की है। अशांति, भय, आतंक, हिंसा आदि इसकी विशिष्टताएँ हैं। वही नेता बन सकते है पास एक दल हो जो कुछ भी करने के लिए तैयार है। आदर्श, मूल्य ये सब उसके लिए व्यर्थ विषय है।

---

1. श्रवण कुमार - डायन (स्पन्दन) - प्र.सं. 1991

राजनीति से कुछ कथाकार प्रतिबद्ध भी होते हैं। कहानी राजनीतिक सोच और मानसिकता आवश्यक है। लेकिन उसे पार्टि प्रतिबद्ध न होकर मानव के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। राजनीति क व्यक्ति-समाज पर इतना अधिक हो गया है कि जीवन मूल्यों राजनीतिकरण हो गया है। राजनीति इतनी भ्रष्ट हो चुकी है कि ए अनपढ़ व्यक्ति भी राजनीतिक चालों को समझने लगा है। सोमारू लम छोड़कर बोला, "तुम्हारा ही कहना ठीक था मुनिया, हम हरिजन है, ही रहेंगे.... यह चुनाव की रामलीला इसी तरह हर पाँच साल पर बा धूमधाम से मनाते रहेंगे। उन्हीं में से कोई राम बनेगा, कोई रावण जलेगी मेरे जैसे मूर्ख हनुमानों की। उनका तो बाल भी बांका न होगा। कहीं कुछ बदलने वाला नहीं है। संरकारें बदलेंगी, पर सरकार के लं बदलेंगे..... और हमारा भाग्य भी नहीं बदलेगा।"[1] राजनीति को अ प्रतिष्ठा पाने का सबसे बढ़िया और सरल मार्ग मान लिया गया है। र राजनेताओं की चुनाव, वैभव, रिश्वत, भ्रष्ट आचरण आदि पर रचनाएँ हुई है। शिवमूर्ति की प्रसिद्ध कहानी 'कसाईबाड़ा' में कहानी राजनेताओं के भ्रष्ट आचरण का खुली भाषा में निर्भीक चित्र प्रस्तु है। चुनाव जीतने और गद्दी पाने के लिए वे कोई भी हथकंडा या नीति सकते हैं, "गाँव में बिजली की तरह खबर फैलती है कि शनीचरी ध बैठ गई है, प्रधान जी के दुआरे। लीड़र जी कहते हैं, जब तक प्रध उसकी बेटी वापस नहीं करते, शनिचरी अनशन करेगी, आमरण अ

---

1. जवाहर सिंह - मोहभंग (राष्ट्रीय विदूपक) - पृ. 81

प्रधान जी अपने पॉलिटिकल प्रॉस्पैक्टस को ध्यान में रखकर उसे इलक
की एकमात्र गोटी बनाते है।"[1] गोविन्द मिश्र की 'जनतंत्र' कहानी में भी उ
की भ्रष्ट राजनीति का चित्र है। श्रीलाल शुक्ल की 'वह किसी को
बख्शती' ऐसी ही एक कहानी है। चित्रा मुद्गल की 'जगदम्बा बाबु गाँव
रहे हैं' अब्दुल बिस्मिल्लाह की 'ग्रामसुधार' आदि में भी राजनीतिक भ्रष्टा
का चित्रण है। राजनीतिक भ्रष्टता ने निम्न वर्ग के जीवन को कि
बेचारगी भरा बना दिया है, यह विजय की 'गृह-प्रवेश' कहानी में देख सकते

कहानी की तरह उपन्यास में भी सामाजिक यथार्थ का चि
है। समकालीन उपन्यास आम आदमी के साथ यात्रा करते हैं और जीवन
यथार्थ पर प्रकाश डालते हैं। समाज में चलने वाले अन्याय, गुण्डागर्दी अ
आम आदमी के जीवन को दुशवार बना देती है। शैलेश मटियानी
'मुठभेड़' और 'बावन नदियों का संगम' इसी सामाजिक स्थिति का
देनेवाले उपन्यास है। 'बावन नदियों का संगम' केवल वेश्याई नरक
कहानी नहीं है। वेश्याओं के जीवन से अधिक उस समाज की पतन गाथ
जो 'वेश्या' हो चुका है या होता जा रहा है। 'मुठभेड़' उपन्यास में समाज
दिनोंदिन घूमती चली आ रही गुडागर्दी, घाघपन और हिंसक क्रूरताओं
चित्रण है। इसप्रकार हिमांशू जोशी के 'सुराज' उपन्यास आजादी के
हमारे समाज में आई गिरावट, नैतिक मूल्यों और चारित्रिक पतन को लेव
लिखा गया है।

---

1. शिवमूर्ति - कसाईबाग - पृ. 10

समकालीन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में समाज के पक्ष को भी देखा परखा है। आज की आर्थिक विभीषिक कुछ ऐसी है कि उसे देखकर ही अवाक् रह जाना पड़ता है। नवयुवक बेरोज़गारी के कारण अनैतिक कार्य करते हैं। और उसका परि दुखत हुआ करता है। 'उसकी पंचवटी' उपन्यास में लेखिका ने एक नवयुवक का चित्रण किया है - "दरवाजे के पास भीड़ में ही पान ख हीरो सा लगने वाला लडका खडा था, वह शोर बढ़ता देख घबराक बस से कूद गया, पर भाग नहीं सका। बस के पिछले पहिए के नीच गया। बहुत सी चीखों के साथ बस रुक गई। और फिर जैसे गहरा पूरी बस पर छा गया।"[1] आर्थिक विपन्नता परिवार की जडों को खोख देती है। भूखा इनसान न तो पारिवारिक होता है न ही सामाजिक। व स्वार्थी होता है। आज के युग में पैसा सम्बन्धों को बनाने विगाड़ने क बन गया है। 'कोरज़ा उपन्यास में इन सत्यों को स्पष्ट दर्शाया गया है देखो तब साला पैसा-पैसा, मैं भी इन्सान हूँ, लाऊँ तो कहाँ से.... तुम के खर्च के लिए पूरे इकट्ठे पैसे क्यों नहीं दे देते?"[2] आर्थिक अभाव के विघटन एवं नैतिक पतन का कारण है। इससे समाज से नैतिक मू हो जाता है। आर्थिक अभाव कई समस्याओं का कारण है यह वि बाधक बनते है, धन पाने के लिए युवा लोग हीन से हीन काम करने भी तैयार होता हैं। आज गरीबी के कारण छोटे बच्चे खाने-पढने के

---

1. कुसुम अंसल - उसकी पंचवटी - पृ. 37
2. मेहरुन्निसा परवेज - कोरजा - पृ. 23

मज़दूरी करते हैं और होटल की या दूसरों की दी हुई जूठी बर्तन बर से माँज रहा था... बीच बीच में आंख बचाकर वह जुठी रोटियों के जुठी दाल तरकारी मुँह में डाल लेता था और बिना मुँह हिलाये निगल लगता था। कुत्ते की तरह प्रसन्नता से उसका चेहरा खिल गया था।

समकालीन उपन्यासों में दलित चेतना का भी यथास्थान मिलता है। 'डूब' में ठाकुर देविसिंह द्वारा मजदूरी न देने पर चम आवाज उठाता है। इस पर उसके भाई की निर्मम हत्या की जाती है चमार टोली संघर्ष पर उतर आती है, लेकिन गाँव की सामंती शक्तिय विरोध को कुचल देती है। वीरेन्द्र जैन ने 'डूब' की तरह 'पार' में भी से शोषित राउत जनजाति को चित्रित किया है। 'अल्मा कबूतरी' में जाति-संघर्ष को नियती के रूप में स्वीकार करती है। कदम अपने बे से बचपन में ही बताती है, "बेटा आलस हमारा दुश्मन है। शिकार नहीं तो शिकार हो जायेगा।"[2]

राजनीतिक पतन और व्यवस्थागत विसंगतियों ने भ जनमानस क़ो अत्यधिक आहत कर दिया है। राजनीति से 'नीति' लुप्त हो गयी। समकालीन उपन्यासों में भ्रष्ट व्यवस्था और पत राजनीति का व्यापक रूप में अंकन हुआ है। कई उपन्यासों के केन्द्र विषय रहा है। कमलाकांत त्रिपाठी के 'पाहीघर' और 'बेदखल' में तत राजनेताओं का दोगलापन और किसानों को इस्तेमाल करने की

---

1. मेहरुन्निसा परवेज - अकेला प्लाश - पृ. 55
2. मैत्रेयी पुष्पा - अल्मा कबूतरी - पृ. 39

राजनीति का चित्रण हुआ है। बाबा रामचन्द्र इन नेताओं की
हुए किसानों से बताते हैं, ".....ये किसानों को खुश करने के लि
और सरकारी हाकिमों के डाँट पिलायेंगे और उनसे सुविधाएँ ऐं
जिन्दगी जियेंगे।"[1] वीरेन्द्र जैन के 'डूब' और 'पार' में बाँध प
परिप्रेक्ष्य में व्यवस्थागत विसंगतियों और प्रजातंत्र का खोखल
हुआ है। बाँध के चलते लडैई और आसपास के गाँवों को ि
बेदखल किया जाता है। उन्हें अपनी जमीन का मुआवजा मि
बल्कि बरबादी झेलनी पड़ती है। सरकार की इस नीति पर मार्
द्रष्टव्य है, "सरकार के लेखे तो हम एक मीठे सपने देखने औ
बदलने के काम आनेवाले बेजुबान गुड्डे-गुड़ियाँ है, बस।"[2] उप
राजनेताओं का दोगलापन, संवेदनहीनता और सामंती मानसिक
किया है। मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'अनित्य' उपन्यास में
विसंगतियों का सशक्त चित्रण है। शिवानी ने अपनी उपन्यास
आज के मंत्रियों का चित्रांकन किया है। सत्ता का मोह ही कुछ
कि कोई भी शासक हो अधिक से अधिक समय तक शासन व
है। सत्ता में स्थापित होने के पश्चात् एक सरल सामान्य व
अकल्पनीय सुख प्राप्त होता है। आज जितने भी व्यक्ति राजनीी
हैं, वे देश की सेवा तो कम अपनी स्वार्थ सिद्धि अधिक करते
राजनीतिक व्यवस्था को देखकर महाभोज उपन्यास के भूतपूव

---

1. कमलाकांत त्रिपाठी - बेदखल - पृ. 82
2. वीरेन्द्र जैन - डूब - पृ. 254

सुकुल बाबू सोचते हैं - "राजनीति, गुण्डागर्दी के निकट चली गयी है देश में देवतुल्य राजनेताओं की परम्परा रही है वहाँ राजनीति क पतन।"[1] राजनीति ने लोगों को अंदर से तोड़ा ही नहीं, ऊपर से क दिया है। दंगों की जड़ में यह राजनीति ही है। 'जंगल जहाँ शुरू उपन्यास में राजनीति डकैतों को बढ़ावा देती है। मन्त्री दुबे डाकु सहायता से चुनाव जीतते हैं, फिर वे डाकुओं को संरक्षण भी राजनीति एक ओर डकैत-उन्मूलन का दिखावा करती है तो दूसरी ओ खाद डालती है। लेखक राजनीति के अपराधीकरण को गहराई से करता है। इसी कारण वह प्रश्न उठाता है, "अगर जोगी, मलारी, का श्यामदेव अपराधी हैं तो परशुराम, लल्लन, चंद्रदीप और मुख्यमंत्री तांत्रिक क्या हैं?"[2]

आज के समाज से सांस्कृतिक मूल्य भी नष्ट हो चुके हैं के बीच से विश्वास उड़ गया है। पति-पत्नी के साथ और पत्नी पति अन्याय करने लगे हैं। आज के युग में पाप-पुण्य की परिभाषायें परिि के अनुरूप की जाती है। 'अकेला प्लाश' के तुषार तहमीना को स हुआ कहता है "पाप वगैरह कुछ नहीं है दुनिया में जो मन को अच्छ है न वही पुण्य है और जो अच्छा नहीं लगता वह पाप है। क परिभाषाओं में अपने को मत बाँधो।"[3] समकालीन जीवन यथार्थ को उ

---

1. मन्नू भण्डारी - महाभोज - पृ. 29
2. संजीव - जंगल जहाँ शुरू होता है - पृ. 231
3. मेहरुन्निसा परवेज - अकेला प्लाश - पृ. 137

का कथ्य बनानेवाले उपन्यासकार है विवेकी राय। ग्रामीण जीवन में समकालीन मूल्य संकट का चित्रण विवेकीराय के सोनामाटी में मि आज के युग में तो वृद्धजनों की स्थिति बहुत दयनीय बन गया है। न बिना सोचे-समझे वृद्ध जनों को घृणा पूर्ण दृष्टि से देखता है। वे सो कि आगे उनकी भी यही हाल होगा। उपेक्षित वृद्धजन की मानसिक को चित्रा मुद्गल की 'गिलिगडु' उपन्यास में बावु जस्वन्त सिंह के मा चित्रित किया है - "कानपुर से आते ही उन्हें इस बात से प्रसन्नता हुई चलो बेटे-बहू ने टॉमी की जिम्मेदारी सौंपकर उन्हें अपने गृहस्थी क जिम्मेदारी के काबिल तो समझा। अब तो उन्हें यह भी लगने लगा है घर में वे सही अर्थों में किसी के लिए बुजुर्ग है तो वह केवल टॉर्म

नासिरा शर्मा की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ

नासिरा शर्मा ने अपने कथासाहित्य में समाज के सभी प जैसे सामाजिक राजनैतिक आर्थिक आदि को उनकी समग्र विशेषत साथ उभारने का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं का मुख्य वि ज्यादातर नारी के केन्द्र पर आधारित है। लेकिन नारी के ज़रिए सम हर समस्याओं, हर पहलुओं को छूने का प्रयास उन्होंने किया है अनुसार मर्द का जो व्यक्तित्व है वह पिछले पाँच हज़ार साल से उतन नहीं जितना औरत का और यह बदलाव ही सामाजिक चेतना क करता है। नासिरा जी की रचनाएँ समकालीन समाज के यथार्थ चित्र

---

1. चित्रा मुद्गल - गिलिगडु - पृ. 10

करने वाली हैं। भारतीय के ही नहीं बल्कि ईरान पाकिस्तान, अफगा
जैसे देशों के सामाजिक परिवेश को भी उन्होंने अपनी रचनाओं में
किया है।

समाज के निम्न-मध्य वर्ग के द्वारा झेले जाने वाले शो
चित्र नासिराजी के कथा साहित्य में मिला है। 'कच्ची दीवारों और
बात' कहाती में शोपण के अलावा भूख के मुद्दे मिलते हैं। 'पत्थर ग
'कच्ची दीवारें' शोपित गरीबों की कथा हैं। 'कातिब' कहानी में
प्रकाशक, लेखक और कातिब के स्वार्थ और पक्षपात से परिपूर्ण
निरूपित हुए हैं। एक ओर उर्दू भाषा और लिपि के भविष्य की चर्चा
लाखों रुपए पानी की तरह बहाये जाते हैं तो दूसरी ओर उर्दू वे
हिमायती गरीब कुशल कातिब की छोटी परिश्रमीक रक्कम न दे
हतोत्साहित करते हैं। 'असली बात' नामक कहानी में भूख की तीक्ष्ण
वर्णन है। लोग कभी-कभी एक वक्त की रोटी के लिए लड़ते हैं तो क
रोटी ही इन्सान के आपसी भेदभाव को हटाती है। तंबोलन भूख से
होकर रोटी की तलाश में कभी मंदिर तो कभी फ़कीरों की पंक्ति
जाती है। मंदिर के प्रसाद उसके पास आने तक खतम होता है और
की पंक्ति में जाने से वह कतराती है। उसकी आँखें भीग उठती
मुड़कर टीले से उतरने लगती है तभी पीछे से आवाज़ आती है, "माँ
की रोटी तो चखती जाओ-आओ... यह तो तुम्हारा अधिकार है।"
कर जब वह अपने बच्चे को दूध पिलाने लगती है तब उसका अप
सहज तर्क जीवन की कितनी बड़ी सच्चाई बता देता है, "रोटी में

ताकत है। जब चाहती है, बॉट देती है और जब चाहती है एक व
है।"[1] गरीबों की दयनीय जिन्दगी का चित्र 'इमाम साहब में मिलता है
शकीलउद्दीन घर की एक वक्त की रोटी के लिए लोगों के बुरे व्यव
सहकर गाँव से इमाम बनकर आया। घर में पत्नी और बेटी देर र
बैठकर लिफाफा बनाकर कुछ कमाता है। कुछ दिन बाद शकील को
नौकरी नष्ट हो जाती है तो उनका हाल पहले से भी बदतर हो ज
खाने के लिए उसे कई काम करना पड़ता है। "कभी उन्हें कोई बच्चा
देता कि इमाम साहब इस शैतान को पकड़िये तो रोटी डालूँ। जब त
डालती, उतरती, इमाम के कपडे तर हो जाते। कभी कोई हरी धनि
गड्ड़ी लेने भेज देती ताकि चटनी पिस सके।"[2]

गरीब लोगों से उनकी एक मात्र संपत्ति ज़मीन हटपने व
चित्र भी नासिरा जी की कहानियों में मिलता है। शोषण करने वाले
गरीब लोगों पर जो उनके शिकार हैं, आरोप लगाकर उन्हें नीचा दि
कोई कसर नहीं छोड़ते। 'अग्निपरीक्षा' की कम्मो पर भी ऐसा ही
लगाया गया। जब उनका खेत सुन्दरलाल को न मिला तो उसने नाई के
लोगों को शराब-नमकीन खिलाकर तथा कुछ रुपए देकर कम्मो की व
पर तैनात कर दिया गया। कममो को नीचा दिखाने में उसे पुलि
सहायता भी मिलती हैं। कम्मो का बदचलन होने से उसे सरा दिख
शिक्षा देने को सुन्दरलाल और मंगलू ने ज़ोर दी। उन लोगों का क

---

1. नासिरा शर्मा - इन्सानी नस्ल - पृ. 18
2. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 53

"पाप कम्मो ने किया है सो सरा उसे दिखाना होगा। लोहे का खनता उठाना पडेगा, तभी बात साफ होगी।"[1] गरीब लोगों पर होनेवाले शो दिखाने वाला एक और कहानी है 'आया बसन्त सखी।' इसमें द करनेवाले गरीबों को उनकी मेहनत का पैसा ही नहीं मिलते। रोटी तरसने वाले इनके सपने तो चकनाचूर हो जाते हैं। सुल्ताना कहती है की बनवाई... दिन भर के बीस या तीस पैसा... इसमें तो दो वक्त की आटा भी नहीं आता है। मौलवीगंज से चौक और चौक से डालीगंज चलते पैर टूटने लगे मगर मज़दूरी के रुपये नहीं देने थे सो नहीं दि गरीबों के घर का हाल क्या पता कि हम न सावन हरे न भादव! खुदा दुआ है कि या इस गरीबी से नजात दे या फिर मुझे ऊपर बुला ले

गरीब लोगों को अपने विरादरी वालों से भी शोषण का होना पड रहा है। 'चाँद तारों की शतरंज' ऐसी ही चुक ऐसी तस्वी गयी है। शरफ अपनी पत्नी हसीना और दो बेटे फ़ख़रू और शेख़ मुन्नी के साथ रहता है। हसीना का भाई कमरू, शरफू के परिवार काम में लगाने का प्रयत्न करता है ताकि दोनों बेटे लाटरी आदि के आकर बिगड़ न जाए। शरफू माँजा सूतै का पुश्तैनी काम करने में है लेकिन उसने बेटों को बिगड़ने से बचाने के लिए पतंग बनाने का न शुरू कर दिया। छोटों को तो मांझा सूतना पसन्द नहीं। उनके लिए काम है। पतंग बनाना उन्हें पसन्द आया। खूब मन लगाकर काम क

---

1. नासिरा शर्मा - इनसानी नस्ल - पृ. 60
2. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 175

नये नये डिज़ाइन बनाने लगें तो उन्हें ढ़ेर सारा आडर मिलने लगा बढ़ते कामों से आसपास के लोगों के मन में जलन उत्पन्न होने लगा औ से एक ने सलीम को पैसा देकर, जो एक गुण्डा - बदमाश है, पतंग ' कराया तो आर्डर वापस लिया गया। सलीम आर्डर वाले लोगों को जगह ले गया जहाँ से उसे पैसा मिला था। दूसरे पतंगवाले ने आर्डर दे को शेखू और फ़खरू का खरीखोटी सुनाता है कि "आप तो जनाब बेकार गए। अव्वल दर्जे का बेईमान और झूठा शख्स है शरफू डिज़ाइन भी हमारी थी.जो उसके बेटे ने चुराई है। वे ठहरे मंझा सूतन वह क्या जाने पतंग बनाना?"[1] इस कहानी के ज़रिए नासिराजी समाज रहे अत्याचार का चित्र दिखाती हैं। हर कहीं ऐसा हाल है कि ए बढिया जिन्दगी जीने केलिए अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा अच्छी तरह जीने के लिए प्रयत्न करते हैं उस पर अत्याचार करके सत्यानाश किया जाता है।

'उजड़ा फकीर' कहानी में नासिराजी ने रानी नामक ए की कथा कहकर समकालीन सामाजिक दुस्थिति का चित्रण करती हैं अपने पति के साथ, जो अपाहिज है और बिस्तर पड़े है गरीबी की भोग रही है। वह सड़क से गोबर इकट्ठा कर उसे सुखाकर अं बेचकर पेट भरती थी। एक दिन राजू गायब हो जाता है। राणी के ढूँ भी कोई पता नहीं चला। रानी तो इस शहर के अलावा दूसरी ज

---

1. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 43

जानती थी "वरना उसे पता चल जाता कि स्टेशन के उस पार निका
के बाहर, बरगद के पुराने पेड़ के नीचे राजू पड़ा है, जिसकी बाव
जिन्दगी का फैसला फ़कीरों का मुखिया कर चुक है। इस 'मार्केटिंग'
में उसे पता है कि अपाहिज फ़कीर सारे दिन में कुछ-न-कुछ कमा ले
बड़े दिनों से ताक में बैडे उस अस्ताद ने राजू का अपहरण करवा लि
रानी गोबर बीनने भागती सड़क पर रोटी का जुगाड करने गई हुइ
अपाहिज गरीब लोगों को भी पैसा कमाने की चीज़ बनाकर मार्केटिंग
है। इसके लिए कुछ लोग इनका अपहरण भी करते हैं। आजकल स
बहुत कुछ ऐसी घटनाएँ घट रही हैं जो पैसे के लिए बच्चे-बुढ़ों
अपहरण करते हैं।

देश विभाजन के फलस्वरूप अपनों का दोनों देशों में बॉट
सांप्रदायिक दंगे, हिन्दु-मुसलमान के आपसी घृणा से उत्पन्न अन्य समस
सबको चित्रित करने में नासिरा जी सफल हुई हैं। साथ ही इस त
स्थिति में भेदभाव भूलकर जीने वाले लोगों की कथा भी उन्होंने व
'सरहद के इस पार' कहानी के रोहन चीखकर कहते हैं "मारो सारे
को, गले दबा दो इनके। साले; कहते हैं कि तुम पाकिस्तानी हो। जाव
इनसे तुम्हारे बाप-दादा कहाँ है? मेरे बाप-दादा इसी धरती के आगोश
हैं। सबूत चाहिए तो जाकर देखो हमारे कब्रिस्तान, सबके सब मौजूद
खुद गद्दार हैं और हम पर इल्जाम लगाते हैं। नौकरी न देने का अच्छा

---

1. नासिरा शर्मा - इन्सानी नस्ल - पृ. 89

ढूँढा है। आखिर कहें भी क्या? मारो सब कातिलों को। मारो, खून नदियाँ बहा दो मार-मारकर।"[1] उच्च डिग्रियाँ हासिल करने के बावजूद नवयुवकों को नौकरी नहीं मिलती जिससे उसका मन खिन्न हो जाता उनके अन्दर घृणा के बवण्डर उठ आते हैं। बेकारी, इश्क में नाकामी बेवफाई से दीवाना हुए रेहन के शब्दों में भी यही सच्चाई दिखती हैं। सांप्रदायिक दंगों के बीच कई अन्याय और अत्याचार भी समाज में हो रहे ज्यादातर नारियों को ही इन अत्याचारों का फल झेलना पड़ता है। लड़ाई पर ज्यादातर अत्याचार होते थे। लेकिन इन अत्याचारियों के बीच में जैसे भले मानस भी थे। उन्होंने अपने ही जात भाइयों से लड़कर एक लड़की की रक्षा करती है। इसका नतीजा यह हुआ कि उसको अपनी ही नष्ट हो जाती है।

संप्रदाय के नाम पर गुण्डागर्दी आज देश में हर कहीं हो रहा इसमें कुछ लोगों को अपने सगे संबन्धी घर, धन-दौलत सब नष्ट हो जाते 'नौ-तपा' के लच्छू कलई के घर हड़पने वाला बब्बन उसे वहाँ से भगा है। देश विभाजन का असर छोटे बच्चों पर भी पड़ता है। छोटे बच्चों के में भी जातीय भेदभाव पनपता है। हिन्दु और मुस्लिम एक दूसरे के श ऐसा वे सोचते हैं। 'सबीना के चालीस चोर' की छोटी बच्ची सबीना इन फसाद, लूट, गुण्डागर्दी करने वालों को चालीस चोर कहती हैं। सबीना पू है "यह हिन्दू, मुसलमान देखने में कैसे होते हैं?"[2] कुछ दिन बाद वह क

---

1. नासिरा शर्मा - पत्थर गली - पृ. 29
2. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 160

है कि उसे पता चल गया कि हम लोग मुसलमान और गुप्ता अंकर और गोपाल अंकल हरिजन है और जिनके घर खाना खाने जा रहे सरदार जी हैं।[1]

भारत विभाजन के फल स्वरूप दोनों देशों में बस गये ल अपने सगे संवन्धी, जो दोनों देशों में विछुड गये हैं तथा अपना पुरान हमेशा याद आता है। और जव वे उस वतन को छूना चाहते हैं, अप सम्बन्धियों से मिलता चाहते हैं तो उसे कई मनाहियाँ का सामना करन है। फिर भी वे एक बार ही सही अपने वतन तक जाना चाह 'अमोख्ता' कहानी के दादा सोचता है "आखिर बीस साल बाद वह ि ही गया, जब हज़ार अरमानों और वलवलों को सीने में छुपाए मैं पाि की तरफ चल पडा। इस सफर के पीछे सिर्फ पुरानी जिन्दगी की म दोबारा सुँधने की ललक भी थी जिसे सावित्री नहीं समझ सकती थ दिल्ली की थी और मैं लाहौर का, जो मेरा वतन था, जहाँ मैं पैदा हुउ आज उसी पराये मुल्क में जाने के लिए सौ तरह की सफाई देते हु वीज़ा हासिल किया था।"[2]

समाज में हर कहीं अन्याय और भ्रष्टाचार फैला है। इस नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। अस्पताल में तो गरीब लोगों को तो मिलने के लिए पैसों की ज़रूरत है। बिना पैसेवाले की ओर वह ध्या देते। उसका बेटा में मुंगफली बेचने वाले का लडका जब बीमार हो

---

1. नासिरा शर्मा - सवीना के चालीस चोर - पृ. 161, 162
2. नासिरा शर्मा - इब्ने मरियम - पृ. 12

तो उसे अस्पताल लाया जाता है। लेकिन अस्पताल वालों की, वहाँ व
की लापरवाही के कारण वह लड़का मर जाता है लेकिन नर्सों तो माँ-
दोषी बताती हैं। नीना सुभाष से कहती है "इनका लड़का रात ही म
था। डाक्टर ने ओक्सीजन लगाने को कहा था। नर्सों ने ध्यान नहीं
बैठी बात करती रही। जब रात को बेटा छटपटाया तो माँ नर्स को बुल
बार गई। जब तक नर्स आई तो बेटा ठंडा हो चुका था। अब नर्स ने
पहले ऑक्सीजन स्लेंडर मुर्दा बच्चे के मुँह में लगाया है। डॉक्टर का
होने वाला है न... ।"[1]

उसी प्रकार शिक्षा जगत के भ्रष्टाचार को व्यक्त करने
कहानी है 'चिमगादडें'। यह एक स्कूल और वहाँ के अध्यापकों का
है। हुमैरा, प्रिंसीपल मिस गोवा जैसे कुछ अध्यापक तो गाँव के बच्
शिक्षा देकर उनके भविष्य उज्वल बनाना चाहते हैं। लेकिन मिसिज
जैसे अध्यापक स्वार्थपूर्ति के लिए नौकरी करके अच्छे अध्यापकों के
पर पानी डालते हैं। वह तो नए नए फाशन दिखाने और बच्चों में धर्म
भेदभाव बढ़ाने आयी थी। शिक्षा जगत के भ्रष्टाचार पर प्रकाश डाल
कहानी है 'खिडकी'। इसमें शिक्षा जगत की महनीयता पर पानी फेंक
अध्यापक के बारे में कमाल का छोटा भाई कहते हैं कि "हमारे प्रोफेसर
के पास समय कहँ है जो हमसे बात करें? वे तो क्लास भी नहीं लेते
पूरा नहीं, जिसे चाहे उठाकर स्कॉलरशिप मिल जाता है, जिसे चाहे

---

1. नासिरा शर्मा - सवीना के चालीस चोर - पृ. 105-106

भेज देते हैं, उनका व्यवहार अन्य टीचर्स से भी ठीक नहीं है।"[1] उ
समाज में पैसेवालों के बच्चों के बिना पास हुए ही क्लास प्रमोशन मिल
इसके लिए अध्यापक ही सहायता देते हैं। सभी विषय में फेल होने
सुनील खुराने को पास कराने के प्रिनसिपल कहते हैं और कारण भी
है कि "तुमको पता नहीं, खुराना साहब इस शहर के गिने-चुने बिज
हैं।"[2]

राजनीति और गुण्डागर्दी का चित्रण भी नासिराजी की क
से मिलता है। 'चार बहनें शीशामहल की' कहानी के करीम चु
राजनीतिक पार्टियों के आपसी झगडे के कारण तकलीफ में पड़
राजनीतिक पार्टियों के बीच की लडाई की वजह से एक रात बाज़ार
लग गई और इसमें करीम की दुकान जल जाती है। उनके सब सा
दुकान के साथ जल जाते हैं। नेता लोग ही इन सब अत्याचारों के
"स्थानीय नेताओं ने नगर महापालिका के सभासद के पदों के चुंनाव
हुए गुण्डों और बदमाशों को उम्मीदवार बनाकर सिर्फ इसलिए खडा
कि वह मनचाही जमीन, दुकान, घर, कागजों की हेराफेरी के बाद
सकें।"[3] करीम की जो चार होनहार पोत्तियाँ थीं वे भी इन गुण्डागर्द
गईं। गुण्डे अकरम और अकील के ज़रिए उनके नेता को बदनाम
केलिए दूसरी पार्टी के नेताओं से बेची गयी गुण्डे और बदमाशों स

---

1. नासिरा शर्मा - बुतखाना - पृ. 38
2. नासिरा शर्मा - बुतखाना - पृ. 47
3. नासिरा शर्मा -खुदा की वापसी - पृ. 55

आप को बचाने की कोशिश में चारों बहनें बन्दूक की गोली खाकर म
है। राजनीतिक गुण्डागर्दी के बीच चारों निष्कलंक लड़कियाँ अ
प्यारी हो गया।

पुलिसवालों के भ्रष्टाचार का पूर्ण चित्र 'तुम डाल-डाल ह
पात' कहानी में चित्रित है। पुलिस झूठे आरोप किसी पर भी लगा
अपराधी बना सकती हैं। ऐसे भ्रष्टाचारी पुलिस अफीसर आज के स
ज्यादा दिखने लगे हैं। इन्स्पेक्टर त्रिपाठी भी ऐसा है "हवलदार, श्री
जी को रात भर के लिए अन्दर करे और मैं रिपोर्ट तैयार करता
श्रीवास्तव ने थाने में घुसकर गली-गलौज़ और पुलिस से मारपीट क
कोशिश की थी।"[1] पुलिसवालों के भ्रष्टाचार का एक और उदाहर
गवाही' कहानी में प्रस्तुत किया गया है। हबीब हज्जाम का बेटा च
गया। तलाश करने पर भी न मिला। दारोगा के पास गया तो पूछताछ
मोहल्ले में आने का वादा तो किया गया बदले में उसने उन लोगों से
मालिश वगैरह कराने लगा। उन लोगों ने पूछा - "कितने बजे
पधारियें?" गौहर ने हाथ जोडकर पूछा।

"आजकल मौसम बदल रहा है या क्या कारण है जो दे
दुखती है। मालिश भी बहुत दिनों से नहीं करवाया है..." इतना कह
ने दोनों को देखा जो मुंह खोले उनका मुँह ताक रहे थे कि क्या क

---

1. नासिरा शर्मा - दूसरा ताजमहल - पृ. 39

"सुबह सबेरे दोनों आ जाओ... मालिश के बाद सीधे हम मोहल्ले चले चलेंगे।" इतना कह दारोग जी तेज़ी से कुर्सी से उठ सीधे अन्दर चले गये।"[1] समाज की रक्षा करनेवालों के हाथ से ही सम शोषण हो रहा है।

वृद्धजनों की दयनीय हालत का वर्णन नासिरा जी कहानियों में हुआ है। निस्सन्तान वृद्ध-युगल के अंतिम काल की संघ है 'कच्ची दीवारे।' शहर में बस गये बेटे-बेटियों को देखते पोते-पोति लिपटाने, साथ सुलाने का सुख पाने के लिए तड़पे पुल्लन मिया और बीवी की कहानी है 'विरासत'। एक दिन छोटा बेटा गाँव वापस आया कब्र में जाने के लिए वह आया था। उसी दिन से दोनों वृद्धजनों ने ए सिलसिला शुरु किया - कब्रिस्तान जाकर फतिहा पढना। बच्चों को की जमीन और घर पसन्द नहीं है। पुल्लन मिया का कहना है "अ गुज़र गई अच्छी-भली... माँ-बाप बाल-बच्चों के लिए ही थोडा-बहुत ब रखते हैं, जब उन्हें ही कोई लगाव नहीं है तो फिर मैं काहे को तडप रहा

नासिरा जी ने अपनी रचनाओं में नारी का यथार्थ चित्र करने का प्रयास किया है। नारी समस्या को चित्रित करनेवाली कहानि नासिराजी ने लिखी हैं। आजकल स्त्रियाँ बाहर निकलकर काम कर हैं। वहाँ भी उसे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ 'तक्षशिला' कहानी में निगर नामक एक युवती की कथा है। उसे तो

1. नासिरा शर्मा - सवीना के चालीस चोर - पृ. 77
2. नासिरा शर्मा - दूसरा ताजमहल - पृ. 39

से, पति से तो बहुत अधिक प्रोत्साहन मिलता है। लेकिन बाहर कुछ का तो उन पर बुरा नज़र है जैसे अंसारी। उनका निगार के प्रति ब अच्छा नहीं है। उनकी बातों से यह स्पष्ट हो जाता है -

"मेरा टूव्हीलर हाजिर है। चलिए आपको छोड़ दूँ। आप से बनी चाय भी पी लूँगा, चलिए।" अंसारी ने बीच में ही उसकी बात हुए वडी बेतकुल्लफी से कहा।

"जी? आप क्यों तकलीफ करेंगे?" कुछ झुँझला कर नि कहा।

"परवेज़ साहब घर कब तक तशरीफ लाते हैं?" अंसारी मूडी अंदाज़ से हँसते हुए कहा।"[1]

छोटी बच्चियों को लड़कों की तरह पढ़ने का अवसर कभ नहीं मिलता। इसका उदाहरण 'चिमगादडे' कहानी में है। मुन्नी जो एक लड़की क्लास में होमवर्क करके न आने पर अध्यापिका ने उनसे पूछा। बहुत पूछने पर उसने बताया -

"हम कैसे काम करें? एक डिबरी है ओका बाबू अपने पास हैं।" मुन्नी ने सर झुकाए हुए कहा।

"वहीं तुम भी बैठ जाया करो।"

---

1. नासिरा शर्मा - खुदा की वापसी - पृ. 64

"जगह कहाँ है? जहाँ अब्बा इस्त्री करत हैं, अम्मा वहीं खाना पकावती हैं। फिर हमें भाई को भी खिलाना पड़ता है। नहीं तो को रोटी नहीं सेंके देता है।" मुन्नी के लहज़े में झुँझलाहट का दबा-दबा-सा

x x x x

"सुवह घुलाई लेकर माँ के साथ जाना पड़ता है, शाम व भैया को सँभालना पड़त है। पकड़कर न रखो तो टब से भीगे निकालकर नाली में डालत है। माँ को मसाला नहीं लगाया देत है।" लहजे में बेवसी थी। फिर बोली -

भैया को न खिलाओ तो अम्मा मारती है। कपड़े गिन जाओ तो अब्बा की गाली सुनो - कि यह कौन सी पढाई है जो सारे बाद रात को भी चलती है? काम नहीं होता तो आप डाँटती हैं। ह करें?" कहकर मुन्नी एकदम बच्चों की तरह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी

नारी होने के कारण किस प्रकार के आरोपों और आक्र झेलना पड़ रहा है इसका एक छोटा सा उदाहरण है 'अग्निपरी कम्मों। कम्मों से ज़मीन हडपने के लिए उसको बदनाम करने सुन्दर आदमी को भेजा। एक दिन 'कम्मो और नर्बदा खेत में पानी लगाक रहे थे। कम्मो के हाथ में लालटेन थी। तभी उसे लगा कि कोई उसक कर रहा है। जब तक वह सँभलती , किसीने उसका मुँह दबाकर उसे

---

1. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 128

चाहा। हाथ में पकड़ा डंडा पूरे ज़ोर से नर्बदा ने उस आदमी के सिर मारा।"[1] इस घटना के बाद पूरे गाँव में उसे बदचलन स्थापित करने सुन्दरलाल ने पैसा देकर आदमियों को भेजा। कुछ घराने में तो लड़कि लड़को के जैसा स्वातन्त्र्य नहीं। उन्हें आगे पढ़ने भी नहीं देते आर्थि का शकार उन्हें ही होना पडती है। कभी कभी तो स्त्री ही स्त्री के र काण्डा बनकर आती है जैसे 'दहलीज' कहानी की दादी जो अपनी से ऐसा बर्ताव करती है और उन्हें पढ़ने भी नहीं भेजती। लड़कियं सामने बिनती करती हैं फिर भी वे न पिघलतीं। उनका कहना है "अ बाँधी मुट्ठी लाख की, खुली तो राख की। चुपचाप घर में बैठकर सिलाई में हाथ बटाओ वरना आरिफमियाँ का इज्जत पर राह चल फिकेंगे... निगोड़ा मोहल्ला भी कैसा है नदीदों का... जैसे औरत कभी हो...।"[2] इसी तरह 'खुदा की वापसी' का लगभग सभी कहानियाँ नारी पर केन्द्रित है।

समकालीन समाज की एक बड़ी समस्या है 'पानी'। प कमी तो नगर में ही नहीं पूरे देश में एक समस्या बन गयी है। इस की ओर भी नासिराजी का ध्यान गया है। जल समस्या पर लिखा कहानी है 'हथेली में पोखर' एक परिवार के ज़रिए नासिरा जी एस हमारे सामने रखती हैं। अपने गमलों में खिलनेवाले फूलों को लेक खुश होते हैं लेकिन वे कहती हैं "यह खुशी भरी हँसी, जो सभी के चे

---

1. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 128
2. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 124

नाचती रहती थी, जून के आते ही झुंझलाहट और बेबसी में बदल गई
की लाइन कट गई थी। मेन टंकी सूखी पड़ी थी। फूल खिलना तो दू
ही मुरझाने लगे थे।"[1] इस कहानी में तो पानी की कमी से ह
समस्याओं का चित्रण है साथ ही उसे बचाने की मार्ग की ओर भी
जी ने पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है।

इस प्रकार समाज में चलनेवाली हर अच्छी-बुरी बा
यथार्थ-चित्र प्रस्तुत करने में नासिराजी की कहानियाँ सफल हुई हैं

कहानी की तरह नासिरा शर्मा के उपन्यासों में भी हमें सम
समाज का सच्चा चित्र मिलता है।

देश विभाजन और उनसे उत्पन्न कई समस्याओं का चित्र
करने वाला उनका उपन्यास है 'ज़िन्दा मुहावरे'। देश विभाजन के स
मुसलमान भारत से पाकिस्तान चले गए और उसी तरह पाकिस्तान
भारत की ओर चलने लगे। कुछ लोग अपने परिवार के साथ गये
अपने सगे-संबन्धियों को छोडकर दूसरे देश की ओर चल पडे। इस
गये लोगों के घर की स्थिति वहुत दयनीय थी। माँ-बाप बेटे के याद में
रहे। रहीमउद्दीन के ज़रिए इसका चित्र हमारे सामने आता है - "उधर
पर लेटे रहीमउद्दीन की पहली रात थी, जो जागते गुजरी थी। उन्हें
यकीन नहीं आ रहा था कि निज़ाम उन्हें छोड़कर चला गया है, त
खटके, हर आहट पर वह चौंक पड़ते कि जाने कब निज़ाम आकर

---

1. साहित्य अमृत, अगस्त 2005 - पृ. 101

कुंडी बजा दे।"[1] इस तरह देश छोड़कर नये वतन की तलाश में जा लोगों को रास्ते में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तकलीफों से भरा था "बीच सफर में, जाते हुए काफिले पर कुछ ह बन्द टूट पड़े और ग़ाफिल मुसाफ़िरों को लूटा, मारा और कत्ल किय जवान औरतें और लड़कियाँ गायब हो गई। शायद उनकी किस्मत क यही था। उनके मर्दों की लाशों खाक-खून में लिथड़ी पड़ी थीं। चील और गिद्दों से आसमान भर उठा था।"[2] ऐसी भयावह स्थिति थी देशवि की। जवान लोग वतन छोड़ गये तो कई शादियाँ टूट गयीं। इससे अ की तरह दूसरे के घर में भी दुःख भरा हुआ था। माँ-बाप बेटे के मु बार फिर देखने के लिए तडपते हैं। लेकिन वे ऐसे ही तड़प-तड़प जाते हैं।

अपने वतन को छोडकर दूसरे देश चले गये लोगों को व कष्टताओं का सामना करना पडता था। अपने लोगों से मिलने के लि के लिए कई पाबन्दियों का सामना करना पड़ता है। इन सब पाबन्दि पार करके जब वे अपने पुराने वतन देखने आते हैं तो वहाँ की स्थिति भी दुःख दायक हो जाती है। खबर मिलते ही पुलिस वाले बिना किस टोक से घर की तलाशी लेते हैं। कभी-कभी बूढे लोग इस हादसे से अ बचा नहीं पाते। निजाम के घर में भी वही हुआ। रहीमउद्दीन भी अप खो बैठता है। पुलिसवालों का कहना है "वारन्ट की ज़रूरत तब प

1. नासिरा शर्मा - ज़िन्दा मुहावरे - पृ. 13
2. नासिरा शर्मा - ज़िन्दा मुहावरे - पृ. 13

जब घर पर छापा मारना है। सरहद पर तनाव है। पूरा इलाका हमें
है। दुश्मनों को बिनना है। आखिर लड़ाई छिड़ गई तो... ।"[1] देश-विभ
मुसलमानों को पुलिस और फौज की नौकरी से वर्जित किया था। त
अच्छे युवकों को काम मिलना मुश्किल हो गया है। नासिराजी ने
चित्रण इमाम के ज़रिए दिया है - "उसका दिल अब इस बात से कां
कि बटवारे के बाद जिस तरह हम पुलिस और फौज की नौकरी में
समझे जाते हैं, उसी तरह इस क्षेत्र मे भी कहीं गोलू को काट न किया
लेकिन हालत अब बदलने लगा है। पढे-लिखे मुसलमानों को भारत में
नौकरी मिलने लगी। उनके घर भी रच बस गये। बाकी लोगों की
भी अपनी जिन्दगी खुशी से जीने लगे। जो मुस्लिम भारत में रह गए
भी कोई वजूद है, ऐसा सिद्ध होता है। खुशहाल जिन्दगी जीने के लिए
वतन छोडकर पाकिस्तान चले गये लोगों की स्थिति लगभग एक जै
वहाँ भी दंगा-फसाद ने उन्हें नहीं छोडा। निज़ाम तो फसाद में अपने
को ही खो बैठा, शहर की हालत ही बदल रही थी। बम्ब के धमाके
और कत्ल जैसे एक डरावना ख्वाब। यह सब देखकर निज़ाम दिल
में सोचने लगा - यह शहर कितना बदलं गया। क्या सोचा था और
गया! ख्वाब की ताबीर कितनी हकीकी, मगर कितनी डरावनी?[3] कभ
निज़ाम को यह चिन्ता होने लगती कि यहाँ से भागकर कहाँ जाऊँ?

---

1. नासिरा शर्मा - ज़िन्दा मुहावरे - पृ. 13
2. वहीं - पृ. 80
3. वहीं - पृ. 88

की तरह बहुत से लोग परेशान थे। कुछ लोग लन्दन, जर्मनी, अमे
जाकर बसने लगे। दोनों देशों में बसे लोगों को अपनों के बारे में ख
बहुत देर से मिलती है या कभी कभी मिलती ही नहीं, कारण था दो
के बीच का तनाव। पाकिस्तान में तो हिन्दु-मुसलमान फसाद का ख
बडा - चढाकर ही पहूँचती हैं। मगर यह इत्तिला वहाँ नहीं पहूँची थी
मुसलमान अफसर के नीचे हज़ारों हिन्दू भी काम करते हैं। जैसे निज़
भतीजा गयास कलक्टर है। दंगों के बावजूद इस मुल्क में मुस्लि
खुशहाली बताती है कि असलियत वह नहीं जो बताई जाती है,
सच्चाई वह है जो नज़र आ रही है। निज़ाम भतीजे के समक्ष हृदय
है : "पछतावा.... बहुत पछतावा हो रहा है बेटे! तुम से क्या छिपान
मज़ा नहीं आया ज़िन्दगी में सब कुछ पाकर भी। क्या खोया, यह आज
में आया।"[1]

बंटवारे और इन सांप्रदायिक दंगों के बावजूद भी यहाँ
मुस्लिम आपसी प्रेम को नष्ट न करके प्रेम भाव से जीते हैं। इसव
लेखिका रहीमउद्दीन के परिवार और मंगरू काका के परिवार के ज़रि
है। इस प्रकार नासिरा जी ने वंटवारे के बाद की समस्या, देश की
आदि का यथार्थ चित्र इस उपन्यास में चित्रित करने का प्रयास किय

इलाहाबाद की सामाजिक स्थितियों के वर्णन के ज़रिए
हर कोने में चलने वाले अत्याचारों और अन्यायों का वर्णन लेखि

---

1. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - पृ. 123, 124

'अक्षयवट' नामक उपन्यास में किया है। शिक्षा क्षेत्र के भ्रष्टाचारों उदाहरण इस उपन्यास में मिलते हैं। अध्यापकों की लापर्वाही क ज़हीर के इस वाक्य में मिलता है - "हिस्ट्री, एजूकेशन, इंग्लिश.... मग तक किसी सब्जेक्ट में कोई क्लास नहीं हुआ, बस अंग्रेज़ी में एक टि हुआ; बाकी में या टीचर छुट्टी पर हैं या फिर.... ।"[1] कुछ अध्यापक हैं जो अपने लोगों के बचाने के लिए निर्दोष बच्चों पर दोषारोपण ल और उनके भविष्य को बरबाद कर देते हैं। प्रो. दत्ता भी ऐसा एक अ था जिसने अपने साले के बेटे को बचाने के लिए इन्तिहान में नकल का दोषारोपण ज़हीर पर लगाया "प्रो. दत्ता ने ज़हीर से कापी छीनव पर रिमार्क लिख दिया और उसको ले जाकर मेज पर रख दिया। प लड़के के चेहरे का रंग सफेद पड़ चुका था। उसकी हिम्मत दत्ता सा तरफ देखने की नहीं पड़ रही थी। उधर ज़हीर का सारा बदन अपमा दुःख से काँप रहा था। उनकी आँखें भर आयी थी।"[2]

पुलिस के भ्रष्टाचार के बारे में बताने के लिए नासिरा श्यामलाल त्रिपाठी का चरित्र प्रस्तुत किया है। इस पुलिस के पास त तरह की शक्तियाँ हैं। नेता और गुण्डे लोग तो उसके मित्र हैं। उसके ि आवाज़ उठाने के लिए किसी को धैर्य नहीं - "उन्हें यह भी पता त्रिपाठी कई तरह के खेल खेलता है। मगर वह उसको अभी तक रँ पकड़ नहीं पाये थे। क्योंकि कोर्ट-कचहरी बाजार-हाट, नेता और ग

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 175-176
2. वहीं - पृ. 192

उसकी गहरी पैठ थी। बात पता लग जाती थी कि क्या हुआ मगर पुलिस त्रिपाठी के खिलाफ कभी जमा नहीं कर पायी उसका ठोस का सम्बन्धों का जाल, जो हर व्यक्ति के स्वार्थ पर निर्भर था।"[1] त्रिपा पुलिस कर्मचारी तो अपने रास्ते के सभी काण्डे को किसी न किस उखाडने की कोशिश में रहते हैं। वह अपने शत्रु को किसी न किसी हराना चाहते हैं। यहाँ त्रिपाठी भी ऐसा है। जहीर और उनकी मित्र के मानसिक बल पर किसी न किसी प्रकार आघात पहुँचाना वह चा इसका नतीजा यह हुआ - "मुरली अपनी रेहड़ी अभी मोड़ ही रहा एक ट्रक धड़धड़ाता हुआ उसकी रेहड़ी को धक्का मारता गुज़र गया। रेहड़ी उलट गयी जिसको सीधा करने के लिए वह झुका ही था कि दौड़ता हुआ ट्रक उसके ऊपर से निकल गया। इक्का-दुक्का लोग चलते ठिठक गये तभी तीसरी चौथी, पाँचवीं, ट्रक भागती हुई गुजर त्रिपाठी जैसे पुलिस गैर कानूनी ढंग से कमाते है। उनके संपत्ति के सबको सन्देह है। ए.एस.पी. गौरव दत्ता, एस.एस.पी. सतीश मोजम कहते है "सर! बड़े अफसोस से कहना पड़ता है कि इस्पेक्टर त्रिपाठी शहर में पुलिस मोहकमे की नाक नीची करने में कोई कोर-कसर नहं है। कहाँ तो मल्लाह बस्ती में इसकी झोंपड़ी थी और कहाँ अब ती मकान हैं। बच्चे किसी और शहर में कॉन्वेण्ट में पढ़ रहे हैं। आस गाँव में आम-अमरुद के कई एकड़वाले बाग हैं।"[3]

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 225
2. वहीं - पृ. 305
3. वही - पृ. 252

पुलिस में जो भ्रष्टाचार है उसके वर्णन के साथ-साथ पुलिसवालों का जिक्र भी नासिराजी ने दिया है। इसके लिए अशोक सतीश मोजमदार आदि का चरित्र उसने प्रस्तुत किया है। अशोक ऐसा है "जो जनहित और जनसेवा पर विश्वास करते हैं। कई बार भी चुका कि महकमे में रहकर अपनों से लड़ना समन्दर में रहकर म से वैर करने जैसा चुनौतीपूर्ण और कठिन काम है।"[1]

शिक्षा जगत में विश्वविद्यालयों और विद्यार्थियों पर राजन बुरा प्रभाव का चित्र भी लेखिका ने दिया है। राजनीति तो विद्यार्थियों से स्नेह नष्ट करके स्वार्थ पूर्ति के लिए लडने - मरने को उसे उक और उसमें विजय भी प्राप्त करती है। राजनीति के आगमन से जीवन कभी-कभी बरबाद भी हो जाता है। विश्वविद्यालय के पूर्व वि के वार्तालाप से इसका चित्र मिलता है "अगर यहाँ देश की राज पार्टियों का प्रभाव बढ़ा तो समझो दंगे-फसाद और जाने क्या-क्या नहं तब यहाँ घोषण हो जाएगी 'जीरो ईयर' की और हमारे नये विद्या साल पिछड़ जाएँगे अपनी पढ़ाई में।"[2] उनके अनुसार "हर सियास हिंसा पर विश्वास करने लगी है और यही हिंसा धीरे-धीरे विश्वविद में प्रवेश कर गयी। चाहे वह बनारस हिन्दु यूनिवर्सिटी हो या अ मुस्लिम यूनिवर्सिटी हो या फिर कोई और, हर जगह नेशनल पॉलिटि गिरावट का प्रतिबिम्ब हमको इन परिसरों में दिखाने लगा है।"[3]

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 341
2. वहीं - पृ. 173
3. वहीं - पृ. 175

आज के राजनीतिक नेताओं का चित्र नासिरा जी ने लछमिनि के इन शब्दों में व्यक्त किया है - "ई जमाना में कोउ भलामानुस नहीं है। ज सांपनाथ थइसे नागनाथ। कहत तो रहे गनपत काका कि ई मान-मनौवल बस समझो बोट वाले दिन तक है, फिर हम लोगन का ना सियाराम दा ना गनरामउ पहचानिहे। तब लगिहे वही कुकुरवाली धुतकार और पीठ खुले आकास की घाम।"[1]

कहानी की तरह उपन्यास में भी नासिराजी ने नारी समस्या का चित्र प्रस्तुत किया है। नारी पर लिखी गई उनके दो प्रमुख उपन्यास 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मंगनी'। समकालीन समाज में अपने अस्ति को बनाये रखने के लिए प्रयत्न करने वाली नारी का चित्र इनमें से मिल है। कामकाजी नारियों द्वारा घर में झेलनेवाली समस्याओं का चित्रण 'शाल्मली' में है। शाल्मली का काम करना और स्वतन्त्र विचार तो पति न को पसन्द नहीं है। शाल्मली रात को जब अपने माँ-बाप से मिलकर अ तो नरेश उस से झगडा करके बताता है "अब तुम मेरी नकल मत करो मर्द हूँ, कहीं भी आ - जा सकता हूँ। तुम औरत हो और अपनी मर्यादा पहचानो! इतनी रात गए वह भी अकेली... ।"[2]

शाल्मली का पति तो शराब पीकर दूसरी स्त्रियों के साथ रह आता है। इस समय उन दोनों के बीच हुए वार्तालाप से औरत के प्रति पु

---

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मंगनी - पृ. 82
2. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 74

के दृष्टिकोण पता चलता है। नरेश कहता है - "मैं मर्द हूँ, मैं जी सक
इसकी मुझे पूरी स्वतन्त्रता है।"[1] शाल्मली और नरेश के वार्तालाप
और भी स्पष्ट होता है : शाल्मली नरेश से पूछती है कि "तुम किस
गम्भीर और ईमान्दार हो?"

"दोनों के... तुम धर्मपत्नी, घर की शोभा, घर में रहो अं
तो तफरीह है।कौन उनको गम्भीरता से ले सकता है?"

"यह पाप है। उन बेचारी औरतों को झूठे वायदे देकर मत
नरेश।"

"तुम्हारी बहनें ठहरीं। तुम्हारा मन उनके लिए दुख
मगर वे कभी तुम्हारे प्रति इतनी दयावान नहीं हुई। वे तो तुम्हें हटाकर
को तुम्हारे स्थान पर देखना चाहती हैं। यह तो मैं हूँ, जो दृढ़ संकल्
हूँ कि ऐसा कभी नहीं होने देगा।"

"वे नादान हैं, मगर तुम अपने को यूँ मत बिखेरो। औ
अपमान करके तुम्हें कौन-सा सुख मिलता है?"

"वही जो तुम लोगों को हमारी बराबरी करने में मिलता
हम तुम लोगों को आमने-सामने करके बराबरी का स्थान दे देते
बराबरी का व्यवहार करते हैं।

"यदि यही मैं करुं तो कैसा लगेगा तुम्हें?"

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 144

"मुझे? करके देखो, गोली से उड़ा दूँगा।"[1]

'ठीकरे की मंगनी' में स्त्री की स्थिति का अच्छा खासा व
बचपन से ही बच्चियों पर कई तरह की पाबन्दियाँ लगाई जाती
महरुख के साथ हुआ - "यह महरुख चलती कैसे है, अम्मां! आप
नहीं इसे क्या?" पैर फेंक-फेंककर चलती हुई महरुख को देखकर छो
एक दिन बोल पड़े।

"महरुख का बाहर मैदान में निकलना अब बन्द करिए,
भाइयों के साथ उसको यूँ गुल्ली डंडा खेलते देखना अजीब लगता है
चचा ने एक दिन दबी ज़बान से कहा।"[2]

महरुख को पढ़ने के लिए दिल्ली भेजने का सवाल उठा त
कहने लगे -

"मियाँ होश के नाखून लो! महरुख लड़की है, शाहि
राशिद की तरह लड़का नहीं।"[3]

अकेले रहनेवाली स्त्रियों के प्रति लोगों का नज़रिया और
अच्छा नहीं होता। इसका उदाहरण है महरुख के स्कूल का संजय
और इशरत। वे तो महरुख को बदनाम करने को तुले हैं। महरुख से
बर्ताव देखें -

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 145
2. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मँगनी - पृ. 14
3. वहीं - पृ. 23

"महरुख जी, कभी हमें भोजन-वोजन पर बुलाइए न।" स
अतरंगता दिखाते हुए कहा।

"कुछ कंजूस हैं, महरुख जी, आप , वरना..." अरोड़ा बं
कश खींचते हुए बोला।

"महरुख जी को काहे को तकलीफ दे रहे हैं? अकेली ज
हम सब मिलकर इनकी दावत करते हैं क्यों, महरुख जी, यह स
आपको मंजुर है न?" इशरत ने पैंट की जेब में हाथ डालकर सीन
निकालते हुए कहा।"[1]

कई रातों से तो महरुख के घर की कुडी कोई खटखटाक
जाता है। अकेली रहने के कारण वह परेशान होकर गनपत काका से
है। गनपत काका ने उन लोगों को पकड़ने का वादा करता है। बाद में
बातों से यह मालूम हो जाता है कि ये बदमाश सह अध्यापक संज
इशरत है। महरुख और गनपत काका का बातचीत देखें :

"दो दिन से हम लोग ताकित रहें। गाँव में सोता पड़ा न
आए गए लकड़बग्धा समान कुण्डी बजाए के वास्ते।" छोटा लड़का

"कौन?" महरुख के कान खड़े हो गए।

"ओही, इसरत और संजै मास्टर।" गनपत काका बोले

---

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मँगनी - पृ. 89

"तो क्या वह दोनों रात को मेरी कुण्डी खटखटाते थे?" ने डूबती आवाज़ में पूछा।"[1]

आजकल हमारे देश में फैली एक बड़ी समस्या है प कमी। पानी की समस्या को लेकर लिखी गयी नासिराजी का उप 'कुइयाँजान'। पानी के अभाव में इन्सानी ज़िन्दगी दुश्वार हो जाता है नासिराजी ने गर्मी के दिनों के किसी मध्यवर्गीय परिवार की न विवशता का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। गरमी के मारे रत्ना का सिर रहा था। नल में पानी न था। गगरा-बाल्टी सब सूखे पड़े थे। बिजल रात से गई हुई थी। उसी के चलते पानी भी बंद था। रत्ना को घर बड़ा सा लग रहा था। दोपहर तो उसने बिना कुछ खाए गुजार दी थी, म के लिए कुछ न सही तो दाल-भात तो उबालना ही था। कुछ सोचक और पड़ोस का दरवाजा खटखटा उनसे आधी बाल्टी पानी मांगा।

पडोसिन उसकी मांग पर अजीब तरह से हँस पडी। "उ सोने से भी ज्यादा मूल्यवान् जल होय गवा है... देखती हूँ। इतना व अंदर गई।"[1] गर्मि में पीने के लिए एक बूद पानी भी नहीं। मनु लापरवाही से हम को एक बूद पानी के लिए तरसना पड़ रहा है। जीवन का सब कुछ पानी ही पानी है। पानी के बिना हमारा कोई क चलेगा। पानी ही मनुष्य की चालक शक्ति है। इसके अभाव में मनुष्य

---

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मँगनी - पृ. 96
2. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 77

कितना अस्त-व्यस्त हो जाता है इसका यथार्थ चित्र देखें - "ग्राहक दूव जुटने लगे थे। रोज़ से कुछ अधिक! पानी की कमी के कारण सभी कर लिया हो जैसे कि आज दही - जलेबी और कचौड़ी का नाश्ता एक बार चाय बनाने के बाद दोबारा केतली भट्ठी पर नहीं चढ़ पाई, पानी कम था और आर्डर का काम पूरा करना था सो बहुतों ने चाय कं गरम-गरम दूध का सेवन कुल्हड़ में किया और बिना नहाए-धोए छींटे मार, कपड़े बदल, ऑफिस, दुकान पर अपनी ड्यूटी बजाने पडे।"[1]

नासिरा जी ने पानीवाले मास्टर जी के ज़रिए गरमी के ठंडे पानी में नहाना दुनिया के सबसे बडा सुख बताया है। "स्नानघर चंदिया पर नल की मोटी धार गिरी तो मन से आवाज़ आई, सबसे ब क्या है - गरमी की सुबह ठंडे-ठंडे पानी से जी भर नहाना।"[2]

आज मनुष्य ने अपने सुख के लिए प्रकृति की स्वाभाविव नष्ट किया है। उसने पर्यावरण को इस तरह क्षति पहुँचाई कि ह इलाके भी सूख गये। जंगल काटे गये इससे मौसम में बदलाव आया अधिक और वर्षा कम होने लगी। जल समस्या पर काम करने वाले जैसे लोग तो प्रकृति पर होने वाले अत्याचारों से दुःखी है। उनके ३ देश में सूखा होने का मुख्य कारण हैं वनों का नाश। पानी के बॉटि

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 220
2. वहीं - पृ. 88

धंधा भी पानी से वंचित करने का साधन बनता जा रहा है। हमारे जलाशयों पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपना अधिकार जमा लिया है परिणाम स्वरूप आसपास के सारे कुए तथा जलाशय सूख गये हैं। हम जो नदियों, तालाबों, कुओं से भरा है एक बूद खालिस पानी के लिए है। हमारे अधिकतर जलाशयों का पानी पीने के लिए योग्य नहीं। ह कचड़ा डालकर उसे प्रदूषित करते हैं। औद्योगीकरण के कारण रास गंदगी से भी यह प्रदूषित होता है। जिसके परिणाम स्वरूप हम कई त बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। मास्टरजी पानी की समस्या क चिन्तित है। उनके अनुसार - 'खालिस दूध नहीं मिलता - यह शिका पुरानी हो चुकी है, नई शिकायत है - खालिस पानी नहीं मिलता है देख पीना तो दूर- खालिस शहद की तरह खालिस पानी भी लोग बोतल रखेंगे, ताकि उसकी एक-दो बूंद सूखे के समय चाटकर अमृत का स सकें। ऐसा दौर जल्द ही आनेवाला है जब हीरे के मोल पानी मिलेग पूंजीपति उसको अपनी तिजोरी में बन्द कर रखेंगे। तब डकैतियाँ प बोतल के लिए पड़ेंगी। बैंक के लोकर टूटे मिलेंग केवल खालिस प लिए जिसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में करोड़ों होगी! यह फैंटेस बल्कि आने वाले समय में पानी की दुर्लभता की पूर्वघोषणा है। यह नहीं बल्कि पानी के बढ़ते महत्व का सच है! यह अतिशयोक्ति नहीं, भविष्य का यथार्थ है।"[1]

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 271

पानी के लिए तरसते पशु-पक्षियों का यथार्थ चित्रण भी ना ने किया है - "साबुन के फेन से भरा पानी जैसे ही गुस्लखाने से निकल की सूखी नाली में बहा वैसे ही चिडियों का गोल छज्जे, दीवार, मुंडेर नीचे आया। अंतर पानी गिरने की छपाछप आवाज़ आ रही थी औ बहते पानी में चोंज डाले चिडियाँ पंख फड़फडा-फडफडाकर नहा र इस बीच पेड़ से उतर तीनों गिलरियाँ भी आ गई थीं।"[1]

पानी को बचाये रखने के कई उपायों के बारे में नासि अपनी उपन्यास में बताया है। पानीवाले मास्टरजी लोगों को उपदेश दे बडे छत्तवाले तथा बडे घरवाले, ड्राम या बडे बरतन में बरसात वे इक्कट्ठा कर रख सकते जिससे कपडा तथा बर्तन की सफाई में कि मुंह न देखना पड़ता। कमाल की छोटी अम्मी के यहाँ तो सूखे कुएँ कं पटवाकर टंकी बनवा ली थी, जिसमें वह बरसात का पानी जमा कर जो घर में मोटे कामकाज में बहुत कम आता है। इस प्रकार पानी की का यथार्थ चित्र नासिराजी के इस उपन्यास में मिलता है।

निष्कर्ष

समकालीन रचनाओं द्वारा लेखक पाठकों को सामाजिक विष का अहसास दिलाते हैं और उनके मन में परिवर्तन की कामना के ब बोते हैं। नासिरा शर्मा ने अपनी रचनाओं में समाज के सभी पक्षों को समग्र विशेषताओं के साथ उभारने का प्रयास किया है। नासिरा

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 18

रचनाओं में समकालीन समाज के यथार्थ चित्र अंकित हुए हैं। भार
नहीं बल्कि विदेशी देशों के सामाजिक परिवेश को भी उन्होंने
रचनाओं में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में तो हर प्रकार की स
का चित्रण है, साथ ही उन समस्याओं को हल करने का मार्ग भी उन्हो
है। उनकी रचनाएँ पाठकों को समकालीन सामाजिक जीवन के निक
लायक हैं। समस्याओं को लेकर सोच-विचार प्रकट करने की प्रेरणा भ
मिलते हैं।

नारी समाज के यथार्थ को भी छूने का प्रयास उन्होंने वि
समाज के निम्न-मध्य वर्ग के द्वारा झेले जाने वाले शोषण का चित्र
रचनाओं में मिला है। देश विभाजन के फलस्वरूप उत्पन्न सम
सांप्रदायिक दंगों का चित्रण भी उनकी रचनाओं में मिलती हैं। संप्र
नाम पर देश में हर कहीं गुण्डागर्दी हो रही है, इसको झेलनेवाले ल
मानसिक स्थिति का वर्णन भी उन्होंने दिया है। समाज में फैल रहे
और भ्रष्टाचारों के फलस्वरूप नैतिक मूल्यों का जो ह्रास हुआ है,
रेखांकन भी नासिरा जी ने किया है। अस्पताल में गरीब लोगों द्वा
जानेवाली समस्याओं और पुलिस के भ्रष्टाचार की सच्ची अभिव्यक्ति
रचनाओं में मिलती है। वृद्धजनों की दयनीय हालत का वर्णन भी
रचनाओं से मिलता है। कहा जा सकता है कि अपनी कहानिय
उपन्यासों में सामाजिह यथार्थ के चित्रण में नासिरा जी को बडी क
हासिल हुई है।

❖❖❖

अध्याय - 4

नासिरा शर्मा की रचनाओं में नारी अस्मिता

प्रस्तावना

समकालीन स्त्री रचनाकारों की कृतियों की सबसे बड़ी वि यह है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्री अस्मिता की सशक्त अभि देने की कोशिश की है। नासिरा जी ने भी अपनी रचनाओं में अपनी सरल शैली में नारी की चिरपरिचित छवि और उसमें आए परिव संभावनाओं का विस्तृत विवेचन किया है। नासिरा जी एक स्त्री रचनाकार नहीं हैं मानवतावादी रचनाकार हैं। इसलिए विश्व मान संबंधित तमाम विषयों को उन्होंने अपनी रचनाओं में समेट लिया है अस्मिता भी मानवतावाद से जुडा हुआ विषय है। इसलिए इस विषय उन्होंने अपनी रचनाओं में चित्रांकित किया है।

अस्मिता

'अस्मिता' शब्द के अर्थ के विषय में विभिन्न विद्वानों ने मत दिये हैं। "अस्मिता शब्द की निर्मिति अस्मि + तल् + टाप् से जिसका अर्थ है अहंकार।"[1] अस्मिता के 'अहंकार' अर्थ के अन्य पर्या शब्द भी हैं जैसे - "अभिमान, आत्मश्लाघा, घमंड, स्वाभिमान, ग अपनी सत्ता का बोध होना आदि।"[2] अस्मिता में अस्तित्व बोध प्रधान

1. वामन शिवराम आप्टे - संस्कृत हिन्दी कोश - पृ. 132
2. वहीं - पृ. 132-133

है। जबकि अस्तित्व में विद्यमानता का भाव स्पष्ट रूप से अनिवार्य है, वस्तु अथवा प्राणी इस सृष्टि में विद्यमान है उसी का अस्तित्व स्वीकारा सकता है, और जिसका अस्तित्व होगा उसकी अपनी एक पहचान अव होगी।

आदर्श हिन्दी कोश में 'अस्मिता' के लिए 'अहं' अर्थ भी वि गया है। 'अहं' के अलावा आत्माभिमान, गर्व, घमंड, आत्मसत्ता, अहंक मोह, जैसे अर्थ किए गये हैं।"[1] जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा आच से संबंधित होने से उसकी अस्मिता को द्योतित करता है। डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिं के अनुसार - "अस्मिता के अर्थ है अहंता, विद्यमानता अथवा होने का भ अर्थात् वस्तु के स्वरूप का सम्यक् संबोध कराने वाली तत्वमयता उस अस्मिता है।"[2]

अस्मिता का कोशगत अर्थ अहंकार है, किन्तु प्रयोग रूढ़ि ने निजत्व का सामानार्थी बना दिया है। अस्मिता-बोध मूलतः व्यक्ति-धर्मी ह है, किन्तु अन्ततः जाति अथवा समूह से सम्बद्ध हो जाता है। इसप्रक अस्मिताजनित गौरव का सम्बन्ध व्यक्ति, जाति, समाज और राष्ट्र किसी भी हो सकता है। वस्तुतः 'अस्मिता' आस्था, गौरव और संकल्प का बो शब्द है। अस्मिता के बिना न व्यक्ति का विकास सम्भव है, न जातिवि का। अस्मिता का सम्बन्ध जीवन-मूल्यों से है, जो सभ्यता के हर दौर

---

1. आदर्श हिन्दी शब्द कोश - सं. पं. रामचन्द्र पाठक - पृ. 64
2. डॉ. सुरेन्द्र नाथ सिंह - प्रसाद के नाटकों में धार्मिक दार्शनिक अस्मिता (लेख) (प्र के नाटक और भारतीय अस्मिता - सं. सुरेशचन्द्र गुप्त - पृ. 53 से उद्धृत)

केंचुल बदलते हैं। अस्मिता के प्रति जागरूकता व्यक्ति को दिशाहीन
बचाती है। अस्मिता वह नहीं है जो अतीत को नकार कर केवल वर्त
जीने की प्रेरणा देती है। अस्मिता वह है जो मानव सम्बन्धों की
कराती है, 'स्व' के दायरे से बाहर निकलकर विश्व के व्यापक फ
जुड़ने की प्रेरणा देती है। 'अस्मिता' को परिभाषित करना कठिन है
उसे व्यक्ति की अनुभव यात्रा का पुंजीभूत प्रतिफल कहा जा सक
अनुभव तो हमें जीवन में गहरे पैठने से मिलते है। अस्मिता
सांस्कृतिक चेतना भी कहा जा सकता है जो व्यक्ति को समाज से और
को राष्ट्र से संयुक्त करती है। इसके अभाव में किसी भी स्वस्थ सम
परिकल्पना नहीं की जा सकती। व्यक्ति चेतना का विकास सा
परिवेश में ही होता है। जहाँ एक ओर समाज व्यक्ति चेतना को प्र
करता है वहीं दूसरी ओर व्यक्ति समाज को प्रभावित करता है।
व्यक्ति और समाज का विकास अन्यान्याश्रित होता है। व्यवस्था से
व्यक्ति व्यवस्था में परिवर्तन चाहता है और वह परिवर्तन केलिए सं
करता है। भारतीय समाज में नारी मुक्ति का संघर्ष परिवर्तन की इ
किया हुआ संघर्ष है। समाज ने नारी को कभी भी व्यक्ति रूप में मान्य
दी है। उसे केवल पुरुष की वस्तु मानकर रखा गया जिसके कारण
के रूप में उसकी चेतना का विकास नहीं हो सका। इस दबाव से अ
होकर नारी बीच-बीच में विरोध के स्वर उठाते रहे। समय वे
परिस्थिति में परिवर्तन आता गया। समाज में स्थितियाँ मोड़ ले
जिसके कारण नारी में आत्म सम्मान के भाव धीरे-धीरे जन्म लिया।

बौद्धिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण स्त्री-पुरुष समानता व
सामने आयी।

नारी अस्मिता

बीसवीं सदी महिला जागरण की सदी रही है। इस व
महिलाओं ने संघटित होकर अपने अधिकारों की लडाई लड़ी और
नया रूप सामने आया। नारी मुक्ति आन्दोलन, सामाजिक परिवर्त
आधुनिकता ने नारी चेतना को विकसित किया। इन सब कारणों से
में नारी की स्थिति बदली और नारी के विभिन्न रूप उभरकर सामने
एक वर्ग विद्रोही बनकर उभरा तो दूसरा वर्ग पुरानी परंपरा को ही
चलता रहा। एक तीसरा वर्ग भी है जो संतुलन में विश्वास करता
एक वर्ग ओर है जो अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाए रखना चाहते है

भारतीय नारी अधिकांश रूप में परंपरा और संस्कृ
अनुरूप रहती है। भारतीय समाज जीवन में नारी सदैव पुरुष के अर्ध
है। पुरुष के अधीन रहकर पुरुष व्यवस्था की बंधक बनकर रह
प्राचीन परंपरा है। नारी के परंपरागत रूप को ही आदर्श मानकर
वाली महिलाओं का बहुत बड़ा वर्ग समाज में विद्यमान है। वह
अधिकारों को कम कर पुरुष के संरक्षण में रहने में अपना हित सम
और नारी मुक्ति से उभरे विद्रोह को निरर्क मानकर चलता है। हमें य
समाज और साहित्य में देखने को मिलता है। आशारानी ब्होरा के उ
- "दूसरी ओर हैं शिक्षिताओं - अर्धशिक्षिताओं का वह वर्ग जो अ

पुरुष संरक्षणता में ही अपना हित देखता है - अधिकार कुछ कम मं संरक्षण और सुविधाएँ जरूर मिलें, कोई दायित्व न लेना पडे, इसीलि समर्पण में ही वह सुख संतोष पाता है।"[1] आज की कथा साहित्य प्रकार के परंपरागत पात्र बड़े पैमाने पर मिलने हैं। अभी भी स विद्रोही दृष्टि को सम्मान जनक मान्यता नहीं दी है। सदियों के संस्व कारण नारी भी प्राचीन संस्कारों से उबर नहीं पाई और उसके परम्परागत संस्कारों के प्रति मोह है।

जब परंपरा समय और समाज की नई चुनौतियों को र करने में असमर्थ होती है तब उसका विरोध आवश्यक होता है। ऐ परम्पराओं, रूढियों का विरोध ही विद्रोह है। विद्रोह केवल विरोध बल्कि सड़ी-गली और जड़ मान्यताओं को नकार कर नई मान्यता निर्माण है। नारी का विद्रोही रूप न्याय की लड़ाई का एक प्रक श्यामाचरण दुबे के अनुसार - "नारी को न पूजा की ज़रूरत है, न की। वह सिर्फ समता चाहती है। असहमति विद्रोह और सुध परम्पराओं ने न्याय की मांग उठाई। वे आंशिक रूप से सफल भी समाज, संस्कृति और साहित्य में नारी का विद्रोही रूप प्रकट होने ल आज विभिन्न नारी संघटनों द्वारा नारी अधिकार के लिए संघर्ष किया है और रूढ़ियों के विरोध की लड़ाई तेज हो गई है। अनेक रचनाकारों की रचनाओं में इस प्रकार के पात्र चित्रित हैं जो इन रच की चेतना का परिणाम हैं।

---

1. आशारानी व्योहा - वारतीय नारी : दशा दिशा - पृ. 14
2. श्याम चरण दुबे - परम्परा, इतिहास बोध और संस्कृति - पृ. 30

जड़ परंपरा और पूर्ण विद्रोह से बचकर दोनों के बीच सं
निकालने वाला एक वर्ग समाज में है जिसे संतुलित वर्ग कहा जाता
वर्ग को व्यक्ति स्वातन्त्र्य के साथ-साथ समाज के अस्तित्व के प्रति भ
रहना पडता है। नारी अस्मिता और स्वातन्त्र्य के लिए नारीवादी अ
शुरू हुआ, जिसे पुरुष और परिवार विरोधी समझा गया। इस पर
पांडे का कहना है "नारीवाद कतई स्त्रियों को बृहत्तर समाज से अलग
रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरुषों के खिलाफ उन्हें प्रोत्साहित क
दर्शन नहीं। यह तो एक समग्र दृष्टिकोण है।"[1] इससे यह स्पष्ट है
धारणा पुरुष विरोधी विद्रोह पर आधारित नहीं है और न ह
परंपरावादी है। संतुलन को लेकर चलनेवाला नारी तो समाज म
अधिक है। आशारानी व्होरा के अनुसार - "संतुलन में विश्वास करन
एक तीसरा वर्ग भी है, जो कहीं स्वयं को दुहरी भूमिका निभाने क
खुशी-खुशी तैयार कर रहा है, कहीं शहीदाना ढंग से इस दुहरी भूमि
जैसे-तैसे ढोते हुए कराह सा रहा है।"[2] ये एक ओर परम्पराओं से स
करते हैं तो दूसरी ओर विद्रोह की मानसिकता को लेकर चलती ह
प्रकार के चरित्र साहित्य में महानगर के शिक्षित मध्यवर्गीय नारी के
मिलता है।

'नारी अस्मिता' से तात्पर्य पुरुष के समान स्त्री का
अधिकार से, स्त्री के प्रति विवेकमूलक दृष्टिकोण तथा स्त्री द्वारा पु

---

1. मृणाल पांडे - परिधि पर स्त्री - पृ. 47
2. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी दशा, दिशा - पृ. 14

वर्चस्व का प्रतिरोध से है। औरत का केवल स्वतन्त्र होकर निर्णय ले
या आर्थिक रूप से स्वतन्त्र हो जाना ही उसकी अस्मिता नहीं है। सह
में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण
मानसिकता में बदलाव, जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामि
पुरुष के बराबर अधिकार, स्त्री के चयन, वरण और नकारने की स्व
स्त्री की अस्मिता की मुख्य शर्तें हैं। औद्योगिक युग में निर्मित नये मूल्
पाश्चात्य सभ्यता के समानता, स्वतन्त्रता, भाईचारे के नारे और उस
पुरुष लेखकों द्वारा शब्द के माध्यम से निर्मित स्वतन्त्र स्त्री पात्रों ने इ
दी और शिक्षा के बढ़ते प्रचार और प्रभाव से स्त्रियाँ अपनी अस्मि
मुहिम में शब्द को अपना हथियार बनाने में सफल हुई। अस्मिता श
मायने में तब दीप्त होगा जब अस्मिता जड़ मानसिकता को दिमाग
फेंकेगी। समकालीन कथा साहित्य में भी नारी अस्मिता को बनाये र
प्रयास है।

शिक्षा के प्रचार के फलस्वरूप नारी के व्यक्तित्व का
विकास हुआ है। उसे एक नवीन दृष्टि मिली है और उसका विव
जागृत हुआ है। आज नारी को अपनी स्थिति का ज्ञान हुआ है और
रूढ़ियों के बन्धन से मुक्त होकर अपने विकास के स्वप्न देखने लगा
विकास के साथ उसे अनेक उलझनों का सामना करना पड़ता है। सम
नारी का चित्रण आज के लेखक-लेखिकाओं ने अपनी-अपनी रचन
किया है। दोनों के नारी विश्लेषण में कोई विशेष अन्तर नहीं है। ना
के कारण लेखिकाये नारी के अन्तर मन को कुछ अधिक गहराई से

हैं। पुरुष लेखकों ने भी अपने ढंग से नारी जीवन के सजीव चित्र अप रचनाओं में उतारे हैं। आधुनिक नारी के जो चित्र उन्होंने दिखाए हैं महिला लेखिकाओं के समकालीन नारी संबन्धी और लेखिकाएँ सामाजि रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, ऊँच-नीच, वर्ग-भेद तथा प्राचीन जर्जरित मान्यता का विरोध करते हैं। इनकी सहानुभूति उन नारी पात्रों के साथ अधिक है सामाजिक बुराइयों से लड़कर एक नया जीवन आरम्भ करना चाहती है लेखक तो नारी को उसका वास्तविक स्थान देने के पक्ष में हैं और समता सिद्धान्त को स्थापित करना चाहते हैं।

नारी अस्मिता - पुरुष रचनाकारों के दृष्टिकोण

पुरुष कई रूपों में, पिता, पति, पुत्र आदि, स्त्री के करीब होते इसलिए स्त्री ज़ीवन का कोई भी सच पुरुषों का भी सच होता है। स्त्री-पुर परस्पर पूरक पक्ष है, इसलिए स्त्रियों की हर भावनाओं और समस्याओं पुरुषों का भी स्वाभाविक रूप से ताल्लुकात होता है। स्त्रियाँ जहाँ समस्या को झेलती हैं, उससे जूझती हैं। पुरुष उन्हें अपने एहसासों में झेलता स्त्रियों की पीड़ा को महसूस करता है। यही कारण है कि जब स्त्री - जीव स्त्री-अस्मिता, स्त्री-संघर्ष को केन्द्र में रखकर कहानी और उपन्यास लिखे रहे हैं तो न सिर्फ महिलाओं द्वारा बल्कि पुरुषों द्वारा भी इस विषय पर र रचनाएँ लिखे गये। समकालीन साहित्यकारों की मानवीय सहानुभूति केव भोगे हुए यथार्थ तक सीमित नहीं है, वह सभी प्रकार के जीवन संवेदनशील चित्रांकन करना चाहता है।

समकालीन लेखकों ने नारी जीवन के विविध पहलु अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। रामदरश मिश्र कृत 'सूखत तालाब' उपन्यास में ग्रामीण जीवन में व्याप्त यौन भ्रष्टाचार को बेपर गया है। इस उपन्यास में यह प्रतिफलित होता है कि सवर्णता व भरनेवाले ऊँची जाति के लोग जहाँ न्याय-नीति और मानव मूत घोलकर पी गए हैं वहाँ छोटी जाति के लोगों में अभी न्याय-नीति और विद्यमान है। चेनैया चमारिन इसका ज्वलंत उदाहरण है। उपन्यास में के पतित होने का अनेक उदाहरण है। 'ऐसे गाँव में भूख को मिटाने उसे कई लोगों से शारीरिक संबन्ध रखने पड़ते है। 'जगदीश चन्द्र लिखित उपन्यास 'धरती धन न अपना' की एक प्रमुख नारी पात्र है उसके माध्यम से लेखक ने निम्न वर्ग की नारियों की दयनीय स्थि उनकी मानसिकता को उभारा है। विवाह से पूर्व ही गर्भवती हो जान लिए समस्या खड़ी कर देता है। वह एक साहसी नारी है। उसकी इस के लिए जिम्मेदार काली से वह प्रेम करता है। काली इस घटना से घ गाँव छोड़ना चाहता है तब वह आवेश में आकर उससे कहती है - समझती थी तू जिगर वाला आदमी है, तू आसानी से दबने वाला नह से गली के कुत्ते अच्छे हैं जो मारने से आगे से धूरते हैं.... सुना है मिट्टी का भी जोरदार होता है। तू तो तगड़ा है।"[1] ज्ञानों में निडरता व देख सकते हैं। उसमें प्रगतिशील विचार है।

---

1. जगदीशचन्द्र - धरती धन न अपना - पृ. 242-243

लक्ष्मीकान्त वर्मा के 'टेराकोटा' उपन्यास की नायिका अदम्य इच्छा-शक्ति से पूरित एक सशक्त नारी चरित्र है। वह अपने प के बोझ नौकरी करके उठाती है और साथ-साथ अपनी पढाई भी रखती है। रोहित जो मिति के स्वभाव से प्रभावित होकर कहता है - " साहस है मिति मे अकेले ही संघर्ष करने का, और कितने अवरोध हैं, बीच वह घिरी हुई है। घर में एक अपाहिज पिता, दो छोटी बहनें, एव भाई, माँ जो पिछले दस वर्षों से संघर्ष करते-करते टूट गई है.... लेवि सब के बीच मिति जब भी मिलती है हमेशा हँसती रहती है।"[1] भाइ को उच्च शिक्षा देकर जीवन में कामयाब बनाता है साथ ही स्वयं आई. की उच्च पदवी हासिल करके अपने कठिन परिश्रम से कलेक्टर बन है। मिति पुरुष के प्रति निष्क्रिय समर्पणशील न होकर स्वाभिमान नैतिक दायित्व का बोझ लिए एक उद्यमी नारी है, जो जीवन की स चिन्ताओं से सर्वधा विमुक्त है।

जगदीशचन्द्र के 'कभी न छोड़ें खेत' उपन्यास में निम्न जा स्त्रियों के प्रति जो अत्याचार और अन्याय है उसका चित्रण है। जह नारी-जीवन का प्रश्न है, विवेकीराय के विभावरी बीतेगी उपन्यास मे की समस्या का ज्वलन्त स्वरूप चित्रित किया गया है। उपन्यास अनेकप्रसंग आते हैं जहाँ लड़कियों के विवाह के कारण माँ-बा अपमानित होना पड़ता है। दहेज की विकट समस्या के दृश्य बडे

---

1. लक्ष्मीकान्त वर्मा - टेराकोटा - पृ. 55

हृदय-द्रावक, कचोटने और क्षुब्ध करने वाले हैं। गोपाल उपाध्याय व
टुकड़ा इतिहास' कुमाऊँ प्रदेश की डोम जाति की नारी चनुली (चन्द
के जीवन की एक संघर्षपूर्ण कथा है।

क्षितिज शर्मा का उपन्यास 'उकाव' में परम्परा और मर्याद
बेड़ियों से बाहर निकलने की औरत की कोशिश को दिखाया है। व
केन्द्र पात्र तो श्यामा नामक औरत है। आर्थिक स्थितियों और जी
टूटते चले जाने के बावजूद अड़ी और खड़ी रहती है श्यामा। यही
से विपरीत परिस्थितियों में भी प्रायः वह जो कुछ हासिल करना चा
उसे पा ही लेती है। जगदम्बा प्रसाद दीक्षित के 'मुरदाघर' में बम्
झोंपड़पट्टी की जघन्य जिन्दगी को लिया गया है। यहाँ पर पाँच-पाँ
दो, एक-एक कभी-कभी अठन्नियाँ, चाई-डरी के एक-एक कप में श
सौदा करनेवाली मैना, पारबती, लैला, नैमा मरियम जैसी वेश्याओं के
के कटु यथार्थ को लेखक ने कटु एवं निर्मम शैली में आलोखित कि

सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' की नायिव
वशिष्ट भी एक विशिष्ट नारी चरित्र है। उत्तर प्रदेश के शाहजहाँ पुर
सामान्य निम्न-मध्य वित्त कस्वाई परिवेश की यशोदा शर्मा उर्फ वर्षा
वहाँ से बम्बई के वर्सोवा वीच स्थिति सिलवर सेंड के ऐश्वर्य मंडित प
पहुँच जाती है। सफलता वर्षा के जीवन का अंग बन जाता है। उनके
में मोड़ लाने वाला व्यक्ति है दिव्या कात्याल। वह एक सुरुचि
आधुनिक नायिका है। वर्षा और दिव्या के समलैंगिक संबन्धों
उपन्यास में चित्रित किया है। मनोहर श्याम जोशी के 'हमजाद' में भ

जीवन की समस्या को चित्रित किया है। इस उपन्यास के ज़रिए जं बताते है कि पुरुष अपनी वासना की पूर्ति और व्यावसायिक सफ लिए स्त्री को सिर्फ साधन-सबसे सस्ता और सबसे घटिया-समझकर उपयोग-दुरुपयोग करता है।

समकालीन पुरुष लेखकों ने स्त्री की स्थिति का वर्णन कहानियों के पात्रों के ज़रिए चित्रित किया है। समकालीन स्त्रियाँ ' जैसा नहीं है। बहुत सारी स्त्रियाँ ऐसी है जो आर्थिक कमजोर सामाजिक पिछडेपन के कारण एक प्रकार की अंधेरे में रहते हैं और प्रकार के शोषण का शिकार होते हैं। कुछ तो ऐसी स्त्रियाँ है जो पर्याप्त प्राप्त करके घर से बाहर निकलकर पुरुष के समान अधिकार पा लि 'ऐसा अधिकार या स्वातन्त्र्य पाने के बाद भी इन्हें अनेक प्रकार के का शिकार होना पड़ा है। बाहर से नहीं अपने घरवालों से इसका शो रहा है। समकालीन कहानियों में भी इसका चित्रण है। शिवमूर्ति की 'तिरिया चरित्तर' में ससुर अपनी पोतहू के साथ जो कुछ करना च वह इतना क्रूर और अमानवीय है। मधुकर सिंह की कहानी 'दीपर स्त्रियों की जिस पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है वह बलात्कार से जुड़ी संजीव की 'तिरबेनी का तड़बना' कहानी में भी नारी शोषण का चि न्याय ने भी नारी का साथ नहीं दिया है। संजीव की 'घर चलो दुल में इसका वर्णन है।

नारी अस्मिता-महिला रचनाकारों के दृष्टिकोण

समकालीन हिन्दी साहित्य के महालि उपन्यासकारों संजीदगी से स्त्रियों की विभिन्न भूमिकाओं, पक्षों और रूपों को अपने में उद्‌घाटित किया है। इनके पास वह अनुभूतिशील हृदय है, जो रचना सृष्टि को गहन संवेदना से भर देता है। आज सामाजिक विस् ने जिस टूटन और अंतसंघर्ष को जन्म दिया है, उसकी मनोवैज्ञानिक प करने में महिला उपन्यासकार सफल रही है। समाज में स्त्रियों की उसकी पीड़ा यंत्रणा, बेबसी, विद्रोह, समझौता आदि मनोभावों से स्ि वास्तविक संसार भी भरा पड़ा है और औपन्यासिक संसार भी। सम महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में कहीं स्त्रियों की सुबकती, बनती बिगड़ती दुनिया को उद्‌घाटित किया है। स्त्रियों में शिक्षा एवं आत्म बढने से स्वतन्त्र चेतना का विकास हुआ है और पारंपरिक मूल्य विद्रोह की प्रवृत्ति भी काफी बढ़ी है। बदलते समय में स्त्री अपने को न से तलाश रही है। अतः महिला उपन्यासकारों द्वारा अस्मिता की नई करने और करवाने की माँग को लेकर कई महत्वपूर्ण उपन्यास लिख इन उपन्यासकारों ने घटित तथ्यों को ही नहीं इच्छित तथ्यों को भी औपन विन्यास दिया। उन्होंने युगों से शोषित-पीड़ित नारी-जीवन के विभि को अपने उपन्यासों का विषय बनाया और युगानुरूप उसकी प्रतिष्ठा ध नारी और उसके आसपास का समाज इन के उपन्यासों का मुख्य के है। उसकी मानसिक उलझनों, कुण्ठाओं, अन्तर द्वन्द्वों, बदलते संबन्ध अन्य अनेक समस्याओं का वर्णन इन रचनाओं में हर कहीं देखने को

है। आधुनिक नारी की मनःस्थिति, पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी सम्बन्ध, पुरुष के मन में जगने वाली शंकाओं, ईर्ष्याओं आदि मानसि विकारों का चित्रण इन्होंने अपने उपन्यासों में किया है।

सत्तर से पहले ही मन्नु भण्डारी, उषा प्रियंवदा जैसी प्रसि लेखिकाओं ने नारी के बारे में अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। उ प्रियंवदा आधुनिकता बोध की लेखिका है। वह न तो कमज़ोर नारी कहानी कहती है और ना ही भावुक क्षणों की सच्चाई को ही सच्चाई मान है। विशेष परिस्थितियों में अकेलेपन, बेबसी हार-लाचारी की मानव नियति को वह आकलित करती है। इनके दो बहुचर्चित उपन्यास है 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' तथा 'रुकोगी नहीं राधिका'। दोनों ही उपन्य नारी प्रधान हैं। 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' एक मध्यवर्गीय परिवार आर्थिक संकट से जूझने वाली नारी सुषमा की कहानी है। इसमें नारी सामाजिक भूमिका को उसके पारिवारिक संदर्भ में अंकित किया गया है 'रुकोगी नहीं राधिका' में वही नारी अपनी वैयक्तिक भूमिका को पारिवारि सन्दर्भों से भिन्न पूर्व और पश्चिम के मध्य के द्वन्द्व में अंकित करती आधुनिक भारतीय नारी के विषय में मन्नु भण्डारी ने अपने विचार इस प्रक व्यक्त किये हैं - "यहाँ तो दहेज जाति, आर्थिक परतन्त्रता, शील-सुरक्षा,सती या 'भारतीय नारी' का बहु प्रचरित शिकंजा' - और भी अनेक रुकावटें जो हमें खुला आसमान देखने ही नहीं देती.... बार-बार जिस स्त्री को मैं अपनी रचनाओं के द्वारा पहचानना चाहा है, वह है - आन्तरिक संस्क भावनाओं और संवेदनाओं के साथ बाहरी स्थितियों और दबावों को झेल

कभी उनको तोडती और कभी खुद उनके सामने टूटती हुई नारी।" श शास्त्री ने अपनी सशक्त लेखनी से आधुनिक नारी की नवीन समस्याः उलझनों पर ध्यान दिया है। आज के कुंठा ग्रस्त जीवन में नारी क विचित्र परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता है इसी का हृदय-स्पर्शी चित्रण 'सीढ़ियाँ' और 'नावें' जैसे उपन्यासों में किया है, जिनको पढकर कि किसी रूप में पाठक को अपना ही प्रतिविम्व दिखाई पड़ता है और इ पात्रों के प्रति मन सहानुभूति से भर जाता है। इनके 'वीरान रास्त झरना' की मूल समस्या भी मानसिक स्तर पर बिखरी नारी की है, जं ही अन्तर्द्वन्द्वों में उलझकर जीवन पर अपनी पकड़ खो बैठती : निरन्तर टूटती जाती है। नारी जब परिस्थितिवश अथवा विवश कारण अन्तर्द्वन्द्वों का शिकार बनती है तो उसका व्यक्तित्व बिखरने है। स्वयं वह अपने लिए ही जटिल पहेली बन कर रह जाती है, ि समाधान वह अपने अन्तर या बाहर न पाकर कुंठित हो जाती है और के वीरान रास्तों पर भटक जाती है। आलोच्य उपन्यास में भी नारी क और बिखरने की पीड़ा को मानसिक एवं वैयक्तिक धरातल पर उठाय है। अपने आपको माँ और चाचा के अवैद्य सम्वन्धों की सन्तान ज अचला का व्यक्तित्व द्वन्द्व ग्रस्त हो उठता है। अचला के अन्तर क उसकी हीन-ग्रन्थि, उसका पाप-बोध उसे सम्भलने से रोकता है और चाहते हुए भी गलत रास्ते पर बढ़ती जाती है। शैलेन्द्र का प्यार उस मानसिक घुटन से मुक्ति देता है लेकिन उसकी लम्बी जुदाई और दीर्घ अचला को फिर से तनाव की स्थिति में लाती हे। फिर से वह गलत

में पड जाती है, और शैलेन्द्र फिर उस दुविधा ग्रस्त स्थिति से उब
उसके जीवन को एक स्वस्थ दिशा प्रदान करता है और उस नारी कं
मानसिक विखराव से मुक्त करता है। दूसरी तरह की नारियाँ और भ
स्वयं ही अपने लिये उलझनें उत्पन्न करती है। इसके संबन्ध में लेरि
अपने 'नावें' उपन्यास के सन्दर्भ में लिखा है कि - "कितने व्यक्ति अप
के समक्ष स्वयं के उद्घाटित करने की सामर्थ्य रखते हैं? यह उद्घा
जाना साहस है। विभिन्न पतियों से लड़ती-जुझती एक नारी के सन्दर्भ
प्रश्न की एक स्वाभाविक अभिव्यक्ति।"[1] यह उपन्यास जो मालती नाम
ऐसी नारी की कहानी है जो पढाई समाप्त करने के बाद घर की गि
आर्थिक दशा संभालने के लिए दिल्ली से गाज़ियाबाद नौकरी केलि
जाती है। वहाँ उसके संबन्ध सोमजी से होता है और उस अवैद्य सं
उसे एक बेटी होती है नीलू जो बडे होकर प्रगतिशील विचारोंवाली न
जाती है। यह उपन्यास रूढिग्रस्त परम्पराओं के विद्रोह के प्र
साहित्यिक प्रयास है। 'सीढ़ियाँ' उपन्यास में नारी का एक नया ही रूप
आता है। वह उनके लिए अपना जीवन अर्पित करती है तो उसके
नहीं होते और इस सव के वदले में उसे केवल पीड़ा ही मिलता है।
एक डॉक्टर है और अपने बॉस डॉक्टर तथा उसकी पत्नी की म
पश्चात उसके बेटे की देखभाल के उत्तरदायित्व का ऐसा बोझ उस
जाता है जिससे वह बचना चाहकर भी नहीं बच पाती। अपने जीवन
ही वे लोग उस पर ऐसा अधिकार जतलाते हैं जैसे वह उन्हीं के परि

1. शशिप्रभा शास्त्री - नावें - मुख्य पृष्ट से

कोई अंग हो। शान्ति जोशी द्वारा लिखित 'मेरा मन वनवास दिया सा
मन की वेदना और अस्तित्व बोध की समस्या को गहराता है। यह
कथा है कृष्णा की जो दाम्पत्य सुख पाने के लिए निरन्तर तड़पती र
और जब उसके सुखी होने के दिन आते हैं तो तपेदिक से ग्रस्त होकर
के अन्तिम क्षणों तक पहुँचती है। आरंभ में तो पति इसलिए नहीं
क्योंकि उसका रंग अधिक गोरा नहीं है। हरीश इस भ्रम में होता है कि
लड़की दिखा कर सावली से ब्याह रचा कर उसके ससुराल वालों ने
किया है। वास्तव में देखने के समय कोई ओर लड़की कृष्णा के सा
के कारण हरीश को धोखा लग जाता है। कुछ समय पश्चात् वह कृ
प्यार करने लगा जाता है। फिर से एक गोरी लडकी के पीछे पड़ा
कृष्णा की अवहेलना करती है और फिरसे वह उदास हो जाती है। र
में उसकी एकमात्र सहारा उसकी सास है। अंत में सतीश कृष्णा की
आता है। आज कृष्णा जैसी न जाने कितनी नारियाँ है जो दोषी न ह
भी दूषित ठहराई जाती हैं और अब उन्हें दूषित ठहराने वालों क
जागृत हो जाती है तब तक इतनी देर हो चुकी होती है कि वे पश्चाता
के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पाते क्योंकि वह नारी दुखों से टूट व
दिन समाप्त होगी। यदि मनुष्य थोडी विवेकशील होकर काम ले तो
समस्यायें न उत्पन्न होगी और ना ही भोली - भाली लड़कियों को इतन
सहना पडेगा। शांति जी की एक और उपन्यास 'शून्य की बाहों में' स
नारी की उपेक्षित स्थिति की गाथा को संजोये हुए है। समाज में न
दीन-हीन अवस्था में किंचित सुधार लक्षित होता है, लेकिन आज भ

कितनी असहाय है, इसी के स्वर प्रस्तुत उपन्यास में ध्वनित हुए हैं। में नारी पुरुष की वासनाओं की दासी होकर और पुरुष के सम्बन्धि अमानवीय अत्याचारों को सहकर जीवन जीने के लिए विवश होती

कृष्णा अग्निहोत्री की 'बात एक औरत की' नामक उपन्य नारी के अश्रुसिक्त जीवन पर आधारित है। इस उपन्यास में लेखि अपनी विचार इस प्रकार व्यक्त किया है "जिन्दगी में नारी की कल्पना ढंग से की गई है। उसे सार्थकता प्रदान करने के लिए कभी मानवी दानवी चित्रित किया गया है। बेहत रोमानी क्षणों में वह प्रेरणास्पद ह है।"[1] इनका दूसरा उपन्यास टपरेवाले गन्दे टपरों में रहने वाले ल जीवन पर आधारित है। इन टपरों में रहने वाली बसोड़ जाती की कर्मशील है। जबान की तेज़ हैं और पति की मार खाने की आदी दूसरे घरों में नौकरी करके जाडु और डलिया वगैरा बनाकर अपनी ज चलाती हैं और किसी पर निर्भर नहीं रहती। पूरे उपन्यास में गोरे ल बेटी लीला पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है और व उपन्यास का एकमात्र महत्वपूर्ण नारी-पात्र है। लीला टपरें में रहने लेकिन उसके विचार अन्य टपरेवालों से भिन्न है, वह वहाँ के किसी आदमी के साथ जीवन बिताना नहीं चाहती। अपनी कमियों से मुक्त एक सम्पूर्ण जीवन बिताने की चाह और उस चाह के फल हुए धोखा ज आदि इस कहानी का विषय हैं। लोगों के बीच दुरियाँ बढाने का मुख्य

---

1. कृष्णा अग्निहोत्री - बात एक औरत की, भूमिका से

हैं जाती "काश हम इन्सान केवल नाम से ही जाने जाते, उसके आ जाति और खानदान का पुछलग्गा न होता।"[1] लेखिका नारी संबन्धि और उल्लेखनीय उपन्यास है - कुमारिकाएं इस उपन्यास में कुछ ऐसी है जो समाज की झूठी मान्यताओं तथा परम्पराओं के कारण कुंठित अविवाहित रहती है और उनकी परिणति 'वर्किंग गर्ल्स हॉस्टल' में जीवन व्यतीत करने में हो जाती है। शुचिता जैसी विवाहित नारी भ दो-दो विवाह करने के पश्चात् भी सुखी नहीं है। इस उपन्यास में बहुत नारी पात्र हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार से यन्त्रणामय जीवन जीकर अन्त में से तथा अपने सगे संबन्धियों से कट कर तथा अपने पैरों में खडे होकर ही जीवन जीते हैं।

मेहरुन्निसा परवेज़ का प्रथम औपन्यासिक कृति 'आ दहलीज' तालिया नाम की एक नारी की जीवन कथा है। वह ए महीन है जा इनसान की तरह खाती-पीती और सोती है। तालिया क और जीवन के प्रति अरुचि का कारण यह है कि डॉक्टर ने उससे कि वह जीवन भर माँ नहीं बन सकती है। लेखिका ने इस उपन्यास जीवन की एक गम्भीर समस्या को लिया है जिसका सम्बन्ध उसके म हैं। कोरजा लेखिका का एक और उपन्यास है जो मुस्लिम सम सम्बन्धित है। गरीबी की आग में झुलस्ती नारियों की कहानी इस उ में चित्रित है। ये नारियाँ अपने जीवन की अभिव्यक्ति इन शब्दों में व

1. कृष्णा अग्निहोत्री - टपरेवाले - पृ. 90

- "हमारी जिन्दगी में भी क्या ऐसी भूली बिसरी स्मृतियां नहीं है, जि सारी उम्र इसी कोरजा के रूप में चुनते हैं।"[1] सभी नारी पात्रों को अलग-अलग कहानी है वेदना दुःख और ठीस से भरी हुई। लेखिका अन्य उपन्यास है 'उसका घर'। इसमें नारी के बारे में लेखिका लि : "बडे-बडे विद्वानों ने औरतों को शक्की करार दिया है पर यह औरत से ज्यादा मर्द शक्की होता है।"[2] निरूपमा सोबती की 'मेर अपना है' में एक बहुत ही साहसी नारी की कहानी को लेकर लिख है। ऊँची आकांक्षायें रखने वाली यह नारी हर सम्भव प्रयास के पश्च भविष्य के अनजान राहों में खो जाती है। यह नारी पात्र, अनिला क्रा है। हमारी सामाजिक व्यवस्था के प्रति जो अनिला की क्रान्तिकारी है, उन्हें पढ़कर पाठक सन्न रह जाता है।

सूर्यबाला का बहुचर्चित लघु उपन्यास 'मेरे सन्धि प नायिका शिवा में युगों से परिचित भारतीय नारी का रूप देखा जा सक शिवा लेखिका के चिन्तन का प्रतिमान है। सूर्यबाला उपन्यास के स्वी लिखते हैं - शिवा का सौन्दर्य मेरी अपनी आस्था और विश्वास है, सौन्दर्य की जो गरिमा मुझे अभिभूत करती रही है, यही साकार रू शिवा।"[3] मंजुल भगत के दो प्रमुख उपन्यास है 'टूटा हुआ इन्द्रधनुष 'अनारो'। 'टूट हुआ इन्द्रधनुष' दो लघु उपन्यासों का संग्रह है - टूट

---

1. मेहरुन्निसा परवेज - कोरजा - पृ. 92
2. मेहरुन्निसा परवेज - उसका घर - पृ. 149
3. सूर्यवाला - मेरे सन्धि पत्र स्वीकार से

इन्द्रधनुष और लेडीज़ क्लब'। लेडीज़ क्लब अपने आप को अभिज
की समझने वाली कई नारियों की कहानी है परन्तु भीतर से किसी
रूप में ये सभी नारियां खोखली हैं। ये सभी दोहरा जीवन जीती है
आधुनिक युग में किस प्रकार जीवन जीने के लिए विवश हो जाती
वर्तमान सन्दर्भ में जीवन सत्य का क्या महत्व है तथा उसकी क्या भू
इसके वारे में इन उपन्यासों में बताया गया है। 'अनोरो' मंजुल भगत
अनूढा उपन्यास है। यह एक ऐसा उपन्यास है जो पाठक को वास्त
नारी जिजीविषा की पहचान कराता है। लेखिका ने अपनी इस कृति
निम्न वर्ग की नारी का चयन किया है। हमारे नित्य के जीवन में का
वाली नारियों, जैसे बर्तन मांझने वाली और झाड़ु-पोंछ लगाने वाली
का चित्रण विशेष रूप से आज के हिन्दी उपन्यास में कहीं भी देखने
मिलता। मेहरी कहलाई जाने वाली इन नारियों का घर-घर में काम
अपनी जीविका चलाना एक साधारण सी बात हो गई है। बिना मेहरी
का काम निपटाना तो आज गृहिनियों के लिए बहुत हो दूभर हो
मेहरियों के कठिन जीवन में झांकने का एक सफल प्रयास 'अन
लेखिका ने किया है। अनारो को जीवन के प्रत्येक मोड़ पर संघर्ष
पड़ता है। आधुनिकता और परम्परा के बीच जुझती अनोरो अपने
समस्त विद्रूपताओं एवं महत्वाकांक्षाओं के साथ जीवन के तीखे यथ
रेखांकित करती है। अनारो के रूप में एक जीवट वाली जीवन्त न
उपन्यास में चित्रित हुई है जो जीवन की विषम परिस्थितियों में
टूटती, गिर कर फिर सम्भल जाती है।

सुनीता जेन के दो उपन्यास हैं 'अनुगूंज' और 'बिन्दु' 'अनु
उपन्यासिकाओं का संग्रह है - अनुगूंज और मरणातीत। 'अनुगूंज' छ
की एक ऐसी नारी की कहानी है जो पति द्वारा उपेक्षित है। 'मरणातीत
की कहानी है जो विधवा है। उसका प्रेम विवाह राज से होता है। व
बेहद प्रेम करता है, परन्तु विवाह के कुछ ही समय उपरान्त उसकी म
जाती है और गोमा अपने सात महीने के बेटे चीनू के साथ अकेली रह
है। जवानी में वैधव्य भोगना कितना कठिन है, इसकी तस्वीर है -
उपन्यास 'बिन्दु' भी दो उपन्यासिकाओं का संग्रह है - 'बिन्दु' और
बिन्दु पति के अत्याचारों से तंग आकर अपनी बुआ के साथ अमेरिक
जाती है और वहीं नौकरी करने लगती है। मालती जोशी का 'पाषा
इनके तीन उपन्यासों का संग्रह है जिनके नाम हैं - ज्वालामुखी के
'पाषाण-युग' और 'निष्कासन'। 'ज्वालामुखी के गर्भ में' सुलक्षणा
स्वाभिमानी नारी का चित्रण है। 'पाषाण युग' में भी नारी की कह
इसकी नीरू यानि निरजा भी अपार सहनशक्ति की एक अद्‌भुत मू
'निष्कासन' बेटी द्वारा उपेक्षित एक माँ की कहानी है। जिस बेटी प
अपना सम्पूर्ण स्नेह देना चाहती है वही गुडिया अनायास ही अपर्न
घृणा करने लग जाती है। माया का चरित्र भी उदासीन नारी का है।
उससे अलग हट कर अपना नया संसार बसा लेता है और माया स
लड़ने के लिए अकेली रह जाती है। मणिक मोहिनी का 'पारु ने क
उपन्यास में एक परित्यक्ता नारी का चित्रण है, जिसके पारू नाम का
वही उसके अकेले क्षणों का साथी है। वह अपने पति से बहुत प्यार

थी परन्तु उसका पति औरत को पैर की जूती से अधिक कुछ न समझ
और यही बात उनके अलग हो जाने का कारण बनी। प्रभा खेतान सम
महिला उपन्यासकारों में प्रमुख है। इनके उपन्यासों में स्त्री पहचान व
तड़प और बेचैनी दिखती है। 'छिन्नमस्ता' हमारे समाज की उस
सच्चाई की कहानी है जिसे हम सुनकर भी सुनना और समझना नही
हैं। इस उपन्यास में प्रिया नामक एक ऐसी लडकी की कहानी है जो
अनपेक्षित और निरंतर शोषित तथा उत्पीड़ित है - समाज की
मान्यताओं से भी और पुरुष की आदिम शारीरिक भूख से भी। लेखि
'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास का परिवेश विदेशी है। इसमें विदेशी
का खुलापन और उससे उत्पन्न समस्याओं को मुख्य विषय बनाया ग
इस उपन्यास में विदेशी समाज के बहाने भारतीय समाज की झलक
समस्याओं को दिखाया गया है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने व
अपने देश से पलायन करनेवाली लड़की की कहानी है यह। उ
स्वतन्त्रता केवल भारतीय स्त्री के लिए ही नहीं वल्कि किसी भी स
पुरुष की दासता से निकलने की यह पहली शर्त है। इस उपन्
पारिवारिक विघटन और स्त्री-पुरुप के वीच बढ़ रहे स्वच्छन्द संव
उपजे सवालों पर भी गौर किया गया है। औरत होने की त्रासदी को उ
में इन शब्दों में व्यक्त किया है - औरत कहाँ नहीं रोती और कब नहीं
वह जितना ही रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है।"[1]

---

1. प्रभा खेतान - आओ पेपे घर चलें - पृ. 35

प्रमुख लेखिका कृष्णा सोबती नारी की अंतरंगता को पह
की कला में निपुण है। उनकी 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में 'रत्ती'
एक ऐसी लड़की की कहानी है जो बचपन में बलात्कार की शिकार
और इससे उत्पन्न मानसिक शारीरिक त्रासदी से वह कभी उबर नहं
है। उसके मन में काम का विकृत रूप विकसित हो जाती है। प्रतिश
ज्वाला में जीति 'रत्ती' अनेक पुरुषों के संपर्क में आती है। इन सबक
पुरुषों से बदला लेने की उसकी विकृत मानसिकता है। 'रत्ती' की
स्त्री की अस्मिता की समस्या है और अपनी निजता को स्थायित्व
करने की कामना के साथ वह जीवन संघर्ष में उतर पड़ती है। मैत्रेयी
की 'इदन्नमम' भी स्त्री केन्द्रित है। तीन पीढी की कथा है। राजी से
तत्सम भी नारी केन्द्रित है। उसी प्रकार समकालीन हिंदी महिला उपन्या
के उपन्यासों में स्त्री-जीवन के विभिन्न रूप मिलते हैं। 'स्व' की पहचा
अस्मिता के संघर्ष से पैदा हुए सवाल उपन्यासों में मुखरता से उठाए
महिला उपन्यासकारों द्वारा स्त्री-जीवन का चित्रण बिल्कुल यथार्थ
वास्तविक है इसलिए ज्यादा प्रभाव भी होता है।

नारी जीवन और नारी संवन्धी सामाजिक दृष्टिकोण
बदलाव आया। नारी में आत्मविश्वास का निर्माण हुआ नारी की स्थि
क्षेत्र में मजबूत होती गयी। स्वयं नारी की मानसिकता भी बदलने लगी
परिवर्तन का परिणाम साहित्य में भी हुआ और कहानियों में नार
उभरने लगा। इन सब का होते हुए भी आज घर समाज में बेटे का
अधिक है। इसी कारण बेटे की ही अपेक्षा और प्रतिक्षा की जाती है

स्थान पर बेटी का जन्म हुआ तो उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है माँ भी बेटी के साथ अमानवीयता का व्यवहार करती है। ऐसी ही चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानी 'तुम किसकी हो बिन्नी' में कि बिन्नी के साथ उसकी मम्मी का व्यवहार अविश्वसनीय लगने जैसे ह बेटे के स्थान पर बेटी को वह बर्दाश्त नहीं कर पाती। नमिता सि 'उबारने वाले हाथ' एक ऐसी कहानी है जिसमें स्त्री अपनी शक्ति को कर परिवार को उबारने का निर्णय लेती है। अगर स्त्री अपनी श पहचान गई तो वह अपने साथ अपने परिवार का भविष्य सुरक्षि सकती है। कहानी का चंदो ऐसा ही एक नारी है। चंदो अपने जी निर्णय स्वयं लेती है। वह स्वाभिमानी और स्वयं निर्णयी लड़की है। तलाश करने वाली है। यह कहानी नारी अस्मिता को दर्शाती है। परिवार के लिए सुखों का त्याग करने वाली आदर्श बहन और ब चित्रण इसमें हुआ है। नमिता जी की 'दर्द' दलित जीवन की कहा दलित परिवार की माँ-बेटी का चरित्रांकन इसमें किया गया है। दलि के दर्द भरी दशा का चित्रण है। लेखिका की 'या देवी सर्व भूते वैचारिक कहानी है। स्त्री की क्षमता का परिचय देवयानी के माध्यम गया है इस चरित्र के माध्यम से लेखिका ने स्त्री जीवन की सही करने का प्रयास किया है।

मंजुल मगत ने अपनी कहानी 'निशा' में निशा के रूप सशक्त चरित्र की सृष्टि की है। निशा आधुनिक युग की युवती है, मान्यताओं और परम्पराओं को नकारते हुए अपनी स्वतन्त्र पहचान

चाहती है। निशा के चरित्र के सम्बन्ध में डॉ. रमेश देशमुख का कह
"निशा में नारी के आत्मविश्वास की उत्तम अभिव्यक्ति हुई है। कहान
की तुलना में पुरुष की श्रेष्ठता को नकारती है। वह संकोची दब
भावुक न होकर तर्कशील और व्यावहारिक है।"[1] लेखिका की 'र
छोटी उम्र में विधवा हुई स्त्री की कहानी है। जीने के लिए उसने ए
तरीका स्वीकारा है। हर दुल्हन या बहु के साथ वह स्वयं उतनी ह
बनकर रहती है। बहुओं के जीवन का 'रस' उसके जीवन का आध
'नालायक बहु' में भारतीय नारी के आदर्श एवं आत्मविश्वास को व्यक्त
गया है। प्रेम त्याग सेवा आदि भावनाओं को महत्व इस में प्रकट है
की पत्नी पति के साथ निष्ठा से रहकर भी आत्मविश्वास और वि
स्वतन्त्र निर्णय लेने में सक्षम है। इस कहानी की मुख्य पात्र कामिनी
वर्ग की नारी है। कामिनी अपने घर-परिवार और सामाजिक मर्यादा
हर प्रकार का कष्ट और त्याग करती है - "उसे अपने पति की मर्या
अस्तित्व की रक्षा के लिए सब कुछ सहकर जीवन की समस्त वि
झेलनी पड़ती है।"[2] नारी की वैचारिक चेतना का विकास स्वतन्त्रता प्र
वाद अधिक हुआ जिसके कारण वह अपने व्यक्तित्व के प्रति अधिक
हुई है। परिवेश का प्रभाव व्यक्ति पर होता है। व्यक्ति परिवेश में ही
अस्मिता की खोज करता है। नारी ने स्वतन्त्र रूप से जीने की भाव
लेकर अस्मिता की खोज की है। मंजुल भगत ने 'खोज' कहानी म

---

1. डॉ. रमेश देशमुख - आठवें दशक के हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य - पृ. 8
2. वहीं - पृ. 185

अस्तित्व की खोज करने वाली नारी का चित्रण किया है। कहानी नीलिमा शिक्षित कामकाजी तथा विवाहित है। वह घर और नौकरी दोहरी जिम्मेदारी से व्यस्त है। जीवन की आपाधापी वह अपने भीतर के को ढूँढना चाहती है। उसे 'स्व' की तलाश है। वह अपने आस-पास परिवेश में अपने आपको खोजती है।

निरुपमा सेवती ने 'टुच्चा' कहानी में अविवाहित नौकरी पे युवती की त्रासदी को व्यक्त किया है। परिवार और आफिस को जिम्मेद का निर्वाह करते समय युवतियों को अनेक स्थितियों से और समस्याओं गुजरना पडता है। पैसा ही मुख्य है। संबन्धों में चाहे वह पारिवारिक भी प्यार और अपनापन नहीं रहा है। कहानी में चित्रित नारी का दोहरा शो हुआ है। परिवार और आफिस के बीच वह पिसती जाती है और अप अस्तित्व ही खो देती है। जिस परिवार के लिए वह सब कुछ करता है व उसका कोई मूल्य नहीं है। परिवारवाले उससे ज्यादा उसकी पैसे से प्य करती है। जब वह बीमार हो जाती है तो छोटी बहन चिन्तित होकर कह है "दीदी की पासबुक वगैरह कहाँ रहती है, अब कुछ हो गया तो।"[1]

व्यक्ति पर परिस्थिति का प्रभाव और परिणाम अत्यधिक हो है। व्यक्ति समय और स्थिति के हाथ का खिलौना बनकर रह जाता आर्थिक अभाव और बड़े परिवार के कारण लड़कियों की शादी नहीं पाती है। परिवार की इस समस्या और विवशता का चित्रण मेहरुन्नि

---

1. निरुपमा सेवती - खामोशी को पीते हुए - पृ. 49

परवेज ने अपनी 'विद्रोह' कहानी में किया है। काम-काजी अविवाहित युव
की त्रासदी को बताने वाली यह प्रभावशाली कहानी है। 'क्यों नहीं' कहा
में आत्मनिर्भरता के महत्व को बताया है। जीवन में सफलता और आन
प्राप्ति के लिए स्वावलंबी होना बहुत आवश्यक है। साहस, विश्वास अं
परिश्रम से व्यक्ति आत्मनिर्भर बनकर जीवन की विपत्तियों का सामना व
सकता है। यही इस कहानी के गुड़िया के माध्यम से लेखिका ने बतायी है
व्यक्ति परिस्थिति के आगे विवश होकर कैसे झुक जाता है यह लेखिका व
सोने का बेसर कहानी से ज्ञात होता है। जीवन के कई निर्णय स्थिति की म
को देखकर बदलने पड़ते है।

मैत्रेयी पुष्पा की ललमनियाँ कहानी पुरुष समाज की बेईमा
और छल को उजागर करनेवाली कहानी है। यहाँ ललमनियाँ एक व्यां
नहीं बल्कि एक प्रतीक है। समाज से सारी स्त्रियाँ किसी-न-किसी रूप
किसी-न-किसी प्रकार से छली जा रही हैं। उनकी वेदनाएं मूक बनकर र
गई हैं। उसी अव्यक्त वेदना और छल का कहानी है यह। स्त्री का शोष
अनेक प्रकार से पुरुप करता है। शिक्षा और कामकाज के लिए बाह
निकली स्त्री को अनेक आपात स्थितियों का सामना करना पड़ता है। मैत्रे
जी के 'अब फूल नहीं खिलते' कहानी में शिक्षा के क्षेत्र में हुए नैतिक पत
का पर्दाफाश हुआ है। इस कहानी में झरना नामक एक गंवारु छात्रा व
विद्रोह को चित्रित किया है। अपने साथ अन्याय करने वाला प्रिंसिपल व
बाहर निकालने के लिए वह छात्रों को संघटित करके असंब्ली में आवा
उठाती है। "प्रिंसिपल को बाहर करो-राक्षस को निकाल दो-छात्रों व

न्याय।"[1] पूर्ण आत्मविश्वास अन्याय के प्रति विरोध और संघटन क्ष कारण झरना का चरित्र नारी समाज के लिए एक आदर्श है। भवि नारी का प्रतीक हैं वह।

नारी मन की व्यथा को अभिव्यक्त करनेवाली शशिप्रभा की सशक्त कहानी है 'गुंबद'। अपने घर परिवार के लिए नारी यातन कष्ट सह लेती है। परन्तु जब उसके अस्तित्व पर ही संकट आता है टूट जाती है। सारे रिश्ते और सार जीवन ही उसे बेमानी लगने लग ऐसे में व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार अपने अस्तित्व की रक्षा का प्रयास है। ऐसा ही प्रयास 'गुंबद' की माँ ने किया है। युवावस्था में विधवा समाज और रिश्तेदार से टकराते हुए इकलौते बेटे की परवरिश कर बेटा जब गृहस्थी में प्रवेश करता है तो अपने अस्तित्व और अस्मि रक्षा करने के लिए बेटे का घर छोड़ती है। 'टांगों से बंधी आखें बनाम कहानी में लेखिका ने एक अपंग लड़की की यातना और विवशता का प्रभावशाली ढंग से किया है। अपंग के प्रति किये गये रुखे व्यवहार म बहुत बडा परिवर्तन होता है, यही बात इस कहानी में बताई गई है की वितृष्णा से 'मन्नी' के आत्म सम्मान को चोट लगती है, इस अपमा से उसकी अस्मिता जग जाती है, उसका बनोबल बढ़ता है अं स्वावलंबी होकर जीने का निर्णय लेती है।

मृदुला गर्ग के 'अवकाश' में नारी के आधुनिक और नए चित्रण हुआ है। जीवन के एक अछूते पक्ष का और एक अलग कि

---

1. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 61

समस्या का अंकन लेखिका ने किया है। कहानी की स्त्री विवाह के व
के बाद पति से अलग होकर प्रेमी समीर के साथ रहना चाहती है। व
और प्रेमी के द्वन्द्व में फंसी है। वह कहती है - "जैसे दो भागों में वि
हारी हूँ अपने ही इस नूतन रूप से।"[1] कहानी की स्त्री का परंपरागत
पत्नी और माँ का रूप बदल गया है। इसी प्रकार मृणाल पांडे की 'य
एक बात थी' मृणाल पांडे की 'स्त्री व्यक्तित्व' की एक अलग पहचान
वाली सफल स्त्रीवादी कहानी है। आज की स्त्री पति-पत्नी संबन्धों व
साझा संस्कृति चाहती है जिसमें दोनों का समान योगदान हो। जब पु
मात्र वस्तु बनाकर रखना चाहता है तब यह उसे असह्य होता है
अस्तित्व की रक्षा केलिए वह पति को छोड़ भी सकती है। इसी प्रव
एक और कहानी है राजी सेठ की 'अंधे मोड से आगे'। 'ढलान पर' व
की स्त्रीवादी कहानी है जिसमें स्त्री मानसिकता की बारीकियों को पक
प्रयत्न किया है आज की स्त्री स्वयं के प्रति जागरूक है। वह अपने व
का सम्मान चाहती है। उसकी एक विशिष्ट पहचान है जिसे बचाए
वह चाहती है।

चित्रा मुद्गल की 'लाक्षागृह' नारी मन की संवेदना को
करनेवाली सशक्त कहानी है। पुरुष प्रधान समाज में नारी शोषण
आयाम है। आधुनिक युग में कामकाजी महिला को पैसे कमानेवाली
के रूप में देखा जा रहा है और उसका शोषण अलग तरीके से किया

---

1. मृदुला गर्ग - अवकाश (टुकडा-टुकडा आदमी) - पृ. 41

है। इस शोषण प्रक्रिया को यदि स्त्री पहचान लेती है तो अपना बच
सकती है। शोषण के एक चक्र से बचने के प्रयास में वह दूसरे चक्र में
है। कहीनी की सुन्नी ऐसी एक नारी है। लेखिका की 'शिनाख्त हो
कहानी में माँ के मनोविज्ञान को बताया गया है। बच्चा खो जाने पर
क्या बीतती है इसका सुन्दर मनोवैज्ञानिक चित्रण इस कहानी में हु
नारी की मनस्थिति और एकाकीपन का चित्रण करने वाली कहानी '
सात घटे की' ममता कालिया की है। ऊँचे पद पर कार्यरत महिला
अवस्था और समस्या का अंकन इस कहानी में किया गया है। नारी
की भावात्मक संबन्ध की महत्ता को दर्शाने वाली यह एक प्रसिद्ध कह
अपनापन और प्रेम के अभाव में व्यक्ति को अपना जीवन रुखा-सूखा
है जीवन की समस्या और कष्ट अधिक गहरे लगते हैं। कहानी व
लाखी के जीवन में भी ऐसा ही होता है। स्त्री मन की संवेदना
भावात्मक आवश्यकताओं को स्पष्ट करने वाली यह एक मनोवै
कहानी है। मालती जोशी की 'स्वयंवर' परिवार के लिए सर्वस्व क
करने वाली नारी की कहानी है। पारिवारिक खुशी और जिम्मेदारी
व्यक्ति अपने सपने और अस्तित्व को भुला देता है। जब यह त्याज व
महत्व नहीं होता तब व्यक्ति असहाय और अकेला बनता है। नये
जीने का प्रयत्न करता है, इस कहानी के 'प्रभा' ऐसा ही उदाहरण है
ने भाई बहन और परिवार के भविष्य के लिए अपने भविष्य की औ
अंदाज किया था। आज उसी के कारण उन दोनों का विवाह नहीं हो

थे। इससे प्रभा बहुत परेशान होती है - "कितनी बार मन होता है कि
खाकर सो रहे। पटरी पर लेट जाए या तालाब में छलांग लगा दे।"[1]

नारी अस्मिता - नासिरा शर्मा की रचनाओं में

इन सभी लेखिकाओं की तरह समाज में नारी की स्थिति
उसकी अस्मिता को चित्रित करने वाली प्रमुख लेखिका हैं नासिरा श
उनके उपन्यासों और कहानियों का मुख्य विषय और प्रधान पात्र तो नारी
है। नासिराजी के नारी पात्र तो कई परंपरागत मान्यताओं को चुनौती देने
हैं। इनकी रचनाओं में स्त्री से जुडी घर-परिवार की समस्या, दाम्पत्य जी
के तनाव और टूटन, कामकाजी महिला के दोहरे-तिहरे शोषण आदि स
का चित्र हम देख सकते हैं। नासिरा जी के नारी पात्र तो घर-परिवार
समाज के बीच रहकर भिन्न स्थितियों और त्रासदियों का सामना करके
सब पर विजय पाकर अस्मिता को बनाये रखने का प्रयास करने वाले
नासिरा जी के उपन्यास 'शाल्मली' और ठीकरे की मंगनी में इसी प्रकार
नारियों का चित्रण हुआ है। आज के ज्यादातर नारियाँ काम करने वाली
और अपने कैरियर में सफलता भी प्राप्त कर रही है। कैरियर में सफल
प्राप्त करने के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व के स्वतन्त्र विकास का चेष्टा
कर रही है। समाज से बाहर निकलकर कमाने का अधिकार तो उसे मि
पर पारिवारिक जिम्मेदारियों से उसे कोई छूट नहीं मिली। गृहस्थी के क
के अतिरिक्त उस पर नौकरी का बोझ भी बढ़ गया है। जीवन के विभिन्न क्

---

1. मालती जोशी - मालती जोशी की कहानियाँ - पृ. 68

में उससे भिन्न-भिन्न व्यक्तित्वों की माँग के कारण आधुनिक नारी का व्यक्ति खंडित हो जाता है। दोहरे स्तर पर जीवन जीने के लिए विवश नारी नैसर्गिक सरलता और सहजता धीरे-धीरे कम होने लगती है एक मानसि तनाव उसे जकड़ने लगता है। इन दोहरे मांपदंडों में जीती आधुनिक भारत कामकाजी नारी जीवन भर किन समस्याओं और व्यथाओं को झेलती इसका साकार चित्रण नासिराजी के उपन्यास 'शाल्मली' की नायिका शाल्म के माध्यम से हुआ है।

शाल्मली अपने माता-पिता की इकलौती संतान है। पिता प्रारंभ से ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण बडी सजगता से किया है। तर्क अ तथ्य को ढूँढने की उसकी शक्ति को देखकर हमेशा पिताजी माँ से कह 'देखना एक दिन यह बडों-बडों के कान कुतर डालेगी। खूब नाम कमाएगी मेरा सर ऊँचा करेगी।"[1] अपने पिता से ही शाल्मली सीखती है कि औ होने के कारण उसे सिर्फ पत्नी बनकर ही नहीं रहना है, बल्कि अप व्यक्तित्व की एक अलग पहचान भी बनानी है। शैक्षिक योग्यताओं के सा साथ शाल्मली एक सुधड, सुशील पत्नी भी है। वह प्रतियोगिता परीक्षा पास हो जाती है। पति नरेश उसके नौकरी करने के पक्ष में न होते हुए उसे इंटरव्यू के लिए जाने देता है, क्योंकि पत्नी के चुने जाने के कारण मि में उसका सम्मान बढ़ गया है। आज कल के शिक्षित युवकों में ज्यादातर ए विचारों वाले हैं कि लड़कियाँ अच्छी पति को प्राप्त करने के लिए पढ़ते

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 11

शाल्मली इसको लेकर अपनी पति से बहस करती हैं। नरेश क
"पढाई-लिखाई को अब गोली मारो! जीवन भर इस मगजपच्ची
मिलना है? विवाह हो गया बस।" यह सुनकर शाल्मली पूछती है "तुम
हो कि लड़कियाँ केवल विवाह के लिए पढ़ती हैं?" और नहीं तो क्या
बैठने से तो कहीं अच्छा हैं कि लडकियाँ अच्छा पति मिलने की ढंग से
करें।"[1] नरेश के सोच की जैसी लड़कियाँ तो होंगी लेकिन शाल्मल
लड़कियों का एक नमूना है जो महत्वाकांक्षिणी है। उसने अपने पित
सीखा है कि केवल पत्नी बनाकर जीना नहीं एक अलग पहचान
चाहिए। पिता को पुत्री की विवाह से अधिक उसके व्यक्तित्व के निम
चिन्ता रही थी। शाल्मली भी मात्र गृहिणी बनना न चाहती बल्की
बाहर अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्थापना भी करना चाहती थी,
शिक्षा का लाभ समाज तक पहुँचाना चाहती थी।

शाल्मली अपने जीवन में ऊँचा स्थान प्राप्त करना चा
और कोशिश भी करती है। उसमें कोई बाधा आना वह नहीं चाहर्त
पति नेरश उसके इस प्रकार प्रयत्न करने के विरोध करता है और व
कि घर का काम संभालना ही काफी है और उससे सब कुछ छोड़ने कं
है तो वह कहती है "अधूरा काम छोड़ने मुझे बुरा लगेगा। मुझे क्षमा
नरेश! अब मैं इतना आगे निकल चुकी हूँ कि मेरा वापस लौटना नाम्
है। तुम आगे बढो और चलो मेरे साथ। हमें ठहरना नहीं आगे बढ़न

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 25
2. वहीं - पृ. 47

नरेशके विरोध के आगे वह कहती है "जानती हूँ और मुझे विश्व हमारा घर अधिक ठोस और अधिक मज़बूत धरती पर खडा होगा महत्वाकांक्षिणी और समर्थ नारी है।

शाल्मली परंपरानिष्ठ, संस्कारशील और समर्पिता पत्नी पूरी तम्ययता से वह घर का काम करती है। आधुनिक विचारों से होकर भी वह अपने जटों से कटती नहीं। नरेश के गाँव में, ससुराल सभी रीति-रिवाजों को मानती है। शाल्मली अपने दोनों घरों के वात की तुलना करती हुई सोचती है - "इस घर के वातावरण से कितना उसके अपने घर का वातावरण! वहाँ सोच के महावर का चटख रंग पुस्तकों और नामों के घेर में बाँधे हुए है। वहाँ का धर्म, वहाँ की शैली है और यहाँ जीवन पद्धति जिसमें साकार रीति-रिवाज और जीव अपनी एक अभिव्यक्ति है। उसे दोनों ही प्यारे लगते हैं। दोनों के बिना अधूरा है।"[2]

शाल्मली स्वावलंबी है, स्वतन्त्र विचारोंवाली है। नरेश श की इस स्वभाव से डरता है कि शालू का वढ़ता कद उसके अपने व से ऊँचा उठता जायें तो क्या करें? इसलिए उसने शाल्मली पर लगाम शुरु की और उनसे उनकी अधिकार और स्वतन्त्रता को लेकर झगड़ा शुरु की। इसको लेकर शाल्मली सोचती है "मैं तुम्हारी छाया,

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 47
2. वहीं - पृ. 49

प्रतिध्वनि, तुम्हारा विस्तार नहीं हूँ नरेश। इस भ्रम में मैं नही जीती। इ
कमी कह लो या खूबी कि मैं अपनी अच्छाई और बुराई दोनों को जान
यह भी जानती हूँ कि मैं कोरा कागज़ नहीं थी, जिस पर तुम अपने अ
का हस्ताक्षर कर सकते।"[1] आत्मावलोकन करनेवाली शाल्मली जब
तरह जान जाती कि उसके भीतर की औरत स्वतन्त्र व्यक्तित्व की र
करना चाहती है तो वह जीवन के रास्ते पर एक नए विश्वास के सा
बढ़ने लगी। उसे विश्वास है कि नरेश भी भावुकता के संसार से
जीवन के यथार्थ की ठेस डगर पर कदम से कदम मिलाकर उसके साथ
का क्षमता स्वयं में ढूँढ लेगा। शाल्मली इसकेलिए अपने जीवन को
आयामों में जीते हैं। कभी वह एकदम सीधी सदी अनपद औरत क
भर, चूल्हा चौक संभालती, माँग में ढेर-सा सिंदूर भरकर नरेश की बा
पर आँखें बिछा देती और कभी वह अपने कार्य में दक्ष कामकाजी, आत्मनि
नारी का जीवन जीति। परिवार की शांति के लिए स्वयं अपना अ
और घर का साम्राज्य नरेश के हवाले कर देती है। इन सब के होते
नरेश का व्यवहार न बदला और बुरा सा होने लगा। ऊपर से भले
नरेश के प्रति समर्पित हो जाती है, परन्तु भीतर ही भीतर अपनी उ
को वह पहचानती है। वह भी दृढ होकर नरेश को दिखा देती है
उसकी छाया, प्रतिध्वनि या विस्तार नहीं है। उसकी अपनी एक
पहचान है। "मैं कोरा कागज़ नहीं था, जिस पर तुम अपने अधिक
हस्ताक्षर कर सकते। मैं तो फुलकारी का वह रेखाचित्र थी, जिसे बच

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 75

पिताजी ने बड़े जतन से खींचा था। प्रत्येक रेखा में उनकी आत्मा का
भरा है। पिताजी पूरे बीस वर्ष एक फूल को आकार देते रहे।"[1]

बदलाव के इस जमाने में स्त्री-पुरुष दोनों ही बदल रहे
औरत उस बदलाव को गंभीरता से ले रही है। वह सदियों की बेडि
तोड़ना चाहती है। पुरुष इससे आतंकित और कुंठित है। नरेश भ
कुंठित पति है। शाल्मली उसके व्यवहार से स्वयं को अपमानित
करती है। उसे लगता है, "मैं दूसरी औरत बनने की प्रताड़ना से घ
पहली औरत बनी थी। मगर धर्मपत्नी बनकर इतना तिरस्कार
अपमान, इतनी घृणा, इतना अंकुश...। यह अनुभव, यह कड़वापन मैं
झेलना नहीं चाह था। इसी प्रताड़न के भय से मैं सब कुछ पीछे छोड़
कि समाज में सर उठाकर जीऊंगी। सर झुकाना मैं ने कभी नहीं स्
था। समाज के नियम को अपनाकर और उसकी मर्यादा का पालन कर
क्या मिला है?"[2] शाल्मली आर्थिक रूप से स्वतन्त्र है, पद और प्रति
दृष्टि से नरेश से ऊँची है। इन सब के होते हुए भी वह नरेश के अम
व्यवहार को सहकर उसकी सेवा करती हैं। लेकिन नरेश उसकी
नहीं करके उसे अपमानित भी करता रहता है। वह शराव पीकर
औरतों के साथ संबन्ध बनाकर जीता है और शाल्मली के चरित्र पर
लगाने को तुला है। पर इन सबके बावजूद शाल्मली नरेश को तलाक
पक्ष में नहीं हैं। वह अपनी सहेली सरोज से कहती है : "औरतों के प

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 75
2. वहीं - पृ. 164

ही अभिव्यक्तियाँ हैं या सर झुका देना या समस्या को अधूरा छोड़, स
लेना। मेरा विश्वास न घर छोड़ने पर है, न तोड़ने पर, न आत्महत्या
न अपने को किसी एक के लिए स्वाहा करने में हैं। मैं तो घर के साथ
के अधिकार की कल्पना भी करती हूँ और विश्वास भी। अधिका
यानी घर निकाला नहीं और घर बना रहने का अर्थ 'सम्मान' को
फेंकना नहीं है। यह जो हमारे मन-मस्तिष्क में अति का भूत सवार
है वही जीवन के लिए विष समान है।"[1]

शाल्मली बताती है मेरी दृष्टि में स्वावलम्बी होने का य
बिल्कुल नहीं है कि वह परिवार को तोड़ डाले और उन सारी भावन
मुकर जाए, जो उसकी पहचान ही नहीं उसकी ज़रूरत भी है। यह
कि रोटी पहली और सेक्स दूसरी ज़रूरत है इन्सान की जिससे म
मुश्किल है यह भी है कि सहज और सुन्दर प्रेम अभिव्यक्ति मर्द के र
औरत कर सकती है, मगर प्रश्न तो सामने उससे भी जटिल है कि अ
औरत भूख लगने पर किसी तरह की रोटी आँख बन्द करके खा
केवल वासना पूर्ति के लिए वह किसी के सामने घुटने टेक दे, असम
जहाँ उसकी स्थिति वदली हैं, वहीं उसकी रुचि और अरुचि भी ब
अब वह अपनी पसन्द की नौकरी और जीवन-साथी चाहती है। अप
और प्रेमी का स्वयं चयन करना चाहती है, क्योंकि आज उसकी मा
आवश्यकता भी रोटी और सेक्स की तरह महत्वपूर्ण हो गई है।"[2] इ

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 164
2. वहीं - पृ. 166

जीवन के गुण-दोषों पर विचार करती हुई शाल्मली स्वयं को संभाल कर देती है। और अन्त में वह अपनी समस्या के बारे में इस नर्त पहुँचाती है कि "...जीवन के इन दस-ग्यारह वर्षों के संताप को वह जी महत्वपूर्ण मुद्दा न बना कर उसकी तरफ से निर्लिप्त हो जाए इसी में भलाई है, वरना जिस व्यक्तित्व को उसने इतना संभाल कर रखा अनजाने ही में तोड़ बैठेगी और उसकी अपनी जीवन यात्रा की धा टूट कर शाखाओं में बटने लगेगी और उसका ठोस व्यक्तित्व एक चंच की तरह अपना सीधा लक्ष्य पूर्ण प्रवाह खो बैठेगा।"[1] और वह निर्णय है कि किसी भी तरह अपनी विस्तृत दृष्टि को संकुचित नहीं होने देगी की निश्छलता को कुंठा में परिवर्तित होने देगी।"[2] इस तरह शाल्मली के रीति रिवाजों को बिना ठुकराकर अपने जीवन को दूसरों के सामने बनने से बचाकर एक अच्छे कल की प्रतीक्षा में रहती है। वह व्यक्तित्व को बचाकर जीति है।

शाल्मली की तरह नारी की अस्तित्व पर प्रकाश डालन नासिरा जी का दूसरा उपन्यास है 'ठीकरे की मंगनी'। रूढ़िग्रस्त भ मुस्लिम परिवेश में स्त्री की आत्मान्वेषित स्वचेतना को स्त्री होने की मान्यताओं और संस्कारों से पग-पग पर मुठ भेड करती, कड़वे जीवित के प्रहारात्मक अवरोधों से अविचलित, उचित-अनुचित का स्वयं के से अन्तर करती उन्हें अपनाती - छोड़ती, गहरी प्रश्नाकुलता के साथ

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 169
2. वहीं

की मंगनी' की महरुख में अनुभव किया जा सकता है। इस उपन्
मुस्लिम समाज में स्त्री की स्थिति ओर रूढियों भरे माहौल की घुटन से
निकलने के संघर्ष को उदाहृत करता है। महरुख एक ऐसे पारंपरिक
सैयद परिवार में जन्म लेती है, जिस खानदान में पहले लड़कियाँ जिं
रहती थीं, इसलिए उसे जिन्दा रखने के लिए एवं तमाम बलाएँ टा
लिए उसके पैदा होते ही उसकी मंगनी की जाती है एक टोटके के
ठीकरे की मंगनी। महरुख की मंगनी उसकी खालजाद भाई रफत फि
साथ की जाती है। वह स्वयं को हर प्रकार से रफत के इच्छानुसार
का प्रयत्न करती है उसी की खुशी के लिए वह परिवार से बिछुड़कर
पढ़ने चली जाती है। लेकिन महत्वाकांक्षी रफत का व्यक्तित्व उस
उसके सामने खोल आता है। जब वह पढ़ाई के सिलसिले अमेरिक
जाता है और वहाँ किसी लड़की के साथ बाँद जाता है। महरुख
जाकर इतनी आधुनिका न हुई थी कि ये सब सह कर इसी तरह
खूद जीयें। अनजान मर्दों से चिपक खडे रहने को या चन्द क्षणों के
जुनून में अजनबी मर्द के साथ बिस्तर बाँटने को वह आधुनिकता
वैठा। इस हादसे से उसकी जिन्दगी एक नये मोड पर आ गयी। वह
की इच्छा के विरुद्ध दिल्ली की पढाई छोड़कर एक गाँव में टीचर की
करने का निश्चय करती है।

विदेश से वापस आकर जब रफत महरुख से शादी क
करते हैं तो वह सख्त इनकार करते है और उनसे कहते हैं - "आपकी
की बात सुनकर मैं टूटी थी, बिखरी थी और उस गम की दीवानगी

मरते-मरते बची थी, फिर मेरी जिन्दगी का सबसे खूबसूरत लम्हा बदसूरत और डरावना होकर मेरे सामने खड़ा हो गया था। जिसके मैं ने सोचा नहीं था और मेरे अन्दर की औरत उसी लम्हे मर गई थी गई।"[1] इस कारण वह अपने आपको बनाये रखने केलिए और प्रयत हो जाती है और रफत का दिया हुआ खाल उतारकर दिल्ली की ि से गाँव की ओर प्रस्थान करती है। थोडी-बहुत अस्थिरता के बाद स गाँव की जिन्दगी में, वहाँ के लोगों में अपने को इस कदर स्थापित क है कि रफत मियाँ की वापसी, उनका पछतावा, उनकी क्षमायाचना से विचलित नहीं होती है। एक उम्र होने के बाद भी वह अपनी सामर्थ्य में आश्वस्त होकर कहती है - 'एक घर औरत का अपना भी तो हो है, जो बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान व ...मेरा अपना घर वही पुराना है, जहाँ मैं पिछले तीस साल रही विपरीत सामाजिक व घरेलू परिस्थितियों में महरुख अपने को सृजन धरातल पर तराशती है। लेकिन 'स्व' को आर्जित करने में एक स संघर्ष के जिस कठिन रास्ते पर चलना पड़ता है, उससे महरुख भी नहीं है। संघर्ष की आँच में महरुख तपकर प्रखर होती है। महरुख कहती है - मैं ने भी अपनी पसंद की जिन्दगी जीने की कीमत अदा मैं अपनी जिन्दगी से मुतमईन हूँ। मैंने कुछ खोकर पाया है।..... हा घिर कर, तजुर्बों की सुरंगों से निकल कर कुछ पाया है जो बहुत व

---

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मंगनी - पृ. 127
2. वहीं - पृ 197

बहुत पुरमायनी है जो आप नहीं मगर आनेवाली नस्लों की औरतें स
कि उसका सफ़र कब से शुरू हुआ था - और वह औरत भाव
धरातल पर हमसे ज्यादा मज़बूत होगी, हर चोट को, हर चिटकन को
से समझ कर उसे रचनात्मक मोड़ देता हमसे कहीं ज्यादा ज़रूरी समझ
महरुख गाँव में वहाँ के गरीब बच्चों को ट्यूशन देती है उन्हें स्कूल ज
प्रेरणा देती है, वह गाँव के बच्चों को नये सिरे से जीने का सीख देती है
के गरीब औरतों और लोगों के लिए हर प्रकार की सहायता वह दे
अब महरुख के पास समझ है, बुरा-भला खुद वह समझ सकती है। व
ठोस ज़गीन पर ठोस जिन्दगी जीना चाहती है जिस पर सिर्फ उसका ही

इस उपन्यास में लेखिका ने आनेवाली नस्ल की लड़की क
भी महरुख की भतीजी की ज़रिए दिखायी है, जो महरुख जैसी
चाहती है। भाई भी महरुख का सम्मान करा है और खुद कहता है -
उनकी बनावट का सांचा मेरे पास होता तो मैं अपनी क्या सारे खानदा
शहर, सारे मुल्क की लड़कियों को उस साँचे में ढाल देता...."[3] महर
जीवन उनका सोच-विचार सब समकाीन नारी की उस सोच को दर्शात
समय की धारा में संवन्धों को बिना कोई नाम दिए भविष्य के लि
संभावनाओं के द्वार खोलकर, नारी को एक स्वतंत्र व उन्मुक्त अस्तित्व
करती है।

---

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मंगनी - पृ 194
2. वहीं - पृ. 196

नासिराजी की सात नदियाँ एक समन्तर ईरान की समर आधारित है। इराक द्वारा ईरान पर जो हमला और जनता पर जो अ होता है ये सब ज्यादातर ईरान की नारियों को ही सहना पड़ता है उपन्यास में नासिराजी सत्ता की कहानी लिखना चाहती थी वह भी अं ज़रिए जिन्दगी की कहानी लिखना चाहती थी, ताकि इन्सानों की पी खुला ब्यान लिख सकें। इस उपन्यास के मुख्य पात्रों के रूप में सात यु है जिनमें से कुछ ईरान क्रान्ति में प्रत्यक्ष रूप से भागीदार है तो कुछ रूप से। इनमें तय्यब ऐसी लड़की है जो अपनी देश के लिए जीवन ब दिया है।

'अक्षयवट' का मुख्य पात्र ज़हीर है। और यह उपन्यास सम सामाजिक स्थिति पर आधारित भी है। लेकिन इसमें भी नारी प प्रधानता है। दो विधवा स्त्रियाँ-दादी और माँ-इनके बीच ही ज़हीर बड़ है। इसलिए समय से पहले ही वह कुछ गंभीर और समझदार हो ग ज़हीर का पिता शहर के दंगों में मारा गया था और विधवा दादी फिरे बेगम ने उसे पाल-पोसकर संस्कारयुक्त बना दिया। बेगम भी कम उम्र हो गई थी। फिर भी अन्य नारियों के तरह घर में पडे रहकर जीवन करना व न चाहती थी। उन्होंने बी.ए. करके नौकरी की और परिव आगे बढ़ाया। जहीर की माँ सिपतुन एक सीधी सादि औरत है। पि लावारिस और यतीम बच्चों के लिए खोली गई बेटे की संस्था 'मुस्क रमकर ही वह जैसे अपने जीवन की मुस्कान लौटाने की कोशिश कर

ऐसे देखे तो नासिराजी के उपन्यासों के लगभग सभी ना
अपने अस्तित्व को बनाये रखने की कोशिश करने वाले जान पड़ते

नासिरा शर्मा के उपन्यासों के तरह लगभग सभी कहानिय
मुख्य पात्र नारी ही है। इनमें से कुछ नारियों तो साधारण गंवारु नार्
जो मर्दों के दबाव में उनके इच्छानुसार जीते है तो कुछ ऐसी नारियाँ
गाँवरू है, शहरी परिवेश के भी है जो अपने अस्मिता को बनाये रख
ज्यादातर नारियाँ मुस्लिम परिवेश के हैं।

नासिराजी की 'खुदा की वापसी' की सभी कहानियाँ म्
समाज के आन्तरिक अन्तर्विरोधों विसंगतियों - विडम्बनाओं को लेक
गयी है। मुस्लिम समाज की महिलाओं को जिन समस्याओं को झेलना
है उनमें से कुछ समस्याओं का चित्रण इसमें किया है। इन कहानि
ज़रिया नासिराजी स्त्रियों की एक अलग दुनिया बसाना नहीं चाहती
जो अधिकार उसे प्राप्त है उसका पूरी तरह जानने और इस्तेमाल क
सीख इन कहानियों के ज़रिए देती है। खुदा की वापसी कहानी का फ
पढी लिखी समझदार लड़की है। अपनी पति ने पहली रात उनसे मेह
कराया था। धर्मग्रन्थों और कानून में ऐसा कुछ नियम न लिखा था। फ
अन्य लड़कियों की तरह नहीं थी वह व्यक्तित्व पर टिके रहकर प
कहती है - "अब होश में आयी हूँ, नींद से जागी हूँ। मुझे अब समझौ
यह जिन्दगी पसन्द नहीं जहाँ खुदा और रसूल का दिया हक भी
छीनकर जीने पर मज़बूर किया जाए।"[1] फरसाना के अनुसार उन दो

---

1. नासिरा शर्मा - खुदा की वापसी - पृ. 31

जिन्दगी की बुनियाद एक झूठ पर, एक फरेब पर शुरु हुई थी। इससे दु
होकर वह घर चली जाती है और जुबैर की सुधरने की प्रतीक्षा में रहती

'दूसरा कबूतर' कहानी की सादिया को एक और विकट स्थि
का सामना करना पडता है। मिडिल ईस्ट में अमेरिकन कंपनी में काम क
वाले एक लड़के के साथ उसकी शादी होती है और वह उसके साथ जाता
वहाँ जाकर उसे पता चलता है कि पति पहले से शादी शुदा है और त
बच्चों का बाप भी है। सादिया पति की पहली पत्नी से मिलकर अपने प
से बदला लेती है। दोनों पत्तियाँ पति को एक साथ तलाक दे देती
'दिलआरा' कहानी में लेखिका ने अपने आपको बनाये रखने की कोशिश
बेवा बनने के बाद भी लड़कियों के लिए स्कूल खोलनेवाली साजदा बेगम
चित्रित किया है। इसमें उसे अपने ही धर्म से अपने लोगों के विरोध प
बनना पडता है। औरत का स्वतन्त्र बनकर जीना लोगों को पसन्द नहीं
इससे साजदा मौलवी से कहती है "बात औरत का बाहर निकालने या म
के मुकाबिल खड़ा करने भर की नहीं है बल्कि बात उसे एक इन्स
समझकर उसकी पुरी शख्सियत की है। उसको वह सारे हक मिलने चाहि
जिससे वह अपनी दिमागी और जज्बाती ज़रूरतों को पूरी कर सके उ
एक सेहतमन्द नजरिये के साथ वह इस दुनिया के हर फैसले में श्यामिल
सके।"[1] कामकाजी नारियों की समस्या को चित्रित करनेवाली कहानी
'तक्षशिला' इसमें निगार नामक एक रिपोर्टर की कहानी कही है। जो क
करके अपनी माँ के साथ जीती है। जब उनकी शादी हुई तो उसे प
समझदार और प्यारा पति मिला जो उसे काम करने भेजता है। कर्मक्षेत्र

समस्याओं को, औरत होने से मर्द लोगों के बुरे व्यवहारों को लेकर उ
दुखित होती है तो उसे परवेज़ उसका पति दीवार में लगे तक्षशिला व
दिखाकर समझाता है 'औरत खुले आसमान के नीचे अपनी पहचान
में व्यस्त है। यह संघर्ष बहुत सुन्दर है। जैसे इस तस्वीर का वातावर
और आसमान। मगर उस संघर्षरत औरत के नीचे अभी सख्त ज़मी
है जिस पर वह विश्वास के साथ खडी हो सके, जैसे इस इमारत के
के पास छत नहीं है। आज की औरत के पास न छत है, न ज़मीन
दीवारें... सिर्फ दीवारें है.... उन पर छत कौन डालेगा.... क्या कोई म
वही शोषित बेचारी औरत होगी...। औरत को यह काम स्वयं करना
मर्द तो अपना हथियाया अधिकार इतनी जल्दी वापस नहीं करेगा।
इन दरिन्दों, इन हब्शी भेडियों से यू डर कर कहाँ तक भोगांगी?"[2] न
अपनी अस्मिता को अपने पहचान को बनाय रखने के लिए अपने
सख्त बनाना है, डर कर भागना नहीं चाहिए।

'अग्निपरीक्षा' नामक कहानी में तो कम्मो नामक एक
युवती के मनोमल का वर्णन है। कम्मो के पास कुछ ज़मीन है जो
पटरी के पास है। पटरी के पासवाली ज़मीन की कीमत बढ़नेवाली
उसे हथियाने के लिए सुन्दरलाल भट्ठेवाला प्रयास कर रहे है। वह म
ज़रिए कम्मो को अपमानित करके उस पर लांछन लगाने के कोशिश व
है। लेकिन कम्मो इन सब अपराधों का सामना बहुत धैर्य के साथ कर

---

1. नासिरा शर्मा - खुदा की वापसी - पृ. 93
2. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 126

जब पंचायत बुलाया गया तो सरपंच ने उससे मुँह काला करानेवाले व
पूछा तो कम्मो बोली "जो मैंने उस पापी का नाम बता दिया, जिसने मे
बलात्कार किया तो सरपंच उसे क्या सज़ा देंगे?"[1] यह सुनकर सब ग
भी वही प्रश्न दोहराया। गाँववालों के अनुरोध पर उसे भी दागने का
हुआ। कम्मो ने उस पर दोषारोपण करने वाला मंगलू का नाम बत
मंगलू को भी पकड़लाया। मंगलू ने सज़ा से भयभीत होकर सत्य उगल
सुन्दरलाल के कहने पर उसने झूठा आरोप लगाया था। इस प्रकार
साथ खड़े रहकर कम्मो अपने ऊपर लगाए कलंक को मिटा दिया ।

'चार बहनें शीशमहल की' तो चार बहनों की कहानी
लड़कियाँ होकर भी अपनी माँ-बाप, दादा-दादी और अन्य लोगों के अँ
तारा बन गया था। वे चुड़ीवाला करीम की पोत्तियाँ थी। एक दिन
दुकान 'सुहाग स्टोर' पर बाज़ार के दंगे में आग लग गया और जलक
हो गया। निराशा से बैठे शरीफ के पास बेटियाँ नए दुकान खोलने क
रखता है और उसे सहायता देने कि वादा देकर कहता 'अब्बू, क्या हम
को सजाने में आपकी मदद कर सकती है? क्या हम चूडियों की नई डि
दे सकती है?" बच्चियों ने उसे चूडियों का डिज़ाइन दिखाकर नाम ब
दिया - 'मैं ने चूड़ियों का नाम रखा है - झंकार, धडबन, ईद का चाँद, प
मौसम, गंगा की लहरें, तारों का शहर, खनकती शहनाई, दीवाली की रा

---

1. नासिरा शर्मा - इन्सानी नस्ल - पृ. 70
2. नासिरा शर्मा - दस प्रतिनिधि कहानियाँ - पृ. 121

जब नया दूकान खोला गया तो ये चारों बाप की सहायता करने दूका लगा तो दादी उनसे पूछती है "तुम लोग अब दूकान पर बैठोगी?"

"फिर कौन बैटेगा? दादाजान की तबीयत खराब है। अकेले पड़ गए हैं।" छोटी ने कार्ड छाँटते हुए कहा।

"मगर ऐसे मजबूर तो नहीं कि दूकान चला न पाएँ।" दोहत्थड़ जाँघ पर मारी।

"दादी, जायदाद में लड़कियों का हिस्सा होता है न?" भोलेपन से पूछा।

"क्यों नहीं, खुदा रसूल की तरफ से होता है... मुझे खुद था।" दादी ने जवाब दिया।

"फिर उस हिस्से का क्या करना चाहिए?" मँझली ने मटकाई।

"उसकी देखभाल करनी चाहिए।" करीमन ने लडकि उनके बचकाना सवाल पर घूरा।

"दादी आपने क्या किया था?" छोटी पैर हिलाते-हिलाते

"मुझे तो भई, नकद मिला था। इसी दूकान में डाल दिय करीमन के चेहरे पर चमक आ गई।

"तो फिर हम भी तो वही करने की कोशिश कर रही हैं।" ब ने तपाक से कहा।[2] इस प्रकार अपने डूबते नाव को किनारे लाने में इन बह ने कठिन प्रयत्न किया और वे सफल भी हुईं।

नासिरा जी ने 'औरत के लिए औरत' में स्त्री को अपने अस्ति को बनाये रखने के लिए अपने अधिकारों का उपयोग करने की आवश्यक के बारे में बताया है। उसे कानून की अच्छी जानकारी होना आवश्यक ताकि वह उचित अवसर पर उसका प्रयोग कर सकें। नासिरा जी कहती "यदि आप अपने अधिकार एक नागरिक के रूप में पहचानने लगेंगी, फिर लोगों का आपके प्रति व्यवहार बदलने लगेगा और वह आपका शोष करने से पहले दस बार सोचेगा।"[2] आगे नासिराजी शरीयत लॉ का जि करती है जो अक्सर मुसलमान औरत से उसका घर परिवार छीन लेता मर्द उसी कानून का जिक्र करते हुए अनेक शादियाँ कर लेता है और औ आँसू बहाकर, दुआ-तावीज़ में पैसा फूँककर और मेहनत मजदूरी कर बच्चों के पेट पालने के अलावा कुछ नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें यह स पता ही नहीं है कि बिना पहली बीवी की इजाजत के और वास्तविक कार के बिना दूसरा विवाह नहीं कर सकता है और यदि करता है, तो व शरीयत लॉ के विरुद्ध होगा और और शरीयत कोर्ट से न्याय की अपील व सकती है।

---

1. नासिरा शर्मा - दस प्रतिनिधि कहानियाँ - पृ. 123
2. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत - पृ. 86

'औरत के लिए औरत' में नासिरा शर्मा ने स्त्री सम्मान व
भी बडी शिद्दत से उठाया है। वह मानती है जीवन सिर्फ प्रेम
चलता। प्रेम के साथ स्त्री पुरुष संबन्धों में सम्मान होना आवश्यक है।
के अभाव में प्रेम अपनी सार्थकता खो देता है। वैसे भी सम्मान पहत
जाता है फिर लिया जाता है। नासिराजी मानती है कि सम्मान का य
दोनों तरफ होना ज़रूरी है क्योंकि "हारकर जीतने में ही विश्वास कर
औरतों भी तन्हा आत्महत्या की शिकार होती रहती है।"[1] यही वजह
नासिराजी इस सम्मान के प्रश्न को अस्तित्व के प्रश्न के साथ मि
कहती है - "औरतें स्वयं अपने लिए कानून बनाएं और उसका प्रयो
क्योंकि आज वे जीवन के हर कार्य-क्षेत्र में मौजूद हैं। उनका कर्तव्य
मर्दों को आगे बढ़ाना नहीं, बल्कि अपने वर्ग को भी दिशाबोध देना है
कानूनी समझ रिश्ते की नींव हिलाती है तो हिलने दें, बनावटी जिन्
कहीं बेहतर है कि हिलते रिश्ते की नींव मजबूत बनाई जाए।"[2]

नासिरा जी मर्द-औरत को खांचों में बांटकर किसी ए
विशेष का समर्थन करने के विरुद्ध है क्योंकि वह यह मानकर चलती
मर्द व औरत एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जिनके सहयोग से ही
समाज व परिवार की संरचना संभव है। स्त्री स्वतंत्रता के बारे में नासि
कहती है "औरत इनसान की तरह इनसानियत और अस्मिता के स
सके तो वही उसकी स्वतन्त्रता होगी। मसलन उसे औरत होने की प्र

---

1. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत - पृ. 86
2. वहीं

न सहनी पड़े, उसकी इच्छाओं और गुणों को देखते हुए घर के परि
अनुसार उसे वह सब कुछ मिले जो एक नागरिक का अधिकार होत
नासिरा जी कहती है "आज का दौर लड़कियों को सिर्फ ससुराल ज
लिए तैयार करने का नहीं रह गया है बल्कि संग्राम में बिना घायल हुए
अस्तित्व को जामाए रखने का है, जिस रणक्षेत्र का विस्तार उनकी
कार्यस्थान, विवाहित जीवन, अकेले रहना, विधवा होने पर सब
संभालना और अपने अंदर की दुनिया को सुन्दर और खुशहाल बना
फैला हुआ है। ....उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास भरना है ताकि व
दिशा में, सही समय में, सही जगह पर अपने अहसास को जबान तक
में न झिझकें, न डरें, बल्कि उसको अपने मौलिक अधिकार को पाने के
प्रयोग करें।"[2]

निष्कर्ष

समकालीन समय में नारी की स्थिति में काफी बदलाव अ
ऐसा दीखता है। ऊपरी तौर पर नारी की स्थिति पहले से बेहतर है
वह घर परिवार के सीमित दायरे से निकलकर बाह्य समाज में भी
स्थान बना रही है। अपने पर होनेवाले अत्याचारों के प्रतिकार के
आवाज़ उठा रही है। वह तो आर्थिक रूप से भी स्वतन्त्र है। अपनी
में रोड़ा बननेवाली पारम्परिक मान्यताओं को तोड़ती हुई वह आगे ब

---

1. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत - पृ. 201
2. वहीं - पृ. 42

है। लेकिन उनके प्रति समाज का मध्ययुगीन भोगवादी दृष्टिकोण प्रच्छ
में क्यों न हो आज भी बरकरार है। आज का पुरुष भले ही नारी-मु
हिमायत करता हो, अपनी पत्नी पर वही रौब जमाये रहता है, जो नार
विरोधी है। नारी अपने घर के बाहर पूर्णतः सुरक्षित नहीं है उ
आक्रमण तो होती ही रहती है। पहले आक्रमण बलपूर्वक एवं अस
अब सभ्यता के नये-नये नकाबों की ओट से हो रहा है।

नासिराजी ने अपनी रचनाओं में समकालीन नारी जीव
चित्रित करते हुए उसकी अस्मिता को अभिव्यक्त करने का सफल
किया है। उनके नारी पात्र तो ज्यादातर शिक्षित, कामकाजी नारी
अपने व्यक्तित्व को बनाये रखने का प्रयत्न करनेवाले हैं। उनके ना
परम्परानुमोदित भारतीय नारी के समान अन्याय को चुपचाप सहनेवा
हैं उसका विरोध करनेवाले हैं। जहाँ कहीं किसी संबर्क से अपनी अ
को ठेस लगने लगती हैं, तो उसे तोड़ने के लिए वे कतई चूकते नहीं।
नारी पात्र तो समाज को चुनौती देकर और तरह-तरह के नारे ल
घूमनेवाली स्वच्छन्दचारी नारी नहीं हैं।

❖❖❖

अध्याय - 5

नासिरा शर्मा की रचनाओं का शिल्पपक्ष

प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास साहित्य प्रेमचन्द से लेकर मधु काँकरि
अनेक मंजे हुए कलाकार हैं, जिनके निराले शैली-शिल्प ने कथ्य को
आयाम दिये हैं। इनकी औपन्यासिक कृतियाँ अपनी-अपनी वस्तुगत विश
के साथ-साथ भाषिक एवं शैल्पिक विशिष्टता के लिए विख्यात हैं
कलाकार की अपनी अलग शैली, छवि एवं शिल्पगत पहचान हो
जीवनानुभव का विस्तार गांभीर्य लेखकीय अनूठी शैली-शिल्प वे
पाठकीय संवेदना को जागृत करने में सक्षम होता है। नासिरा शर्मा ए
विलक्षण लेखिका है जिन्होंने हिन्दी उपन्यास-यात्रा में नया पड़ाव सम
एवं परवर्ती लेखकों के लिए निर्मित किया है।

साहित्य की शिल्पविधि शिल्प या शिल्पविधान का संबंध
बाहरी रूपयोजना और भीतरी लक्ष्य साधना से है। इसलिए जब साहि
शिल्पविधि पर विचार करने लगते हैं तो स्वरूप और लक्ष्य, आकृति
प्रकृति की भेद बनाये रखना अनुचित है। साहित्य की रचनाविधि
भीतरी और बाहरी, दोनों रूपों से संबन्ध रखती है।

शिल्पविधि के लिए अंग्रेजी में अनेक शब्दों का प्रयोग ह
लेकिन व्यापक स्वीकृति तो 'Technique' को मिली है। साहित्यकार

के द्वारा ही युग-बोध का परिचय देता है, पात्रों और दृश्यों को अविस बनाता है, उन्हें आयाम देता है। कथा साहित्य को कला का रूप ग्रहण केलिए शिल्पगत गुणों को अपनाना पडेगा। इसके माध्यम से ही बिखे समन्वित होकर सुन्दर कलाकृति का रूप धारण करते हैं। शिल्प के से साहित्यकार अपने विषय का अनुसंधान और विकास करके उसे म देता है, अर्थबोध कराता है और अन्त में उसका मूल्यांकन करता है। के माध्यम से ही वह अनुभवों को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने म होता है। विषय परिवर्तन के साथ शिल्प में परिवर्तन तो हुआ है। शि अन्तर्गत उन सब युक्तियों की गठन की जा सकती है, जिनका उपयो कहानीकार अपनी बात कहने केलिए करता है। वास्तव में किसी क में कथ्य और शिल्प अलग-अलग चीजें नहीं है एक ही चीज़ है। क कि युगीन चेतना में परिवर्तन आने के कारण जब किसी साहित्य में व परिवर्तन के लक्षण प्रकट होते हैं तब शिल्पगत परिवर्तन के भी लक्षण आते हैं। कथ्य अथवा अनुभव तथा कला के बीच का अन्तर ही शि श्रेष्ठ साहित्य बनने के लिए कथ्य और शिल्प का एक होना अनिव शिल्प की विशेषता को स्पष्ट रीति से व्यक्त करते हुए डॉ. त्रिभुवन लिखा है : "जो कुछ भूल जाता है, निश्चित रूप से वह अनावश्यक उस अनावश्यक को भी आवश्यक बनाकर उसे कला के अंग के प्रस्तुत कर देना शिल्प का ही कार्य है।"[1] आवश्यकता अनुसार उपन्य

---

1. डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग - पृ. 242

नई-नई शिल्पविधियों का विनियोग करता है। शिल्पविधि का नि मुख्यतः लेखक के दृष्टिकोण पर ही अवलम्बित होता है।

आज साहित्य की सर्वाधिक प्रचलित विधा है उपन्यास। व ऐसी विधा है जिसमें संघर्षशील मानव के चरित्र का प्रभावोत्पादक होता है। उपन्यास जीवन के साधारणतम तथ्यों को भी पूरी स्व स्पष्टता और पूर्णता के साथ प्रस्तुत करता है। नासिरा जी ने अपने उ में समकालीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास कि अध्ययन और विवेचन की सुविधा के लिए नासिरा शर्मा के कथाशि निम्नलिखित तत्वों के आधार पर देखेंगे :

कथानक विधान
पात्र परिकल्पना
परिवेश विधान
भाषा शैली
शैलीपरक विशिष्टताएँ

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में कथानक विधान

कथानक उपन्यास का प्राणभूत तत्व है। कथानक से ही की जीवन दृष्टि और यथार्थ को ग्रहण करने की क्षमता मालूम हो उपन्यासकार यथार्थ के साथ कल्पना को मिलाकर आकर्षक रूप में रचना को प्रस्तुत करता है। विषय की दृष्टि से उपन्यास साम राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक है। डॉ. सुरेश सि अनुसार उपन्यास कथानक के निर्धारन और घटनाओं की दृष्टि से मु दो प्रकार है -

1. सुगठित कथानकवाले उपन्यास (Novel of organic

2. विश्रंखलित कथानकवाले उपन्यास (Novel of loose

नासिरा शर्मा के सभी उपन्यास सामाजिक है। इसमें स यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास है। भारत की तरह अन्य दे सामाजिक समस्याओं की ओर भी नासिराजी ने ध्यान दिया है। उनक नदियाँ एक समन्दर' आधुनिक ईरान की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उ है। इसमें ईरान-ईराक समस्या के चित्रण के साथ आम इनसानों की ि और क्रान्ति को लेकर उनके विचार को व्यक्त किया गया है। इसके वहाँ की नारियों की स्थिति भी उसमें चित्रित है। 'शाल्मली' में चर्चित नारी है। यह पढी-लिखी कामकाजी नारी की समस्या को केन्द्र में लिखा गया उपन्यास है। नारी स्वातन्त्र्य को चित्रित करने के साथ उत्पन्न पुरुष की हीनभावना का चित्र भी मिलता है। पति-पत्नी संबन्ध बिखराव है उसे शाल्मली नरेश और शाल्मली की माँ-बाप के ज़रिए ि गया है। गाँव की अनपढ़ औरतों की मानसिक स्थिति को भी इस उ में चित्रित किया गया है। शाल्मली की सुख सुविधाओं को लेकर भाभ जलन और उनके जीवन में थोडा सा दुःख देन का उनका प्रयास भी तरह इसमें चित्रित है। इसमें नारी अपनी अस्मिता को बनाये रखने वे अपने जीवन को सुखपूर्ण बनाने केलिए क्या-क्या करती है उस अभिव्यक्त किया गया है।

'शाल्मली' की तरह 'ठीकरे की मंगनी' में भी नारी समस्य प्रधानता दी गयी है। महरुख के जीवन संदर्भों से रूढ़िग्रस्त मुस्लिम प

की जकड़ से मुक्त होकर अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए प्र आज की नारी की छटपटाहट भी इसमें प्रस्तुत है। मुस्लिम समाज में जो स्थिति है उसे भी इसमें दर्शाया गया है। महरुख की शादी बचपन से हुई थी। बडे होने पर वह रफत के इच्छानुसार पढ़ने केलिए दिल्ल जाता है। इस बीच अपने मंगेतर रफत के शोधकार्य हेतु बाहर जा विदेशी महिला से विवाह कर लेने पर उसमें परिवर्तन आता है। शोधकार्य को अधूरा छोड़कर एक गाँव में टीचर की नौकरी करता है अपना जीवन उस गाँव में गाँववालों के लिए जीने का निश्चय करती प्रकार इन दोनों उपन्यासों में स्त्री-पुरुष के या कहें तो पति-पत्नी के की सच्चाई को प्रस्तुत किया गया है। इनमें पुरुष वर्चस्व समाज औ की आपसी टकराहट से उत्पन्न द्वन्द्व और विरोध के स्वर को रेखांवि

'जिन्दा मुहावरे' देशविभाजन की त्रासदी को लेकर लिख उपन्यास है। इसमें देशविभाज के फलस्वरूप हुए दंगा फसाद से ज्याद की मानसिक स्थिति को दिखाया गया है। रहीमुद्दीन का छोटा बेटा विभाजन के समय पाकिस्तान चले जाने का निश्चय करता है और अ बाप, घर, सगे संबन्धियों को छोडकर चला जाता है। पाकिस्तान जाव कठिनाइयों को झेलकर अंत में जीवन में विजय प्राप्त करता है। धन- घर, बीवी-बच्चे सब कुछ पाने पर भी उसके मन में एक दुःख पडा र - हिन्दुस्तान में रहने वाले अपनों को लेकर। भारत में भी लोगों की स्थिति है। विभाजन के फलस्वरूप हुए लोगों की मानसिक तना दयनीय स्थिति का इस उपन्यास में लेखिका ने अच्छे ढंग से चित्रित कि

विभाजन के फलस्वरूप आम जनता पर पुलिस जैसे अधिकारी व
अत्याचार का चित्र भी इसमें मिलता है।

नासिराजी के 'अक्षयवट' में कई समस्याओं एवं विष
चित्रण है। इसमें पारिवारिक जीवन है, नारी शोषण है, पुलिस का अ
है, ज़हीर जैसे होशियार युवकों की कथा है, राजनीतिक अन्याय
गुण्डागर्दी का भी चित्रण है। इन सब के साथ अक्षयवट इलाहाबाद न
कहानी है, जो पहले एक सुप्रसिद्ध नगर था। लेखिका उस शहर के प
लेकर दुःखी है। जहीर जो एक अच्छा लड़का था हालात की मार ने उ
और रूप दिया। अध्यापक ने जो अन्याय उनके साथ किया जिससे उस
छोड़नी पड़ी। बाद में वह एक छोटी-मोटी दुकान खोलता है। कई यु
उनकी तरह हालात के दबाव में हैं ज़हीर के साथी बन जाते हैं। इ
लोगों की सहायता और ज़हीर के प्रयत्न से लावारिस बच्चों को पा
लिए 'मुस्कान' नामक एक संस्था का स्थापना की जाती है। वह बाद म
पूरा करके कालेज का प्रधानाध्यापक वनता है। ज़हीर अपने जीव
मुस्कान के लिए अर्पित करता है।

'कुइयाँजान' लेखिका का नवीनतम उपन्यास है। इसमें
पानी की समस्या को चित्रित किया है। इसमें एक मुस्लिम परिव
जिन्दगी को भी दिखाया गया है। इसमें डॉ. कमाल और पत्नी समी
समाजसेवी के रूप में गया है। समीना की माँ और बुआ के रूप में म
भरी नारी का चित्रन भी इस उपन्यास में दिखाया हुआ है। इस उपन्य
शुरुआत ही पानी की समस्या को लेकर है। बताशेवाले गली का इम

इंतकाल हो गया। वहाँ भी पानी की समस्या है - "मसजिद के मौलाना गुज़र गए हैं - अब बडी परेशानी है.... आखिरी गुस्ल के लिए पानी न मोहल्ले के कुएं बरसों पहले कुड़े से पाट दिए गए है। इसमें यह दिख प्रयास है कि मरे हुए व्यक्ति को नहलाने के लिए एक बाल्टी पानी भ मिलता तो साधारण जनता का जीवन पानी के अभाव में कितना दूभर

जलाशयों से भरा हमारा देश तो आज पानी के लिए तटप इन जलाशयों को हमने ही प्रदूषित किया है। नासिरार जी ने इस उ के पानिवाला मास्टरजी के जरिए हर व्यक्ति को पानी के महत्व से अ कराने का प्रयास किया है।

उपन्यास की तरह कहानियों का भी कथानक विशि नासिरा जी एक सफल कहानीकार हैं। उनके दस कहानी संग्रह अ प्रकाशित हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ नारी समस्या पर केन्द्रित हैं अलावा विभाजन की त्रासदी, शोषण, आर्थिक समस्या, शहरी जी समस्या, पानी की समस्या आदि की विषयों पर उन्होंने कहानियाँ लि 'हथेली में पोखर' नामक कहानी तो पानी की कमी के कारण तडप एक परिवार की कथा कहती है जो शहरी जीवन बिताने के आग्रह छोडकर आये थे। अब उसे गाँव के अच्छी दिन की याद सताने लगता वह मन ही मन वापस जाना चाहता है। 'सरहद के पार' कहानी में मुसलमान विद्वेष और घृणा का चित्रण है। 'कच्ची दीवार' और 'द

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयांजान - पृ. 11, 12

कहानी जातभाइयों से ही शोषित गरीबों की व्यथा उजागर कर 'दुनिया' नामक कहानी में तो तरक्की के रास्ते में बन्धनों की महत्व को दिखाया गया है। 'खुदा की वापसी' की लगभग सभी कहानियाँ न केन्द्रित हैं। सभी कहानियाँ मुस्लिम समाज के आन्तरिक अन्तर्वि विसंगतियों को लेकर रची हुई हैं। सभी कहानियाँ मुस्लिम सम महिलाओं की कुछ ज्वलंत समस्याओं को रेखांकित करती हैं। सभी ' के चालीस चोर' में संकलित कहानियाँ स्वतन्त्रता के बाद जो परिवर्त है उससे प्रेरित है। 'विरासत' में महानगर में बसती सन्तानों के चिन्तित गाँव के माँ-बाप की स्थिति का वर्णन है। 'चाँद तारों की श गरीब लोगों से उनके ज़मीन हड़पने के लिए कई तरह से तंक कर और उन लोगों से बदला लेने की कथा है।

नासिरा जी का 'संगसार' कहानी संग्रह तो ईरानी क्रां जीता जागता दस्तावेज़ है। ये कहानियाँ तत्कालीन ईरान की जलती लोमहर्षक संघर्ष, अन्याय, जुल्म और विराट आर्तनाद को बडी सं और सशक्तता से अभिव्यक्त करती है। इसी तरह 'शामी कागः कहानियाँ नासिराजी की यात्राओं की उपलब्धि हैं। 'इब्ने मरिय कहानियों का कथावस्तु किसी एक देश से मिला नहीं हैं। वह तो अने की पृष्ठभूमि में लिखी गई है। इस प्रकार नासिराजी की कथा रचना वस्तुविधान सामाजिक जीवन के यथार्थ पर आधारित है।

पात्र परिकल्पना

कथानक के उपरान्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष पात्र-योजना होता है। उपन्यास की मूल संवेदना उसके चरित्रों के माध्यम से ही प्रकट ह है। उपन्यास के गति प्रदान करना चरित्रों का कार्य है। उपन्यासकार पात्रों चुनाव अपने परिवेश से करता है। जितना बड़ा उसका परिवेश होगा उ ही बड़े पैमाने पर उसकी पात्र सृष्टि होगी। उपन्यासकार का उद्देश्य पात्र केवल गुण-दोषों का या बाहरी आकार-प्रकार का वर्णन करना ही न अपितु उसके अन्तःकरण के सम्पूर्ण रुझान परिस्थिति की उसके मन होनेवाली प्रतिक्रिया, विभिन्न प्रसंगों में उसके अन्तर उत्पन्न विचार आदि चित्रण करना होता है। सामाजिक जीवन में जो पात्र हैं और उपन्यासो पात्रों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। उपन्यासकार पात्रों का चुनाव अ परिवेश से करता है। वह कई जीवित व्यक्तियों के आकार-प्रकार और ग् को अपनी कल्पना के अनुसार ढालकर पात्रों का निर्माण करता है। इन प का चयन सामाजिक जीवन से होने के कारण सामाजिक विषमताओं को व्य करने में आसानी है। रचनाकार पात्रों को उसकी दुर्बलताओं एवं कुरूपता को चित्रित करने के साथ आदर्श पक्ष को भी प्रस्तुत करता है।"[1]

कथानक में मुख्य रूप से दो प्रकार के पात्र होते हैं - मुख्य प एवं गौण पात्र। मुख्य पात्र उपन्यास के केन्द्र होते हैं। नासिराजी के 'न नदियाँ एक समन्दर' में सात लड़कियाँ मुख्य रूप से आती हैं - परी, तय्य

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ - पृ. 64

अख्तर, मलीहा, सूसन, महनाज़ और सनोबर। ये लड़कियाँ दोस्त हैं अलग-अलग विचार वाले थे। इनके अलावा असलम, महानाज़ की म सुलेमान शहनाज़, खालिद, फरीद, अब्बास-सूसन का पति आदि क पात्र भी है जो उपन्यास की कथानक को आगे बढाने में विविध प्र सहायक रूप से उपस्थित हुए हैं। इन सभी पात्रों में तय्यबा ही मुख्य उपन्यास की विषय के करीब जुडी है।

इन पात्रों में तय्यबा अलग तबके के विचारवाला लड़की अन्य लड़कियों जैसा भावुक नहीं है, वह इश्क अपने काम से कर उसके मन में विद्रोह है, क्रान्ति है। वह अन्य लड़कियों की तरह सोच वाली नहीं। उनका विचार है 'घर की मनहूसियत को फेंकने लोग जंग ओर जाते हैं : पर अपने अंदर की मनहूसियत को कहाँ उगलेगे कहकहों दावतों, फैशन और तेज़ फर्राटे भरती कारों में...?"[1] तय्य सहेलियाँ जब पारिवारिक जीवन में फंस गये लेकिन वह एक क्रान्तिक जीवन जीना पसन्द करती है। वह देश के लिए जीने वाली थी और वतन के लिए वह अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

नासिरा जी के उपन्यास 'शाल्मली' में मुख्य पात्र 'शाल्मल इनके जीवन से जुडे अन्य पात्र है नरेश, शाल्मली के माँ-बाप, शाल्मली की सास आदि। ये सभी पात्र कथानक में विविध प्रसंगों व सहायक रूप से उपस्थित हुए है। इसमें शाल्मली के माध्यम से आ

---

1. नासिरा शर्मा - सात नदियाँ एक समन्दर - पृ. 20.

शिक्षित और आत्मनिर्भर नारी के अन्तर्द्वन्द्व को दिखाया है। साथ ही शिक्षित कामकाजी नारी के पारिवारिक जीवन का चित्रण भी मिलता है।

शाल्मली एक स्वावलंबी नारी है। वह एक ऐसी नारी है जो आत्मविश्वास के साथ कठिन प्रतिकूल परिस्थिति में जीकर अपने स्व को बनाये रखती है। आधुनिक नारी को समाज ने काम करने और कमाने का मौका तो दिया पर पारिवारिक जिम्मेदारियों से उसे कोई छूट नहीं मिली गृहस्थी के कार्यों के अतिरिक्त उस पर नौकरी का बोझ भी बढ़ गया है।

शाल्मली अपनी माँ-बाप की एकमात्र संतान है। वह पढ़ लिखकर एम.ए. पास हुआ। उसके बाद उनकी शादी नरेश से होती है। बाद में वह ऐ.ए.एस प्रतियोगिता पास करके नौकरी में प्रवेश करता है। शाल्मली एक सुधड़, सुशील पत्नी भी है। शाल्मली एक औरत होने पर गर्व करती है और पति से कहती है - 'औरत होकर मुझ पर टीका-टिप्पणी मत किया करो दूसरे, औरत की अक्ल पर शक करना छोड़ दो। एक स्तर के बाद हम औरत - मर्द नहीं रह जाते हैं, बल्कि हमारा काम हमारी पहचान होती है हमारी अक्ल हमारी कसौटी होती है।"[1]

नरेश का व्यवहार शाल्मली के प्रति बहुत बुरा है। शाल्मली अच्छी तरह जान जाती है कि उसके घर की नींव हिल गयी है। ऊपर से भले ही वह नरेश के प्रति समर्पित हो जाती है, परन्तु भीतर ही भीतर अपनी अस्मिता को वह पहचानती है। वह भी दृढ़ होकर नरेश को दिखा देती है

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 56

कि वह नरेश की छाया, प्रतिध्वनि या विस्तार नहीं है। उसकी अपनी एक अलग पहचान है। "मैं कोरा कागज़ नहीं थी, जिस पर तुम अपने अधिकार का हस्ताक्षर कर सकते। मैं तो फुलकारी का वह रेखाचित्र थी, जिसे बचपन से पिताजी ने बड़े जतन से खींचा था। प्रत्येक रेखा में उनकी आत्मा क उजाला भरा है। पिताजी पूरे बीस वर्ष एक फूल को आकार देते रहे।" शाल्मली नरेश के बुरे व्यवहार से तंग आकर अपने दुःख को अकेले अंतर ही अन्तर पीती है। शाल्मली का मित्र सरोज से जो संभाषण हुए उससे स्त्री मुक्ति की अवधारणा सामने आता है। शाल्मली कहती है "मेरी नज़र में सही नारी-मुक्ति और स्वतन्त्रता, समाज की सोच और स्त्री की स्थिति को बदलने में हैं। बाहर निकलो या घर में रहो, हर स्थान पर पुरुष तुमसे टकराएगा तलाक लेना समस्या का समाधान नहीं है।" शाल्मली आगे कहती है औरत के पास दो ही अभिव्यक्तियाँ है या सर झुका देना या समस्या को अधुरा छोड़ सर कटा लेना। मेरा विश्वास न घर छोड़ने पर है, तोड़ने पर, न आत्महत्या पर है, न अपने को किसी एक के लिए स्वाहा करने में है। मैं तो घर के साथ औरत के अधिकार की कल्पना भी करती हूँ और विश्वास भी। अधिकार पाना यानी 'घर निकाला' नहीं और घर बना रहने का अर्थ 'सम्मान' को कुचल फेंकना नहीं है। यह जो हमारे मन-मस्तिष्क में अधिका भूत सवार हो गया है, वही जीवन के लिए विष समान है।"[2]

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 75
2. वहीं - पृ. 167

शाल्मली की पति नरेश नारी को अपने गुलाम समझने वाले पुरुष समाज का प्रतिनिधि है। घर के काम में हाथ बँटाना उसके लिए शरम की बत है। जब शाल्मली सहायता के लिए कहते है तो नरेश का कहना है "यह औरतों के कामों में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है।"

x x x x x x

घर औरत का होता है वह जाने। कमाना मर्द का काम है, वह मैं करता हूँ। अपने आफिस के काम में तुम्हारी सहायता लेता हूँ क्या?"[1]

नरेश, शाल्मली से नीचे पद का है तो उसके मन में इसको लेकर हीन भावना जागृत होता है। और शाल्मली से कहती है "काफी स्वावलम्बी होती जा रही हो? ....x x x मैं ने तुम्हें नौकरी करने की छूट दी, इसका यह अर्थ नहीं कि तुम अपने को पूर्ण स्वतन्त्र समझने लगे।"[2]

कामकाजी, पढी लिखी लड़कियों के बारे में नरेश का सोच बिलकुल गिरा है। वह अपने मित्रों से कहती है "लड़की पढ़ी-लिखी है, तो धन का लालच छोड़ो क्योंकि धन पैदा करने की मशीन तो वह है ही, मेरा ही किस्सा लो।"[3] आगे नरेश शाल्मली से कहता है "पुरुष की दृष्टि में औरत क्या है? भोगने की वस्तु..... वही उसकी पहचान है। इसलिए तुम औरत की तरह रहो।"[4]

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 33
2. वहीं - पृ. 74
3. वहीं - पृ. 81
4. वहीं - पृ. 128

नरेश अब शराब पीने और अन्य औरतों से संबन्ध बनाने इसको लेकर शाल्मली बहुत दुःखी है। नरेश के जीवन से ये सब बुरा दूर करके एक अच्छा इनसान बनाना वह चाहती तो नरेश का कह "मैं मर्द हूँ, मैं जी सकता हूँ। इसकी मुझे पूरी स्वतन्त्रता है।" x x x x और धर्म केवल कागज पर लिखने के लिए होते हैं या फिर तुम औ लिए बनाए जाते हैं। इनसे हटकर एक और कानून होता है, जो हम बीच प्रचलित होता है। उसका अपना संविधान, अपना नियम, अप होता है।"[1] नरेश के यह स्वभाव उसके पारिवारिक जीवन को नरक बना दिया।

उपन्यास के अन्य पात्रों में प्रमुख है शाल्मली का पिता अपनी बेटी को बेटे के समान पाला है। पिता ने प्रारंभ से हो उसके व्य का निर्माण बड़ी सजगता से किया है। तर्क और तथ्य को ढूँढने की शक्ति को देखकर हमेशा पिताजी माँ से कहते "देखना, एक दिन यह बड़ के कान कुतर डालेगी। खूब नाम कमाएगी मेरा सर ऊँचा करेंगी।"[2] नारी के बारे में आगे कहते है "औरत का कर्तव्य पत्नी बनने तक नहीं है।"[3] इसी तरह सरोज भी एक मुख्य पत्र है, जिसके चरित्र से आ नारीवादी का चित्र मिलता है। शाल्मली की माँ और सास का चरि उपन्यास को आगे बढाने में बहुत सहायक है।

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 144
2. वहीं - प-. 11
3. वहीं

नासिरा जी की जिन्दा मुहावरे विभाजन की समस्या को लेक लिखा गया उपन्यास है। इसका मुक्य पात्र निज़ाम है। उपन्यास के अन्य पा है निज़ाम का पिता रहीमुद्दीन, मां, भय्या इमाम, मामी शमीमा और उनके बेट गोलू, निज़ाम की पत्नी सबीहा उनकी माँ-बाप। इस प्रकार कई अन्य पात्र भ है जो उपन्यास के कथ्य को आगे बढाने में सहायक होते। रहीमुद्दीन का बेट निज़ाम विभाजन के फलस्वरूप हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चले गये न युवक है। निज़ाम की तरह अनेक लोगों ने ऐसा किया था। इन लोगों क मानसिक स्थिति का चित्र निज़ाम के ज़रिए मिलता है। निज़ाम पाकिस्ता जाते हुए सोचता है "जहाँ जाता हैं अब वही हमारा वतन कहलइहे। नया ह सही अपना तो होइए। जहाँ रोज-रोज ओकी खुद्दारी को कोई ललकारिये त नाही। कोई ओके गरिबन पर हाथ डालै की जुर्रत तो न करिहे..."[1] निज़ाम पाकिस्तान जाकर आरंभिक संघर्ष के बाद, अर्थोपार्जन की दृष्टि से एक बड आदमी तो बन जाता है पर घर का मोह उसे बराबर सताता रहता है। उसक शरीर पाकिस्तान में है, पर आत्मा भारत के उस गाँव में हैं जहाँ उनके माँ बाप और सगे संबन्धी रहता है। लेकिन हिन्दुस्तान वह जा नहीं सका। ज वह वहाँ आया तब तक सब कुछ बदल चुका था। माँ-बाप तो मर चुके थे हिन्दुस्तान की स्थिति बहुत अच्छी थी। गोलू का पोसिशन देकर निज़ाम उनसे कहता है "पछतावा... बहुत पछतावा हो रहा है बेटे। तुम से क्य छिपाना। कुछ मजा नहीं आया जिन्दगी में सब कुछ पाकर भी। क्या खोया यह आज समझ में आया।"[2]

---

1. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - पृ. 11
2. वहीं - पृ. 127

ठीकरे की मँगनी का कथ्य तो उसके मुख्य पात्र महरुख के चारं ओर से बढ़ता है। केन्द्र पात्र महरुख एक नारी है। मुस्लिम समाज में स्त्र की स्थिति और रुढियों भरे माहौल से बाहर निकलने के संघर्ष को महरुख के चरित्र चित्रण से उदाहृत करता है। छोटी उम्र में ही महरुख की मंगर्न रफत से हुई थी। उनके इच्छानुसार वह जे.एन.यू. पढने चली जाती है महरुख पढ़ने लिखने में होशियार है लेकिन वह विश्वविद्यालय के पाश्चात्य व आधुनिकता से ओत-प्रोत वातावरण पसन्द नहीं करती थी। जब रफत पढ़ने विदेश चला जाता है और एक वविदेशी स्त्री से शादी करके विदेश रहत हैं और बाद में वहाँ से आकर महरुख से शादी करने के बारे में कहता है तो वह कहती "आपकी शादी की बात सुनकर मैं टूटी थी बिखरी थी और उस गम की दीवानगी में मैं मरते-मरते बची थी, फिर मेरी जिन्दगी का सबसं खूबसूरत लम्हा सबसे बद्सूरत और डरावना होकर मेरे सामने खड़ा हो गय था। जिसके बारे में मैंने सोचा नहीं था और मेरे अन्दर की औरत उसी लम्हे मर गई थी।"[1] वह आगे रफत से कहता है "आपकी ज़रूरतों और मांगों के हिसाब से अब मैं अपने को बदल नहीं पाऊंगी। आपको बहुत आगे जान है और मुझे एंक जगह ठहर कर वहुत लोगों के साथ चलना है। हमारी जिन्दगी के लक्ष्य और उद्देश्य एक नदी के दो किनारे हैं।"[2] महरुख गाँव के स्कूल में टीचर की नौकरी करता है। वहाँ भी उसे कई परेशानियों का सामना करना पडता है। यह सब पार करके वह गाँववालों को एक अच्छी जिन्दगी

---

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मँगनी - पृ. 127
2. वहीं - पृ. 31

देना चाहती है। वह गाँववालों के लिए डाक्टर का प्रबन्ध करती
बच्चों को पढाकर उनके मन में एक लक्ष्य का निर्माण करती है।
जिन्दगी को देखकर परेशान हुई माँ से वह कहती है - "मैंने भी अपनी
की जिन्दगी जीने की कीमत अदा की है, मैं अपनी जिन्दगी से मुतम
मैंने कुछ खोकर पाया है अम्मी। x x x x मैंने सचमुच हादसों से
तजुर्बों की सुरंगों से निकल कर कुछ पाया है जो बहुत कीमती
पुरमायनी है जो आप नहीं मगर आने वाली नस्लों की औरतें समझे
उसका सफ़र कब से शुरु हुआ था।"[1]

उपन्यास का दूसरा मुख्य पात्र है रफत जो महरुख के
था। रफत मुहरुख को दिल्ली पढाने लो जाता है। वह उसे बेबस न
रूप में नहीं, एक मज़बूत इरादों की औरत के रूप में देखना चाहा
महरुख को अपनी इच्छानुसार बनाना चाहता है। उसका कहना है 'क
एक ऐसे शख्स के साथ जिन्दगी गुजारने वाली हो, जो सिर्फ पढ़ा-लि
नहीं, बल्कि इंकलाबी ख्यालात का मालिक भी है।"[2] रफत जब विदेश
चले जाते हैं और वहाँ के एक मेम साहब के साथ जीवन बिताना शुरू
है। विदेश से वापस आने पर जब वह महरुख से मिलता है और उस
के बारे में कहते हैं कि "वह किस्सा कब का खत्म हुआ। वह तो
आफ लाइफ' था वहाँ का। उसे छोड़े हुए अब तीन साल गुज़र गए। तु
समझने की कोशिश करो। हालात का अन्दाज़ा तुम्हें यहाँ बैठकर न

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मँगनी - पृ. 194
2. वहीं - पृ. 34

सकता कि मैं किस भंवर में फंस गया था। यह सब कुछ जान पर र मैंने तुम्हारे लिए किया है और तुम्हें जाने क्या हो रहा है?"[1]

रफत उच्च पद की आशा रखने वाला है। जब उसे दि किसी कॉलेज में लेक्चरर का पद मिला लेकिन वह उससे खुश नहीं वह उच्च पद की आशा रखने वाला है। वह तो सीधे विश्वविद्यालय में नियुक्ति चाहते थे। वह तो इसके लिए कठिन प्रयत्न भी किया-सियार पर भी और अकेडमिक लेवल पर भी। रफत जानते थे कि दुनिय लोगों के हाथों में चल रही है और कठपुतली की डोरी किस उंगली बहुत कोशिशों और बागदौड के बाद उसे इच्छानुसार का पद मिला। प्र का काम मिले तो वह उससे आगे जाना चाहता है। रफ़त की पत्नी महरुख से इसके बारे में कहती है - "इन्हें तो महरुख आपा जैसे धुन हो गई कि वह अब प्रोफेसरी बहुत कर ली। मुझे यू.जी.सी का चे बनना है। वहाँ कुर्सी पर बैठकर मैं वाइस चांसलर बनने का अपना पूरा कर सकता हूँ, फिर शिक्षा मन्त्री और फिर..........."[2]

महरुख और रफत के अलावा इस उपन्यास में कई ऐसे जो कथा को आगे वढाने में सहायक है। जैसे डॉ. विमला,लछमिनिया, र की माँ-बाप आदि।

नासिरा जी के 'अक्षयवट' उपन्यास का मुख्य पात्र तो इल शहर ही है। लेखिका ने इस उपन्यास में आज की इलाहाबाद श

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मँगनी - पृ. 131
2. वहीं - पृ. 174

जीवन को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। अन्य मुख्य पात्र है इलाहाबाद शहर में ज़हीर के जीवन शैली को दिखाकर नासिरा समकालीन समाज में चल रहे रीतियों को, कुरीतियों को दिखा उपन्यास में पात्र बहुत अधिक हैं। लेकिन वे अधिकतर इकहरे और आयाम में विकसित होते हैं। जहीर का परिवार ही मुख्य रूप से उपन्य केन्द्र में है। इसलिए वे तीन पात्र-दादी, माँ और ज़हीर ही ऐसे है जो संवेदनशीलता के साथ रचे बने हैं। इनमें भी अपने आदर्शों और सप लेकर जहीर कुछ अधिक आदर्शवादी हो गया लगता है। उसकी मं अनेक पात्र सक्रिय और ऊर्जावान तो है, लेकिन उनकी निजी जिंदगी पक्ष उपन्यास में नहीं के बराबर हैं जो हमें अपनी संवेदना से छूने में हों। जहीर एक समर्थ होशियार लड़का था, लेकिन हालात ने उसके में कई परिवर्तन लाये जिससे उसकी जिन्दगी को बदल डाला। को अपने मित्र और अध्यापक के कारण उसे अपने पढ़ाई भी छोड़ना विश्वविद्यालय की परीक्षा में नकल के झूठे आरोप में उसे दो वर्ष के निष्कासित कर दिया जाता है। प्रो. मिश्रा उसकी सच्चाई और ईमान पूरी तरह से परिचित हैं पर नकल करनेवाला छात्र अन्य प्रोफेस सम्बन्धी है, इसलिए उसे बचाने के लिए जहीर को बलि चढ़ा दिया ज प्रोफेसर जानते थे कि ज़हीर बेगुनाह है लेकिन अपनेवाले को बचाने व वह उसको दोषी ठहराया।

आगे ज़हीर पढाई छोड़कर दूकान खोलता है। और उनक मित्र-मण्डली भी बनता है। वे सब मिलकर इलाहाबाद में हो रहे अत

के विरुद्ध आवाज़ उठाता है। बाद में मित्र अपने अपने कैरियर शुरु हैं फिर भी ज़हीर के साथ है। ज़हीर अपने पढाई को पूरा करता अध्यापक बन जाता है। इससे पहले ही वह अनाथ और असहाय लं शरण देना शुरु किया था। वह लोगों को अपने घर में आश्रम देते है। उदाहरण है मुरली का मामा और कुलसुम और उसकी माँ।

पुलिस के रूप में जो प्रतिनिधि पात्र हैं - त्रिपाठी और मजोमदार - वे दो विरोधी छोरों पर खडे हैं। सतीश मजोमदार तो जैसे के प्रति हुए अन्याय की क्षतिपूर्ति का ही माध्यम बनकर रह जा त्रिपाठी तो इतना बेईमानी और अत्याचारी था कि पुलिसवालों वे कलंक है। समाज की रक्षा करने वाला पुलिस ही समाज की नारि अत्याचार करते हैं। ऐसा अत्याचारी अफसर को कोई शिक्षा देना आसान नहीं है। उसका कारण सब जानते है "उन्हें यह भी पता त्रिपाठी कई तरह के खेल खेलता है मगर वह उसको अभी तक रं पकड़ नहीं पाये थे। क्योंकि कोर्ट-कचहरी, बाजार हाट, नेता और गु उसकी गहरी पैठ थी। बात पता लग जाती थी कि क्या हुआ मगर पुलिस त्रिपाठी के खिलाफ कभी जमा नहीं कर पायी, उसका ठोस का सम्बन्धों का जाल, जो हर व्यक्ति के स्वार्थ पर निर्भर था।"[1] सम अत्याचारी लोग जन्म लेने का मुख्य कारण तो इसी तरह का पुलिस ः और बड़े बड़े लोग है। ज़हीर इसके बारे में बताते है कि "शहर की व

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 225

को देखें। यहाँ पहले पुलिस, फिर फौजदारी मुकदमों का वकील आवारा, बेकार लडकों को भूखे भेडिए की तरह पालते हैं। उनव क्रिमिनल कैरियर बनाकर उनको हर तरह से पुख्ता बनाते हैं। फिर जहाँ चाहते हैं, इस्तेमाल करते हैं। उनके खाते में चोरी, जेबकतरी, लूटमार, बलात्कार के जुर्म दर्ज होते है क्योंकि उनको शह दे-देकर र धमकाकर उनसे पहले जुर्म करवाया जाता है और बाद में पीठ ठोंक है। उन्हें थाने और कचहरी से छुड़वाकर हमेशा के लिए अपना जरखरीद गुलाम बना दिया जाता है।"[1] उसी तरह का एक पुलिस अ है त्रिपाठी।

उपन्यास में स्त्री पात्रों की विरलता है। दो नारी पात्र ह रूप में है - ज़हीर की दीदी फिरोज जहाँ और माँ सिपतुन। दोनों विध छोटी उम्र में दोनों को एक ही अवस्था से गुज़रना पड़ा। लेकिन फिर मन से पक्के हैं। वे पढी लिखी औरत बाहर निकलकर, स्कूल में काम अपने पैरों में खडे रहकर बेटे का पालन-पोषण करता है। लेकिन f अपनी सास की तरह नहीं है। वह एक सीधी सादी औरत है। वह त काम में व्यस्त रहता है।

अक्षयवट में तो ढेर सारे पात्र है। उनमें से कुछ पात्र का त कभी अहं भूमिका होती है तो कभी ये पेर्द के पीछे चले जाते है। जैसे मोजमदार की भूमिका, शुरू में बहुत छोटी थी लेकिन बाद में दुबारा

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 262

चौका देता है और लगभग अंत तक बना रहता है। ऐसे ही कुछ अन्
जल्दी ही अंतर्धान हो जाते हैं या नियति को प्यारे। जैसे मुरली,
श्रीवास्तव आदि।

'कुइयांजान' के पात्र अपनी भूमिका का दायित्व पूरी त
निभा रहे हैं। कमाल उपनयास का नायक है। उसमें मौजूद नायकत्व
स्पष्ट तौर पर पाठकों का ध्यान खींचने में सक्षम होंगे। वह एक
डाक्टर, समाजसेवी, पति-पिता और वेटा है। वह अति संवेदनशी
कमाल तो पानी की समस्या को लेकर चिंतित है। पानी की समस्या
में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने तथा संगोष्ठियों में भाग
लिए वह राजस्थान जैसे देश के कई राज्यों में घूमता है। कमाल की
समीना समाज और परिवार की भावना की कद्र करने वाली है। परि
स्थिति ठीक से चले इसके लिए वह बहुत मेहनत करती है। घर की
मदद हो और कमाल समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह निर्बा
से करता रहे इसके लिए वह स्कूल में नौकरी ढूँढ लेती है। अंत में
की मृत्यु हो जाती है। उनकी मृत्यु से कमाल एक हद तक टूट जात

उपन्यास के तरह कहानी में भी पात्र एवं उसके चरि
महत्वपूर्ण स्थान है। कथा परिस्थिति और घटना का सृजन पात्रों के
ही होता है। इसलिए पात्र और उसका चरित्र का कहानी में प्रमुख स्थ
घटना का संबन्ध प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में पात्र के चरित्र से हो
कहानीकार लगभग अपने सभी पात्रों एवं चरित्रों को कल्पना की सहा
प्रस्तुत करता है। नासिरा शर्मा के हर पात्र और घटना यथार्थ जी

निकट रहनेवाले हैं। कहानी में पात्रों की संख्या सीमित रहता है। प्रमु
का चरित्रांकन करते हुए विशेष घटनाओं को प्रस्तुत किया जा
नासिराजी की कहानियों में सभी वर्ग के पात्रों का चित्रण हुआ है। ज्य
मुख्य पात्र नारा ही है। कुछ कहानियों में वृद्धजन, पुरुष और बच्चे भ
पात्र के रूप में आते हैं।

'पत्थरगली' के लगभग सभी कहानियों का मुख्य पात्र र
इन कहानियों में स्त्री की दारुण स्थिति को दर्शाया है। 'सरहद के इ
का मुख्य पात्र तो पुरुष है। हिन्दु-मुस्लिम विद्वेष का चित्र इसमें दिख
रेहान जो एक पढा लिखा : युवक है; हिन्दु लडकी की रक्षा करने से
हत्या उनके ही जातभाइयों से होता है। 'कच्ची दीवार' का मुख्य पात्र
निस्सन्तान वृद्ध युगल है - सुगारा और बाकर अली। उनके अंतिम क
संघर्ष कथा को इसमें चित्रित किया है।

मुस्लिम समाज की महिलाओं की ज्वलेन समस्याओं को
करनेवाला कहानी संग्रह है 'खुदा की वापसी'। इसके सभी कहानि
मुख्य पात्र तो नारी ही है। फरसान, सकीना, साजदा बेग जैसे ज़
किरदारों से भरा कहानियाँ है खुदा की वापसी का। 'दूसरे कबूत
सदिया भी एक सशक्त किरदार है जो अपने पति को धोक्का देने की
देती है। शादी के कई महीने बाद सादिया को पता चलता है कि पति
से शादीशुदा है और तीन बच्चों का बाप भी है। दोनों पत्नियाँ, गि
उनको एक साथ तलाक दे देता है। 'सबीना के चालीस चोर' तो विभा
बाद की सामाजिक स्थिति को बतानेवाली कहानियों का संग्रह है। 'वि

कहानी का मुख्य पात्र पुल्लन मिया और पुल्लाइन है जो गाँव छोडक
में बस गये बच्चों के राह देखकर गाँव में रहते हैं। 'उसका बेटा' कह
मुख्य पात्र तो एक मुँगफली वाला एक गरीब आदमी था। जिसव
बीमार होकर अस्पताल में दम तोड देता। समाज में चलनेवाले भृष्टाच
दिखाने वाली एक अच्छी कहानी है यह। 'इमाम साहब' निम्न मध्य प
की कथा कहती। इसका मुख्य पात्र शकीलउद्दीन गाँव से इमाम बनकर
है। उन्हें पाँच सौ रुपए और मुफ्त में खाना मिलता था। लेकिन दि
जाने पर लोग मुफ्त में खाना देना पसन्द नहीं करते, यदि देते तो सडी
देते थे। उन्हें भोजन केलिए घर घर जाना पडा। अंत में एक रात बर
मस्जिद गिर पड़ा। उनकी नौकरी भी गयी। वह अपना पुराना गाँव
आकर किसी ओर इमाम की बुलावे की प्रतीक्षा में जीने लगा। देश वि
से लेकर बाद के वेषों में भी दंगा फसाद चलता रहता था। छोटे बच्चों
में भी हिन्दु और मुसलमान भेद भाव पनपता है। 'सबीना के चालीस च
छोटी बच्ची सबीना इन दंगे-फसाद, लूट आदि करनेवालों को चाली
कहते है। 'इब्ने मरियम' की कहानियाँ अंतर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर है। न
जी ने खुद कहा है "इब्ने मरियम की कहानियों के पात्र भी सभी स
यह अलग बात है कि एक पात्र में कई कुछ जुड़ जाता है तभी वह खा
बनता है। यह कहानियाँ ज्यादा गंभीर और अनुभूति मूलक हैं। इन प
साथ मेरा गहरा लगाव है, क्योंकि वे एक मानवीय मकसद के लिए ज
मरते भी हैं, किन्तु विचलित नहीं होते। वे हाड़-मांस के मानव हैं फरिश्ते

---

1. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत - पृ. 190

इस प्रकार देखा जाय तो नासिराजी की कहानियाँ केवल केन्द्रित नहीं है। उसमें सभी प्रकार के लोगों की कथा आते है।

परिवेशविधान

नासिरा शर्मा की रचनाओं में परिवेशगत कई विशेषताएं जाती हैं। नासिरा जी की रचनाओं में ग्रामीण और शहरी परिवेश का अच्छी तरह हुआ है। ज्यादातर उपन्यास शहरी परिवेश पर केन्द्रि फिर भी उसमें गाँव की स्थिति का वर्णन भी मिलते हैं। उन्होंने इलाहाबाद जैसे शहरों और उसके नज़दीकी इलाकों के परिवेश को रचना की है। 'सात नदियाँ एक समन्दर' में तो विदेशी परिवेश का ि बदलते ईरान का ईरान-ईराक समस्या का चित्रण इसमें हुआ है। 'अ उपन्यास में तो इलाहाबाद शहर अपने सारे नये-पुराने चटक-मद्धि और आयामों के साथ जीवन्त रूप में उपस्थित है। इसमें शहर की ध में रची-बसी ऐसी युवा जिन्दगियों की मर्मस्पर्शी कहानी है जो विरा मिली तमाम, उपलब्धियों के बावजूत वर्तमान व्यवस्था की सडाँध आपाधापी में अवसद-भरा, जिन्दगी जीने के लिए अभिशप्त हैं। 'ठी मंगनी' में दिल्ली जैसे महानगर के जे.एन.यू. कैम्पस का चित्रण है महरुख को जिन्दगी की एक नई दिशा शुरु करना था। कैम्पस के पा व आधुनिकता से ओत-प्रोत वातावरण का भी वर्णन है। उसी तरह नर्म वातावरण को भी उन्होंने अपने उपन्यासों में श्यामिल किया है। गाँ का रीति-रिवाज़ पहनाव सब अलग है। 'शाल्मली' में शाल्मली एक ह लिए सही इस तरह का जीवन पाकर खुश हो जाता है। ग्रामीण वेश

और लोगों का प्यार उसे भाती है। 'धनिया के घूमते हाथ उसके पैरों के
तरफ महावर की लाल शेर बाँध देते हैं, जिसे देखकर वह किसी ब
तरफ उत्साह से भर उठती। चाँदी के बिछुए और भरी-भरी सी माँग
छन करती चूड़ियों की आवाज़ उसे भाती। इस घर के वातावरण से
भिन्न है उसके अपने घर का वातावरण। वहाँ सोच के महावर का चट
विभिन्न पुस्तकों और नामों के घेरे में बाँधे हुए है। वहाँ का धर्म, वहाँ क
'विद्या' है और यहाँ जीवन पद्धति, जिसमें साकार रीति-रिवाज और
की अपनी एक अभिव्यक्ति है। उसे दोनों ही प्यारे लगते हैं। दोनों वे
जीवन अधूरा है।"[1] 'कुइयाँजान' में तो राजस्थान जैसे राज्यों के गाँ
वहाँ के लोगों के जीवन, पानी की समस्याओं का वातावरण प्रस्तुत कि

नासिराजी के उपन्यासों की तरह कहानियाँ में भी कई परि
विशेषताओं से भरा है। कहानियों में भी ग्रामीण और शहरीय जीव
विशेषताओं का वर्णन है। गाँव की कमियों को, उनके कष्टताओं
जीवन को ही ज्यादातर कहानियों का विषय बनाया है। शहरी सभ्
पीछे गये बच्चों की याँद में बुढापा बीननेवाले माँ-बाप को उन्होंने
'विरासत' जैसी कहानियों में चित्रित किया है। उनकी कई कहानि
परिवेश तो विदेश से संबन्धित है। 'इब्ने मरियम' की कहानियाँ तो
देशों की पृष्ठभूमि में लिखी गई हैं। अनेक परिवेश में लिखी उनकी क
तो हमें कहीं न कहीं प्रभावित किया है। हमें उनके जिन्दगी से जोड़
ताज़ा अनुभूतियाँ देनें में सहायक बने हैं।

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 49

भाषा शैली

भाषा मनुष्य के परस्पर विचार-विनिमय का साधन है। साथ ही भाषा मनुष्य के चिंतन का भी साधन है। भाषा ही सभी रच के विचार चिंतन, भाव अनुभूति और अभिव्यक्ति का माधयम भी हो आंतरिक परिवर्तन का प्रभाव अभिव्यक्ति पर भी होता है। विचा अनुभूतियाँ अगर बदलती हैं तो भाषा शैली में भी परिवर्तन होता है। इ रचनाकार के आंतरिक सत्य को जानने केलिए उसकी भाषा का अ आवश्यक होता है। भाषा रचनाकार के हाथों में एक शक्तिशाली उ है। वे तो सरल और सहज भाषा को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बना कभी कभी विशेष प्रभाव के लिए सामान्य साहित्यक भाषा को त्य बोलचाल की भाषा, अंचल-विशेष की भाषा, व्यापार व्यवसाय से शब्दावली - विशेष का प्रयोग कर अपनी रचना को यथार्थ के अधिक लाने का प्रयास भी किया है।

नासिरा शर्मा हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाकार हैं। उनका भाषा बहुत व्यापक है। उनके पास कई भाषाओं का सम्मलित संस्कार है। उर्दू, फारसी, अंग्रेज़ी और पश्तो भाषा पर उनकी गहरी पकड है भाषाओं की जानकारी उनकी रचनाओं में भी देख सकती है। नासिर भाषा का प्रयोग कथानुकूल और पात्रानुकूल किया है। नासिरा रचनाएँ समकालीन सामाजिक जीवन से संबंधित है। सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए उसी प्रकार की प्रभावशाली भाषा का भी उन्होंने किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में कथ

परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। उनके पात्र तो ज्य
मुसलमान है। इसलिए उन्होंने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग ही किया
मिश्रित भाषा होने पर भी रोज़मर्रा की शब्दावली का ही इस्तेमाल हु
नासिराजी ने नवीन भाषा, शब्द, प्रतीकों एवं बिम्बों, कहावतों एवं म
का कथानुकूल प्रयोग किया है।

अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग

नासिरा जी के कथा साहित्य में गाँव और शहरी जीवन
है। ज्यादातर पात्र तो उच्च शैक्षिक योग्यतावाले है। शहरी वातावर
आधुनिकता का अंकन करते तथा पात्रों की परिस्थिति सापेक्षता के
उनकी कई रचनाओं में अंग्रेज़ी के शब्दों का प्रयोग जगह-जगह मिल
'कुइयाँजान' में डॉ. जेवियर और डॉ. कमाल के बातचीत इसका उदाह
- सूसलधार बारिश को देखकर डॉ. जेवियर के मुह से बार-बार
उठता था - "फैंटास्टिक वेदर! व्हाट ए ब्यूटी! माई गुडनेस"[1] चाय प
लिए जब ड्राइवर ने एक बड़े ढाबे के पास बस रोकी। ढाबा काफी लंब
था, जहाँ पर चारपाइयाँ लाइन से पडी थी, जिन्हें डॉ. जेवियर बड़े गौर
रहे थे। उस पर ड्राइवर को जाकर लेटते और कुछ सवारियों को बैठ
उनसे नहीं रहा गया तो वह पूछ बैठे, "कंबाइंड बेडरूम?"

"नो मिस्टर जेवियर दीज आर रेस्टिंग कोच.... कम ए
फन।" कमाल खुद एक चारपाई पर जाकर लेट गया और थोडा उचव

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 202

बोला, "वेरी कंफर्टेबिल! प्लीज कम, ट्राई इंडियन बेड कम सोफ़ा
उससे फहेल कमाल अभी कुछ और तुल देता अपनी बात को डॉ.
चारपाई पर लेट चुके थे। आखें बंदकर वह धीरे से बोले -

"वेरी नाइस फीलिंग।"

"बाबूजी क्या लेंगे? लड़का पूछ रहा था।

"दो चाय!" कमाल ने कहा, फिर डॉ. जेवियर से बोल
जेवियर, डु यू वांट टू यूज ओपेन बाथरूम?"

"यस! वाई नाट! " डॉ. जेवियर ने आँखें खोल कहा। उन
पर जिज्ञासा उभर आई थी। कमाल उन्हें लेकर आड़ में गया और
"प्लीज यू गो फस्ट।"

"बट व्हेयर?" डॉ. जेवियर का गोल चेहरा हैरत के कार
गोल हो गया।

"हियर।" कमाल मुस्कुराय।

डॉ. जेवियर के चेहरे पर आश्चर्य उभरा ज़रूर,मगर
नहीं। उन्हें लग रहा था कि वह अब भारतीय गाँव की जिन्दगी में
हो चुके हैं।"[1]

'सात नदियाँ एक समन्दर' में अखबार बेचने वाले एक
लड़का तथा एक अंग्रेज़ी औरत के बीच के संवाद सुनिए-

"यू आल आर फेनेटिक्स नाट ओनली खुमैनी।'

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 204

"ही इज़ क्रुवेल, मैडम! बिग मर्डर।" लड़के ने अखबार
हुए कहा।

"आल इरैनियंस वाइलड एंड अनकलचर् पीपुल।" प
गुज़रती एक औरत ने कहा।

"दे स्पायल्ड वर्ल्ड एडमोसफीयर, देयर इज़ नो रूल रेगु
फार देम, दे आर क्रेज़ी फेनेटिक्स, दे मैइड अप एवरीथिंग इन ईरान।"
साथ चलती दूसरी बुढी ने कहा।

"आफ्टर थ्रोइंग शाह, नाउ दे आर क्राइंग... वांट ए शेम?
तीसरी औरत ने कहा।

'वी डोंट हैव मनी पुआर चाइल्ड! फार दीज़ स्टुपिड ि
पहली औरत ने हाथ में पकड़ा अखबार ईरानी लडके को लौटा
कहा।"[1]

इसी तरह अक्षयवट में ज़हीर और प्रोफेसर के बी
वार्तालाप -

"डोण्ट वरी माई चाइल्ड! मैं पूरी कोशिश करूँगा...

यू मे गो नाउ।"

जहीर और सतीश के बीच

"आयम सोरी!"

"दैट इज आल राइट"[2]

---

1. नासिरा शर्मा - सात नदियाँ एक समन्दर- पृ. 306
2. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 193

जहीर की दादी से उनके दोस्त परिचय देते हुए नाम औ
कहता है -

"माई नेम इज़ आशीष दत्ता, माई फादर्स नेम सुमेरदत्ता, ही
इंजीनियर वर्किंग विथ शामाग्रूप ऑफ इन्डस्ट्रीज़, आवर होम इ
स्टेलिंग रोड.... ।"[1]

उपन्यास की तरह कहानियों में भी अंग्रेज़ी शब्द का प्रयो
है जैसे

"सरप्राइज़ जो देना था। दादा कल आ रहे हैं। यह रही न
लाइन।"

"बनी मेरे सारे एपाइन्टमेंट कैंसिल कर दो।"[2]

कथानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग नासिरा जी क
की रेखांकित करनेलायक विशेषता है। नासिराजी की कथा में तो
और अशिक्षित पात्र, ग्रामीण ओर शहरी परिवेश सब आते हैं और भ
उसी के अनुकूल है। 'अक्षयवट' में जहीर का दोस्त मुरली एक सीध
चिरइया बेचने वाला है, उनकी भाषा और जहीर की भाषा का अन्तर
बातचीत से समझ सकेंगे - जहीर के घर के कमरे में टाँगे तस्वीरों को
वह पूछता है -

"इ केकर फोटू है?"

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 152
2. नासिरा शर्मा - दूसरा ताजमहल - पृ. 99

"मेरे परदादा की है। एक तरफ शायरी करते, दूसरी शिकार खेलते थे। यह बारहसिंगा और शेर का सर उन्हीं की कराम जायदाद देखते, बेचते और ठाठसे रहते थे।" ज़हीर ने कहा।

"का सहनसाही रुतबा वाली फोटो रखे हो यार। छू आदमी सलामी दाग दे।" मुरली तस्वीर पर थोडी देर नज़र जमाये

'ठीकरे की मंगनी' में तो ग्रामीण लोगों की भाषा का अच्छा हुआ है। महरुख के साथ गनपत काका और उनके परिवार का बा

"हाय दइया, माटरनी जी!" गनपत काका की बहू बौखल

"आओ, बिटिया, आओ!" काकी बाहर निकल आई।

"आज हम गरीबन के भाग कैसे जगे?" गनपत काका हर

"बस, इधर से निकली, तो सोचा कि..." महरुख कुछ झि सी बोली।

"आओ, बइठो, बहिनी, चाय पी के जाओ।" गनपत का बहु चम्पा ने शरमाते हुए महरुख से कहा।"[2]

'जिन्दा मुहावरे' में तद्भव और बोलचाल के विदेशी श मेल से बनी भाषा हिन्दी का स्वाभाविक रूप सामने रखती है। हि बीच-बीच में अवधी मिश्रित खडीबोली के संवाद प्रसंगों को बा प्रभावशाली बना देते हैं। उदाहरणार्थ

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 80
2. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मंगनी - पृ. 85

"ए, रज्ज़ो! चटनी अब पिसे बैठी हो का?" अम्मां बावर्चीखाने में फैली धूप में पटरे पर बैठा देख दालान से हांक लगा

'अभै तो कूट कर आई है सिल, अम्मां।" रज़िया सिल प से बट्टा रगडते हुए जवाब देती।

"हमार घी गुड़ कहाँ है?" गोलू कटोरी न देखकर ठुनक

उर्दू बहुल भाषा होने पर भी रोज़मर्रा की शब्दावली इस्तेमाल हुआ है। हवेली के वर्णन की भाषा हो या किसी उत्सव की की, मौसम के वर्णन हो या जिन्दगी की, जो भी हो भाषा एक दम स ली हुई है। 'अक्षयवट' में तो उन्होंने दशहरा, रमज़ान आदि उत्सवों की अच्छी तरह किया है।

'इलाहाबाद में दशहरा मनाने की तैयारियाँ शुरू होगयं उत्सव से पहले उत्सव का माहौल बनाने के लिए सबसे पहले गुब्बा शहर की सड़कों और गलियों में बिखर गये थे। रंग-बिरंगे गुब्बारों गुडिया, सांप, बिल्ली के अतिरिक्त बडे बडे गैस के गुब्बारे दिल की श उनके सर पर फरफराते हुए बच्चों को मचलने के लिए मजबूर कर

'रमजान का चाँद दिख गया है। जामा मस्जिद से यह ऐल गया था, मगर अपनी-अपनी छतों पर चढ़े लोग बदली के कारण उसव नहीं पाये थे। दुकानों तो कई दिनों से सज रही थीं मगर आज चाँद रा

---

1. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - पृ. 9
2. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 7

आज की बात और थी। बजार में रौनक उतर आयी थी। बताशे छल्ले और खपूर की देरियाँ लोगों को दूर से नज़र आ रही थी। इबा यह महीना है इसलिए नयी जिल्द के खुरान, अंधेरे में चमकनेवाली मखमल ओर चटाई की बनी जानमाजें, रहल और कई तरह की खरीदारियाँ भी हो रही थीं।"[1]

"बहार का आरंभ चारों ओर हरियाली थी। शहर की स का कहना ही क्या था। धूप ऐसी मदमाती थी मानों शराब की बारि रही है।"[2]

नासिरा जी की रचनाओं में बिम्ब और प्रतीक

शिल्पविधि के उपादान के रूप में बिंब का अत्यधिक मह बिंब एक प्रकार की मानस प्रतिमा है। जब कल्पना मूर्त रूप धारण क तब बिंब की सृजन होती है। नासिरा जी के कथा साहित्य में बिम्बों क है। दृश्य बिम्ब और अनुभूति परक बिम्ब कुछ उदाहरण है-

दृश्य बिम्ब

'कुत्ते रेंगते हुए पास आकर खडे हो दुम हिलाने लगे। रग पास खडे कुत्ते को पुचकारा और झोले से निकालकर उनकी तरप कचौरियाँ फेकीं। तीनों कचौरियों पर झपटे। रिक्शो की घंटी सुन दु अपना बदन समेटा। रिक्शा उसकी दुम बचाता, पहिया काटकर अ

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 34
2. नासिरा शर्मा - सात नदियां एक समन्दर - पृ. 20

गया। बतखें नाली के पास से कतार बाँधे कुत-कुत-कफत करती अ
रही थीं, फिर ठहरकर उन्होंने नाली में चोंज डाल पानी पिया और अ
के पत्थर पर पंजे रख अंदर दाखिल हो गई।"[1]

"बाह बारिश खूब जोरो से हो रही थी। हवा की ठंड
गिलापन घुल गया था, जिससे गलन बढ गई थी, ऊपर से बिजली भ
गई थी। बच्चे डरकर दादी के कमरे में जमा हो गए थे। गुल्लो ने मं
जलाकर वहीं रख दी। चिंकू-मिंकू लिहाफ में घुसे दादी से कहानी सुन
जिद कर रहे थे। यह देख गुल्लो भी सब्जी की टोकरी उठा कमरे में
और मोमबत्ती की रोशनी में बथुवा की पत्तियाँ तोड़ने लगी।"[2]

अनुभूति परक बिम्ब

नासिरा जी के कथा साहित्य में अनुभूतिपरक बिम्ब भी
मात्रा में देखने को मिलते हैं।

'ऐसा सुख हमें रोज क्यों नहीं मिलता?' रत्ना ने मन ही म
और बोतल खोल घूँट भरा। उसका सारा शरीर तरावट से भर गया
ताज़गी सी अपने चारों तरफ फैलती महसूस हुई। उसने चुल्लू में प
सिर पर डाला। बालों के बीच से रेंगते पानी ने एक सिहरन सी बदन
दी। दूसरा चुल्लू भर उसने मुंह पर छींटा मारा। ठंडा पानी जलते च
गिर गरदन से होता हुआ सीने पर बहा। सुख की असीम अनुभूति से

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 63
2, नासिरा शर्मा - सतघरवा - पृ. 86

अंग-अंग पुलक उठा। उसने बिना सोचे-समझे बाकी बचा पानी गर आगे-पीछे उँड़ेल लिया। उसे लगा कि वह ठंडे पानी से भरी किसी तैर रही है। पानी की लहरें उसके बदन से टकराती बन बिगड़ रही उसका रोम-रोम अपनी प्यास बुझाता उस नदी के जल में अठखेलि रहा है।"[1]

"इब्ने मियाँ का ताजिर दिल व दिमाग टर के मेले पहियेदार झूले की तरह ऊपर नीचे गोलाई में नाचने लगा। दिल व में उठी शंका, आशंका की सारी कच्ची दीवारें ढह गयीं और उसके म नीचे दबे वह खुली साँस के लिए बुरी तरह तड़फड़ाने लगे।"[2]

प्रतीक

अनुभूति को अधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए प्रतीकों का किया जाता है। 'बावली' कहानी में सलमा किसी बावली का प्रतीक है के सात वर्ष बीत जाने पर भी सलमा माँ नहीं बन पायी तो पति खाँ दूसरी शादी कर लेती है। उस दिन पता चलता है कि सलमा माँ बन है। सलमा के दिल में रह रहकर एक ही बात उठ रही थी कि व बावली है जिसके दिल के दालानों में थके प्यासे परिन्दे अपनी प्यास रहेंगे, दुःख बाँटते रहेंगे, मगर आखिरी साँस तक जीने और मरने क न निभा पायेंगे।

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 80
2. नासिरा शर्मा - कच्ची दीवारें - पृ. 144

'शामी कागज़' शीर्षक प्रतीक रूप में ही इस्तेमाल कि
'बुतखाना' में आज के स्वार्थी मनुष्य बुतखाने के बुत का प्रतीक है।
में अपने परिचित युवक को मिनी बस के पहिए के बीच कुचले
कथावाचक पुलिस को बयान देने के झंझट से बचने के लिए उस घ
प्रति आँखें मुँद लेता है। इस पर उसका अन्तकरण उससे कहता है
दिल्ली रूपी महानगर के वुतखाने का एक बुत है।

'सबीना के चालीस चोर' कहानी में अलीबाबा और चाली
कहानी प्रतीक के रूप में आता है। सबीना एक छोटी लड़की है, ज
जैसी दृष्टि और समझ रखती है। उसका मानना है कि फसाद करा
दूसरों का हक मारने वाले ही चालीस चोर हैं, जो हमेशा कमज़ोर
दबाते हैं। 'तक्षशिला' में बौद्ध युग का विद्यालय तक्षशिला प्रतीक रूप म
है। तक्षशिला का दीवारें पत्थर की थीं इसलिए आज भी वह खंडहर
में मौजूद है। मगर उसका छत लकडी की थी, समय की दीमक ने, धू
बारिश ने उसे रहने नहीं दिया। आज औरत खुले आसमान के नीचे
पहचान बनाने में व्यस्त है। औरतों का यह संघर्ष तक्षशिला के इस
के समान बहुत सुन्दर है।

'सात नदियाँ एक समन्दर' में सात सहेलियाँ ही सात नदि
प्रतीक है और ईरानी जनता समन्दर का। 'ठीकरे की मंगनी' में महर
जो मंगनी बचपन में हुई थी उसे ठीकरे को मंगनी कहा है।

'शाल्मली' उपन्यास में नासिरा जी ने शाल्मली को प्रतीक
दिखाने का प्रयास किया है। शाल्मली को सेमल के दरख्त के समान

है। सेमल के दरख्त को संस्कृत में शाल्मली कहते हैं। सेमल की
सस्ती होती है। सेमल का दरख्त एक खूबसूरत दरख्त है। उसकी ल
माचिस की तीली, ढोलक और बहुत सारी अन्य वस्तुएं बनती हैं
फूल और डंठल खाए और पकाए जाते हैं, लेकिन यही लकड़ी जब
डूब जाती है तो बहुत मजबूत हो जाती है। जब शाल्मली का घर डू
है तब उसमें वह डूबती नहीं अपने को संभालती है और यही वह अ
औरत है, जो गुजरे कल, आज और आने वाले कल की चुनौती को
करके आगे बढ़ती है और अपने पैरों पर खड़ी होती है। शाल्मली
अध्याय में एक खास वृक्ष को नासिरा जी ने लिया है। इसके द्वारा नां
ने यह बताने का प्रयास किया है कि सभ्यता की शुरुआत औरत से ह
जब मर्द शिकार खेलने जाते थे तो पीछे औरत अपने बच्चों के सा
जगह रहती थी और वहाँ पर उसने देखा कि पेड़ कैसे उगता है और
में खेती की शुरुआत औरतों ने की है, इसलिए औरत का रिश्ता पेड़
आदिम हैं। औरत को पेड़ के समान मजबूत होना चाहिए और वह
फैसले खुद ले, साथ ही मर्द नई औरत की संवेदनाओं और इच्छा
पहचाने और उसे समझे।

अक्षयवट उपन्यास में अक्षयवट प्रतीक है उस अविराम भ
का उस अक्षर विरासत का, जिसका शहर इलाहाबाद की धर्मा
निरन्तर विस्तार है। नासिरा जी के 'अक्षयवट' में इलाहाबाद अपने स
पुराने चटक मद्धिम रंगों और आयामों के साथ जीवन्त रूप में उपस्थि

मुहावरे तथा कहावतों का प्रयोग

भाषा में मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से वह सुन्द प्रभावशाली हो जाता है। रचनाओं में बिम्ब, प्रतीक के साथ भाषा को बनानेवाले तत्व हैं मुहावरे एवं कहावतें। नासिराजी के कथा सा मुहावरों और कहावतों से युक्त भाषा मिलती है। कुछ उदाहरण नारि के रचनाओं से :-

'कभी-कभी मन करता है, सभ कुछ छोड-छाड़ सहर भाग सुना है, हुआं कामै काम है?"

दूर के ढोल सुहाने लगतै हं, जब र में सुख नहीं, तो पि से भी कहीं न मिलि है?"[1]

- "मगर अब गुज़री बातों को सोचकर **पछताने से क्या प जब चिडिया चुग गई खेत**!"[2]

- "नए हेडमास्टर को चार्ज देते हुए उसका **कलेजा मुँह** रहा था।"[3]

- सवने **दाँतों तले ऊँगली दब ली**, जब राष्ट्रपति बनि दिल को दहनेवाला भाषण मैदान-ए-शहीद पर दिया.... ।[4]

---

1. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मंगनी - पृ. 84
2. वहीं - पृ. 137
3. वहीं - पृ. 186
4. नासिरा शर्मा - सात नदियाँ एक समन्दर - पृ. 162

- 'अखबार के ऑफिस में दो दिन से सबको **साँप सुंधे हु**

- ईरान के सारे पडोसी देश, जो शाह के **समय चूहे बने अब शेर की तरह दहाड रहे थे**।"[2]

- 'मलीहा दुःख में भी अपनी **नैया किनारे लगाने** वे कशमकश कर रही है।"[3]

- "अपनी सच्चाई सावित करने के लिए पिताजी **तलव घार पर तो चल ही रहे थे**।"[4]

- ....."शाल्मली **दुध की जली छाछ भी फूँक-फूँक कर** चाहती थी।"[5]

- "संबन्ध तोडने में देर ही कितनी लगती? मगर उसे द बचाए रखना वास्तव में **लोहे के चने चबाना है**।"[6]

जिन्दा मुहावरें की भाषा को सबसे अधिक जानदार बन श्रेय अवधी के मुहावरे और लोकोक्तियों को है। **'एक दिन बिल सूंघत-सूंघत अपने पुराने ठिकाने को लौटत है**।" **'आखिर भोर क सांझ गए तो घर लौटत है।' बखत से पहले ससुर को गधा प सवार होय गई है।' आग खाय और अंगारा हगै की ज़रूरत नहीं** यह सब एक ही पृष्ठ से उद्धृत किये गये हैं।

---

1. नासिरा शर्मा - सात नदियाँ एक समन्दर - पृ. 231
2. वहीं - पृ. 164
3. वहीं - पृ. 276
4. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 60
5. वहीं - पृ. 61
6. वहीं - पृ. 151
7. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - पृ. 10

'ज़मीन उसी की जो जोतता है फसल उसी की जो बोता

...."जब हिन्दुस्तान छुटा तो **तिनका-तिनका जोडकर** ि
शुरू की, उसे हम दोबारा बर्बाद नहीं होने देंगे।"[2]

...."यह **शेखचिल्ली के ख्वाब देखना** कब बन्द करेंगे?

...."गलती तो दोस्त हमारी है, जो **डुगडुगी बजाने वाले वे**
हम अपनी गर्दन की रस्सी थमा बैठते है।"[4]

'बूढ़ी घोडी लाल लगाम'[5]

'बोया पेड बबूल का तो आम कहाँ से होय?'[6]

'चित्त भी मेरी, पट भी मेरी'[7]

"इन पुलिस वालों ने भी तो **नाक में दम कर रखा** है।'

...."त्रिपाठी इतनी जल्दी **फँसी मुर्गी से सोने का अण्डा त**
उतावलापन नहीं दिखाते थे।

....उन्होंने **नमक मिर्च लगा** अपनी कहानी सुनाई।"[9]

---

1. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - पृ. 82
2. वहीं - पृ. 88
3. वहीं - पृ. 99
4. वहीं - पृ. 100
5. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 55
6. वहीं - पृ. 57
7. वहीं - पृ. 62
8. वहीं - पृ. 69
9. वहीं - पृ. 73

....उसके **पेट में चूहे कूद रहे थे। जले पैर की बिल्ली क सारे दिन इधर से उधर दौडोगी।**"[1]

"चाहे दारोगा साहब हों या कप्तान साहेब हमार मामला तं **के कुत्ते जस है - न घर के हैं न घाट के।**"[2]

आप तो हमेशा **हवा के घोडे पर सवार रहते हैं।**[3]

"मगर इन कटाक्षों से भी सिपुतुन के कान में **जुएं नहीं रेंग** वह पहले की तरह कभी मुस्कुराकर कभी फैली आखों को झपक उनकी कही बात को **ठण्डे शरबत के घूँट की तरह पी जाती थी।**

"**जोर का झटका धीरे से लगा।**" रमेश ने कहा।

"नहीं भैया, हमारे लिए तो बम फटा है। हाथ के तोते तो पूरे उड गये...।"[5]

"**कान में तेल डाल के बैठे रहो**" घोबन ने बाहर निक रेडियों बंद किया।"[6]

"**बाप बडा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।**"[7]

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 103
2. वहीं - पृ. 139
3. वहीं - पृ. 163
4. वहीं - पृ. 348
5. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 83
6. वहीं - पृ. 85
7. वहीं - पृ. 107

"अब जेवर क्या पहनें आपा, यहाँ के हालत बदल चु
सोना पहनना चोर को घर का रास्ता दिखाना है।"

अरे अम्मी, समीना तो **नमक की ढेली** है। उसको सज
क्या ज़रूरत।"[1]

समीना ने एक दिन यह डायलॉग सुना तो उसके **कान ख**
गए।"[2]

"सीधी बात का टेढा जवाब। मालिक से ज्यादा नौकर
जबान।"[3]

"राबिया की माँ ने झोला उठाया और **दुम दबाए-दबाए** व
बाहर निकलीं और पछताती-सी बरामद की सीढ़ियाँ उतरते हुए सोच
- सच कहा हैं किसी ने कि **लालच बुरी बला है**। बेगाम साहिबा क्या
होंगी कि **फटे जूते की तरह** मैंने पूरी जबान बाहर निकाल दी।"[4]

"शकरआरा उस रात **घोडे बेच सोई**।"[5]

"ऐंबुलेंस का नाम सुनकर जमाल खां के **पैरोंतले से**
निकल गई।"[6]

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 107
2. वहीं - पृ. 131
3. वहीं - पृ. 153
4. वहीं - पृ. 200
5. वहीं - पृ. 285
6. वहीं - पृ. 288

"क्या कहा तुमने? फिर से तो दोहराना?" राबिया की अ
बदन में आग लग गई।"[1]

दामाद या बहन के घर रहने की पुरानी मनाही को कैर
जाए ताकि **सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।**"[2]

**'दरिया में रह मगरमच्छ से बैर रखना', कुत्ते की दुम
बरस भी गाडियों तो वह निकलेगी टेढी की टेढी।'**

'नाइन की लौडिया का जाने रेशम सोना।'[3]

'ईंट का जवाब पत्थर से देबाय।"[4]

अस्पताल अब **सांप के मुह की छछूंदर होकर रह गया
न उगला जा सकता था, न निगला जा सकता था।**"[5]

'ईंट का जवाब पत्थर से देना?'

नतीजा वही **ढाक के तीन पात।**"[6]

अब यह व्यक्तिगत तानाशाही बंद करो तो भी मेरी उ
नक्कारखाने में तूती बनकर रह जाएगी।"[7]

---

1. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 300
2. वहीं - पृ. 343
3. वहीं - पृ. 347
4. वहीं - पृ. 352
5. वहीं - पृ. 366
6. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत - पृ. 93
7. वहीं - पृ. 20

- "सुलाखी, इमामबाडे की छत पर" अमतुल के सारे ब **रोंगटे खडे हो गए**।"[1]

यह रात राम मनोहर त्यागी के लिए मानसिक रूप से **बदलने** की रात ती।"[2]

"नौकरी करना **लोहे के चने चबाना** ही नहीं बल्कि काँ रास्ते पर चलने का नाम भी है।"[3]

ससुराल जाकर सास के **कान कार्टेगी**।

नाकों चने चब्वा देंगी।"[4]

...अब **जब साँप निकल गया तो लकीर पीटने** सं **फायदा**।"[5]

"ठीक है **चित भी मेरी पट भी मेरी**।"[6]

"कैसे वह यह **शीशे का महल तोड़कर** एकाएक पथरी लं ज़मीन पर चलना शुरू कर दे।"[7]

"**सोने-चाँदी के पालने** में उनका बचपन गुजरा है।"[8]

---

1. नासिरा शर्मा - पाँचवाँ वेटा - पृ. 35
2. नासिरा शर्मा - अपराधी - पृ. 28
3. नासिरा शर्मा - दुनिया - पृ. 91
4. नासिरा शर्मा - सन्दुकची - पृ. 161
5. नासिरा शर्मा - नमकदान - पृ. 5
6. नासिरा शर्मा - तुम डाल-डाल हम पात-पात - पृ. 40
7. नासिरा शर्मा - पत्थरगली - पृ. 158
8. वहीं - पृ. 153

"उलटे-सीधे चापलूस किस्म के लोग उनको घेरे रहते अ
उनकी खातिर में **ज़मीन-आसमान के कुलाबे मिलाते रहते**।"[1]

बेनी ने सुना तो **हक्का-बक्का रह गया**। सास ने घबराक
पीटा था।[2]

उससे पूछा गया कि अव भी वह बता दे कि किसके सा
काला किया है।[3]

सूक्ति :

सूक्तियाँ जीवन अनुभव का गहन निचोड होती हैं। जिन्
अच्छे-बुरे अनुभवों से उत्पन्न कुछ आप्त वाक्य नासिराजी जी ने
रचनाओं में दिया है। कुछ उदाहरण है :

'सियासत तो बिन माँ-बाप का अवैध बच्चा है।'[4]

'जिन्दगी खोटा सिक्का नहीं है कि उसे अछालकर दूर फेंव

'गुजर रहा समय चीज़ों को कितना बल देता है।'

'जब संबन्धों का उत्साह मरने लगे तो मन कुछ नहीं
चाहता।' लडकी पराया धन है।'[6]

---

1. नासिरा शर्मा - पत्थरगली - पृ. 150
2. नासिरा शर्मा - अग्निपरीक्षा - पृ. 64
3. वहीं - पृ. 70
4. नासिरा शर्मा - सात नदियाँ एक समन्दर - पृ. 299
5. वहीं - पृ. 363
6. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 14, 11

"जीवन भर जिसके साथ रहना न हो, उसके साथ भावन तम्बु गाड़ना कहाँ की अक्लमन्दी है?"[1]

"टकराहट से ही इन्सान अपने को पहचानता है, संवा कोशिश करता है।"[2]

"इज्ज़त की मौत, बेइज्ज़ती की ज़िन्दगी से कहीं बेहत

"वक्त किसी के लिए रुकता नहीं है"[4]

"मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है।"

"सौ बीमारी की एक बीमारी बुढापा है।"[5]

"दूसरों के लिए गड्ढा खादने वाला खुद उसमें पहले गिरत

"ज़रूरत ईज़ाद की माँ है।"[7]

"देर है मगर अंधेर नहीं। ऊपरवाला जो करता है वह सोच समझकर करता है।"[8]

"सब्र का फल मीठा होता है।"[9]

---

1. नासिरा शर्मा - शाल्मली - पृ. 19
2. वहीं - पृ. 25
3. नासिरा शर्मा - जिन्दा मुहावरे - पृ. 67
4. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 79
5. वही - पृ. 144
6. नासिरा शर्मा - कुइयाँजान - पृ. 293
7. वहीं - पृ. 314
8. वहीं - पृ. 357
9. नासिरा शर्मा - नमकदान - पृ. 10

"मुसीबत जब आती है तो चारों तरफ से आती है।"[1]

"जिन्दगी एक न खत्म होने वाला जद्दाजहद का मैदान है

"समय सबसे बड़ा मरहम होता है।"[3]

"माँ के पैरों में जन्नत होती है।"[4]

"असली जेबर तो औरत की शक्ति होती है।"[5]

"प्रेम का अर्थ केवल एक साथ जीना नहीं बल्कि दूर रहक साथ साथ जीना होता है।"

"जीवन में जो मिला है उस हिस्से को निडर होकर पी च जहर ही क्यों न हो।"[6]

शैली

कला पक्ष के अंतर्गत शैली तत्व का अपना अलग महत्व है। समकालीन रचनाकारों ने कई प्रकार के शैलिों को अपनाया है वर्णनात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक, काव्यात्मक, पूर्वदीप्त, विश्लेषण आदि। नासिरा जी ने भी अपनी रचनाओं में कई प्रकार के शैलियों का किया है।

---

1. नासिरा शर्मा - सरहद के इस पार - पृ. 27
2. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मंगनी - पृ. 162
3. नासिरा शर्मा - उजडा फकीर - पृ. 88
4. नासिरा शर्मा - कनीज बच्चा - पृ. 164
5. नासिरा शर्मा - सन्दुकची - पृ. 157
6. नासिरा शर्मा - गली धुम गयी - पृ. 150

'संगसार' कहानी संग्रह वर्णनात्मक शैली में लिखा गया तो पाठकों को उस भयानक विलाप में शामिल कराते हैं। 'सात नदि समन्दर' और 'कुइयाँजान' उपन्यास भी इस शैली में लिखा गया है। के साए', 'काला सूरत', 'ततइया', 'इन्सानी नस्ल', 'इमाम साहब' अ वर्णनात्मक शैली के है। 'दीमक' संस्मरणात्मक शैली में लिखी कह 'मिस्त्र की मम्मी', 'गुंजा दहन', 'नमकदान' आदि कहानियाँ नाटकी की है। 'शामी कागज़', 'बावली', 'सबीना के चालीस चोर', 'बुत 'तक्षशिला' आदि कहानियाँ तथा 'शाल्मली' उपन्यास प्रतीक शैली व

आत्मकथात्मक शैली में लिखी नासिरा जी की कुछ कहा - 'घुटन' 'खुशबू का रंग', 'मरियम' आदि। 'ठीकरे की मंगनी' की क नासिरा जी ने महरुख के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास कहीं फ्लैशबैक का प्रयोग भी किया है। यूनिवर्सिटी के अध्ययन क वर्णन फ्लैशबैक में किया है।

संवाद भाषा को सबल बनाते हैं। कथानक में नवीन मो गत्यात्मकता लाने का काम संवाद ही करते हैं। इस शैली का नासिराजी ने अच्छी तरह किया है। सीधी बोलचाल की भाषा शैली में आयी है। 'अक्षयवट' में जुगुनू तथा मौसी के बीच का संवाद देखि

"सो गए क्या गुगनू?"

"नहीं मौसी।"

पान लगाऊँ क्या?"

"हाँ"

"काम कैसा चल रहा है?"

"ठीक"

"अब बेटा घर बसाने की सोचो, गीता की उम्र भी आराम
की आ गयी है। छुटकी के जाने के बाद अकेली पड़ जाएगी बेचार

"हाँ, सोच तो रहा हूँ कि मँझले की बहु ले आऊँ।"

"क्या? अरे नासपीटे... मैं तेरे ब्याह की बात कर रही हूँ।
ने पान का पानी झटकते हुए कहा और उस पर चूना मला।

"अब हमारी ब्याह की बात भूल जाओ... बुढापे में कहँ
रचाया जाता है मौसी, जवानों की बात करो।"

"सामने के पैदा हुए हमको बताने चले हैं कि उनके दूध
टूट गये हैं।" मौसी पान की गिलोरी मुँह में डाल हँसी।"[1]

नासिरा शर्मा ने अपनी रचनाओं में भाषा और शैली का
प्रयोग किया है। उनकी भाषा पात्रानुकूल और परिवेशानुकूल है।
अपनी रचनाओं में कई तरह के पेशेवाले तथा अलग अलग परि
जीनेवालों का चित्रण किया है। इसलिए उनकी भाषा में शुद्ध हिन्द
अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग तथा
जीवन में प्रचलित शब्दों का प्रयोग मिलता है। नासिरा जी की
ज्यादातर अनुभव की उपज है। नासिरा जी भाषा के बारे में कहा

---

1. नासिरा शर्मा - अक्षयवट - पृ. 55

'उनके परिवेश से निकली कहानियों की तरह उनके पात्रों की अभिव्य
उन्हीं की बोली में है जो कथा में रच-बस गई है, क्योंकि वह बोली क
भाषा भी है।"[1]

निष्कर्ष

नासिरा शर्मा की रचनाओं को शिल्प की कसौटी से परख
उनमें मन की भावना विचार और अनुभव का सामजस्य दिखाई पड़
उनकी रचनाएँ समकालीन यथार्थ को सामने लाने लायक है। भारत
नहीं विदेशी राज्यों के समस्याओं को भी उन्होंने अपनी रचनाओं में
किया है। इसके लिए उन्होंने अनुरूप पात्र, परिवेश, भाषा आदि स
प्रयोग भी किया है। नासिरा जी की रचनाओं के पात्र और परिवे
ज्यादातर मुसलमान समाज से संबन्धित हैं। मुस्लिम समाज के रीति-
की अभिव्यक्ति नासिरा जी की रचनाओं में हुई है। उन्होंने अपने
साहित्य दृश्य, श्रव्य, स्पर्श एवं घ्राण बिंबों की सफल योजना की है
सूक्तियों, कहावतों एवं मुहावरों का यथोचित प्रयोग किया है। इनके सृ
वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आत्मकथात्मक शैलियों का प्रतिभ
उपयोग किया है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा जी को
कथ्य को अनुकूल शैली-शिल्प भाषा, बिंब आदि के द्वारा संप्रेषणीय ब
बडी कामयाबी मिली है।

❖❖❖

1, सबीना के चालीस चोर - भूमिका - पृ. 87

उपसंहार

उपसंहार

समकालीन साहित्य जीवन के यथार्थ को अत्यन्त गहरे ध
पर व्यक्त करते हुए मनुष्य के अस्मिता - संकट के साथ-साथ व्यापक
पर मूल्य संकट के घेरों से जूझता है। समकालीन कथा साहित्य के
परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए उसको नारी जीवन पर केन्द्रित
साहित्य, दलित कथा साहित्य, देशविभाजन और सांप्रदायिकता पर अ
कथा साहित्य, ऐतिहासिक कथा साहित्य, व्यंग्य कथा साहित्य आदि
वर्गीकरण विभाजन करना समीचीन है। विषय की विविधता, कथ
शिल्प की नवीनता आदि समकालीन कथा साहित्य की विशेषताएं हैं
शोषण, दलित समस्या, सांप्रदायिकता आदि समकालीन समाज की
समस्याएँ हैं। इन समस्याओं का शिकार ज्यादातर समाज के निम्न या
मध्य वर्ग को ही बनना पड़ता है। समकालीन मनुष्य तो खुद के लिए
है, समाज के लिए कुछ करना भी नहीं चाहता। इन सभी प्रवृत्तियों व
समकालीन कथा लेखकों का ध्यान ज्यादातर गया है। अपनी रचन
इनका वर्णन करके इससे मुक्ति पाने की राह दिखाने की कोशिश भी
ने की हैं। नासिराजी ने भी अपने कथा साहित्य में इन विषयों को मुख
से लिया है। नासिराजी की कहानियों और उपन्यासों के अध्ययन
मालूम होता है कि वे देशकाल, धर्म, जाति, संप्रदाय आदि के भेदों से

उठकर एक दिल और एक दिमाग वाले इनसान के दुख-दर्द, उत्थान को आकार देने वाली लेखिका हैं।

नासिरा शर्मा समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील मान लेखिका के रूप में विख्यात हैं। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी, फारसी, पइतो भाषाओं में उनकी गहरी पकड़ है। वे ईरानी समाज और राजनै अतिरिक्त साहित्य, कला और संस्कृति आदि विषयों की विशेषज्ञा कहानी, उपन्यास विचार-अध्ययन, संस्मरण, संपादन में उनकी बडी नासिरा जी कथाकार होने के साथ साथ एक अच्छी पत्रकार भी हैं। जी समकालीन हिन्दी साहित्य में मुख्य रूप से उपन्यासकार और कहा के रूप में प्रसिद्ध हैं। 'पत्थरगली', 'शामी कागज़', 'संगसार', 'इब्ने म 'सबीना के चालीस चोर', 'खुदा की वापसी', 'इनसानी नस्ल', 'दूसरा ताज 'प्रतिनिधि कहानियाँ', 'बुतखाना' आदि उनके कहानी संग्रह हैं। उन्ह उपन्यास लिखे हैं - 'सात नदियाँ एक समन्दर', 'शाल्मली', 'ठीव मंगनी', 'ज़िन्दी मुहावरे', 'अक्षयवट', 'कुइयाँजान'। 'सात नदियाँ एक स में आज के ईरान की कथा है तो 'शाल्मली' में पति-पत्नी के बीच उभर पारिवारिक तनावों और विसंगतियों का चित्रण है। 'ठीकरे की मंग रूढ़ियों में जकड़े एक मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की शिक्षित और संवेद नारी की संघर्ष गाथा है। 'ज़िन्दी मुहावरे' विभाजन के दर्द का उपन्य जिसमें देश के साथ परिवार भी बंटता है। उनका नया उपन्यास 'कुइय पानी की समस्या के सन्दर्भ में पर्यावरण पर प्रकाश डालता है। निश उनके उपन्यासों एवं कहानियों ने उन्हें एक नयी पहचान दी है।

उनकी कहानियों में ईरान की धरती से जुडे वहाँ के आम
का संघर्ष और दुख-दर्द है। रूढियों में जकड़ी किन्तु आधुनिक जी
दौड़ में आगे बढ़ने के लिए बेचैन पिछड़े वर्ग की मुसलमान जन
तानाशाही के विरुद्ध ईरानी जनता का संघर्ष है। फिलिस्तीनी गुरिल्ल
दर्दनाक फेटहाली है। आधुनिक सुविधाओं से वंचित हिन्दुस्तान की
जनता है। पुरुष प्रधान समाज में हदीस, शरीयत और कुरान में औ
दिये गये अधिकारों की जानकारी से लैस अपने हक के लिए संघर्ष
मुस्लिम औरतें हैं। इन सबके बावजूद हिन्दुस्तान की बहुलतावादी संस्
प्रभावित नासिरा शर्मा की कहानियों की सबसे बडी शक्ति सारे भेद-प्र
ऊपरी आवरण के नीचे दबी इंसानियत को उभारकर ऊपर ल
प्रतिबद्धता में निहित हैं।

समकालीन कथा साहित्य में यथार्थ का सही चित्रण मिल
मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के द्वारा जीवन के दुर्दान्त संकट से जूझने क
मिलता है। यथार्थवादी समकालीन साहित्यकार इस बात की आशा
कि प्राप्त सत्यों को पूर्ण ईमान्दारी से अपनी कृतियों में उपयोग करें।
यथार्थवादी कृति में लेखक के भाव और विचार अंकित रहते हैं, यथ
भी वही है जिसमें अपने युग का सत्य प्रकट हों। समकालीन उपन्या
कहानियों द्वारा लेखक पाठकों को सामाजिक विषमताओं का अहसास
हैं और उनके मनमें परिवर्तन की कामना के बीज भी बोते हैं। समाज
क्षेत्र में होने वाले अन्यायों और अत्याचारों पर प्रकाश डालने का प्रय
रचनाओं में हैं। समाज के पिछड़े वर्गों की समस्याओं को भी सम

कहानीकारों ने विषय बनाया है। सभी समस्याओं से बढ़कर है नारी स
सभी के सभी कहानीकारों ने भी इसकी ओर ध्यान दिया है। समक
कहानी की तरह समकालीन उपन्यास में भी सामाजिक यथार्थ का चिः
समकालीन उपन्यास आम आदमी के जीवन के यथार्थ पर प्रकाश डाल
समाज के नैतिक मूल्यों की गिरावट और चारित्रिक पतन को इन उप
ने दर्शाया है। दलित चेतना, पारिस्थितिक सजगता, राजनीतिक पतन
की गिरावट, नारी चेतना ये सब उपन्यास के मुख्य विषय है।

नासिरा शर्मा ने अपने कथा साहित्य में समाज के सभी प
जैसे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक साहित्यिक आदि को उनकी
विशेषताओं के साथ उभारने का प्रयास किया है। उनकी रचनाएँ मुख
से नारी केन्द्रित है। नारी के ज़रिए समाज की हर समस्याओं, हर प
को छूने का प्रयास उन्होंने किया है। नासिराजी की रचनाएँ समकालीन
के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करनेवाली हैं। भारत के ही नहीं बल्कि
पाकिस्तान, अफगानिस्तान जैसे देशों के सामाजिक परिवेश को भी
अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। समाज के निम्न-मध्य वर्ग के
और जो-जो समस्यायें ये लोग झेलते हैं, इसका चित्र नासिराजी के
साहित्य में मिलता है। भूख की तीक्षणता, देशविभाजन की समस्या,
और राजनीतिक क्षेत्र के भ्रष्टाचार, शिक्षा क्षेत्र के भ्रष्टाचार, नारी
ये सब नासिराजी के उपन्यासों के मुख्य विषय हैं। आज की एक बडी
है पानी की समस्या पानी की कमी और उससे उत्पन्न विषमताओं पर
कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं। समाज का जीता जगता चित्रण ही

कथा साहित्य में देखने को मिलता है। इसी प्रकार देखा जाय तो सम
यथार्थ चित्र अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करने में नासिरा जी सफल

समकालीन लेखकों ने नारी जीवन के विविध पहलु
अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। समाज में नारी की स्थिति को
अस्मिता को चित्रित करने वाली प्रमुख लेखिका है नासिरा शर्मा।
उपन्यासों और कहानियों का मुख्य विषय और प्रधान पात्र तो न
नासिराजी के नारी पात्र तो कई परंपरागत मान्यताओं को चुनौती देनेव
इनकी रचनाओं में स्त्री से जुड़ी घर-परिवार की समस्या, दाम्पत्य जी
तनाव और टूटन, कामकाजी महिला के दोहरे-तिहरे शोषण आदि स
चित्र हम देख सकते हैं। नासिराजी के नारी पात्र तो घर-परिवार और
के बीच रहकर भिन्न स्थितियों और त्रासदियों का सामना करनेवाले हैं
उपन्यासों के लगभग सभी नारी पात्र अपने अस्तित्व को बनाये रर
कोशिश करनेवाले हैं। उपन्यास की तरह उनकी कहानियों का मुख
नारी ही है। इनमें से कुछ नारियाँ तो साधारण गंवार नारियाँ हैं त
नारियाँ ऐसी हैं जो सभी दबावों से मुक्त होकर अपने अस्मिता को
रखती हैं।

नासिराजी के सभी उपन्यास और सभी कहानियाँ सामाजि
उनकी रचनाओं में परिवेशगत कई विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। न
गाँव, शहर दोनों परिवेश पर केन्द्रित हैं। दिल्ली, इलाहाबाद जैसे श
परिवेश को लेकर उन्होंने रचनाएं की हैं। गाँव की गरीबी दिखाने व
वहाँ की अच्चाई को सामने लाने का प्रयास भी उन्होंने किया है।

परिवेश पर केन्द्रित रचनाएँ भी उन्होंने की हैं। नासिराजी की रचन भाषा का बडा महत्वपूर्ण स्थान है। पात्र और परिवेश के आधार पर भाषा का प्रयोग किया है। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी है। उनकी रच की भाषा अरबी, फारसी भाषाओं से प्रभावित है। उन्हें तो इन भाषा अच्छी जानकारी है और उन्होंने इन देशों में यात्रा भी की है, इसका उनकी रचनाओं की भाषा पर भी पडा है। सादा गंवारू और मुहावेरदा का भी प्रयोग उन्होंने किया है। उनकी रचनाओं के पात्र ज्यादातर मुस हैं और भाषा भी इसके अनुरूप है।

नासिराजी हर दृष्टि से सफल रचनाकार हैं। विषय की विवि रचना-तन्त्र आदि सामान्य जनता पर प्रभाव डालने लायक है। साहित्यिक रचनाओं का परम उद्देश्य लोक कल्याण है। उनके लिए ऐतिहासिक घेरा है न भौगोलिक बंधन। उनके साहित्य में समाज को की रुग्ण मानसिकता पर प्रहार करने की कोशिश है। विश्व में सद्भावना, समानता की भावना को व्याप्त करके बुराइयों की आ करने का हौसला उन्होंने अपनी रचनाओं में दिखाया है। उनकी रचन ज्यादातर नारी समस्याएँ ही प्रस्तुत हुई हैं। लेकिन वे नारीवादी लेखिव हैं। इनसान को इनसान बने रहने पर प्रेरित करते रहना अपमान, अत्याचार के विरोध में खड़े होने की प्रेरणा देना उनके लेखन का मुख्य रहा है। मानवता नासिराजी की लेखनी का मूल बिन्दू है। वे रचनाकार होने पर भी नारीवादी नहीं, मानवतावादी हैं। उनकी विशाल मानवीय पक्षधरता पर केन्द्रित है। हिन्दुस्थान की बहुल

संस्कृति की झलक नासिराजी की रचनाओं की सबसे बड़ी खासिय
हिन्दुस्थान की ही नहीं, विश्व की भी बहुलतावादी संस्कृति की
अभिव्यक्ति के कारण नासिरा शर्मा की रचनाएँ हिन्दी साहित्य में
रहेंगी। 'विश्वमानवता' ही हिन्दी साहित्य की इस श्रेष्ठ रचनाकार के
संसार की पहचान और निशान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ (नासिरा शर्मा की रचनाएँ)

1. अक्षयवट — भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया
लोदी रोड, नयी दिल्ली-03
प्र. सं. - 2003

2. इब्ने मरियम — किताबघर प्रकाशन
24, अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-02
प्र. सं. - 1994

3. इनसानी नस्ल — प्रतिभा प्रतिष्ठान
1685, दखनीराय स्ट्रीट
नेताजी सुभाष मार्ग
नई दिल्ली-02
प्र. सं. - 2001

4. औरत के लिए औरत — सामयिक प्रकाशन
3320-21 जटवाड़ा
नेताजी सुभाष मार्ग
दरियागंज - नई दिल्ली-02
प्र. सं. - 2003

5.	कुइयाँजान	सामयिक प्रकाशन नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 2005
6.	खुदा की वापसी	भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोदी रोड, नई दिल्ली-03 दू. सं. - 1999
7.	ज़िन्दा मुहावरे	वाणी प्रकाशन 21-ए, दरियागंज नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 2001
8.	ठीकरे की मंगनी	किताबघर प्रकाशन 24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 1989
9.	दूसरा ताजमहल	इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन के-71, कृष्णनगर, दिल्ली-15 प्र. सं. - 2002
10.	पत्थर गली	किताबघर प्रकाशन 1. बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 1986
11.	10 प्रतिनिधि कहानियाँ	किताबघर प्रकाशन 24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 2006

12. बुतख़ाना	लोकभारती प्रकाशन 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद-1 द्वि. सं. - 2002
13. शामी काग़ज़	सत्साहित्य प्रकाशन 205-बी चावड़ी बाजार दिल्ली-06 प्र. सं. - 1997
14. शाल्मली	किताबघर प्रकाशन 24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 1987
15. संगसार	प्रभात प्रकाशन चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6 प्र. सं. - 1993
16. सबीना के चालीस चोर	किताबघर प्रकाशन 24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 1997
17. सात नदियाँ एक समन्दर	प्रभात प्रकाशन चावड़ी बाजार, दिल्ली-06 प्र. सं. - 1995
18. राष्ट्र और मुसलमान	किताबघर प्रकाशन 24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली प्र. सं. - 2002

सहायक ग्रन्थ

1.	अकेला प्लाश	मेहरुन्निसा परवेज वाणी प्रकाशन 21-ए, दरियागंज नई दिल्ली-2 सं. - 1981
2.	अल्मा कबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा राजकमल प्रकाशन 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली प्र. सं. - 2000
3.	आओ पेप घर चलें	प्रभा खेतान सरस्वती विहार जी.टी. रोड, दिलिशाद गार्ड॰ शाहदरा, दिल्ली-95 प्र. सं. - 1990
4.	आठवें दशक के हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य	डॉ. रमेश देशमुख विद्या प्रकाशन काणपूर सं. - 1994
5.	उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ	डॉ. सुरेश सिन्हा रामा प्रकाशन नजीराबाद, लखनऊ प्र. सं. - 1965

6.	केशर - कस्तूरी	शिवमूर्ति राधाकृष्ण प्रकाशन 7/31 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली प्र. सं. - 1997
7.	कोरजा	मेहरुन्निसा परवेज वाणी प्रकाशन 21-ए, दरियागंज नई दिल्ली-02 प्र. सं. 1977
8.	गिलिगडु	चित्रा मुद्गल सामयिक प्रकाशन नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली-2 प्र. सं. - 2002
9.	जंगल जहाँ शुरू होता है	संजीव राधाकृष्ण प्रकाशन 7/31 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली प्र. सं. - 2000
10.	टुकडा - टुकडा आदमी	मृदुला गर्ग नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली सं. - 1977
11.	टेराकोटा	लक्ष्मीकान्त वर्मा लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद सं. - 1972

12. डूब	वीरेन्द्र जैन वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली प्र. सं. - 1991
13. दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र	डॉ. शरणकुमार लिंबले वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली सं. - 2000
14. धरती धन न अपना	जगदीश चन्द्र राजकमल प्रकाशन 1 बी, नेताजी सुभाषमार्ग नई दिल्ली प्र. सं. - 1972
15. धांसु	गोविन्द मिश्र राजकमल प्रकाशन 1 बी, नेताजी सुभाषमार्ग नई दिल्ली द्वि. सं. - 1982
16. नावें	शशिप्रभा शास्त्री राजकमल प्रकाशन 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली सं. - 1990
17. नील गाय की आँखें	नमिता सिंह वाणी प्रकाशन दरियागंज, नयी दिल्ली प्र. सं. - 1992

18.	पतझड़	शशिप्रभा शास्त्री किताबघर प्रकाशन 24, अंसारी रोड, दरियागं नई दिल्ली-02 प्र. सं. - 1992
19.	परम्परा, इतिहासबोध और संस्कृति	श्यामचरण दुबे राधाकृष्ण प्रकाशन 7/31 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली
20.	परिधि पर स्त्री	मृणाल पाण्डे राधाकृष्ण प्रकाशन 7/31 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली
21.	प्रतिनिधि हिन्दी कहानियाँ	गोविन्द मिश्र राजकमल प्रकाशन 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-02 सं. - 1989
22.	बदलते परिप्रेक्ष्य	नैमीचन्द्र जैन राजकमल प्रकाशन 1 वी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-02 सं. - 1968
24,	बात एक औरत की	कृष्णा अग्निहोत्री इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन के-71, कृष्णनगर दिल्ली-51 सं. - 1974

25.	भारतीय नारी दशा : दिशा	आशारानी व्योरा नेशनल पब्लिशिंग हा नई दिल्ली
26.	भूख	चित्रा मुद्गल प्रभात प्रकाशन असफली रोड नई दिल्ली प्र. सं. 2001
27.	रामदरश मिश्र के उपन्यास	डॉ. वीरेन्द्रप्रकाश अग्नि वाणी प्रकाशन 61-ए, कमला नगर दिल्ली - 110007 प्र. सं. - 1982
28.	राष्ट्रीय विदूषक	जवाहर सिंह शब्दाकार प्रकाशन दिल्ली प्र. सं. - 1980
29.	समकालीन आलोचना की भूमिका	डॉ. मंजुल उपाध्याय साहित्यकार प्रकाशन जयपुर सं. - 1991
30.	समकालीन हिन्दी कहानी : यथार्थ के विविध आयाम	डॉ. ज्ञानवती अरोरा हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली प्र. सं. - 1994

31.	समकालीन हिन्दी उपन्यास की भूमिका	डॉ. रणवीर रांग्रा जगतराम एण्ड सन्स IX/221, मेन बाजार गाँधी नगर, दिल्ली-1 सं. - 1986
32.	समकालीन हिन्दी कविता में आम आदमी	डॉ. मंजुल जोशी क्लासिकल पब्लिशिंग करमपुरा, नई दिल्ली प्र. सं. - 2001
33.	स्पन्दन	श्रवण कुमार जगतराम एण्ड संस नई दिल्ली प्र. सं. - 1991
34.	साठोत्तर हिन्दी कहानी और राजनीतिक चेतना	डॉ. जितेन्द्र वत्स साहित्य रत्नाकर 104ए/118 रामबाग कानपुर 208012
35.	साहित्य संदर्भ और मूल्य	डॉ. रामदरश मिश्र भारती साहित्य मंदिर दिल्ली सं. - 1970
36.	हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद	डॉ. त्रिभुवन सिंह वाणी प्रकाशन 21-ए, दरियागंज नई दिल्ली-02 सं. - 1968

37. हिन्दी उपन्यास का इतिहास
गोपालराय
राजकमल प्रकाशन
नेताजी सुभाष मार्ग
नई दिल्ली-2
प्र. सं. 2002

38. हिन्दी उपन्यास का विकास
मधुरेश
सुमित्रा प्रकाशन
इलाहावाद
प्र. सं. - 1998

39. हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग
हिन्दी प्रचार संस्थान
वाराणसी
प्र. सं - 1973

40. हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान
डॉ. रामदरश मिश्र
नेशनल पब्लिशिंग हा
नई दिल्ली
सं. - 1997

41. हिन्दी कहानी : अस्मिता की तलाश
मधुरेश
आधार प्रकाशन
ए.सी.एफ. 267
सेक्टर-16
पंचकूला-134109
प्र. सं. - 1997

42. हिन्दी कहानी : दो दशक
सुरेश धींगडा
अभिनव प्रकाशन
नई दिल्ली
सं. - 1978

43. हिन्दी व्यंग्य उपन्यास — डॉ. राधेश्याम वर्मा
निर्माण प्रकाशन
19/ए रामनगर
शाहदरा
दिल्ली - 110032

44. हिन्दी व्यंग्य साहित्य — डॉ. ए.एन. चन्द्रशेख
शवरी संस्थान
1/5971, कवूल नग
शादरा, दिल्ली-32
प्र. सं. - 1989

कोश

अंग्रेजी-हिन्दी कोश — फादर कामिल बुल्के
आदर्श हिन्दी शब्द कोश — पं. रामचन्द्र पाठक
ज्ञान शब्द कोश — मुकुन्दी लाल श्रीवा
संस्कृत-हिन्दी कोश — वामन शिवराम आ
संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर — रामचन्द्र वर्मा (संपा
The Oxford Mini Dictionary — Jace M Huskins

पत्रिका

आजकल	नवंवर	2005
दस्तावेज़ 88		
मधुमती	अगस्त	2001
वागर्थ	नवम्बर	1998
समीक्षा	अक्तूबर-दिसंवर	1987
समीक्षा	जनवरी-मार्च	2003
साहित्य	अमृत अगस्त	2005
साक्षात्कार	अक्तूवर	2004

UNIVERSITY LIBRARY

❖❖❖